

रघुनाथ सिह

नेहरु जी का महाप्रस्थान

नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

प्रकाशक
नेशनल पब्लिशिंग हाउस
चन्द्रलोक जवाहर नगर दिल्ली-७

बिक्री-केन्द्र नई सड़क दिल्ली ६

सितम्बर १९६५
मूल्य दस रुपये

मुद्रक
श्यामकुमार गर्ग
राष्ट्रभाषा प्रिंटर्स
चिरागाम दिल्ली ६

भारतीय संसदीय कांग्रेस दल के नेता स्वर्गीय श्री पं० जवाहरलाल
नेहरू दल तथा उसकी कार्यकारिणी के सदस्यों को उनके
वाक् तथा अभिव्यक्ति-स्वातन्त्र्य तथा दूसरों के
विचारों के प्रति आदर की उदार भावना को
सादर भेंट।

भारतीय संसदीय कांग्रेस दल की कार्यकारिणी के सदस्य

१९६३ ६४

श्री जवाहरलाल नेहरू	नेता (प्रयाग उत्तर प्रदेश)
„ एस एम० घोष— (राज्य सभा)	उपनेता (कलकत्ता प० बंगाल)
के० सी० रेड्डी (लोक सभा)	उपनेता, (बंगलौर, मैसूर)
सत्यनारायण सिंह	प्रधान सचेतक (दरभंगा बिहार)
रघुनाथ सिंह	मंत्री (काशी उत्तर प्रदेश)
„ विभूति मिश्र	मंत्री (चम्पारन बिहार)
„ टी०एस० पट्टाभिरमन मंत्री (कावेरी हाथी अम्मल स्ट्रीट टी०नगर, मद्रास)	
„ रामेश्वर टांटिया	कोषाध्यक्ष (कलकत्ता प० बंगाल)
„ शिवराम रंगु राणे	उप-सचेतक (जलगांव महाराष्ट्र)
„ जे० बी० मुथियालराव	उप-सचेतक (हैदराबाद आन्ध्र)
„ राजपति सिंह दूगर	उप-सचेतक (कलकत्ता प० बंगाल)

सदस्य

लोक सभा

श्री पी० सी० बरुआ (मेलाखनगर, पो० शिवसागर, आसाम)
महेश्वर नायक (करंजिया मयूरभंज उड़ीसा)
„ पी० आर० चक्रवर्ती (कृष्ण नगर नदिया प० बंगाल)
महावीर त्यागी (रैन बसेरा, देहरादून)
„ हरिश्चन्द्र माथुर, (जोधपुर राजस्थान)
„ एफ० पी० गायकवाड़ (लक्ष्मी विलास पैलेस राजमहल रोड बड़ौदा)
डा० रामसुभग सिंह, (आरा बिहार)
श्री भक्त दर्शन सैलकोन (गढ़वाल उत्तर प्रदेश)
श्रीमती टी० लक्ष्मी कान्तम्मा (हैदराबाद आन्ध्र)

श्री एस० सी० सामन्त (तामलुक मिदनापुर, प० बंगाल)
राधेलाल व्यास (ब्राह्मण गली उज्जैन म० प्र०)
„ भगवत झा आजाद (भागलपुर बिहार)
बख्शी मकदूम रशीद, (श्रीनगर, कश्मीर)
गुरमुख सिंह मुसाफिर, (खालसा कालेज अमृतसर, पंजाब)
के० सी० पंत (नैनीताल उत्तर प्रदेश)
ए० पी० जैन (सहारनपुर उत्तर प्रदेश)।

राज्य सभा

श्री सुरेश जे० देसाई, (सूरत गुजरात)
„ सी० डी० पाण्डेय (नैनीताल उ० प्र०)
श्यामनन्दन मिश्र (दरभंगा बिहार)
„ सादिक अली (बाटीवाली बिल्डिंग उदयपुर राजस्थान)
रामसहाय (रामकुटी विदिशा म० प्र०)
एन० एम० लिंगम (बम्बई कास्टल मद्रास)
देवकीनन्दन नारायण (नवीपीठ जलगांव महाराष्ट्र)
„ एस० डी० पाटिल (जलगांव महाराष्ट्र)

पदेन सदस्य—नेता राज्य सभा :
श्री एम० सी० छागला (बम्बई, महाराष्ट्र)

श्री वी० राजगोपालन (मद्रास शहर मद्रास)
श्री टी० मनीयन (दार्जिलिंग प० बंगाल)
मन्त्री अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी

आमुख

पुस्तक अनायास प्रस्तुत हो गयी। भावनाएँ लिपिबद्ध हुईं। इसमें अज्ञात शक्ति का हाथ मालूम होता है। जिसका अनुभव अनजाने हम करते हैं। किन्तु बता नहीं सकते। वह क्या है।

मैं लिखता गया। लेखन-सामग्री एकत्रित होती गई। विदेश सुरक्षा तथा गृह विभाग से सभी प्राप्य सामग्रियाँ प्राप्त हुईं। मेरा नोट सात सौ पृष्ठों से ऊपर बन गया। उसके सारस्वरूप पुस्तक तैयार हुई। अतएव उक्त विभाग धन्यवाद के पात्र हैं।

स्वास्थ्य विभाग जिसका सम्बन्ध पण्डितजी की बीमारी से है उसका सहयोग नहीं मिल सका। संसद में प्रश्न पूछे गये। उनसे संतोष नहीं हुआ। चिकित्सकों ने जानना चाहा। कतिपय ने सहयोग किया। कुछ ने अपने पेशे की सदाचार संहिता की आड़ लेकर कुछ भी बताने से इन्कार किया। उनके अनुभव तथा ज्ञान से विषय पर कुछ अधिक प्रकाश पड़ सकता था। इस सम्बन्ध में जो कुछ मैं स्वयं जानता था जो बातें मुझे मालूम हुईं उन्हें माला के धागों की तरह गूँथकर सुमिरनी स्वरूप पुस्तक बना लिया है।

उन सभी महानुभावों से सम्पर्क स्थापित किया है जो पण्डितजी की बीमारी आदि के समय प्रधानमन्त्री भवन में उपस्थित थे। उनका वर्णन मैंने यथास्थान किया है। वे हमारे धन्यवाद के पात्र हैं।

पुस्तक में पण्डितजी की अंतिम बीमारी से अस्थि प्रवाह किया मुख्यतः पाँच दिनों की घटनावलियों का वर्णन किया गया है। अतएव पुस्तक का क्षेत्र अत्यन्त संकुचित है। पुस्तक की प्रस्तुत सामग्री 'मासिक तर्पण' लेखमाला के नाम से एक वर्ष तक हिन्दी दैनिक 'हिन्दुस्तान' नई दिल्ली से प्रकाशित हो चुकी है। पुस्तक उन लेखों का संग्रहमात्र है।

पण्डितजी के सम्बन्ध में इस आकिंचन के कुछ और लेख प्रकाशित हुए हैं। उन्हें 'पण्डितजी के संस्मरण' के नाम से पुस्तकाकार प्रकाशित करने का विचार है।

सुबन पाठकों के विशेष आग्रह दैनिक हिन्दुस्ता,
जोशी की प्रेरणा तथा श्री कन्हैयालाल जी मलिक ने
भावनाओं को मूर्त रूप में देखने का अवसर आपको
आपके सुलेखों के परिश्रम के लिए मैं आपका आभारी हूँ

पुस्तक में राजनीतिक बातें भी प्रसमवश आ गई
था। उससे बचा नहीं जा सकता था। मत-वैभिन्न्य स
वस्तु को कलाकार, चित्रकार ज्ञानी अज्ञानी लेखक सब
देखते हैं। एतदर्थ उनकी अभिव्यक्ति की विधा भिन्न हो
विचार प्रकट किये हैं वे शुद्ध हैं, निष्पक्ष हैं। यदि उन
सकता तो मैं इसके अतिरिक्त और क्या कह सकता हूँ
इतिहास की दृष्टि से उनका इसमें समावेश करना आव
ही बातें अन्धकार में रह जातीं।

मैं किसी प्रकार के विवाद में नहीं पड़ना चाहता।
देखा है जो अनुभव किया है उन्हें लिपिबद्ध किया है।
गलत हो। समझने में मैंने गलती की हो। किन्तु कोई ब
में मेरा कोई स्वार्थ न था और न है। लिखते समय मैंने
प्रसन्न होता है और कौन दुःखी।

मैं सम्भवतः प्रसन्नता और नाराजगी की संकुचित ध
लेखक को निर्भीक और स्पष्ट रूप से वास्तविक घटना
है अनुभव करता है लिख देना चाहिए। मैंने इसी पद्धति
यदि कोई लेखक इससे विरत होता है तो वह लेखक न
बनाने वाला रह जाता है। मैंने जो अपनी आँखों से नहीं
प्रमाणों की तुला पर तौला है। अनन्तर लिपिबद्ध किया है।

जगत में ईश्वर के अतिरिक्त और क्या 'पूर्ण' है। य
इसमें आश्चर्य की क्या बात हो सकती है। इसी पूर्णता की अ
लेखकों की लेखनी का पुनीत कर्तव्य माना जायेगा।

पण्डित जी का मेरा साथ सन् १९२१ से कांग्रेसकर्मी ह
अंतिम तीन वर्ष जब मैं कांग्रेस संसदीय दल का मंत्री था औ
था। संसद के सत्रकाल में प्राय: नित्य ही भेंट तथा बातें होती
होता था। उन्हें अत्यन्त निकट से जानने का यथेष्ट अवसर मि
राजनीतिक था। विचारों के विनिमय का विशेष था। क
नहीं हो सके थे।

यह पुस्तक पण्डित जी की अन्तिम बीमारी के आक्रमण काल से उनके मुक्त हो जाने तथा प्रयाग और भारत भूमि में भस्म विसर्जन तक की घटनावलियों से पूर्ण है। बहुत बातें विस्तार के भय से नहीं दी गई हैं। सारस्वरूप जिनकी आवश्यकता समझी उन्हें दे दिया है।

इस पुस्तक को एक प्रयास मात्र मानना चाहिए। निःसन्देह कोई प्रभावी लेखक अपनी लेखनी उठाकर पण्डितजी की विस्तृत जीवनगाथा अवश्य लिखेगा और उसके समक्ष शायद यह पुस्तक अनुस्वार मात्र लगेगी। निष्कपट निश्छल निरपेक्ष तथा मुक्त भाव से लिखी यह पुस्तक पाठकों के विशाल हृदय के किसी कोने में न सही पग-रेणु में स्थान पा सके तो उसी से मैं अपने को उपकृत समझूँगा।

इस असीम जगत का भटकता एक मानव।

१२, कैनिंग लेन
नई दिल्ली ७-६-६४।

रघुनाथ सिंह

सुजन पाठकों के विशेष आग्रह, दैनिक हिन्दुस्तान के सम्पादक श्री रतनलाल जोशी की प्रेरणा तथा श्री कन्हैयालाल जी मलिक के क्रियात्मक सहयोग से मेरी भावनाओं को मूर्त रूप में देखने का अवसर आपको मिला है। आप इसे पढ़ेंगे। आपके सुनेत्रों के परिश्रम के लिए मैं आपका आभारी हूँ।

पुस्तक में राजनीतिक बातें भी प्रसंगवश आ गई हैं। उनका आना अनिवार्य था। उससे बचा नहीं जा सकता था। मत-वैभिन्न्य लोकतन्त्र का मूल है। एक ही वस्तु को कलाकार, चित्रकार, ज्ञानी, अज्ञानी, लेखक तथा कवि अपनी भावनानुसार देखते हैं। एतदर्थ उनकी अभिव्यक्ति की दिशा भिन्न हो जाती है। परन्तु मैंने जो विचार प्रकट किये हैं वे शुद्ध हैं, निष्पक्ष हैं। यदि उनसे किसी का मत नहीं मिल सकता तो मैं इसके अतिरिक्त और क्या कह सकता हूँ कि इसके लिए दुःखी हूँ। इतिहास की दृष्टि से उनका इसमें समावेश करना आवश्यक था। अन्यथा कितनी ही बातें अन्धकार में रह जातीं।

मैं किसी प्रकार के विवाद में नहीं पड़ना चाहता। मैंने जो अपनी आँखों से देखा है, जो अनुभव किया है, उन्हें लिपिबद्ध किया है। सम्भव है मेरा अनुभव गलत हो। समझने में मैंने गलती की हो। किन्तु कोई बात लिखने अथवा छोड़ने में मेरा कोई स्वार्थ न था और न है। लिखते समय मैंने चिन्ता नहीं की। कौन प्रसन्न होता है और कौन दुःखी।

मैं सम्भवतः प्रसन्नता और नाराजगी की संकुचित सीमा से पार हो चला हूँ। लेखक को निर्भीक और स्पष्ट रूप से वास्तविक घटना जैसा वह देखता है, सुनता है, अनुभव करता है लिख देना चाहिए। मैंने इसी पद्धति का अनुकरण किया है। यदि कोई लेखक इससे विरत होता है तो वह लेखक न होकर केवल शब्द-जाल बनाने वाला रह जाता है। मैंने जो अपनी आँखों से नहीं देखा है, उन्हें अकाट्य प्रमाणों की तुला पर तौला है। अनन्तर लिपिबद्ध किया है।

जगत में ईश्वर के अतिरिक्त और क्या 'पूर्ण' है। यदि पुस्तक अपूर्ण है तो इसमें आश्चर्य की क्या बात हो सकती है। इसी पूर्णता की ओर ले जाना भविष्य के लेखकों की लेखनी का पुनीत कर्तव्य माना जायेगा।

पण्डित जी का मेरा साथ सन् १९२१ से कांग्रेसकर्मी होने के कारण रहा है। अंतिम तीन वर्ष जब मैं कांग्रेस संसदीय दल का मंत्री था और भी घनिष्ठ हो गया था। संसद के सत्रकाल में प्रायः नित्य ही भेंट तथा बातें होती थीं। विचार-विनिमय होता था। उन्हें अत्यन्त निकट से जानने का यथेष्ट अवसर मिला था। यह सम्बन्ध राजनीतिक था। विचारों के विनिमय का विषय था। हम सभी बातों में एकमत नहीं हो सके थे।

यह पुस्तक पण्डित जी की अंतिम बीमारी के आक्रमण काल से उनके मुक्त हो जाने तथा प्रयाग और भारत भूमि में भस्म विसर्जन तक की घटनावलियों से पूर्ण है। बहुत बातें विस्तार के भय से नहीं दी गई हैं। सारस्वरूप जितनी आवश्यक थी, समझी उन्हें दे दिया है।

इस पुस्तक को एक प्रयास मात्र मानना चाहिए। निःसन्देह कोई प्रभावी लेखक अपनी लेखनी उठाकर पण्डितजी की विस्तृत जीवनगाथा अवश्य लिखेगा और उसके समक्ष शायद यह पुस्तक अनुस्वार मात्र लगेगी। निष्कपट, निर्दोष, निरपेक्ष तथा मुक्त भाव से लिखी यह पुस्तक पाठकों के विशाल हृदय के किसी कोने में न सही परोक्ष में स्थान पा सके तो उसी से मैं अपने को उपकृत समझूँगा।

इस असीम गगन का भटकता एक मानव।

१५, कैनिंग लेन,
नई दिल्ली ७-६-६४।

रघुनाथ सिंह

विषय-क्रम

मैं लिखता हूँ



लिखना अच्छी बात है। बुरी बात भी है। लिखने से सफेद कागज रंगीन होता है। आँखों को पढ़ने की अहमत उठानी पड़ती है। दिमाग में उलझन पैदा होती है। लोग उस तरह सोचने लगते हैं जिस तरह लिखने वाला नहीं सोचता। फिर भी 'कज्जल सिन्धु पात्रे लेखनी पत्र-मुर्वी' कह देने पर बात समाप्त नहीं हुई। भोजपत्र से पत्थर पर परस लिखे जाने लगे। कलम उन पर नाली बनाती चली गई। स्याही उन्हें सींचने लगी।

चीनियों को इससे संताप नहीं हुआ। उन्होंने कागज बनाया। उस पर अक्षर बिखरने लगे। स्याही बनती चली गई। कलमें घिसती चली गईं। सरकण्डे कलम पैदा करते गये। जमीन कालिख उगलती गई। साहित्यिक पैदा होते रहे। 'ललितकान्त पदावली' लेखनी से निकलती रही। रबड़-छंद बनते रहे। मासलेटी साहित्य पनपता रहा। पढ़ने वालों की कमी नहीं हुई। ऊबड़-खाबड़ टेढ़ो-मेढ़ी अक्षर-वीथियों में आँखें फिसलने लगीं।

व्यास जी ने महाभारत लिखा। अठारह महापुराण लिखे। वेदों का संस्करण किया। सब कुछ लिख गये, जो कुछ भी लिखा जा सकता था। उन्हें संताप हुआ। गणेश जी जैसा 'स्टेनोग्राफर' और किसी को नहीं मिलेगा। लोगों की कलम न उठेगी। अस्तु लिखने का काम समाप्त हो गया।

दुनिया रुकती नहीं। ज्योतिषी पिछली बातें बता देते हैं। भविष्य

उन्हें धोखा दे जाता है। कुछ ऐसी बातें व्यास जी के साथ भी हुइ। आधुनिक स्टेनोग्राफरों की लम्बी कतार खड़ी हो गई। उनका पेशा लिखना हो गया। बिना समझे-बूझ मक्खिका स्थान मक्खिका बैठान लग। व्यास जी और गणेश जी में एक समझौता था। बिना समझ गणेश जी एक अक्षर नहीं लिखेंगे। और व्यास जी गणेश जी की लेखनी का थमना नही रुकने देंगे। यह सब पुरानी बातें थीं। आधुनिक युग का अर्थ पुरानी लकीर का फकीर बनना नहीं है।

एतदर्थ टाइपराइटर पट-पट बोलने लग। अक्षर लिपिबद्ध होने लग। 'लेखनी पत्र मूर्खी' की समस्या नहीं खड़ी हुई। कज्जल सिन्धु पात्र' का नमस्कार किया गया। उसका स्थान ले लिया काल कार्बन न। मशीन सफेद कागज खाने लगी उगलने लगी। उज्ज्वल कागज की छाती पर काली उर्द के स दानों को जैसे सजा कर।

गुण-दोष जाने बिना बहुत-कुछ लिखा जाता है। लिखना भी एक फशन है। फैशन बदलता है। फैशन के कारण लोग चाय पीते हैं। काफी पीते हैं। सिगरेट पीते है। पान की जगह लिपस्टिक आ गया। मोची स उठकर ऊँची एड़ी का जूता हो गया टपाटप सड़क की पटरियों पर पड़ने लगा। ठीक इसी तरह लिखने-पढ़न का फशन बदलता गया।

फैशन रोज बदलता है। इतनी जल्दी जवानी बुढ़ापे मे नही बद लती। अतएव फशनवुक लिखना चाहिए। राजनीतिक दुनिया दो गुटो में बँट गई है। शैली भी रूसी और अमेरिकन बन जाय तो कोई आश्चय नहीं। रवीन्द्र शैली की जगह प्रत्येक कलम अपनी शैली का निमाण करे तो वह प्रगतिशील कही जायगी। मौलिक कही जायगी। इसे निर्माण कहा जायगा। किसी पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत आ जायगी।

लिखन की शैली यदि तटस्थ रखी जाय तो वह आधुनिक शैली कही जायगी। किन्तु इतना निर्विवाद है। रीतिकाल का समय बीत चुका है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का युग बीत चुका है। उस शैली मे कुछ लिखा जाय तो आधुनिक चित्र की तरह आकारहीन होगी। समझने के लिए समझ की जरूरत पड़ेगी। उस ओर-छोर-हीन माक्षणिक कला

में एक रस मिलता है। वह रस प्रवाह द्रवित होने लगा। मेरे नेत्र मत हो गये। अर्धनि की मुकुलित विकसित उज्ज्वल मल्लिका में देखी स्मित उज्ज्वल दिव्यकाया। हंस वर्णमय शुभ्राम्बर वेष्ठित धवल प्रतिमा। मैं मन में लीन होने लगा। हंसवाहिनी सरस्वती के वीणा-तन्तु झन-झनाए। स्मृति लहरियां विलोलित हो चलीं। उस महान् आत्मा की अन्तिम घड़ियां लिखने लगी लेखनी जो वास्तव में स्वयं 'पण्डित' था। जो वस्तुतः रत्नों में जवाहर था। जो यथार्थ में देश का लाल था। भावना उठी उसकी यशःकाया चिरस्थायी देखने की।

इस कल्पना में हम दोनों मित्रों को जो सुख मिला—जिस सुख की झलक मुद्रक एवं प्रकाशक के स्तुत्य प्रयास से आप सहृदय पाठकों को मिल रही है—इसमें हम देख रहे हैं अपने अनिर्वचनीय सुख का अजस्र स्रोत।



वे—गये। एक मास बीत गया। अच्छे थे। प्रिय-दर्शन थे। विचक्षण थे। उज्ज्वल कमल की उज्ज्वलता-तुल्य उनकी उज्ज्वल आभा उनकी धवल काया से मिली थी। तथापि—वे काया नहीं थे। कार्ल मार्क्स का वाद विवाद तथा सम्वाद का सिद्धान्त पड़ा रह गया। मार्क्स के समाजवाद की ख्याति उनकी प्रभा ख्याति को जला जलाकर उनके प्रकाश-पुंज में स्वतः विलीन हो गई।

वे—समाजवाद की प्रचण्ड वेगवती धारा में तरते हुए भी क्रांति-विकल उत्तावली उत्ताल तरंग-मालाओं के थपेड़े खाते हुए भी संघर्ष के भयंकर झंझावात के झकोरे में भी नास्तिकता-वासित नाव का सहारा नहीं ले सके। प्रतीच्य की विचार-वीथियों में भौतिकता की टिम-टिमाती क्षीण ज्योति ने उन्हें आकर्षित करने का प्रयास किया। किन्तु प्राच्य के अध्यात्म की प्रखर किरणों में दुर्दम आकर्षण तिरोहित हो गया।

वे—विचारों के द्वन्द्व में प्राच्य एवं प्रतीच्य के मानसिक संघर्ष में अपनी क्षीणकाय तरणी लेकर उतरे। निशामय आकाश के नीचे ओर-छोर-हीन महार्णव के निविड़ अंधकार में लहरों पर थिरकती, तरणी चली। उस नीरव गगन और सागर के मध्य एकमात्र सबल नक्षत्रगण उसका पथ प्रदर्शन करने में असमर्थ रहे।

वे—मानसिक व्यथा दग्ध थे। बहुत दूर पर दखा—शुभ्रज्योतिर्मय सागर दीपस्तम्भ। दिग्भ्रमित नाविकों का एकमात्र सहारा। तरुण क्षीणकाय तरणी दीपस्तम्भ की ओर बढ़ी। दीपस्तम्भ पर खड़ा था एक पथ प्रदर्शक। वह शनै शनै अपने आप म लीन नीचे उतरा। आद्र तट पर स्थितप्रज्ञ की तरह खड़ा हो गया।

वे—बढ़े तट की ओर दीपस्तम्भ के शुभ्र प्रकाश में। तट पर खड़ा आगतुक मुस्कराया। वे हो गये किंकर्तव्यविमूढ़। आगतुक की शांत स्थिर मुद्रा देखकर। हल्के-हल्के लहरो न तरणी का तट की ओर बढ़ा दिया। तरणी पवित्र तट का चुम्बन कर अघा उठी। आगतुक ने सस्नेह मुस्कर तरणी थाम ली। वे खो गये आगतुक के अधरों पर बिखरती पवित्र स्मित रेखा में। वात्सल्य भावापन्न आगतुक न हाथ बढ़ा दिया। उन्होंने रख दिया अपना हाथ आगतुक के हाथो मे।

वे—तरणी से उतरे। आगतुक के वृद्ध कठ द्वारा वृद्ध वाणी मुख रित हुई—'यह किनारा है। यही मजिल है। उतरो! आओ!! विश्राम करो।

वे—हिचके। स्वल्प वस्त्रधारी वृद्ध आगतुक उन्हें क्यों खींच रहा है। इसका मुझ पर क्या अधिकार है? इसकी बात क्यों मानू? मन की प्रतिक्रिया मन में रह गई। जिह्वा चाह कर न बोल सकी। वाणी कठ से उठकर कठ में विलीन हो गई। वे खीझे अपनी बेबसी पर। वे बिगड़े अपन ऊपर। किन्तु—

वे—खिचते चल न जाने कहाँ अनजान आगतुक क साथ। तट स चढ़ने लग तट ऊपर। उनकी मुग्धावस्था पर ऊषा मुस्कराई। सजल नयनो न देखा। जैसे भगवान् बुद्ध के साथ आ रहे है—सारिपुत्र।

वे—चकित हुए। आगतुक गांधी ने दर्शन कराया भारत की शोषात्मा का। पश्चिम लज्जित हुआ। पूर्व मुस्कराया। प्रज्ञा बोली दश-दर्शन म है आत्म-दर्शन। आत्म-दर्शन में है मुक्ति। देश की मुक्ति में है अपनी मुक्ति।

'तोमार प्रतिमा'

वे—उठे। भेरी बज उठी। रणचण्डिका ने हुंकारा। महाप्रलय था। त्याग की विकट माँग थी। आत्मोत्सर्ग की उत्कट अभिलाषा थी। जगत चकित था। इतिहास चकित था। मारने वाला चकित था। मरने वाला चकित था। शत्रु चकित था। साथी चकित थे। यदि कोई चकित नहीं था तो एक मुट्ठी भर अस्थिपंजर मात्र शरीर। उसके इशारे पर न चाह कर भी लोग चले। प्रत्येक कारागार बना—'तोमार प्रतिमा गड़ी मन्दिरे मन्दिरे'।

वे—बैठे। कृष्ण-मंदिर में कागज चुना। लेखनी उठी। विश्व इतिहास को कलम मिली। गांधी-दर्शन में जगत् देखा। जगत् ने उन्हें देखा। विश्वात्मा का दर्शन किया। 'वसुधैव कुटुम्बकम्'—गुंजरित हुआ।

वे—देखते रहे। उज्ज्वल किरीटधारिणी वास्तव में किरीट धारिणी हुई। विश्व स्तम्भित हुआ। अपने घर में अपना राज हुआ। किन्तु विभाजन की विभीषिका सुरसा की तरह मुख बढ़ाए तीव्र गति से दौड़ी। हिन्दुस्तान-पाकिस्तान की भूमि वेदी बनी। भावना यजमान बनी। सहृदयता समिधा बनी। असहिष्णुता घृत बना। मानव-मेध सहसा आरम्भ हुआ। नर-नारी आहुति बने। नेता होता बने। मानव पशु बने। प्रलयकारी दाहक लपटें दोनों दलों को आत्मसात करने लगीं।

वे—रोये। एक महान् पुरुष अपनी महा-आहुति लेकर अग्रसर हुआ। गर्वीली ज्वाला अट्टहास कर उठी। अकस्मात् यज्ञ में महा आहुति पड़ी। ज्वाला लज्जित हो गई। वेदी शीतल हुई। उस महा मानव के महाप्रस्थान से जगत रो उठा। गिरते अश्रुकणों ने तोड़ दी शोणित तर्पण की अजस्र धारा।

वे—विचलित नहीं हुए। एक उत्तरदायित्व था। एक भार था। उसे वहन करना था। राष्ट्रपिता ने एक थाती सौंपी थी। उस न्यास की रक्षा करनी थी। बापू के चरणचिह्नों पर चलना था। बापू ने सत्य का प्रयोग किया था। बापू के उपदेशों की शिष्य राजनीति में क्रियात्मक सम्परीक्षा करने लगा। अहिंसा के सिद्धान्त को 'सह

अस्तित्व में, सत्य को 'गुट-हीनता' में और सहिष्णुता को धर्मनिरपेक्ष' राज्य में सूत्रबद्ध किया। इतिहास का यह अभिनव प्रयोग था।

सज्जनता का दण्ड

वे—सज्जन थे। सज्जनता का दण्ड मिलना अवश्यम्भावी है। गर्वीली ओजस्वी प्रचारात्मक वाणी में प्रतिवर्ष शांति के प्रतीक के स्वरूप सहस्रों श्वेत कपोत उड़ाने वाले भेरी-घोष के स्थान पर शान्तिघोष की घोषणा करने वाले दुन्दुभि बजाकर शान्ति की दुहाई देने वाले चीन की आक्रामक नीति के वे शिकार बने। श्वेत कपोतों की उड़ान पाखण्ड साबित हुई। यह सब हुआ उसके विरुद्ध जो स्वयं श्वेत कपोत के समान सरल था।

वे—लोकतन्त्रवादी थे। शब्द प्रहार लोकतन्त्र का शस्त्र है। उन पर शब्द प्रहार हुए। उन्हें कायर प्रमाणित करने का विफल प्रयास किया गया। वात्सल्य यदि मानव के प्रति स्नेह यदि रक्तपात से घृणा का नाम कायरता है तो मेरी लेखनी कुछ भी लिखने में असमर्थ है। उनके साथ ढाई वर्ष प्रायः प्रतिदिन काम करने के बाद, उनके साथ ४४ वर्ष सम्पर्क में रहने के पश्चात मैं दृढ़तापूर्वक कह सकता हूँ वे दबाव में आकर कोई काम करने वाले नहीं थे। यह उनकी प्रकृति के विरुद्ध था। किन्तु जनमत के सम्मुख दल के बहुमत के सम्मुख अपनी भिन्न राय रखते हुए भी मस्तक झुका देना उनकी महान् विशेषता थी।

वे—सदय हृदय थे। पाकिस्तान की खोटी नीति के शिकार बनते रहे। वे कभी अखण्डित हिन्दुस्तान के नेता थे। दोनों देशों की जनता के स्नेह-भाजन थे। इसे वे भूल नहीं सके थे। निरन्तर तैंतीस वर्षो तक दोनो देशों की जनता के नेता थे। स्वातन्त्र्य-संग्राम में दोनों देशों की जनता का नेतृत्व किया था। उनके आह्वान पर दोनो देशों में लोगों ने प्रसन्नतापूर्वक गोलियाँ खाई थीं। भारत-विभाजन साम्राज्यवादी चतुर राजनीतिज्ञों के उर्वर मस्तिष्क का परिणाम था। आर्थिक कठिनाइयों के कारण मुसलमान हिन्दुस्तान में भाग कर आए। पन्द्रह लाख अथवा

पाकिस्तानी भारत में घुसे। सत्तर हजार परमिट प्राप्त पाकिस्तानी अवैध रूप से भारत में रहते हैं। उन्होंने उनके विरुद्ध कभी आवाज नहीं उठाई। काश—पाकिस्तान उनकी इस सहृदयता को पहचान पाता!

वे—स्थितप्रज्ञ थे। मृत्यु भय उन्हें कभी विचलित नहीं कर सका। संकट-काल में उनकी स्थिरता अनुपमेय रही है। एक समय की बात है। उनका वायुयान संकट में पड़ा। चालक ने सूचना दी। शायद हमें भूमि पर उतरना पड़े। वह संकेत था आसन्न मृत्यु का। वे शान्त अविचल अपनी सीट पर बैठे रहे। जैसे कुछ होने वाला नहीं है।

सरल विश्वास से धोखा

वे—सरल थे। मिथ्या भाषण एवं मिथ्या नीति का आश्रय राजनीतिक क्षेत्र में उन्होंने कभी नहीं लिया। बात वे स्पष्ट करते थे। उनसे किसी को धोखा नहीं हो सकता था। हम लोग कभी-कभी उनसे चुप रहने को कहते थे। दूसरी तरह से बात करने का सुझाव देते थे। परन्तु उन्हें यह अच्छा नहीं लगता था। उनकी वह सरलता भारत की अनेक राजनीतिक उलझनों की जनक है।

वे—दूसरों पर अनायास विश्वास कर लेते थे। दूसरे क्यों झूठ बोलेंगे! वे मान बठते थे। अतएव वे मनुष्य प्रकृति, मनुष्य-स्वभाव किंवा आदमी पहचानने में सर्वदा असफल रहे। उन्हें उनसे धोखा होता गया जिन पर वे विश्वास करते थे। तथापि उन्होंने प्रतिहिंसा का जीवन-पर्यन्त आश्रय नहीं लिया।

वे—मनुष्य थे। आत्मा निर्विकार है। शरीर विकार का प्रतीक है। निर्विकार एवं विकार का समन्वय मनुष्य है। बिना शरीर आत्मा प्रेत है। बिना आत्मा शरीर मिट्टी है। मनुष्य में क्रोध, क्षमा, उत्साह, दैन्य, सुख-दुःख, विषाद-मद राग-द्वेषादि का होना अनिवार्य है। उनका समय पर प्रयोग करना मनुष्य का गुण है। वे क्रोध करते थे। झल्लाते थे। हठ करते थे। अनुग्रह करते थे। स्नेह करते थे। सहायता करते थे। मित्र-धर्म का निर्वाह करते थे। साथी को संकट में नहीं छोड़ते थे।

दूसरों का दोष अपने ऊपर लेने मे निपुण थे। किन्तु इन गुणो एव अव गुणों में एक वस्तु निर्विकार रूप से उनमे स्थित रहती थी। वह थी—अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठा, और निर्मल गगाजल की तरह प्रसन्न उनका मन।

वे—विरक्त नहीं थे। राजयोगी थे। माया म रहकर मायारहित थे। शरीर के प्रति शरीर धर्म के प्रति उनकी उपेक्षा-भावना कभी नहीं रही। उनका शरीर रथ था। उनकी आत्मा रथी थी। दोनो एक-दूसरे के पूरक थे। वे योगासन करते थे। मृत्यु के दो वष पूव तक करते रहे। उनकी स्फूर्ति का उनके अथक परिश्रम का यही रहस्य था। व्यायाम से शरीर कठोर होता है। किन्तु आसन से शरीर म लचक आती है। शरीर सन्तुलित रहता है। अध्यात्म अनायास अपना पुट देता रहता है। अतएव वे कमानो की तरह उछलते चलते थे। अगो म सजीवता लिये चलते थे। बाल-सुलभ चचलता के साथ उनम मानसिक गम्भीरता का प्राबल्य रहता था।

धन से मोह नहीं

वे—असग्रही थे। उन्होंने अपने लिए धन सचय नही किया। धन के लिए उत्साहित नही हुए। अपने लिए, अपने कुटुम्ब के लिए कोई जायदाद नही बनाई। पिता की छोडी विरासत उनकी सम्पत्ति रह गई। प्रधानमन्त्री द्वारा प्राप्त वेतन में कठिनता से कट-कटाकर पन्द्रह सौ रुपया मासिक मिलता था। व हाथ दबाकर खर्च करते थे। उनकी आवश्यकताएँ साधारण थी। उनका खान-पान सादा था। उनकी पुस्तकों से जो आय होती थी वह प्राय दान और दैनिक खर्च में व्यय हो जाती थी। निजी और सरकारी व्यय को एक-दूसरे से कोसों दूर रखते थे। उनसे बढ़कर असग्रही उनकी जैसी स्थिति के लोग विश्व में कम हुए हैं। उन्होंने पद का दुरुपयोग नहीं किया। उसे स्वार्थ-साधन का जरिया नहीं बनाया। उनकी यह नैसर्गिक त्यागवृत्ति उनकी महान शक्ति की सुदृढ़ आधारशिला थी। उनके प्रति जनता के अतुलनीय

विश्वास का एकमात्र रहस्य था।

वे—सुर थे। असुर शरीर को आत्मा मानते थे। सुर शरीर और आत्मा में भेद मानते थे। आर्यों में व्याप्त इस मौलिक मत-विभिन्नता के कारण दो वर्ग बन गए। उसी तरह बन गए जैसे आज विश्व में लोकतन्त्रीय तथा साम्यवादी गुट हैं। हिन्दुस्तान के बजाज जैसे पाकिस्तान और हिन्दुस्तान में सम्कृति के नाम पर विभक्त हो गए। असुर हो गए वामपन्थी। सुर बन गए दक्षिणपन्थी। अहुर शब्द हो गया असुर का अपभ्रंश। अहुरमज्द अर्थात् महाअसुर हो गए पारसियों के भगवान। फिर भी उनका स्थान एक ही है। उनका वंश था एक ही।

वे—एकाकार हुए। आत्मा ने काया को नमस्कार किया। काया के रूप का सर्वथा विघटित करने के लिए चिता अन्तिम संस्कार निमित्त अग्नि, जल, भूमि तथा आकाश चार साधनों का आश्रय लिया जाता रहा है। हिन्दू, जापानी, बौद्ध अग्निदाह करते हैं। महार्णव में जहाजों पर मृतकों तथा भूमि पर सन्यासियों का जलप्रवाह किया जाता है। ईसाई तथा मुसलमान भूमि में समाधि लेते हैं। आर्यों की ही सन्तान पारसी शव को आकाश के नीचे पक्षियों के खाने के लिए छोड़ देते हैं। उनके पार्थिव शरीर का अन्तिम संस्कार इसी एकाकार का प्रतीक था।

वे—हिन्दुस्तान थे। उन्होंने चारों संस्कारों को स्वीकार किया। अग्नि-संस्कार द्वारा पुरातन वैदिक मर्यादा का पालन किया। गंगाजल में अस्थि प्रवाह कराकर सन्यासी-धर्म का पालन किया। आकाश में भस्म उड़ाकर आकाश संस्कार का पालन किया। भारत भूमि के कण कण में मिलकर भारत भूमिमय होकर उन्होंने भूमि-संस्कारों का पालन किया।

वे—जनता के थे। जनता उनकी थी। जनता में रहे। जनता की श्रद्धा के बीच पले। वे भस्म श्यामल भारतभूमि को अपनी श्यामल भस्म द्वारा शस्य-श्यामल करने चले। 'योसावसौ पुरुष सो-ऽहमस्मि'—श्रुति वाक्य के सदर्भ में कहूँगा—वे यही थे—जो वे थे। आइए उनका मानसिक तर्पण अपनी अजस्र स्नेहधारा से करें।

बीमारी पर एक दृष्टि



काया मिट्टी है। मिट्टी से उत्पन्न वस्तुएँ उसे रचती हैं। बढ़ाती हैं। उसमें विकार उत्पन्न करती हैं और फिर मिट्टी से उत्पन्न वस्तुएँ विकार का उपचार करती हैं। उन्हें औषधि कहते हैं। बातें विचित्र लगती हैं। मिट्टी से बना मनुष्य मिट्टी से बनी चीज खाने लगता है। उनका भोग करता है।

काया गोरी हो या काली, सुन्दर हो या कुरूप, वनस्पतियाँ भेद भाव बिना उस पर एक जैसा असर करती हैं। यह समदृष्टि मनुष्य नहीं सीख सका। किन्तु वनस्पतियाँ औषधि रूप में उन्हें समझ चुकी हैं। उनमें भेद नहीं है। परन्तु हमने उनमें भेद उत्पन्न कर दिया है। आयुर्वेदिक, यूनानी, एलोपथी, होमियोपथी, बायकेमिक, प्राकृतिक आदि वर्गों में उन्हें बाँटकर अपने लिए वर्ग-संघर्ष पैदा कर लिया है। काया-रोग के निदान में, उसके उपचार में इस वर्ग-संघर्ष ने विशेष भाग लिया है। इस वर्ग-संघर्ष का मनुष्य शिकार बनता रहा है।

कुछ ऐसी बातें पं० जवाहरलालजी के साथ भी हुईं। वह कहा करते थे— 'मैं पाश्चात्य विचारों से प्रभावित हूँ, प्राच्य मूल से चिपटा हूँ। शताब्दियों पुराना संस्कार ब्राह्मण भावना को कभी जगा देता है।' मेरा संस्कार काशी का पुरातन संस्कार था। वह मुझे उसी तरह नहीं छोड़ सका जैसे पं० जवाहरलाल को प्रतीच्य विचार।

उनके लिए काशी सन्तों की नगरी होने पर भी विश्व की आदर्श नगरी नहीं थी। और मेरे लिए काशी के कंकड़ शंकर के समान थे। पंडितजी हिन्दू थे। उन्हें हिन्दू विचारों से प्रेम था। भगवद्गीता पढ़ते थे। महात्माजी के कारण उनमें वह संस्कार उत्पन्न हो गया था जिसे भारतीय संस्कार कहते हैं। उनका यह संस्कार अन्तिम काल तक बना रहा। उनकी वाणी अचानक २७ मई को लगभग ७ बजे लोप हो गई अन्यथा अपने पिता प० मोतीलाल जी की तरह अपनी अन्तिम सांस के साथ राम नाम अथवा गायत्री मन्त्र का उच्चारण करते। अपनी स्वास क्रिया को नमस्कार करते।

रोग का प्रथम संकेत

बात मैंने बाबा की उठाई थी। भुवनेश्वर जाने के पूर्व संसद-भवन के केन्द्रीय कक्ष में कांग्रेस दल की बैठक थी। पंडितजी कहीं से हवाई जहाज द्वारा सीधे आए थे। मैं उनके बाएँ बगल में हमेशा बैठता था। उन्होंने कहा कान में रुई फंस गई है। मैंने कान देखा उसमें रुई नहीं थी। मैंने दियासलाई की एक तीली निकालकर उनके कान में डाली। रुई कहीं थी नहीं। उसमें से कुछ खूंट अवश्य निकला। मैंने सींक से रुई लपेटकर उन्हें पकड़ाकर कहा 'अपने हाथ से निकालिए। वह निकालने लगे। सभा की कार्यवाही होती रही। अन्त तक उन्हें शक था। कान में कुछ फंसा था। वह भारी मालूम पड़ता था। वह उनकी बीमारी का आरम्भ था। इसका प्रमाण मुझे आयुर्वेद में मिला।

एक दिन उनकी बहन विजयलक्ष्मी पण्डित संसद में मुझसे कहने लगीं कान बन्द हो गया है। अकस्मात् मुझे पण्डितजी की बात याद आई। मैंने पूछा आपने हवाई जहाज में यात्रा की है। उन्होंने कहा—हाँ। मैंने पुनः पूछा क्या झकोटा था। उन्होंने उत्तर दिया हाँ। उन्होंने अपना कान बड़े डाक्टरों से साफ कराया परन्तु लाभ नहीं हुआ। मैंने पुनः पूछा आपको ब्लडप्रेसर तो नहीं है। उन्होंने कहा—हाँ। मैंने कहा झकोटा पर खासकर ब्लडप्रेसर की अवस्था में यही होता है। पण्डित

औ मो यही अकोटा पर पहुन स हो गया था ।

भुवनेश्वर में नेहरूजी की बीमारी क सम्बन्ध म विभिन्न समाचार मिलते रहे। भुवनेश्वर की उन्होंने हवाई जहाज तथा हलीकाप्टर से यात्रा की थी। कांग्रेस महासमिति का अधिवेशन जिस दिन आरम्भ हुआ उस दिन वह अधिवेशन म सम्मिलित हुए। मैंने उस दिन उन्हें कुछ थका हुआ देखा। आँखें कुछ भारी मालूम हुईं। प्रात काल उनकी बीमारी का समाचार मिला। क्या बीमारी थी किसी को कुछ बताया नहीं गया। उन्ह कोई देख नहीं सकता था। श्री मुरारजी देसाई से बातें हुईं। उन्होंने उन्हें देखा था। पण्डितजी स्वत उठ नहीं सकते थे। उनकी बाइ आँख तथा मुख पर शिथिलता का लक्षण था। वह उठ कर चल नहीं सकते थे। उनकी बीमारी के सम्बन्ध में अनेक धारणाए बना ली गई थी। मैंने उनसे दिल्ली मे पूछा कि किस प्रकार भुवनेश्वर में उन पर बीमारी का आक्रमण हुआ था। उन्होंने बताया मैं रात म सोया था। प्रातःकाल उठने लगा तो मुझसे उठा नहीं गया। कमजोरी मालूम होने लगी। बाइ ओर शिथिलता का अनुभव हुआ।

मैंने पण्डितजी को काशी के वैद्यों को दिखाया था। वैद्यों ने उन डाक्टरों की प्रशंसा की थी जिन्होंने उनका उपचार भुवनेश्वर म किया था। यदि भुवनेश्वर मे उनका उपचार ठीक नहीं हुआ होता तो वह संभवत दिल्ली लौट नहीं सकते थे।

दिल्ली में आने पर उनसे सबका मिलना बन्द कर दिया गया। मैं उनसे ५ फरवरी १९६४ को मिला। प्रश्न था। उनकी अनुपस्थिति में कांग्रेस संसदीय दल की दो उपनेताओ मे से कौन अध्यक्षता करेगा। साथ ही कुछ राजनीतिक मामलों पर विचार विमर्श करना था। मैंने उनसे कहा आयुर्वेद के अनुसार औषधि लेनी चाहिए। वृद्धावस्था में शरीर पर प्रयोग करना ठीक नहीं है। अनुभूत औषधियों का सेवन श्रेयस्कर होगा। भारत के सभी वैद्य तथा डाक्टर उनकी सेवा के लिए तत्पर थे। उन्हें सभी कुछ प्राप्त था। मेरा सुझाव कुछ उन्हें हलका मालूम होगा एसा मैंने विचार किया। परन्तु उचित बात कहन

में हिचक नहीं होनी चाहिए। अतएव उनसे कहा काशी के वैद्य की औषधि आपको करनी चाहिए। कुछ देर तक वह सोचते रहे। मैंने काशी के सत्यनारायण शास्त्री का नाम लिया। पंडितजी ने कहा कि वे वृद्ध हो गए हैं। उन्हें कष्ट देना उचित न होगा। बात चलते चलते समाप्त हो गई।

उन्होंने मुझसे पूछा कि उन्हें हुआ क्या है। मैंने उत्तर दिया कि वामांग शिथिल हो गया है। उनसे कहना कि पक्षाघात का आक्रमण हुआ है मैंने उचित नहीं समझा। वह मुस्कराकर बोले—मैं बीमार नहीं हूँ। मैंने कहा 'इस रोग में ग्रस्त मरीज अपने को बीमार नहीं मानता। यह भी शास्त्रों में कहा गया है। उन्होंने कहा अच्छा देखा जाएगा।

आगामी ६ फरवरी को उनके निवासस्थान पर कांग्रेस दल की बैठक रखी गई थी। मैंने हँसकर कहा आप भुवनेश्वर के आक्रमण से बच गए। यदि संसद भवन में आप आते तो हम सदस्यों के लिए मिठाई और जलपान का प्रबंध करते। उन्होंने मुस्कराकर कहा—'प्रबन्ध हो जाएगा। कितने लोग होंगे? मैंने कहा, ५२७ सदस्य हैं। प्रधानमंत्री भवन पर बैठक हुई और मिठाई तथा चाय सदस्यों को मिली। उस दिन उनके नेत्रों को देखकर मुझे मृत्यु का पूर्व लक्षण जान पड़ा। मैं कुछ घबराया।

मैंने काशी के वैद्य श्री राजेश्वरदत्त शास्त्री तथा श्री शिवकुमार शास्त्री से सम्पर्क स्थापित किया। श्री सत्यनारायण शास्त्री दिल्ली आने के लिए उद्यत नहीं हुए। उनके पास स्वर्गीय महामना प० मदन-मोहन मालवीय के पौत्र तथा स्व० गोविन्द मालवीय के पुत्र श्री गिरिधर मालवीय को भेजा। उन्होंने कहा कि यदि प० जवाहरलाल-जी काशी आएँ अथवा कहीं जाते समय बनारस के हवाई अड्डे पर आ जाएँ तो वह जाकर देख सकते थे। यह संभव न था। मैं स्वयं सत्य-नारायण शास्त्री के यहाँ गया। उनसे दिल्ली चलने के लिए निवेदन किया। किन्तु वह काशी से बाहर आने के लिए उद्यत न हो सके। अत

एव श्री सत्यनारायण शास्त्री को दिल्ली लिवा जाने का विचार त्यागना पड़ा।

वैद्यों की सलाह

फरवरी १० को संसद का उद्घाटन था। पंडितजी आये। वह पैर घिसराकर चल रहे थे। मुझे बड़ा दुःख हुआ। मैंने काशी के श्री राजेश्वर शास्त्री जी से पूछा इस बीमारी में पथ्य क्या दिया जाता है? श्री राजेश्वर शास्त्री ने आत्मीयता का परिचय दिया। कुछ अध्ययन के पश्चात् भटा का भरता, सहिजन तथा जंगली कबूतर का शोरवा खाने के लिए राय दी। चैत्र मास में भंटा अर्थात् बैंगन खाना वर्जित कहा गया है। यह प्रश्न उठा। किन्तु बैंगन को संस्कृत में वार्तिगन कहा गया है। वह वात-नाशक है। भुन जाने पर उसका दोष मिट जाता है। पक्षाघात में वह उपयोगी सिद्ध होता है।

बैंगन वायु का शमन करता है और पित्त को बढ़ाता है। पक्षाघात का सम्बन्ध वायु से है। उसमें मन्दाग्नि हो जाना स्वाभाविक हो जाता है। पित्त का प्रकोप न हो तथा भोजन पचता जाए इसकी विशेष आवश्यकता थी।

मैंने श्रीमती इन्दिरा गांधी को पत्र लिखा। कम से कम उक्त चीजें भी भोजन में सम्मिलित करनी चाहिए। उत्तर मिला डाक्टर लोगों के सुझाव पर काम हो रहा। वे ही निश्चय करेंगे। मुझे कुछ अच्छा न लगा।

मैं नेहरूजी से पुनः मिला। उनसे कहा। पथ्य आयुर्वेद के अनुसार लेना अच्छा होगा। एलोपैथी में पथ्य पर कोई जोर नहीं देता। उन्होंने कहा 'बटेर' का शोरवा खाने के लिए बताया गया है। मैंने कहा बटेर भी पक्षी है, परन्तु जंगली काला कबूतर उससे श्रेष्ठ होगा। आपको क्या आपत्ति है। यदि आप वैद्यों को दिखाए। उन्होंने कहा *'यदि दिखा भी दिया गया तो उसके बाद क्या होगा?'* मैंने कहा 'आप दवा मत लीजिए। दिखाने में क्या हर्ज है?' उन्हें कुछ

सकोच मालूम हुआ। दिखाने में वाद दवा म करने का विचार सम्भवत उन्हें अच्छा नही लगता था।

काशी विश्वविद्यालय की अर्थसमिति की बैठक १८ फरवरी को दिल्ली में थी। मै उसका सदस्य था। बैठक मे विश्वविद्यालय के कुलपति श्री भगवती, रजिस्टार श्री दर तथा कोपाध्यक्ष बाबू ज्योति भूषण जी आये थे। मैंने उन लोगो से सलाह ली। किन वैद्यो को पण्डितजी को दिखाने के लिए बुलाया जाए। विचार विमर्श के पश्चात् निश्चय किया गया। राजेश्वर दत्त शास्त्री और शिवकुमार शास्त्री को बुलाना उचित होगा।

श्री गिरिधर मालवीय प्रारम्भ से ही पक्ष में थे। शिवकुमार शास्त्री को दिखाया जाए। क्योंकि इस परिवार द्वारा शताब्दियों से पक्षाघात तथा वायुरोग का इलाज होता रहा है। उनकी प्रसिद्धि भी इस विषय में है। मैंने उन्हें इलाहाबाद फोन किया। शिवकुमार शास्त्री को लेकर दिल्ली आने के लिए तैयार रहें। श्री दर रजिस्टार से कहा। वह फान पाते ही तुरन्त हवाई जहाज या ट्रेन से श्री राजेश्वर शास्त्री को रवाना कर दें।

फरवरी २३ प्रातःकाल ८.३० बजे का समय मैंने वैद्यों के लिए पण्डितजी से निश्चय कर लिया। यह भी कह दिया। नाड़ी दिखाने के पूर्व कुछ खाऐं नहीं। पण्डितजी ने केवल बिना दूध की चाय का एक प्याला पिया। बैठ रहे। मैं सवश्री राजेश्वर शास्त्री, शिवकुमार शास्त्री गिरिधर मालवीय के साथ पण्डितजी के यहाँ पहुँचा। मैंने वैद्यो से कह दिया था। वे पण्डितजी को दवा खाने पर जोर न दें। उन्हें केवल देखकर अपनी राय दे दें।

आयुर्वेदिक उपचार

पण्डितजी को ४० मिनट तक देखा गया। आयुर्वेद के श्लोकों के पठन के पश्चात प्रत्येक पंक्ति का अनुवाद उन्हें बताया जाता था। वहाँ पर हम लोगो के अतिरिक्त और कोई नहीं था। रोग के आक्रमण का तात्कालिक कारण आयुर्वेद के अनुसार द्रुतगामी यान की सवारी

तथा उसके कारण पक्षा प्रभाव था। यह बात कुछ जँचती है। प्रथम बार कान में जो सेनसेशन' हुआ वह वायुयान-यात्रा के पश्चात् हुआ। द्वितीय बार भुवनेश्वर में—वायुयान—हेलीकाप्टर की यात्रा के पश्चात् हुआ। और अन्तिम (तृतीय) बार देहरादून से आते समय हेलीकाप्टर और वायुयान के पश्चात् हुआ। शरीर कब क्या सहन कर सकता है कहना कठिन है। उसका निम्नलिखित नुस्खा लिखा गया—

निदान —वात क्षोणित पित्त—व्याकुल वामांग लघुता शिरोरुजा जुष्ट वृक्कोपसर्गामय ॥

औषधि—१—रसायन योगराज गुग्गुल २ वटी १ माशा=२ माशा। २—प्रात रास्नासप्तक क्वाथ २ तोला साथ दूध के साथ। ३—अश्वगन्धारिष्ट बड़े चम्मच पर जल के साथ दोनो समय भोजन के पश्चात्। ४—महानारायण तेल अथवा महामाष तैल की मालिश पूरे शरीर में प्रतिदिन एक बार। ५—सेंकने की दवा प्रसारिणी की पत्ती मेवड़ी की पत्ती वेवेद चीना सब्जा नमक तथा महुवा की पत्ती अथवा महुवा प्रत्येक एक तोला।

६ किलो जल मे पाक करके साढ़े चार किलो रह जान पर कपड़ा उसमें भिगो और निचोड़कर अग सेंकना। प्रतिदिन प्रात काल पन्द्रह मिनट।

रास्ना क्वाथ का नुस्खा निम्नलिखित है

गुड़ची (गिलोय) अमलतास का गूदा, देवदारु एरण्डमूल तथा पुनर्नवा प्रत्येक ३ माशा।

मेवड़ी का सस्कृत नाम निगुण्ठी है। अवधी भाषा में समालू या सिधवार कहा जाता है। इसे निसिधा भी कहते हैं।

प्रसारिणी का लौकिक हिन्दी भाषा में परसन और बंगला भाषा में गन्धाली कहा जाता है।

साथ ही साथ पथ्य बता दिया गया। क्या भोजन करना चाहिए। भोजन में भात दाल दही आलू वर्जित किया गया। यदि भात खाने की इच्छा हो तो लाल अथवा साठी का चावल खाने को बताया गया।

समाचार एजेंसियों ने अखबारों में समाचार भेजा वैद्य ने नेहरूजी को देखा और अपना अभिमत प्रकट किया है। उन्होंने उपचार करने वाले डाक्टरों की तारीफ की है। समाचार भेज दिया गया। रात १० बजे करीब समाचार एजेंसियों को प्रधानमन्त्री भवन से आदेश दिया गया वे समाचार रद्द कर दें। यह समाचार न छापा जाए। पूछने पर बताया गया वैद्य लोग अपना महत्त्व बढ़ाने के लिए यहाँ आये थे।

किन्तु विदेशी समाचार एजेंसियाँ समाचार बाहर भेज चुकी थीं। सायंकाल प्रकाशित होने वाले पत्रों में समाचार छप चुका था। प्रातःकालीन पत्रों में समाचार नहीं छपा। वैद्यों के प्रति यह व्यवहार ठीक नहीं हुआ।

नेहरूजी के यहाँ से नुस्खा डाक्टरों के यहाँ भेजा गया। मैंने इस सबंध में और जिज्ञासा करनी छोड़ दी। मुझे अच्छा नहीं लगा। पाश्चात्य सभ्यता और विचारों का चश्मा लगाए लोगों को साधारण धोती कुरता पहना व्यक्ति बुद्धू लगता है। मेरी यही हालत हुई उनकी दृष्टि में जो पण्डितजी को घेरे रहते थे।

पण्डितजी ने एक दिन मुझसे कहा पथ्य लेना आरम्भ कर दिया है, कुछ लाभ है। यदि तेल मिल जाए तो मालिश कराऊं।

मैं काशी गया। महानारायण तेल में ४६ पशुओं का मांस पड़ता है। महामास में एक पशु का मांस पड़ता है। नारायण तेल निरामिष होता है। नारायण तेल सेंक की दवा पीने का काढ़ा तथा उनमें पड़ने वाली सब औषधियों के अंग्रेजी नाम लिखकर साथ लाया। पण्डितजी को दिया। मालिश का तेल नेहरूजी ने लगाना आरम्भ कर दिया। सेंक की दवा में प्रसारिणी की पत्ती नहीं थी। दिल्ली में यह हरी मिल जाएगी अतएव वह सम्मिलित नहीं की गई थी।

महानारायण तेल पण्डितजी ने लगाना पसन्द नहीं किया। सात दिन पश्चात् पण्डितजी ने कहा—'तेल से आराम मालूम होता है सेंक की दवा भी करना चाहता हूँ।'

मुझे अच्छी तरह याद है। उस दिन कांग्रेस संसदीय दल की बैठक थी। मैं पण्डितजी को बाहर पहुँचाने सर्वदा जाता था। वे किस फाटक से आ जाएँगे निश्चित नहीं रहता था। बैठक दोनों सदनों के उठने के पश्चात् होती थी। स्पीकर ने पुरानी परम्परा डाल रखी थी। सदनों के होते समय कोई बैठक नहीं हो सकती था। सेण्ट्रल हाल लोकसभा तथा राज्यसभा के मध्य में पड़ता था। सेण्ट्रल हाल में लाउडस्पीकर बोलने से संसद के काम में विघ्न पड़ता था। साथ ही साथ कोरम की समस्या खड़ी हो जाती थी। लोग बैठक में आ जाते थे। सदन प्रायः खाली हो जाता था। मैं पण्डितजी को पहुँचाने गेट नम्बर एक पर आया। वे मोटर में बैठते हुए पुनः बोले—'याद है?' मैंने नमस्कार करते हुए कहा—'कल तक आ जायगी।' पण्डितजी ने मुस्कराते हुए कहा—'अच्छा।' मोटर चल दी। मैं कुछ गम्भीर हो गया। कमरा नम्बर २४ में पचीसों पत्रकार बैठे थे। उन्हें संसदीय दल की कार्यवाही का ब्रीफ देने लगा।

मैंने काशी विश्वविद्यालय से 'प्रसारिणी' की पत्ती वायुयान से मँगा दी। पानी में उबाल कर सेंक आरम्भ कर दिया गया।

पण्डितजी को आराम

एक सप्ताह के पश्चात् पण्डितजी ने कहा—'बहुत आराम है।' बाहरी शरीर उनका अच्छा लगने लगा। खाने की दवा वह नहीं लेना चाहते थे। मैंने भी उस पर जोर नहीं दिया।

श्री राजेश्वर दत्त शास्त्री ने काशी से लिखा कि प्रसारिणी की हरी पत्ती की पकौड़ी खाई जाए तो अच्छा होगा। पण्डितजी से पूछा। उन्होंने मँगाने के लिए कहा। मैं वायुयान से काशी जाकर स्वयं पत्ती लाया। उनके यहाँ भेज दी। प्रश्न उपस्थित हुआ। तेल लगाने के पश्चात् सेंक किया जाए अथवा सेंक के पश्चात् तेल की मालिश की जाए। प्रमाण खोजा जाने लगा। श्री राजेश्वर शास्त्री ने चक्रदत्त के आधार पर प्रमाण लिख भेजा। इस बीमारी में तेल की मालिश के पश्चात्

सेंक करना चाहिए। आश्चर्य हुआ। आयुर्वेद शास्त्री जिसने विस्तार में जाकर सब कुछ लिख गए थे। पण्डितजी को एक पत्र लिख दिया। रेफ्रिजिरेटर में पत्ती रख दी जाए। ताकि हरी रहे। तीन दिन बाद पण्डितजी से भेंट हुई। उन्होंने कहा—'तुम्हारा पत्र प्राप्त मिला है। उसे डाक्टरों के यहाँ औषध के लिए भेज दिया गया है।

मुझे यह कुछ अच्छा नहीं लगा। उनसे इतना ही कहा—'यदि आप औषधि खाएं तो अच्छा है। मुझे मालूम था। उनका गुर्दा ठीक से काम नहीं करता था। हृदय की महाधमनी का भी काम ठीक नहीं था। एक बार विचार हुआ था। एक कृत्रिम हृदय के द्वारा उनके हृदय का आपरेशन कर महाधमनी ठीक की जाए। परन्तु विशेषज्ञों की मुख्यतः अमेरिकन डाक्टरों की राय शायद थी कि सफलता के चान्स ६० तथा ४० प्रतिशत हैं। खतरा देखकर विचार त्याग दिया गया। आयुर्वेद शास्त्र पूर्ण होने पर भी मैंने उलझनों के कारण स्नान की औषधि पर जोर देने का विचार त्याग दिया।

बम्बई जाने के पूर्व नेहरूजी ने कहा सेंक की दवा खतम हो गई है। उसे और तेल लेते आना। मैं बम्बई से लौटकर काशी गया। श्री राजेश्वर शास्त्री ने महामांस तेल बना दिया था। मैंने उसे नेहरूजी को भिजवा दिया।

देहरादून जाने के दो दिन पूर्व सम्भवतः २१ मई को मैं सेंक की दवा लेकर उनके पास गया। उनसे अन्तिम भेंट की। सेंक की दवा उन्हें दी। स्वास्थ्य की बात चली। मैंने उनसे कहा—कम से कम सात दिन आपको आयुर्वेदिक औषधि खानी चाहिए। उन्होंने कहा—'ठीक है। लेकिन उन्हें पहले डाक्टर लोग जाँचेंगे। मैंने कहा—'औषधियाँ शास्त्रीय हैं। आपके शरीर पर प्रयोग नहीं होना चाहिए। अनुभूत औषधियों का प्रयोग ही उत्तम रहेगा। उन्होंने कहा। देहरादून में वह मालिश तथा सेंक नहीं करायेंगे। लेकिन जाते समय लेते गए। वहाँ पर भी सेंक तथा मालिश चलता रहा। जुलाई में कामनवेल्थ कान्फ्रेंस में जाएंगे।

मैंने उनसे निवेदन किया एक मोसम तेल मालिश' शिवकुमार शास्त्री के स्वर्गीय पिता महामना स्वर्गीय श्री मदनमोहन मालवीयजी के दामाद श्री रामशंकर का तैयार किया रखा है। उसे मैं लेता आऊंगा। आपको २७ मई को संसदीय कांग्रेस दल की कार्यकारिणी में दे दूंगा। निश्चय हो चुका था। संसदीय दल की बैठक २७ मई को होगी।

जीवन का अन्त

२७ मई को प्रात ९ बजे नन्दाजी ने फोन किया कि पण्डितजी बीमार हैं। वह बैठक में नहीं भाग ले सकेंगे। मैं तेल लेकर पार्लियामेंट आया। वह रखा ही रह गया। २ बजे उनका अवसान हो गया। देहान्त का तात्कालिक कारण पक्षाघात का आक्रमण नहीं था। उसे रोकने में आयुर्वेदिक उपचार समर्थ हुआ था। उनमें शक्ति आ गई थी। काम करने लगे थे। हृदय की दवा गुर्दे की दवा तथा किसी प्रकार की खाने की दवा अपने डाक्टरों के सुझाव पर अन्त तक न ले सके।

लगभग ४ मास पश्चात् संसद सदस्य प्रकाशवीर शास्त्रीजी के पिता का पक्षाघात का आक्रमण वामांग पर हुआ। बात चली। मुझे मालूम हुआ। तेल और काढ़ा संसद भवन में कांग्रेस संसदीय दल के कार्यालय कमरा न० २५ में रखा था। मैंने प्रकाशवीर को सब उठाकर दे दिया। निःसन्देह उनके पिताजी को विशेष लाभ हुआ।



वह कालरात्रि - -

वे देहरादून से लौटे। प्रसन्न थे। उनमें स्फूर्ति थी। हेलीकाप्टर से सरसावा हवाई अड्डे पहुँचे। एकत्रित लोगों से खूब प्रसन्नता-पूर्वक हाथ मिलाया। कभी-कभी विनोद-भरे शब्द तथा मुस्कान के साथ दो-दो बार लोगों से हाथ मिलाया। ७ बजे पालम हवाई अड्डे नयी दिल्ली पर उनका वायुयान उतरा। उत्फुल्ल-नयन उनका शुभ्र शरीर हवाई जहाज पर दिखाई दिया। परिचित झाँकी थी। शत-शत लोचनों ने देखा—जीवन में नवीन चेतना। किसी ने कल्पना नहीं की। निर्वाण-पूर्व दीपशिखा की अंतिम ज्योति का वह आलोक था।

वे ठीक सवा आठ बजे सायंकाल प्रधानमन्त्री-भवन तीन मूर्ति पहुँचे। ऊपरी मंजिल में अपने दफ्तर में जाकर बैठ गये। वहाँ उन्होंने आवश्यक लिखने-पढ़ने का काम निपटाया। अपने स्टेनोग्राफर को पत्रादि लिखाये। फाइलों पर आदेश दिये।

दफ्तर से उठकर सोने के कमरे में गये। वहीं बिस्तरे पर लेट गये। वे निवाड़ के पलंग पर नहीं सोते थे। मसहरी नहीं लगाते थे। निवाड़ या मूँज की खाट पर लकड़ी का तख्ता जड़ा था। ऊपर से देखने में खाट या चारपाई मालूम होती थी। वास्तव में थी चौकी। उस पर दो गद्दे बिछे थे। उन्हें कुछ आराम मिला। कुछ समय पश्चात् उठे।

लगभग ६ बजे रात्रि को भोजन किया। पण्डितजी का भोजन

अत्यन्त साधारण होता था। व रात्रि में वैद्यों द्वारा बताए जांगल पक्षी का शोरवा कभी-कभी चिकन या मछली उबली तरकारी फल तथा पाव रोटी का एक टुकड़ा खाते थे। उस दिन भोजन के समय इंदिरा जी साथ थीं। उन्होंने अपने मासी सजय के पत्रादि के विषय में जिज्ञासा प्रकट की। बड़ी प्रसन्न मुद्रा में थे। इधर-उधर की बातें खाते समय करते रहे।

लगभग साढ़े नौ बजे अपने सोने के कमरे में लौट आये। कपड़े उतार दिये। रात्रि मे ढीली मोहरी का पाजामा तथा कुरता पहना। रात्रिकाल का उनका यही पहनावा था। उसे ही पहने सो जाते थे। उस दिन हल्का भूरे रग का पाजामा तथा कुरता पहने थे। यह वस्त्र उनके अंतिम श्वास तक उनकी मिथ्या काया पर काया की मिथ्या कहानी कहने और सुनने के लिए, जड़वत् शरीर पर पड़ा रहा।

उन्होंने पर्सनल असिस्टेन्ट श्री एम० वी० राजन (केरल निवासी) को बुलाया। आवश्यक डिक्टेशन देने लगे। पण्डितजी साढ़े ग्यारह बजे रात्रि तक लिखा-पढ़ी करते रहे। पत्रों पर हस्ताक्षर किये। किस कागज पर उन्होंने अन्तिम हस्ताक्षर किये—मैंने जानना चाहा। किन्तु 'आफिशियल सिक्रेट' के कारण श्री राजन ने मुझे बताने में असमर्थता प्रकट की। प्रातःकाल हस्ताक्षर करने के लिए कोई कागज शेष नहीं रह गया था।

नत्थू सेवक

प्रिय सेवक नत्थू पण्डितजी का खिदमतगार है। छुटपन से उनके यहाँ रहा है। वहीं पलकर बड़ा हुआ है। उनके जीवन से हिल मिल गया था। उसके पिता कृष्णचन्द्र शरणार्थी हैं। वे लाल कुर्ती बाजार, ज्ञानचन्द रोड रावलपिण्डी शहर के निवासी थे। विभाजन के कारण वे पाकिस्तान से भारत आये। पण्डितजी की सेवा में लग गये। आज भी जीवित हैं। नत्थू उन्हीं का पुत्र है। पाकिस्तान से आने के समय नत्थू की आयु १६ वर्ष की थी। आज वह ३२ वर्ष का युवक है। हँसमुख है। प्रसन्न वदन है। गठा शरीर है। साफ बात करता है।

पण्डितजी के विषय में बातें करने में उसे रस मिलता है। युवक-जन्य श्रद्धामय भावुकता से प्रफुल्लित हो जाता है।

आज भी प्रधानमन्त्री भवन में आने वाले दर्शनार्थियों को पण्डित जी से सम्बन्धित बातें बताता थकता नहीं। पण्डितजी के विषय में वह जितना जानता है शायद दूसरा आज कोई नहीं जानता। वह सन् १९६१ से निरन्तर पण्डितजी के साथ रहता था। उनकी सेवा करता था। उनकी आदतों, उनकी आवश्यकताओं से परिचित था। अतएव कहीं भी पण्डितजी जाते थे या रहते थे तो वह छाया-तुल्य उनके साथ लगा रहता था। नत्थू कभी पण्डितजी से अलग नहीं हुआ।

इस लेख के लिए मैंने प्रायः उन सभी लोगों से पूछा है जो २७ मई अर्थात् मृत्यु के दिन प्रधानमन्त्री भवन में प्रातःकाल से उनके मृत्युकाल तक रहे। मैं डाक्टरों, सम्बन्धियों मित्रों मन्त्रियों सबसे मिला। सब लोग अपने सम्बन्ध में विशेष जोर देकर कहते थे। आत्मश्लाघा का यह दुर्बलता प्राय मनुष्यों में देखी जाती है। लोगों को बातें भूल गई हैं। कुछ मनगढ़त गाथा कहने लगे। नत्थू तथा डाक्टर बेदी को सब बातें याद हैं। उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक, जो जानते थे निस्संकोच बताया।

तेल की मालिश

रात्रि में दैनिक कार्यों से निवृत्ति पा लेने पर पण्डितजी की आयुर्वेदिक दवा का उपचार आरम्भ होता था। उस दिन आयुर्वेदिक तेल की मालिश लगभग ११ बजकर ३० मिनट पर नत्थू ने आरम्भ की। यह मालिश बायें पैर के अंगूठे से जांघ के नीचे तथा पैर के गिट्ठे के कुछ ऊपर तक नत्थू नियमित रूप से करता था। मालिश महामास तेल की होती थी। उस में पण्डितजी के लिए विशेष रूप से बनवा कर काशी से लाया था।

लगभग ११ बजकर ४५ मिनट पर गरम पानी का आयुर्वेदिक सेंक नत्थू ने करना आरम्भ किया। आयुर्वेदिक सेंक की २० पुड़ियाँ

मैं माधी से पण्डितजी के देहरादून जाने के एक दिन पूर्व आया था। उन्हें व देहरादून साथ लेते गये थे। नत्थू ने मुझसे खूब भाव से कहा देहरादून में पण्डितजी ने मालिश नहीं कराई। परन्तु सेंक कराया करते थे। आयुर्वेदिक काढ़ा गरम पानी में पकाया जाता था। नत्थू मालिश करने के पश्चात् जब तक पानी ठण्डा नहीं होता था तब तक पानी में कपड़ा डालकर फिर निचोड़कर बाएँ पैर को वहाँ तक सेंकता था जहाँ तक मालिश की जाती थी। उनका बाँया पैर शिथिल हो गया था। सेंक का काम लगभग १२ बजे रात्रि में नत्थू ने समाप्त किया।

पैर के सेंक के पश्चात् रात्रि १२ बजे नत्थू ने पण्डितजी के सिर पर बादाम रोगन लगाना आरम्भ किया। पण्डितजी प्रतिदिन शयन के पूर्व सिर पर बादाम रोगन लगभग १५ या २० मिनट तक लगवाते थे। *यह प्रक्रिया २६ मई बीत जाने पर २७ मई की कालरात्रि के* लगते ही आरम्भ हुई थी। सिर पर तेल लगाने के पश्चात् पण्डितजी सोने जाते थे। जिस कमरे में सोते थे उसके बगीचे वाले अर्थात् दक्षिण वाले बरामदे में गरमी तथा बरसात भर सोते थे खुली हवा में।

सिर पर तेल लगाने के पश्चात् पण्डितजी बैठे सोचते रहे। बाहर नील गगन में झिलमिलाते नक्षत्रों को तारों को ग्रहों को देखते रहे। नत्थू ने एक चारपाई बरामदे में बिछा दी। उस पर गद्दा तथा चादर बिछाए। सिर के पश्चिम की तरफ तकिया रख दिया। सोने के कमरे से जो दरवाजा बरामदे में खुलता है उसके दाहिनी ओर चारपाई लगी थी।

नत्थू ने सिर की तरफ टेबुल लैम्प लगा दिया। पण्डितजी साढ़े बारह बजे उठकर बरामदे में आए। चारपाई पर लेट गये। नत्थू ने लैम्प जला दिया। पण्डितजी की आदत थी। पढ़ते-पढ़ते सो जाते थे। और आँख लगने पर स्वयं अपने हाथों लाइट बुझा देते थे।

सादी चारपाई

पण्डितजी के पैर पूरब की तरफ तथा सिर पश्चिम की ओर था।

पण्डितजी जिस चारपाई पर सोते थे वह अत्यन्त साधारण निवाड़ की खटिया थी। इतनी साधारण थी कि वह प्रत्येक मध्यम श्रेणी के गृहस्थ के यहाँ मिलेगी। मैंने वह चारपाई देखी है। मुझे आश्चर्य हुआ। भारत का प्रधानमन्त्री एक साधारण चारपाई पर, बिना बिजली के पंखे के, बिना एयर कण्डीशन के, एक साधारण भारतीय नागरिक की तरह बरामदे में अकेला सोता है। जहाँ न कोई नौकर है न कोई चाकर है। जहाँ उनकी खोज-खबर लेने वाला तक कोई नहीं है। जहाँ प्रकृति उन्हें अपने अंक में लेती है और पवन की लहरियाँ उन्हें सुलाती हैं। नक्षत्र उन्हें सोता देखते हैं। मन्द-मन्द मरुत प्रवाह में वे सोये। इस उद्यान के हरित-पादप-पल्लव भारत के इस सर्वसत्ता एवं शक्ति से सम्पन्न व्यक्ति की सरलता पर साधारण व्यवहार पर इस रहन-सहन पर लज्जित होकर निरखते रह गये।

एक बज रहा था। नत्थू की आदत थी। जाते समय वह 'जय हिन्द' कहकर पण्डितजी से विदा लेता था। अपने संरक्षक के सम्मुख खड़ा हो गया। प्रांजलीभूत मुख से वाणी मुखरित हुई 'जय हिन्द'। पण्डितजी पढ़ रहे थे। पुस्तक आँखों से हटाई। नत्थू की तरफ देखकर मुस्कराए। बोले—जय हिन्द'। पुस्तक पुन आँखों के पास आई। नत्थू शयन गृह का द्वार बन्द कर चला गया। यह थी उस महामानव के अधरों पर खेलती उत्फुल्ल अन्तिम स्मित रेखा। और मुखरित हुई मिथ्या माया से अन्तिम चेतन स्वस्थ प्रसन्न वाणी।

और बाहर होने लगी कालरात्रि गम्भीर। कभी-कभी पण्डितजी रात दो या ढाई बजे सोते थे। साधारणतया उनका सोना १२॥, अथवा १ बजे के पूर्व नहीं होता था। पढ़ते-पढ़ते कब सो जाते थे कोई नहीं कह सकता। वे प्रात काल ५ या ५॥ बजे उठते थे। इस प्रकार देखा जाए तो पण्डितजी रात्रि में ४ घण्टा से अधिक कभी नहीं सोये होंगे। मुझे गीता का वाक्य याद आ जाता है—'या निशा सर्व भूतानां तस्यां जागृति संयमी। मैं निस्संकोच कह सकता हूँ पण्डितजी योगी थे। योगी का पहला लक्षण है। वह सोता कम है। प्राय योगी रात भर अपने

में लीन जागृत रहते हैं। पण्डितजी में अलौकिक शक्ति इसीलिए थी। उनका योगियों-तुल्य जीवन था। इतना सादा इतना सरल, इतना कृत्रिमताहीन जीवन था कि जो उन्हें नहीं जानता जो उनके पास नहीं रहा वह उसकी कल्पना तक नहीं कर सकता।

पण्डितजी के जागने के पूर्व नत्थू आ जाता था। उषा की लालिमा हलकी पड़ने लगती थी। पण्डितजी चारपाई त्याग कर उठ जाते थे। उस दिन भी नत्थू पहुँच गया था। पण्डितजी स्वतः बिना नत्थू का सहारा लिए उठे। सोने के कमरे में लकड़ी वाली चारपाई पर आकर लेट गये। यह उनकी आदत थी। पौ फटने पर उन्हें बरामदे में सोना नापसन्द था। वह अपने बिस्तरे पर लगभग ५ या ७ मिनट सोये होंगे। नत्थू अलग बैठा था।

इस समय प्रातःकाल के ५।। बजे थे। पण्डितजी बिस्तरे से उठे। नत्थू समीप आया। उनके साथ बाथरूम में गया। उनको हाथ का सहारा देकर कमोड पर बैठाया। पण्डितजी निवृत्त हुए। साबुन से हाथ धोये। बिस्तरे पर आकर पुनः लेट गए।

उन्होंने दातुन नहीं की। उनके मुख में केवल एक दाँत रह गया था। कृत्रिम दाँत लगाते थे। सोने के समय दाँत निकाल कर रख देते थे। जीवन काल में मुख से निकले ये निर्जीव कृत्रिम दाँत उनकी मृत्यु के पश्चात् मुखाकृति ठीक रखने के लिए पुनः उनकी निर्जीव काया के मुख में लगा दिये गये थे।

खराब मालूम होती है

वे आकर पलंग पर बैठ गए। नत्थू से बोले—'जरा कमर और पैर दबा दो। नत्थू ने कमर और पैर दबाना आरम्भ किया। पण्डितजी बिस्तरे अर्थात् लकड़ी वाले पलंग पर पैर फैला कर लेट गये। नत्थू ने दबाते हुए पूछा—'तबीयत कैसी है? पण्डितजी ने नत्थू की ओर स्नेह दृष्टि से देखते हुए कहा— खराब मालूम होती है।

इस समय प्रातःकाल के ६ बज रहे थे। नत्थू ने पण्डितजी की कमर

तथा पर पाँच मिनट तक और दबाये। उसे कुछ चिन्ता हुई। पण्डितजी अपना दुःख किसी से कहते नहीं थे। नत्थू बात समझ गया। वह अनायास बाहर दौड़ पड़ा। इंदिराजी को खबर दी—"पण्डितजी की तबीयत खराब मालूम होती है। इंदिराजी अपने कमरे में थीं। उन्होंने कहा— चलो आती हूँ।

पण्डितजी के पास उस समय वहाँ कोई दूसरा नौकर नहीं था। कोई नर्स नहीं थी। कोई डाक्टर नहीं था। भारत के प्रधानमंत्री की रक्षा उनके जीवन का उत्तरदायित्व एक सरल भारतीय शरणार्थी युवक नत्थू पर पड़ गया था। उस स्वामिभक्त ने अपनी बुद्धि से इंदिरा जी को खबर देना अपना कर्त्तव्य समझा।

नत्थू पण्डितजी के पास लौट आया। उसे पण्डितजी की हालत कुछ ठीक दिखाई नहीं दी। वह कुछ समय तक पैर और कमर दबाता रहा। उसे पुन अन्त प्रेरणा हुई। पुन उठकर बाहर गया। इस समय ६ बज कर २८ मिनट हो गये थे।

डा० श्री अमरनाथ वेदी सीमान्त के शरणार्थी हैं। युवावस्था में ही भारत-विभाजन की विभीषिका के शिकार बने। रेल की छत पर बैठकर भारत आए। सफदरजंग अस्पताल में नियुक्त किये गये। हृदय रोग के विशेषज्ञ है। पण्डितजी के यहाँ सन् १९५४ से आते-जाते थे। नत्थू भी युवक है। अतएव डा० वेदी से उसकी खूब पटरी खाती थी। उसने सर्वप्रथम डा० वेदी के घर पर ठीक ६॥ बजे प्रात फोन किया। उसने अपनी बुद्धि के अनुसार तीन बातें पण्डितजी की बीमारी के संबंध में बताईं। यह पहला समाचार था जो पण्डितजी की बीमारी के विषय में प्रधानमंत्री-भवन के बाहर गया। उसने फोन पर डा० वेदी से कहा—

"पण्डितजी को कमर में दर्द है। दर्द से बिस्तरे पर हिल-डुल रहे हैं। पर कुछ कहते नहीं हैं। डा० साहब आप जल्दी चले आइये।"

डाक्टर आए

डा० वेदी ने तुरन्त डाक्टर के० एल० विग को फोन पर पण्डितजी की बीमारी का हाल सुनाया। डा० विग अपनी मोटर पर डा० वेदी के यहाँ अविलम्ब पहुँचे। दोनों डा० तुरन्त प्रधानमंत्री भवन की ओर रवाना हुए। नत्थू के फोन करने के २० मिनट पश्चात् अर्थात् प्रातःकाल ६ बजकर ५० मिनट पर पण्डितजी के शयन-कक्ष में दोनो डाक्टरों ने प्रवेश किया। वहाँ केवल नत्थू उपस्थित था। दोना डाक्टरों ने देखा—

'पण्डितजी की हालत अच्छी नहीं थी। शरीर पसीने से भरा था। पसीना शरीर से इस कदर निकलता था कि बिस्तरे की चादर भीग गई थी। वे बेचैन थे। पर होश में थे।

डा० वेदी ने सर्वप्रथम कमरे में प्रवेश किया। उनके साथ ही डाक्टर विग कमरे में आये। तब श्रीमती इन्दिरा गांधी भी पहुँच गई।

पण्डितजी ने डाक्टरों को देखा। उन्हें देखकर अपनी टाइम पीस घड़ी की ओर देखा। वे बोले— 'आज भी आप लोगों को तकलीफ दी।' फिर उन्होंने नत्थू की तरफ देखकर कहा— 'इसने आप लोगों को फोन किया होगा।'

पण्डितजी अपने लिए किसी को किसी प्रकार का किंचित् मात्र कष्ट नहीं देना चाहते थे। अपना दुःख बरदाश्त करना उन्हें अधिक पसन्द था। इतने सवेरे डाक्टरों को आने में कष्ट हुआ होगा। यह बात उनके दिमाग में घूमने लगी।

तुरन्त डाक्टर विग बिस्तरे पर दाहिनी तरफ तथा डा० वेदी बाईं तरफ बैठ गये। नत्थू ने पण्डितजी का कुरता ऊपर उठाया। पीठ का कपड़ा उठाकर स्टेथस्कोप को लगाकर देखने लगे। पण्डितजी से पूछा— 'क्या तकलीफ हो रही है ?

पण्डितजी ने उत्तर दिया— 'मैं ५॥ या ४ बजे आज प्रातःकाल

पेशाब करने उठा। पेशाब किया। बिस्तरे पर आकर लेट गया। नींद नहीं आई। दर्द शुरू हो गया—कमर में पीछे। फिर नींद आई। ठीक नहीं आई। फिर ६ बजे उठा। टट्टी गया। टट्टी के बाद वापस आया। दर्द ज्यादा था। उसके बाद नींद आई ही नहीं। दर्द बदस्तूर है। कभी बढ़ जाता है। कभी घट जाता है।'

डाक्टरों ने पूछा—'आपने खबर क्यों नहीं दी।

पण्डितजी मन्द स्वर से कमर पर हाथ फेरते हुए बोले—मेरा ख्याल था ठीक हो जाएगा।

डाक्टरों ने पण्डितजी की कमर देखी। पसीना छूट रहा था। कमर के पीछे कुछ निशान था। कुछ नीला रंग लिये। अन्दर-अन्दर कोई खराबी थी।

मैंने प्रायः सभी डॉक्टरों से पूछा कि क्या हृदय का दौरा हुआ था। उन्होंने विश्वास तथा दृढ़ता के साथ कहा 'पण्डितजी को हृदय रोग का दौरा नहीं हुआ था।'

बगल में एक छोटा कमरा पूरब की तरफ है। वह प्रधानमन्त्री भवन की प्रथम मंजिल का अन्तिम कमरा है। शयन-कक्ष से वह चौड़ा कम है लम्बा उतना ही है। वहीं पर चिकित्सा सम्बन्धी सभी यन्त्रादि तथा औषधियाँ तैयार रखी जाती थीं। वहीं आक्सीजन सिलेंडर वगैरा किसी भी स्थिति का सामना करने के लिए तैयार रखे रहते थे। बरामदे में जिस चारपाई पर पण्डितजी सोते थे, वह भी दिन चढ़ने पर वहीं उठाकर रख दी जाती थी। वहीं पर डा० विग तथा वेदी ने इन्जेक्शन तैयार किया। उसमें ५ या ७ मिनट लगे होंगे।

सवा सात बजे डाक्टर विग तथा वेदी इन्जेक्शन लेकर आये। नत्थू ने पण्डितजी के बाएँ हाथ की आस्तीन का ऊपर उठाया। इन्जेक्शन देखकर पण्डितजी ने पूछा—

"किस चीज का इन्जेक्शन है ?

डाक्टरों ने कहा—"पैथेडीन।"

पण्डितजी कुछ बोले नहीं। डाक्टर वेदी ने बाएँ हाथ में इन्जेक्शन

एगाया। इंजेक्शन लगाकर डाक्टरों ने आभार प्रदर्शनार्थ कहा—शुक्रिया।

पण्डितजी कुछ उत्तर न देकर जैसे कृतज्ञता प्रकट करते हुए केवल मुस्करा दिये—आसन्न मृत्यु काल में महामानव के अधरों पर यह अन्तिम कृतज्ञता प्रदर्शक मुस्कान थी।

इस समय मैं स्व कमर में ही था पण्डितजी ने बताया। उनके शरीर की स्थिति ठीक थी। हृदय की गति ठीक थी।

पण्डितजी कोई दवा नहीं खाते थे। केवल आयुर्वेदिक तेल लग वाते तथा सेंक कराते थे। उनकी आदत थी। जिस चीज से लाभ नहीं होता था उसे नहीं करते थे। नत्थू न मुझे बताया।

भुवनेश्वर के बाद

मैंने डाक्टरों से जिज्ञासा की। मालूम हुआ कि उन्हें भुवनेश्वर के पश्चात् ब्लडप्रेशर हो गया था। मैंने पूछा—औषधि क्यों नहीं दी गई? डा० ने बताया—पण्डितजी का ब्लडप्रेशर की औषधि खाने को दी गई थी। औषधियों की प्रतिक्रिया शरीर पर प्रतिकूल हुई। औषधि खाने पर ब्लडप्रेशर और बिगड़ जाता था। अतएव उन्हें औषधि देने का विचार त्याग दिया गया। अतः पण्डितजी भी आयुर्वेदिक वैद्यो द्वारा बताए पथ्य तथा भोजन पर जीवन-निर्वाह करना अधिक श्रेयस्कर समझते थे। उनके शरीर तथा हृदय की स्थिति उत्तरोत्तर अच्छी होती गई। दुर्बलता दूर हो रही थी। पर में शक्ति आ गई थी।

इस समय ७ बजकर करीब १८ मिनट हो गये थे। डाक्टर वेदी बगल वाले कमरे में आक्सीजन सिलेण्डर लेने गये। डॉक्टरों ने लौट कर देखा। पण्डितजी अपनी चारपाई से उठे। नत्थू उनका हाथ पकड़ कर बाथरूम में ले गया। वह भी उनके साथ वहाँ रहा। उन्हें पकड़ कर कमोड पर बैठाया। उन्हें एक पाखाना हुआ। पण्डितजी ने हाथ धोय। बाथरूम से बाहर नत्थू का सहारा लेकर निकले। डाक्टर वेदी

तथा नत्थू ने उन्हें दोना बगलों से सहारा देकर पलग पर बिठा दिया। डाक्टरों ने निवेदन किया— आपको विस्तरे से नहीं उठना चाहिए।"

आँखें झपने लगीं

पण्डितजी ने कोई उत्तर नहीं दिया। उन्हें शिथिलता घेर रही थी। वे बठे नहीं रह सके। पलग पर लेट गये। उनकी पलकें मिलने लगीं। जैसे नशा चढ़ रहा था।

उनकी यह स्थिति देखकर आक्सीजन नाक के समीप लगा दी गई। डाक्टर विग अदर पण्डितजी के पास रह गय। डा० वेदी वाहर निकलकर आये।

पण्डितजी के यहाँ दो टेलीफोन थे। एक से वेदी तथा दूसरे से पुलिस-अफसर श्री मेहरा जो पण्डितजी के साथ रहते थे दिल्ली के प्रमुख डाक्टरों को फोन कर अविलम्ब आने के लिए निवेदन करने लगे। पण्डितजी को स्नान की कोई औषधि इस समय तक नहीं दी गई थी।

सात वजकर २० मिनट पर कनल लाल पहुँचे। उस समय तक पण्डितजी को होश था। पण्डितजी भुवनेश्वर स आने के पश्चात् विना दूध के एक प्याला चाय नींबू डालकर प्रातःकालीन नित्यक्रिया के पश्चात् पीते थे। पलग पर ही बठकर विजली के शेवर से शेव करते थे। उस दिन उन्होंने शव नहीं की।

नत्थू न बाथरूम से आन के लगभग १५ या २० मिनट पश्चात् पण्डितजी स पूछा— आप चाय पीजियेगा, लाऊँ।' पण्डितजी बोल नहीं सके। केवल सिर हिलाकर सकेत कर दिया—नहीं। नत्थू ने पुन पूछा—"पानी पीजियेगा दूँ ? पण्डितजी ने सिर हिलाकर 'हाँ' का सकेत किया। उस समय उनकी आँखें बन्द थीं। नत्थू न फ्लास्क से गिलास में जल निकाला। नत्थू तथा डाक्टर वेदी ने पीठ का सहारा देकर उन्हें दोनों तरफ स किंचित् उठाया।

पण्डितजा ने एक घूँट पानी मुख में लिया। उनकी आदत थी। पानी घूँटन के पूर्व वे मुख म रख लेते थे। तत्पश्चात् घूँटते थे। उन्होंने

एक घूँट पानी अपनी आदत के अनुसार मुख में रखा। तत्पश्चात् उसे गले के नीचे उतार दिया। उनकी काया, उनकी चेतना इस समय तक उनका साथ नहीं छोड़ सकी थी। सभी काम जैसे नियमित क्रम से शरीर तथा मन दोनों कर रहे थे। जल पीते समय श्रीमती इन्दिरा गांधी डाक्टर विग वहाँ उपस्थित थे।

पानी पीकर वह पुन लेट गये। उनकी आँखें पानी पीते समय पूरी खुली थीं। एक बार सबकी तरफ देखा। सरल नेत्रों में करुणा छलक रही थी। जब वे पूरे लेट गये तो आँखों की पलकें पुन मिल गईं। इसके पश्चात् उनकी वाणी पुन मुखरित नहीं हुई। वे पुन नहीं उठे। उन्होंने न कुछ कहा। और शायद न कुछ सुनने का प्रयास किया।

आत्मा सुन्दर काया का साथ छोड़ने की तयारी करने लगी। प्रफुल्लित काया प्रसन्न मन चैतन्य आत्मा देहरादून से लौटने प्रधान मन्त्री भवन म प्रवेश करने के ठीक १२ घण्टे पश्चात् एक साथ मृत्यु लोक के कर्तव्यों को समाप्त कर परलोक-प्रस्थान की तैयारी करने लगी। मानवीय साधन और मानवीय बुद्धि जीवन-मरण के संघर्ष का द्वन्द्व तथा काया से बिछुड़ती आत्मा की प्रस्थान बेला की तैयारी देखने के लिए सजग होने लगे।



जीवन शरद् कालीन मेघमाला तुल्य हल्का है। तैलहीन दीपक तुल्य अस्थायी है। पानी पर तैरते गले पत्तों की तरह वायु में उड़ते जीर्ण शुष्क तृण की तरह गगन में घूमते जलहीन जलद की तरह आयु-चक्र में प्राणी चक्रित है। किन्तु अन्तिम श्वास की उच्छ्वास काल की दारुण छाया तक में अपने अमरत्व का गर्व करती है।

यह शरीर कृतघ्न है। मृत्यु के समय साथ त्याग देता है। किन्तु पोत-स्वरूप इस शरीर का संसार-सागर को पार करने के निमित्त आश्रय लिया जाता है।

शरीर साम्यवादी है। वह धनी-निर्धन शोषक-शोषित सर्वहारा-सर्वप्राप्त, विद्वान-मूर्ख कायर-वीर, सब में सम दृष्टि रखता है।

शरीर शिरा-जाल है। अस्थि-कंकाल है। आत्माहीन शरीर अस्पृश्य है। जीवन में शोभा मरण में भयोत्पादक है। घर से बाहर निकाल बाहर करने की वस्तु है। उसकी शोभा उसके मांस का उतार चढ़ाव है। वह बहुरूपिया है।

शरीर शून्य अरण्य है। उसकी रोमावलियाँ, उस पर उगे असंख्य पादप हैं। रोमराजिया के विवर वन की कन्दराएँ हैं। नाभि गर्त है। इस शरीर-वृक्ष की सेवा विश्व के अगणित पथिकों ने की है। पथिकों की सेवा का फल है। तो भी पथिक स्वयं फल से वंचित रहता है। वृक्ष

स्वत फल नहीं खाता। दूसरों को खिलाता है। तृप्त करता है। काल उसे खाता है उसे ग्रसने के लिए उतावला रहता है।

काल को लोग देव कहते हैं। उसे कुछ लोग स्पष्ट काल कहते हैं। काल का एक रूप महाकाल है। एक तीसरा रूप काल का और है। उसे कृतान्त कहते हैं। वह मृत्यु है। रुद्ररूप कापालिक के तुल्य वह ताण्डव करता है।

काल की सहचरी

इस काल की सहचरी है नियति। अपनी सहचरी के साथ ताण्डव एवं लास्य में वह नृत्यशील हो जाता है। उस समय भयानक बीभत्स एवं रौद्र रस ताल देने लगते हैं।

कालचक्र के कारण शरीर का अपने ऊपर क्रूर अत्याचार होता है। क्या काल का यह निर्दय व्यवहार किसी को प्रिय लग सकता है? कमल-दल के नाश का कारण तुषार होता है। तृण पर स्थित जलबिन्दु के नाश का कारण वायु होता है। तटवर्ती वृक्षों के नाश का कारण उफनता वेगवती सरिता होती है। कलेवर के नाश का कारण स्वयं उसकी शिराएँ होती हैं। मनुष्य की यह असहाय अवस्था देख कर, सूली पर चढ़े हुए प्रभु ईसा मसीह के श्रीमुख से काल की छाया में अन्तिम वाणी मुखरित हुई थी— एलोई, एलाई, लमा सब कथानी। (ओ! भगवान्!! ओ! भगवान्!! क्या तूने मुझे त्याग दिया?)

माला के सुमेरु

काल जीवन को प्रसन्न चित्त पीता है। रात्रि दिन की माला गूंथ गूंथ कर पहनता है। वह कर्ता है। भोक्ता है। संहर्ता है। सस्मर्ता है। उसकी माला के सुमेरु बन गए, महात्मा गांधी, जपते हुए, काल की छाया में—हे! राम!!

काल की प्रणयिनी कालरात्रि है। कालरात्रि के पहले आती है काल की छाया। मातृगुण परिवृता सिंहनी के समान, प्राणियों के संहार

निमित्त काल निरन्तर स्वच्छन्द ससार-कानन मे विचरण करता है। काल की हथेली पर विशाल पृथ्वी पान-पात्र तुल्य स्थित है।

काल स्वरूप सूर्य दिन रात का बार-बार गठन तथा विगठन करता रहता है। प्राणियों के विनाश की सीमा निरीक्षण करता रहता है। त्रिमूर्ति ब्रह्मा विष्णु, महेश, बडवानलावर्ती जल तुल्य ध्वसो मुख धावित है। तीन मूर्ति की ओर कालछाया अपने अक में प्रधानमन्त्री भवन को लेने के लिए उदास बढ़ी।

प्रधानमन्त्री भवन

प्रधानमन्त्री-निवास की द्वितीय मजिल मे साधारण शयनगृह म जहाँ उनसे कितनी बार मिल चुका हूँ शुक्ल-धवल काया चारपाई पर शात अचेतन पड़ी थी। चेतना कर्मेन्द्रियो की मैत्री त्याग चुकी थी। जिह्वा वाणी का साथ छोड़ चुकी थी। मानव अटूट परिश्रम कर रहे थे, वाणी मुखरित करने की। अचेतन को चेतन करने की।

काल की गति गोपनीय नहीं है। राजनीतिक कारणों से गोपनीय करने पर भी हवा के परों पर चलती बातें फैलने लगीं। ससद म किसी का मन किसी काम में लगता नहीं था। मुख बातें मालूम थीं। नन्दाजी का फोन आया था। दस बजे प्रात काल कार्यकारिणी की बठक म मैंने पण्डितजी की अनुपस्थिति का कारण बताया था। उनकी बीमारी की बात कही थी। कार्यकारिणी की बठक ग्यारह बजे समाप्त हुई। हम लोगों के मुख बन्द रहे।

लोकसभा राज्यसभा की बैठकें आरम्भ होने वाली थीं। बीमारी की बात लोगों को मालूम नहीं थी। लॉबी में धीरे-धीरे खबर फैली। अदृश्य व्यग्रता सदस्यों की मुखाकृति पर फैलती जैसे भविष्य की बात कहने लगी। नन्दाजी ने ठीक ११ बजे लोकसभा आरम्भ होते ही स्पीकर की अनुमति से सदन को सूचित किया "स्पीकर महोदय, अत्यन्त परितप्त हृदय से मैं सदन को प्रधानमन्त्री श्री नेहरू के स्वास्थ्य की हालत से सूचित करना चाहता हूँ। प्रात ६-२० से व सख्त बीमार हैं,

और उनकी हालत चिन्ताजनक है।'

वित्तमंत्री श्री कृष्णमाचारी ने इसी प्रकार की सूचना राज्यसभा में दी।

सदनों के कार्य का श्रीगणेश हुआ उक्त सूचना के साथ। स्थिति की गंभीरता का अनायास जैसे ज्ञान हो गया। हृदय धड़क उठा। भारत के भविष्य का रूप सामने आया। मैं चला तीन मूर्ति की ओर।

चिन्तित जनसमुदाय

भवितव्यता अपनी भूमिका तैयार कर रही थी। आशा निराशा में परिणत हो रही थी। तीन मूर्ति पर चिन्तित जनसमुदाय एकत्रित होने लगा था। प्रधानमंत्री-निवास में पहुँचकर देखा। मिलिटरी ट्रक पर कुछ शरीर-परीक्षा यंत्र पण्डितजी के कमरे से उतार कर, रखे जा रहे थे। बरामदे में श्री लालबहादुर शास्त्री के साथ श्रीमती इन्दिरा गांधी खड़ी थीं। कोई एक डाक्टर उनके पीछे खड़ा था। ऊपर दृष्टि उठी। उनके मुख पर उदासी थी। मन विचलित हुआ। नमस्कार किया। ट्रक पर रखे जाते यंत्र को देखकर मन न जाने कैसा हो गया। मानवीय साधन दैवी कार्य में दखल दे सकते थे। परन्तु उसे रोक रखने में उसे बदलने में सर्वथा असमर्थ थे।

आँखों ने देखा चिन्तित लालबहादुर शास्त्री को। आँखों ने देखा इस करुण परिस्थिति में स्थिर इन्दिरा गांधी को। मैं बढ़ गया बरसाती की ओर। पहुँचा नीचे के हाल में। वहाँ अनेक विशिष्ट पुरुष बैठे थे। कुछ संसद सदस्य थे। कुछ केवल औपचारिक दृष्टि से आए थे। कुछ मंत्रियों को अपनी सूरत दिखाने के चक्कर में थे। कुछ भारत के भविष्य से अनायास चिन्तित थे। कुछ सारी राजनीतिक चिन्ता का भार उठाये थे। कुछ उत्तराधिकारी की बात कर रहे थे। कुछ मुँह बनाकर बैठे थे। जैसे सारा बोझ उन पर पड़ने वाला था। कुछ कृत्रिम शब्द-जाल-मय समवेदना में उलझे थे। मैं उन्हें छोड़ता आगे बढ़ गया।

आँखों ने देखा प्रधानमंत्री-भवन के उन सेवकों को उन सेविकाओं

को उन लोगों को जो पण्डितजी के साथ रात-दिन रहते थे। उनके कुटुम्ब के प्राणी बन गए थे। उनका हृदय उनकी आँखों में आ गया था। वे हतप्रभ थे। वे नहीं सुनना चाहते थे, वह बात, जिसके सुनने की अपेक्षा प्रतिक्षण की जा रही थी।

आँखों ने हताश डाक्टरों के मुख की ओर देखा। पण्डितजी के समीपवर्ती लोगों की डबडबाई आँखों को देखा। आँखों ने आँखों से कहा—काल के स्वागत की भयंकर भूमिका। मानवीय विवशता की स्थिति, विश्व के निरुपायत्व की परिस्थिति। साधनों की निस्सहाय दशा देखकर, नियति जैसे मुस्करा रही थी। वातावरण इतना करुण था इतना शोकार्त था, इतना असहनीय था, कि मैं वहाँ ठहर न सका। भाग चला संसद भवन की ओर।

लोकसभा और राज्यसभा चल रही थी। परन्तु किसी का मन जैसे कहीं अटका था। जैसे कोई अनहोनी घटना घटने वाली थी। दोनों सदन प्रायः खाली थे। सेंट्रल हाल में अपेक्षाकृत अधिक सदस्य बैठे थे। जैसे किसी समाचार की बाट जोह रहे थे।

चर्चा का एक ही विषय था—पण्डितजी की बीमारी। वे हमारे बीच में नहीं होंगे। यह कल्पना इतनी भयावनी थी। इतनी कष्टकर थी, इतनी अनहोनी प्रतीत होती थी कि उस पर विश्वास करने को भी नहीं चाहता था। लोग एक स्थान पर बैठ नहीं पा रहे थे। कभी उठते थे, कभी बैठते थे कभी बात करते थे, कभी चुप हो जाते थे। सभी अस्थिर थे सुनना चाहते थे—पण्डितजी अच्छे हो रहे हैं। किसी के मुख से शुभ समाचार न मिलने पर मुख लटक जाता था। संसद की दीवार को भेदती, गोपनीय रखी गई खबर पहुँची—पण्डितजी का रक्त दिया जा रहा है। आशा क्षीण हो रही है। यह संकेत था, स्थिति भयकर होने का। मैंने अपने सहयोगी संसदीय दल के मंत्री श्री रघुवीरसिंह पजहजारी को प्रधानमन्त्री भवन भेजा। वह वहाँ पहुँचे। सब-कुछ समाप्त हो रहा था।

अनहोनी हो गई

मैं सेन्ट्रल हाल में था। उस समय वहाँ लगभग तीन सौ संसद सदस्य यत्र-तत्र बठे थे। राज्यसभा लंच के लिए उठ चुकी थी।' लोक-सभा चल रही थी। कोरम-मात्र सदस्य अनिश्चित स्थिति में बैठे थे। मैं सेन्ट्रल हाल के मंच के नीचे खड़ा था। पंजहजारी आध घण्टा पश्चात् लौटे। डबडबाई आँखों से बोले—'पण्डितजी चले गये। मैंने कहा— तुम वहीं ठहर जाते। फोन से कहते। यहाँ आने की क्या आवश्यकता थी। आँख पोछते उन्होंने कहा—'रहना मुश्किल था भाई। मैंने कहा—'स्पीकर को सूचित कर दिया जाए।' वह बोले—'अभी 'आफिसियल' घोषणा नहीं हुई है। डाक्टर देख रहे हैं। सर्टिफिकेट देने पर औपचारिक घोषणा होगी।

हृदय की बात हृदय तक पहुँच जाती है। उसकी गति रेडियो प्रवाह से द्रुतगामी होती है। सदस्यगण दौड़े आए। मैं चुप हो गया। संकेत किया। शान्त बैठ जाने के लिए। मैं चला सेन्ट्रल हाल की सीटों के मध्यवर्ती भाग से। लोगों को हाथ से संकेत करता। सब समाप्त हो गया।

लोगों के ओठों के समीप आया चाय का प्याला टेबुल पर काँपते हाथों से बठ गया। लोग निस्तब्ध हो गये। मस्तक झुक गये। मैं मंच के नीचे पुन आकर खड़ा हो गया। सदस्यों ने घेर लिया। मैंने कर बद्ध भगवान् को नमस्कार करते हुए, गुम्बद की छत की ओर देखा। कोई कुछ पूछ न सका।

लोग हतप्रभ थे। विचलित एक दूसरे की तरफ देखते थे। कितनों के नेत्र अश्रुपूर्ण थे। कण्ठा से भर्रायी ध्वनि उठी। आर्त्तनाद उठा। कितने कटे वृक्ष की तरह सीट पर गिर पड़े। कितनों ने अपना मस्तक थाम लिया। कितनों ने अपनी आँखों को हाथों से बन्द कर लिया। कितने हक्के-बक्के हो गये। कितने खोये से खड़े रहे। कितने किंकर्त्तव्य विमूढ़ हो गये। किसना की समझ में नहीं आया क्या हो गया क्या हो

रहा है। कितने भूले मे कुछ सोचने लगे। कुछ देखने लगे।

मैं लोकसभा में पहुँचा। अपनी सीट पर बैठ गया। कुछ मिनटों के पश्चात् श्री सुब्रह्मण्यम् (तब इस्पात मन्त्री अब खाद्यमन्त्री) आये। मैं उनके पास गया। उन्होंने कहा— 'समाचार सत्य है। सदन को सूचना दूँगा।

लोकसभा में उपस्थिति नाममात्र की रह गई थी। राज्यसभा लंच के लिए उठ चुकी थी। देखते-देखते लोकसभा की सीटें भर गई। श्री सुब्रह्मण्यम् ने स्पीकर से कहने की अनुमति माँगी। स्पीकर ने उन्हें अनुमति दी। वे ठीक २ बजकर १६ मिनट पर सूचना देने खड़े हुए।

"स्पीकर महोदय मुझे सदन को और देश को यह दुखद समाचार देना है कि प्रधानमन्त्री अब नहीं रहे। उनकी जीवन-ज्योति बुझ गई। यह महानतम विपत्ति है। जिसका इस समय देश को सामना करना है। प्रभु से प्रार्थना है हम अवसर के उपयुक्त सामर्थ्य दें।" स्पीकर सरदार हुकमसिंह ने सभा स्थगित करते हुए कहा— 'मैं इसके सिवाय इस समय और कुछ नहीं कह सकता। सदन कल प्रातः ११ बजे तक के लिए स्थगित किया जाता है।

एक मिनट पश्चात् अर्थात् २ बजकर २० मिनट पर लोकसभा स्थगित कर दी गई। सब सदस्य सेण्ट्रल हाल में चले गये। राज्यसभा के सदस्य वहाँ उपस्थित थे। दोनों सदनों को मिलाकर लगभग ४०० सदस्य खड़े थे। मैं चुपचाप सेण्ट्रल हाल के उस मंच पर चढ़ा जहाँ पण्डितजी ने राज्य-शासन-सूत्र सम्भालने की शपथ ली थी। मेरी आँखों में आँसू नहीं थे। मन शान्त था। दृढ़ता आ गई थी। अजस्विवद्ध सदस्यों को नमस्कार किया। दिवंगत आत्मा को नमस्कार किया। केवल इतना कहा— 'सदस्यो! परीक्षा का समय आ गया है। जो होनहार था वह हो गया। कांग्रेस-दल के सम्मुख गम्भीर उत्तरदायित्व है। विश्व हमारी तरफ देख रहा है। हम एक हैं। हम एक रहेंगे। आइये! हम प्रतिज्ञा करें—हमारी एकता कायम रहेगी। देश के लिए सब कुछ निछावर करेंगे। पण्डितजी द्वारा निर्देशित प्रशस्त राजनीतिक पथ का

अनुसरण करेंगे।'

विशाल भारत भूखण्ड के कोने-कोने से निर्वाचित भारतीय संसद सदस्य, भारत के प्रत्येक निर्वाचक के प्रतिनिधि भारत की सर्वोच्च संस्था के सदस्यों का मस्तक दिवंगत आत्मा की पुण्य स्मृति में नत हो गया।

उस मंच पर जहाँ से भारतीय संविधान की घोषणा हुई थी—खड़े हुए देखा—भारतवर्ष भारत का नेतृवृन्द और भारत के प्रतिनिधि। मैंने अनुभव किया उस सनातनीन नीरव हाल में सदस्यों की मूक वाणी के पीछे, आत्मविश्वास स्थिति की गम्भीरता का अनुभव। उमड़ती शोकाकुल भावनाओं में मैंने देखा—कर्तव्य के प्रति निष्ठा का दृढ़ निश्चय।

परीक्षा की घड़ी

इस करुण परिस्थिति में इस दुखान्त नाटक के अन्तिम पटाक्षेप में, किसी की मुद्रा में घबराहट नहीं थी। कोई किसी की ओर देखता नहीं था। कोई किसी से बात नहीं करता था। सब अपनी अन्तरात्मा में जैसे दिवंगत आत्मा का दर्शन करने में तल्लीन थे। अंतरात्मा को साक्षी मानकर जैसे स्वीकार कर रहे थे कोई प्रतिज्ञा।

मैंने उनकी स्थिरता में देखी भारत की शक्ति। मैंने पुनः करबद्ध शिरसा नमामि करते हुए, नीरवता भंग की "चलिए, प्रधानमन्त्री भवन की ओर। वहीं हम अपने नेता को श्रद्धांजलि देंगे। वहीं अपने नेता का दर्शन करेंगे। अब उनकी पवित्र परिष्कृत मधुर वाणी से सेण्ट्रल हाल नहीं गूँजने वाला है। किन्तु यहाँ के जड़ शिलाखण्ड साक्षी रहेंगे। यहीं उन्होंने बैठकर यहाँ बोलकर यहाँ देश का नेतृत्व कर, भारत के लोकतन्त्र की ठोस नींव डाली थी। ईंट पर ईंट रखकर नींव मजबूत की थी।' मैं चुपचाप मंच से नीचे उतर आया। लोग भारी मन से चल पड़े।

धीरे धीरे सेण्ट्रल हाल खाली होने लगा। चुपचाप लोग बाहर

निकलने लगे। कुछ लोग बैठे रह गए। खोये से, भूले से। ठीक २ बजकर ३० मिनट पर राज्यसभा के सदस्य नतमस्तक राज्यसभा में प्रवेश करने लगे। सूना सेण्ट्रल हाल स्वयं कालछाया में उदास हो गया। श्री सुब्रह्मण्यम् ने राज्यसभा में भी वही सूचना दुहराई।

स्वल्पकालीन विशेष आमन्त्रित संसद सत्र के प्रथम दिन पण्डित-जी के स्वागत के लिए, उनके बैठने के लिए, उनकी वाणी सुनने के लिए लोकसभा और राज्यसभा के अनावृत्त कपाट मुहुर-मुहुर चुप-चाप कपाट-संधि से मिलने चले सदन में कालछाया को गम्भीर करते। और दूसरी ओर संसद मार्ग पर संसद-सदस्यों के पद कठिनता से उठते-गिरते प्रधानमन्त्री भवन की ओर काल की छाया में चले। सोचते—महान् यात्री ने महाप्रस्थान निमित्त आमन्त्रित किया था संसद-सत्र जैसे बन्धुओं से अन्तिम भेंट करने साबित करने बन्धु वही है जो श्मशान में भी साथ देता है—स्मरण दिलाते हुए—

'राजद्वारे श्मशाने च यास्तिष्ठति स बान्धव ।

वाञ्छित तिथि



दर्द कम करने की दवा पेथेडीन से पण्डितजी को किंचित् नींद आने लगी। दर्द का अनुभव कम होने लगा। तभी डा० विग कर्नल लाल तथा डाक्टर बेदी ने परामर्श किया। दिल्ली में उपलब्ध विशेषज्ञ डाक्टरों को बुलाने के लिए ७ बजकर ३० मिनट पर फोन किया जाने लगा।

लगभग ७ बजकर ४५ मिनट पर डाक्टर एम० एम० सिंह तथा कर्नल बी० सी० टण्डन मेडिकल इन्स्टीट्यूट दिल्ली प्रधानमन्त्री-भवन पर पहुँच गये। श्रीमती इन्दिरा गांधी वहाँ उपस्थित थीं। डा० विग पण्डितजी की बीमारी के इंचार्ज थे। उन्हीं के निर्देश पर कार्य हो रहा था। एकत्रित डाक्टर-गण इस निष्कर्ष पर पहुँच रहे थे—पण्डितजी की हालत चिन्ताजनक हो रही है। जीवन-ज्योति का प्रकाश क्षीण होता जा रहा है।

पण्डितजी चुपचाप खाट पर उत्तान लेटे थे। उनकी काया निर्विकार रूप से पड़ी थी। उसमें किसी प्रकार की हरकत नहीं हो रही थी। पसीना शरीर से खूब छूट रहा था। चादर भीगी जा रही थी। श्वास कभी तेज चलने लगता था कभी धीमा हो जाता था। कभी श्वास के साथ आवाज होने लगती थी। पण्डितजी का जैसे अपने शरीर पर अपनी मिथ्या काया पर नियंत्रण नहीं रह गया था। इन्द्रियाँ बुद्धि के

संकेत पर, मन के इशारे पर कार्य नहीं कर रही थीं। कर्मेन्द्रियों की चेतना क्षीण हो रही थी। भारत जैसे विशाल देश पर नियंत्रण करने वाला, भारत की ४५ करोड़ जनता को अपने इशारे पर नचाने वाला स्वयं अपने अंगों के नियंत्रण में असमर्थ हो गया था। भारत उनका साथ देने के लिए आज भी तैयार था। परन्तु उनकी काया उनका साथ देने के लिए, अपनी असमर्थता प्रकट कर रही थी। उनका शरीर उनकी काया बनती जा रही थी—डाक्टरों के प्रयोग की साधन भूमि। आत्मा काया का साथ छोड़ने की उतावली कर रही थी। और मानवीय साधन उसे शरीर-पिंजर में बांध रखने का प्रयास कर रहे थे।

दीपक में तेल चुक गया

श्रीमती इन्दिरा गांधी में आकुलता ने प्रवेश किया। उन्होंने अनुभव किया। जैसे तल-हीन होते दीप की ज्योति में जीवन-शेष समाप्त हो रहा था। संजीवनी शायद जीवनदान दे सकती थी। जिसकी गोद में, जिसके आश्रय में, पल कर बड़ी हुई थीं, जिसकी शक्ति उनकी शक्ति थी जिसका प्रभाव उनका प्रभाव था जिसकी छाया में वह फली-फूली थीं वह छाया लोप हो रही थी। वह जीवन-शिखा निर्जीव हो रही थी। अन्धकार जैसे घनीभूत हो रहा था। यह दुनिया उस अन्धकार में जैसे अपना रूप छिपा लेना चाहती थी। इन परिस्थितियों में दुर्बल मानव-हृदय और दुर्बल हो उठता है। सबल हृदय परिस्थिति की दुर्बलता पर, कुछ न कर पाने पर, अपने ऊपर खीझ उठता है। जीवन-मरण के विचित्र संघर्ष के बीच मन खोजने लगता है कहीं आश्रय ढूंढने लगता है कहीं सहारा। आंखें अपने पास देखना चाहती हैं, समवेदनापूर्ण स्नेह-पूर्ण, सशक्त आकृतियां। उस समय अनायास अपने स्नेहियों की, अपने बान्धवों की, याद आती है। उनकी सहानुभूति की अपेक्षा होने लगती है। वह अनजाने सुनना चाहता है दो चार स्नेह के शब्द। वह देखना चाहता है, अपने प्रति सहानुभूतिपूर्ण करुण नेत्र। वह चाहता है वह स्निग्ध परामर्श जो आपत्तियों से उसका निकास सके। वह चाहता है

चमाना किसी का अपनी करुण परिस्थिति का साथी, जो उसे उस मार्ग से संभाल सके, जो उसे जीवन-मरण के संघर्ष से उबार ले।

छोटा-सा कुटुम्ब

पण्डितजी का कुटुम्ब बहुत छोटा था। दो बहनें थीं। वे विवाहित थीं। अपने कामों में लगी थीं। उनकी उन्हें चिन्ता नहीं थी। उनका अपना अलग घर बसा था। उनके ऊपर जिम्मेदारी थी केवल एक विधवा पुत्री इन्दिरा गांधी की तथा उसके दो अल्पवयस्क पुत्रों की। यह छोटा-सा कुटुम्ब था उस महामानव का जिसने अपना कुटुम्ब बना लिया था, भारतवर्ष का। कोई आकर दुःख बाँट नहीं लेता। किन्तु आकुल आँखें इस परिस्थिति में अपने चारों ओर खोजती हैं कुछ परिचित आकृतियाँ जो उसके सुख-दुःख की भागी रहती आई हैं। सुख का सखा दुःख आता है। बताने के लिए—सुख के साथियों का वास्तविक रूप। इन परिस्थितियों में मन उनकी तरफ दौड़ता है। जिनसे सहायता की अपेक्षा रहती है। जिनसे वह कुछ आशा की अपेक्षा रखता है। जिस पर भरोसा करने को उसका जी चाहता है।

एतदर्थ—श्रीमती इन्दिरा गांधी ने ७ बजकर ५५ मिनट पर राष्ट्रपति राधाकृष्णनजी को फोन किया—'आइये। पापा की तबियत खराब है। राष्ट्रपति ने साश्चर्य पूछा—'अभी मैंने समाचार-पत्रों में पढ़ा है। उनकी तबियत बहुत अच्छी है। वे प्रसन्न मुद्रा में कल देहरादून से लौटे हैं। इतने में ही क्या हो गया?' इन्दिराजी ने केवल इतना ही उत्तर दिया—'आप आइये, हालत अच्छी नहीं है।'

इन्दिरा गांधी ने श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित को जो उन दिनों महाराष्ट्र की राज्यपाल थीं फोन किया। इतना कहा 'जल्दी आइये। कृष्णा हठीसिंह आदि सबको लेते आइये। पापा की हालत बहुत खराब है।' विजयलक्ष्मीजी बस यही समाचार सुनने के लिए उठी थीं।

बात कुछ विचित्र हुई। जो लोग आध्यात्मिक तथा अव्यक्त शक्ति में विश्वास नहीं करते वे शायद जो कुछ लिख रहा हूँ उस पर विश्वास

नहीं करेंगे। परन्तु बात सच है।

पण्डितजी विजयलक्ष्मीजी से बहुत स्नेह करते थे। भाई के रिश्ते, भाई के स्नेह से भी बढ़कर उनका विचारों का सामीप्य था। वे स्नेह सूत्र में ही नहीं बंधे। कार्यक्षेत्र तथा लक्ष्य भी उनका एक ही हो गया था। उनको अन्त तक नन्हीं बच्ची समझते रहे। उन्हें पढ़ाते रहे। शिक्षा देते रहे। पति के अवसान पर पण्डितजी के प्रति और विश्वास और निष्ठा बढ़ गई। पण्डितजी उनके लिए भाई के स्थान पर नेता राजनीतिक शिक्षक उपदेशक होते गये और इस प्रकार भाई-बहिन भावात्मक रूप से एक-दूसरे के अत्यन्त समीप आते गये।

वे जसे बालकाल में एक साथ स्नेह से आपस म खेलते थे। वही बात उन्हें याद आ जाती थी। वे खूब मन की बात कहते। खुलकर कहते। भगवान राम के शब्दों में सहोदर भ्राता मिलना दुर्लभ है। सहोदर बहिन उससे भी दुर्लभ है। शैशव काल मानव की पवित्रता सरलता, शुद्धता का प्रतीक होता है। उस समय की कोई भी बात स्मरण आने पर मानव अपने उसी वातावरण में जसे एक बार पुन अपने आपको भूल जाता है।

पण्डितजी ने विजयलक्ष्मीजी से कई बार कहा था। मरने का सबसे अच्छा दिन बुद्ध पूर्णिमा होती है। इस दिन मरना मुझे अच्छा लगेगा। निःसन्देह २६ मई १६६४ को बुद्ध पूर्णिमा थी। पण्डितजी का देहान्त २७ मई को हुआ। उन्हें वांछित मृत्यु प्राप्त हुई थी। पन्द्रह घण्टा ४० मिनट बुद्ध पूर्णिमा के पश्चात् मृत्यु-मुख में प्रवेश करना शायद इसलिए हुआ होगा कि भगवान बुद्ध ने बुद्ध पूर्णिमा के पर्व पर अपने भक्त की काया तथा आत्मा को कष्ट देना उचित नहीं समझा होगा। पण्डितजी पर भगवान बुद्ध के जीवन तथा उनके चरित्र की अद्भुत छाप थी। व सभी कमरा में—जहाँ सोते काम करते—विदेश म आवास तथा ससद के कमरा म भगवान बुद्ध की मथुरा-संग्रहालय की प्रसिद्ध चीवरधारी अभय मुद्रावाली मूर्ति की फाटो रखते थे। इस मूर्ति

के मस्तक के पीछे वलय रहता है। चीवर वस्त्र की धारियाँ इतनी मनोहर लगती हैं कि उन्हें देखते ही बनता है। बुद्ध के प्रति भक्ति के वश ही उन्होंने 'धर्मचक्र प्रवर्तन सूत्र' के प्रतीकस्वरूप धर्मचक्र का चिह्न राष्ट्रीय पताका पर लगाना संसद से स्वीकार कराया था। यही वह भक्ति थी जिसके प्रतीकस्वरूप लोकसभा के अध्यक्ष के ऊपर 'धर्मचक्र प्रवर्तनाय' उज्ज्वल ज्योति में अंकित है।

पण्डितजी की बुद्ध पूर्णिमा २६ मई को हँसी-खुशी देहरादून में बीती। दिल्ली में वे इसी दिन सायंकाल अतीव प्रसन्न मुद्रा में वायुयान से पालम पर उतरे थे।

बहिन के ऊपर भी कुछ ऐसी ही बीती। विजयलक्ष्मीजी को बुद्ध पूर्णिमा पर्व मनाने के लिए श्रीमती सोफिया वाडिया ने अपने यहाँ आमंत्रित किया था। अपने बँगले की छत पर उन्होंने भगवान बुद्ध की मूर्ति रखी थी। पीछे पूर्णिमा का पूर्ण चन्द्रबिम्ब उठ रहा था।

विजयलक्ष्मीजी बोलने खड़ी हुईं। उनके ठीक सम्मुख बुद्ध की प्रतिमा थी। उन्हें कुछ विचित्र अनुभव हुआ। शशि बिम्ब प्रतिमा के पीछे छिप गया था। प्रतिमा के चारों ओर शशि रश्मियाँ वलय जैसी परिलक्षित होने लगी थीं। वह बोल रही थीं। बोलती जा रही थीं। उन्हें अनुभव हो रहा था जैसे बुद्ध प्रतिमा भाई की प्रतिमा बन जाती थी—फिर वह बुद्ध प्रतिमा में परिवर्तित हो जाती थी। पुनः वह पण्डितजी के रूप में बदल जाती थी। वह कुछ चकित हुईं उनका मन असमंजस्य हो उठा। उन्हें बात याद आ गई। भाई कहा करते थे—बुद्ध पूर्णिमा के दिन मरना अच्छा होता है। वह वही समय था जब पण्डितजी देहरादून से लौटकर खाना खाकर अपने कमरे में बैठे थे।

विजयलक्ष्मीजी राजभवन आईं। उनका मन किसी काम में लगता न था। वह कुछ विकलता अनुभव करने लगीं। भाई के लिए चिन्ता उत्पन्न हुई। खाना नहीं खाया गया। भाई के लिए भगवान से प्रार्थना की भरे मन से सोईं। नींद नहीं आई। उनकी आँखों के सामने भाई

तथा बुद्ध की मूर्तियाँ क्रम से आने और जाने लगीं।

वे अपने बिस्तरे से उठीं। टेलीफोन अपने पास रख लिया। उन्हें अन्तरप्रेरणा जैसी होने लगी। टेलीफोन की घण्टी बजेगी। वे भाई का हाल जानेंगी। हाल जानने में किंचितमात्र विलम्ब न हो इसलिए फोन पास रख लिया। परन्तु फिर भी नींद नहीं आई। प्रातःकाल टेलीफोन बजा। उनका हृदय धड़क उठा। किंचित् कम्पित सहमते हुए टेलीफोन उठाया। आवाज इन्दिरा गांधी की थी। उनके कुछ कहने के पहले ही बोल उठीं—भाई की तबियत कैसी है ? इन्दिराजी ने जवाब दिया—तबियत खराब है—तुरन्त आइये।

भाई-बहिन का प्रेम दुर्लभ है। एक ही कोख एक ही माँ-बाप के वे प्रतीक होते हैं। अन्तरात्मा की प्रेरणा यदि उनमें हुई तो यह आश्चर्य नहीं स्वाभाविक है। यह प्रायः देखा गया है। इस प्रकार अन्तर्भूति माता-पिता का अपनी सन्तानों पर चाहे वे हजारों मील दूर रहें विपत्ति आने पर हो जाती है। सन्तानों में भी यह प्रतिक्रिया होती है। किन्तु इस प्रकार की भावना—इसी प्रकार की प्रतिक्रिया की बात मैंने बहुत जाँच की पण्डितजी के किसी सम्बन्धी स्नेही और उनके स्नेह तथा प्रेम के हामी भरने वालों में नहीं हुई। यदि हम राजनीतिज्ञों में न हो तो कोई आश्चर्य नहीं। क्योंकि हमारा उनका सम्बन्ध रक्त-मांस का नहीं किन्तु कार्यकर्ता तथा सहयोगी मात्र का था। यहीं बहुत लोग यह मानने के लिए विवश हो जाते है कि एक अव्यक्त शक्ति है। उसका भी कार्य-कलाप अनजाने होता रहता है।

उस समय दिल्ली जाने वाला प्लेन बम्बई से छूट चुका था। महाराष्ट्र सरकार का वायुयान पूना में बिगड़ा पड़ा था। अन्त में विजयलक्ष्मीजी ने राष्ट्रपति को फोन किया। राष्ट्रपति ने दिल्ली से वायुयान भेजने की व्यवस्था की। उन्होंने मध्याह्नान्तर लगभग १ बजे अपनी छोटी बहिन कृष्णा हथीसिंह, उनके पति श्री राजा हथीसिंह तथा पुत्री श्रीमती नयनतारा सहगल और उनके पति श्री गौतम सहगल के साथ बम्बई से प्रस्थान किया भाई का महाप्रस्थान देखने के लिए।

राष्ट्रपति पहुँचे

राष्ट्रपति ८ ब्वजकर १० मिनट पर प्रधानमन्त्री भवन पहुँच गये। समाचार मिलने के १५ मिनट के अन्दर राष्ट्रपति भवन से प्रधानमंत्री भवन पहुचने का अर्थ यह था कि उन्होंने एक मिनट का भी कहीं विलम्ब नहीं किया। उनके इतने शीघ्र अविलम्ब पहुँचने पर यह कल्पना की जा सकती है। धममीरु दार्शनिक राष्ट्रपति का अन्तःप्रेरणा हुई होगी। उनके *अवचेतन मन पर स्थिति की गम्भीरता का अनजाने प्रभाव पड़ा होगा।* इस प्रकार की अन्तःप्रेरणा प्रायः होती है। क्से होती है। भविष्य की घटना का आभास कैसे अनायास मिल जाता है ? इसका उत्तर विश्व के दार्शनिकों तथा वैज्ञानिकों ने अनेक प्रकार से दिया है। किन्तु ठीक कारण अब तक मिल नहीं पाया है। अघटित घटना किंवा भविष्य के गर्भ की बातों का सकत मन को मिलता रहता है। मिलता रहेगा। यह मानी हुई बात है। अधिक गवेषणा न करना ही अलम् होगा।

शास्त्री और नन्दा जी

राष्ट्रपति ने देखा वहाँ डाक्टर उपस्थित थे। पण्डितजी बहोश थे। मुख कुछ नीलाभ मालूम हो रहा था। मुखाकृति किंचित् वक्र मालूम हुई। किन्तु वह भ्रान्ति मात्र थी। उस समय पण्डितजी को आक्सीजन दिया जा रहा था। नाक में नली लगी थी। मस्तक दाहिनी ओर तकिये पर झुका था। मुखमें दाँत नहीं लगे हुए थे। मुख में दाँत न होने पर स्वभावतः ओंठ कुछ टढ़े तथा गाल पिचके दिखाई देते हैं। अतएव बहुत बारीकी से न देखा जाय तो इस प्रकार का भ्रम स्वाभाविक है।

पक्षाघात का आक्रमण होने पर शरीर का कोई अंग शिथिल किंवा टेढ़ा हो जाता है। सब लोग इस बात पर एक मत थे। पण्डितजी की आसन्न बीमारी का कारण तत्काल हुए किसी पक्षाघात अथवा हृदय रोग के आक्रमण के कारण नहीं हुआ था।

इस समय [illegible]

१५ मिनट पर [illegible]

तक पूर्णतया नहीं [illegible] था।

श्रीमती इन्दिरा गांधी [illegible]

लालबहादुर शास्त्री की [illegible]

उन्हें कुछ अपेक्षा हो [illegible]

गुलजारीलाल नन्दा [illegible]

दी। राष्ट्रपतिजी के [illegible]

फोन किया गया। श्री [illegible]

ही ८ बजकर १५ मिनट [illegible]

समय उन लोगों को [illegible]

उपस्थिति इस समय [illegible]

श्री लालबहादुर [illegible]

एक बार गये। नन्दाजी [illegible]

जी के पास लोगों का [illegible]

गांधी प्रायः भीतर [illegible]

श्री लालबहादुर शास्त्री [illegible]

लगातार सूचना [illegible]

श्री लालबहादुर [illegible]

उत्साहवर्धक उत्तर नहीं [illegible]

गई। वे पण्डितजी के [illegible]

बगल वाली बाहरी खिड़की [illegible]

बात कर लेते थे।

श्री नन्दाजी ८ [illegible]

सब के बीच लगभग [illegible]

गये थे। उनके ऊपर [illegible]

वरीयता की दृष्टि से [illegible]

की स्वास्थ्य रक्षा की [illegible]

एक मनुष्य की बीमारी नहीं थी। इसका सम्बन्ध देश तथा विदेश से था।

वे भीतर गये। उनके हृदय को धक्का लगा। विश्व का महान शक्तिशाली मानव असहायतुल्य चारपाई पर पड़ा था। पण्डितजी की यह अवस्था देखकर उनका हृदय भर आया। उन्होंने अनुभव किया। पण्डितजी को साँस लेने में कष्ट हो रहा था। उन्होंने डाक्टरों से पूछा 'हालत कैसी है ?' उत्तर मिला— नाजुक है। उन्होंने पुनः पूछा— 'बचाने के लिए क्या करना चाहिए।' उत्तर मिला—'जो कुछ हो सकता है किया जा रहा है। इससे अधिक इस हालत में और क्या किया जा सकता है। खतरे से खाली हालत नहीं कही जा सकती।

पण्डितजी का जीवन-मरण संघर्ष उनका निजी कार्य नहीं रह गया था। उसका सम्बन्ध उनकी काया, उनकी आत्मा तथा उनके कुटुम्ब मात्र से नहीं रह गया था। उसका प्रभाव राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय जगत में पड़ने वाला था। अतएव सभी चिन्तित थे। परेशान थे।

डाक्टर राजू स्वयं सफल डाक्टर हैं। ब्रिटिश काल में सेना में मेजर थे। तत्पश्चात् नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की सेना में भारत-मुक्ति के लिए कर्नल रूप से आजाद हिन्द फौज में सम्मिलित हो गये थे। डाक्टर राजू अविलम्ब पण्डितजी के निवास-स्थान पर पहुँचे। उस समय वहाँ चार-पाँच डाक्टर थे। डा० राजू सभी डाक्टरों को जानते थे। उनसे कुछ विचार-विमर्श करने के पश्चात् उन्होंने पण्डितजी का परीक्षण स्वयं करना आरम्भ किया।

डा० राजू ने स्टेस्थस्कोप लगाकर पण्डितजी के हृदय की गति तथा स्थिति देखी। नाड़ी देखी। उन्होंने यह भी देखा पण्डितजी की पीठ पैर तथा जाँघ पर निशान पड़े थे। पण्डितजी को प्रातःकाल डाक्टरों ने देखा था। पीठ में कमर के समीप निशान उन्हें मिला था। डा० राजू को इस समय अर्थात् प्रथम परीक्षण के दो घण्टे पश्चात् जाँघ पर भी निशान दिखाई दिया। सम्भव है प्रथम परीक्षण के समय डाक्टरों की दृष्टि इस पर न गई हो। नाड़ी बहुत धीमी चल रही थी।

पण्डितजी का पसीना बहुत आ रहा था। चादर भीगी जा रही थी।

शरीर से जल पसीने के रूप में बाहर निकल रहा था। शरीर में जल पहुँचाने की व्यवस्था करनी आवश्यक प्रतीत हुई। अतएव पण्डितजी को नारएड्रेलाइन ग्लूकोसेसाइन नस द्वारा देने का निश्चय किया गया। डा० राजू के मत से हालत में सुधार नहीं हो रहा था। अनिश्चित अवस्था थी।

श्री टी० टी० कृष्णमाचारी को बीमारी का समाचार ८ बजकर ४० मिनट पर मिल गया था। वे पण्डितजी के निवासस्थान पर आये। वरीयता की दृष्टि से मन्त्रिमंडल में उनका स्थान तृतीय था। उन्हें प्रधानमन्त्री के समीप सहायक मन्त्री के रूप में रहना पड़ा। वे प्रधानमन्त्री भवन में १० बजकर ४० मिनट तक ठहरे रहे। उसके पश्चात् संसद में आने के बाद मृत्युपर्यन्त वे पण्डितजी के निवासस्थान पर ही रहे।

डाक्टरों का जमघट

लगभग ८ बजकर ३० मिनट पर डा० गुलेरिया उसके पश्चात् ८ बजकर ५० मिनट पर डा० टी० चटर्जी तथा डा० आर० नारायण सफदरजंग अस्पताल से पहुँचे। इस समय तक पण्डितजी के निवासस्थान पर १० डाक्टरों का जमघट हो गया था। प्रत्येक विषय पर विचार विमर्श किया जाता रहा था।

यदि कोई साधारण व्यक्ति बीमार पड़ता है तो उसका इलाज साधारण रूप से ही होता है। बीमारी का महत्त्व बहुत बढ़ाया नहीं जाता। यदि किसी साधारण व्यक्ति की बीमारी किसी असाधारण व्यक्ति को हो जाती है तो उसे असाधारण रूप दे दिया जाता है। असाधारण सतर्कता, असाधारण औषधियाँ असाधारण व्यवस्था असाधारण निदान साथ ही साथ असाधारण बुद्धि की भी खोज की जाने लगती है। इसका कभी-कभी परिणाम यह होता है कि जड़ को न पकड़ कर शाखा तथा पल्लवों को पकड़ने की चेष्टा की जाने लगती है।

२६३४

एकांगी ऐलोपथी

कुछ ऐसी परिस्थिति पण्डितजी की बीमारी के सम्बन्ध में भी हुई। जैसे-जैसे समय बीतने लगा डाक्टरों का समुदाय प्रधानमंत्री भवन में बढ़ने लगा। मालूम होता था कोई एक व्यक्ति जिम्मेदारी लेने के लिए सन्नद्ध नहीं था। लोकतन्त्रीय शासन प्रणाली के समान सामूहिक नेतृत्व' की प्रणाली डाक्टरों के एकत्रित समूह ने अपनाई। अतएव पण्डितजी का निदान तथा उपचार सामूहिक ढंग से होने लगा। एक बात की यहाँ कमी रह गई थी। लोकतन्त्र के सामूहिक नेतृत्व को चलाने के लिए विरोधपक्ष की भी आवश्यकता होती है। अन्यथा एक-दलीय सदस्यों के होने के कारण वह एकांगी हो जाती है। सब ऐलोपथिक आधुनिक विज्ञान प्रसूत औषधियों तथा उपचारों के विशेषज्ञ थे। एक ढंग से सोचते थे। उनकी विचारधारा कार्य प्रणाली एक-सी थी।

होमियोपैथी यूनानी अथवा आयुर्वेद जानने वाला कोई विशेषज्ञ न तो वहाँ था और न उनकी सेवा उपलब्ध करने का प्रयास किया गया। किसी ने सुझाव नहीं दिया। भारतवर्ष के विश्वविख्यात होमियोपैथ यूनानी आयुर्वेदिक अथवा सिद्ध प्रणाली के चिकित्सकों से भी सलाह ली जाय। अथवा उनकी भी राय जानकर उपचार का प्रबन्ध किया जाय। मुख्यतः ऐसी परिस्थिति में जब डाक्टर लोग इस नतीजे पर पहुँच चुके थे कि पण्डितजी को नहीं बचाया जा सकता था। उन्हें अन्य पद्धतियों के चिकित्सकों को भी अवसर देना चाहिए था। पण्डितजी केवल मात्र एक ही पद्धति तथा चिकित्सा की सामग्री नहीं थे। वे भारत के थे। अतएव उनके इस प्रकार उठ जाने की जिम्मेदारी इतिहास भारतीय चिकित्सकों पर ही थोपेगा न कि किसी एक प्रणाली के विशेषज्ञों पर।

'योजकस्तत्र दुर्लभः'

यदि इस शृंखला में कोई कड़ी नहीं जुड़ी थी तो वह थी वह साधारण व्यवस्था तथा व्यवहार जो साधारण से साधारण कुटुम्बों में बरता जाता है। कुल का कोई बड़ा-बूढ़ा किया [illegible] इस परिस्थिति में राय ही नहीं देता बल्कि स्थिति पर काबू पाने के लिए नियन्त्रण तथा अपनी बुद्धि के अनुसार उसका संचालन भी करता है। वह डाक्टरों को सलाह देता है काम करने की उपचार करने की और परिस्थिति का नेतृत्व करता है।

कहा जाता है कि लोकतन्त्र विशेषज्ञ (एक्सपर्ट) तथा अविशेषज्ञों (ले-मैन) के समन्वय का परिणाम होता है। विशेषज्ञों की अपनी एक सीमा होती है। उससे बाहर निकलना उनके लिए कठिन होता है। पण्डितजी के यहाँ विशेषज्ञों की भीड़ तो एकत्रित हुई। वहाँ कोई 'साधारण व्यक्ति' नहीं था जिसकी राय मानी जा सकती। अतएव सामूहिक नेतृत्व की नीति का असफल होना अनिवार्य था।

इसी दिन के लिए लोग पुत्र की कामना करते हैं। घर में बड़े-बूढ़ों के रहने की कामना करते हैं। क्योंकि वे अपना सर्वस्व त्याग कर अपने जीवन की बाजी भी लगाकर रोगी की प्राण रक्षा करने का प्रयास करते हैं। पण्डितजी के कुटुम्ब में कोई बड़ा-बूढ़ा नहीं था। कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था जो किसी प्रकार का भी 'खतरा' उठाकर पण्डितजी की प्राण रक्षा करने का उद्योग करता। डाक्टर के लिए शरीर एक यन्त्र मात्र है। वह उस मोटर-गाड़ी की तरह है, जिसके बन्द हो जाने पर उसे मोटर-खाने में रख दिया जाता है। शरीर-यन्त्र बन्द होने पर उसे मुर्दाखाने में रख दिया जाता है। पण्डितजी के जीवन को बचाने के लिए डाक्टरों ने अपने विज्ञान के अनुसार सब कुछ किया जो वे कर सकते थे। परन्तु वहाँ विज्ञान भी जड़ हो गया।

वहाँ उपस्थित लोगों में एक प्रकार की विवशता और असहायावस्था की भावना व्याप्त हो गई थी। किसी प्रकार भी स्थिति में सुधार

न होने के कारण नैराश्य वातावरण का उत्पन्न हो जाना स्वाभाविक था। पण्डितजी की स्थिति तेजी से बिगड़ती जा रही थी। जीवन-ज्योति का तेल तेजी से शेष होता जा रहा था। सभी इसका अनुभव कर रहे थे। किन्तु परिस्थितियाँ जैसे स्वयं जड़वत् होकर रह गई थीं।

पण्डितजी काल मुख में प्रवेश करते जा रहे थे। सब देख रहे थे। उन्हें बचाना चाहते थे। उनकी जीवन रक्षा करना चाहते थे। किन्तु जैसे कुछ कर नहीं पा रहे थे।

नाटक की यवनिका

प्रतीत होता था—मृत्यु अपने सफल नाटक का रंगमंच सजा रही थी। यवनिका पतन होने वाला था। एकत्रित लोग उस नाटक के मूक दर्शक थे। अथवा जीवनसंध्या का नाटक हो रहा था। अन्तिम दृश्य था। पर्दा गिरने वाला था। और वहाँ उपस्थित लोग उस पात्र की तरह थे जो अपना-अपना पार्ट अदा कर निरपेक्ष हो जाते हैं।

निश्चयात्मकरूप से तो नहीं परन्तु ८ बजकर ३० मिनट पर यह आभास हो गया था। महाधमनी (अरोटा) फट गई है। अतएव शरीर में रक्त की पूर्ति करने के लिए नसों द्वारा शरीर में रक्त प्रवेश कराने का प्रबन्ध कर लिया गया। सफदरजंग अस्पताल से रक्त देने का सामान यन्त्रादि एकत्रित कर लिये गये। ऐक्सरे के सामान का प्रबन्ध भी कर लिया गया। जहाँ तक मुझे मालूम है कर्नल टण्डन को पण्डितजी को आक्सीजन देने का काम सौंपा गया था। डाक्टर आर० नारायण रक्त शरीर में पहुँचाने के लिए नियुक्त थे। ऐक्सरे का प्रबन्ध कर्नल मैन डा० डोगरा तथा डा० वेदप्रकाश के जिम्मे था।

विफल प्रयत्न



लगभग ६ बजे प्रातः पण्डितजी की जीवन-रक्षा मलीन होने लगी। इसी समय आक्सीजन देने का सलेण्डर मंगाया गया। उसे पण्डितजी के कमरे में पहुँचाया गया। आक्सीजन आने का अर्थ था। स्थिति गम्भीर हो गई थी। डाक्टर खोसला तथा डाक्टर बरोसी प्रायः एक ही समय ६ बजकर १५ मिनट पर प्रधानमन्त्री-भवन पहुँचे। डाक्टरों ने निश्चय किया। पण्डितजी के शरीर में रक्त प्रवेश कराया जाए। तत्काल वहाँ रक्त उपलब्ध नहीं था। श्रीमती इन्दिरा गांधी का रक्त पण्डितजी के रक्त से अधिक मेल खाता था।

सैनिक अस्पताल में पण्डितजी के रक्त से मेल खाने वाले १० या १४ जवानों का पहले से ही निरीक्षण कर उनकी तालिका बना ली गई थी। आवश्यकता (Emergency) पड़ने पर उनका रक्त पण्डितजी के शरीर में दिया जा सकता था। इस पूर्व कल्पना के अनुसार व्यवस्था कर ली गई थी। किसी भी आकस्मिक घटना पर उनका रक्त उपलब्ध हो सकता था। डा० अय्यर ने जवानों का रक्त मँगाने की व्यवस्था की। जवानों का रक्त मिलने और पहचान में विलम्ब होता। समय तीव्र गति से दौड़ता जा रहा था। अतः समीप ही उपलब्ध श्रीमती इन्दिरा गांधी अपना रक्तदान करने के लिए तैयार हो गई। रक्त प्रवेश की व्यवस्था कर ली गई। श्रीमती इन्दिरा गांधी का रक्त लिया गया।

पण्डितजी जिस कमरे में थे उसी से सटे पूर्वी कमरे में इन्दिराजी का रक्त लिया गया। रक्त देने के पश्चात् उन्हें कुछ बेचैनी मालूम हुई। वे उसी कमरे में चारपाई पर लगभग १५ मिनट तक पड़ी रहीं।

सैनिक अस्पताल से जवानों का ४ सी० सी० रक्त मँगा लिया गया। पण्डितजी के शरीर में सर्वप्रथम इन्दिरा गांधी का रक्त प्रविष्ट किया। जवानों का रक्त इन्दिरा गांधी का रक्त समाप्त हो जाने के पश्चात् काम में लाया गया।

विश्व के इस महान व्यक्ति भारत के सबसे अधिक सत्ता-सम्पन्न राजनीतिक शक्तिपुञ्ज जिसके लिए विश्व की कोई भी औषधि कोई भी उपचार सुलभ हो सकता था जिसके लिए भारत की कोई भी वस्तु तत्काल उपलब्ध हो सकती थी उसकी करुण निस्सहाय अवस्था देखकर किसकी आँखें सजल न हो आतीं ! कौन इस शरीर के नश्वरत्व में विश्वास करने से हिचकता।

आत्मा का यंत्र

भारत की वह महान् आत्मा अपनी काया का साथ न पाने के कारण पंगु-तुल्य दयनीय स्थिति में चारपाई पर पड़ी थी। उसका शरीर एक यंत्र-तुल्य हो गया था। शरीर-यन्त्र पर प्रयोग हो रहा था। मानवीय यंत्रकार मानवीय यन्त्र से बचाने की कोशिश कर रहे थे ईश्वर प्रदत्त शरीर-यन्त्र को। मानवीय यन्त्र अथक परिश्रम में लीन थे शरीर यन्त्र पर काबू पाने के लिए, उसे चलाने के लिए, किन्तु गाड़ी चलती दिखाई नहीं पड़ती थी। पण्डितजी का शरीर एक बिगड़ी मशीन की तरह पड़ा था। उस मशीन के पुरजे ठीक करने चलाने का प्रयास कर रहे थे मानव। यह संघर्ष था जैसे दैवी एवं मानवीय बुद्धि का स्पर्धा का एक चालुय का।

उस करुण स्थिति का वर्णन करना करुणा को और करुण करना होगा। शब्द उसे प्रकट नहीं कर सकते। भाव शब्दों में जीवन नहीं दे सकते। भाषा उसमें प्रवाह नहीं ला सकती। आँखें उसे देखकर शब्दों

म कुछ उतारना नहीं चाहतीं। मन उसके लिए तयार नहीं होता था। बुद्धि उसे ग्रहण करने की इच्छा नहीं करती थी।

नलियों का जाल

उनके दोनों पैरों के अँगूठे के कुछ ऊपर नसें काट दी गई थीं। उनम नली लगा दी गई थी। एक नली से रक्त शरीर म प्रवश करने लगा। दूसरे पैर के अँगूठे के ऊपर वाली नस के भीतर से हृदय की शक्ति स्थिर रखने के लिए सेलाइन, ग्लूकोज और नोरएड्रनलीन का मिश्रण शरीर म प्रवेश कराया जा रहा था। तीसरी नली आक्सीजन देने के लिए नासिका के समीप लगी थी। पण्डितजी का शरीर पैर के अँगूठे से नासिका तक नलियों से घिर गया था। उनके चारों तरफ शताब्दियों के अन्वेषणों, अनुसन्धानों के परिणामस्वरूप उपलब्ध यन्त्र एवं साधन अपने अस्तित्व की उपयोगिता सिद्ध कर रहे थे। उनका शरीर नलियों के जाल में फँसी मछली की तरह हो गया था। यह जाल जैसे काल ने भवसागर से गौरवर्ण सुन्दर क्षीण काया को फँसाने के लिए फैला दिया था। काल का पाश दिखाई नहीं पड़ता। उसकी कल्पना पुस्तकों में ही पढ़ी जाती है। परन्तु नली-पाश में पण्डितजी का शरीर घिरा है यह स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

पण्डितजी को कोई खाने की औषधि नहीं दी गई। कारण बताया गया। वह बेहोश थे। अतः औषधि नहीं दी जा सकती थी। कण्ठ के नीचे उतरती नहीं। आयुर्वेद तथा होमियोपथी की औषधियाँ बेहोशी की हालत म दी जाती हैं। वे सूक्ष्म और तत्सादृश्य होती हैं। मूर्च्छा एवं जागृत अवस्था दोनों में उनका प्रभाव शरीर पर पड़ता है।

पण्डितजी के शरीर से पसीना बहुत छूट रहा था। शरीर में जल का अंश कम हो रहा था। कम होते जल की पूर्ति को सेलाइन वाटर तथा हृदय की गति बनाए रखने के लिए ग्लूकोज तथा नोरएड्रनलीन का अनवरतवर्ती रूप से दिया जाने लगा। श्वास की गति ठीक रखने के लिए आक्सीजन दिया जा रहा था। आधुनिक भैषज विज्ञान के मता-

नुसार पण्डितजी पर इन्हीं दवाओं का प्रयोग किया गया था जिन्हें आजकल 'माडर्न मेडिसिन' कहते हैं। यह क्रम उनके मृत्युकाल तक जारी रहा। किसी प्रकार की औषधि खाने के लिए नहीं दी गई। केवल वाह्य उपचारों एवं औषधियों का प्रयोग किया गया। यहीं तक इस महामानव का उपचार सीमित रखा गया।

क्षणिक चेतना

पण्डितजी के शरीर में रक्त पहुँचा। उसका कुछ प्रभाव प्रकट हुआ। कुछ समय पश्चात् किंचित् काल के लिए उन्हें होश आया। सम्भवतः औषधि संसाइन तथा रक्त के शरीर में प्रवेश होने के कारण उनकी प्रतिक्रिया शिराओं पर हुई। उनका शरीर दो बार क्षणमात्र के लिए हिला। उन्होंने जोर लगाकर उठने का प्रयास किया। वे उठ नहीं सके। पड़े रह गए। और अन्त तक उसी स्थिति में पड़े रहे।

मुहूर्त मात्र पश्चात् उनकी आँखें खुलीं। चारों ओर घूमीं। नत्थू पण्डितजी की आदतों से खूब परिचित था। वह समझ गया। पण्डित जी समय जानना चाहते हैं। उसने पण्डितजी की टाइमपीस घड़ी उठा कर उन्हें दिखाई। पण्डितजी की आँखें घड़ी पर पड़ीं। पुनः घूमीं। अनन्तर पलकें बन्द हो गईं।

किसी डाक्टर ने अथवा किसी ने भी पण्डितजी से यह पूछने का प्रयास नहीं किया उन्हें क्या कष्ट है। वे क्या चाहते हैं। मालूम होता था जैसे पण्डितजी लोगों की बातें सुनते थे। किन्तु बोल नहीं पा रहे थे। आँखें कभी खोल देते थे। कभी बन्द कर लेते थे। सम्भवतः कुछ जानना चाहते थे। कुछ सुनना चाहते थे। उनकी मुखाकृति भाव भंगी संकेत किंवा मुद्रा से किसी ने कुछ आशय निकालने का प्रयास किया या नहीं कहना कठिन है। संकोच के कारण शायद कोई कुछ कह नहीं सका। इस क्षणिक चेतना के पश्चात् उनमें चेतना पुनः मृत्यु-पर्यन्त नहीं देखी गई। उनकी कर्मेन्द्रियाँ उनकी ज्ञानेन्द्रियाँ जैसे अपने में लोप हो गईं।

लगभग ६ बजकर ३० मिनट बीतते-बीतते डाक्टर किसी प्रकार निदान करने में सफल हो सके। श्री लालबहादुर शास्त्री तथा इन्दिरा जी को इसके आध घण्टा पूर्व डाक्टरों ने सूचना दे दी थी—अवस्था अत्यन्त शोचनीय है।

दिन में लगभग ६ बजे सुरक्षा मन्त्रालय में एक मीटिंग थी। उसमें मन्त्रिमण्डल सचिव श्री खेरा तथा सुरक्षा विभाग के संयुक्त सचिव श्री सरीन उपस्थित थे। श्री खेरा सूचना मिलने पर प्रधानमन्त्री भवन गये। वहाँ से ठीक ६।। बजे श्री सरीन को फोन किया। आप तुरन्त प्रधानमन्त्री भवन आ जाइए। श्री सरीन प्रधानमन्त्री भवन अविलम्ब पहुँचे। वहाँ पहुँचते ही उन्होंने अनुभव किया। स्थिति गम्भीर है। श्री खेरा ने सरीन से कहा बचने की बहुत कम उम्मीद है। क्या करना है सोचना और समझना शुरू कर दो।

श्री सरीन लगभग १० बजे सुरक्षा मन्त्रालय लौट आए। उन्होंने स्वयं सब प्रबन्ध करना आरम्भ कर दिया। सुरक्षा मन्त्री चौहान विदेश गये थे। सुरक्षा उपमन्त्री श्री डी० आर० चौहान दिल्ली में थे। उन्हें सूचना दी गई। सेरीमोनियल' विषय की किताब रजिस्टर तथा कागज वगैरह निकाले गये। उन्हें पुनः १० ३० बजे श्री खेरा ने फोन किया। श्रीमती विजयलक्ष्मी को बम्बई से लाने के लिए वायुयान का प्रबन्ध कर दिया जाय। श्रीमती विजयलक्ष्मी के लिए वायुयान का प्रबन्ध कर दिया गया। वह पुनः प्रधानमन्त्री-भवन पहुँचे। वहाँ श्री खेरा तथा स्वामीनाथन गृह सचिव मौजूद थे। वहाँ का वातावरण बड़ा ग्लोमी तथा डिप्रेसिंग' था। सभी लोग बहुत चिंतित थे।

श्री नन्दाजी को यह बात मालूम हुई। लगभग इसी समय उन्होंने मुझे सूचित किया। आज की संसदीय दल की कार्यकारिणी में जो दिन के १० बजे पण्डितजी की अध्यक्षता में संसद भवन में होने वाली है उसमें पण्डितजी बीमारी के कारण नहीं आ सकेंगे। बीमारी की गम्भीरता मुझे बताई नहीं गई। मैंने समझ लिया। कुछ साधारण तबियत खराब होगी। अतएव विशेष जिज्ञासा नहीं की।

डाक्टरी निदान

डाक्टरों ने इस समय तक दो प्रकार के निदान कर लिए थे। प्रथम निदान था—'एक्यूट हेमरेजिक पनक्रियाटाइटिस अथवा 'इनफ्लमेशन आफ पन्क्रियास।' दूसरा निदान था—'डिसेक्टिंग एन्यूरिज्म आफ डिसण्डिग एओरटा।' मैंने बाद में कुछ विज्ञों से पूछा था। किस निदान के आधार पर उपचार किया गया। और निश्चित निदान क्या था। परन्तु कोई सन्तोषजनक उत्तर प्राप्त करने में मैं असमर्थ रहा। मुझे बताया गया। दूसरे निदान की अधिक सम्भावना थी।

समय साढ़े नौ बजे दिन का हो गया था। पण्डितजी की नाड़ी कभी पकड़ में आती और कभी नहीं पकड़ में आती थी। नाड़ी की गति ठीक नहीं थी। नाड़ी अपना स्थान छोड़ देती थी और पुनः यथा स्थान हो जाती थी।

इन्दिराजी तथा वहाँ उपस्थित लोगों को अनुभव हो चला। पण्डितजी की बीमारी बेकाबू हो रही है। बचने की सम्भावना नहीं है। लोगों में स्वाभाविक चिन्ता व्याप्त हुई।

इन्दिराजी ने डाक्टर राजू से कहा 'बम्बई से हृदय-विशेषज्ञ डाक्टर वकील को बुलाया जाए।' तत्काल उन्हें विशेष हवाई जहाज से लाने का प्रबन्ध कर लिया गया। डा० वकील की माता को उस दिन हृदय रोग का दौरा हो गया था। कोई पुत्र अपनी माता की सेवा ऐसे समय त्यागना नहीं चाहता। परन्तु डा० वकील ने मातृस्नेह के स्थान पर दशप्राण पण्डितजी के प्रति स्नेह को प्राथमिकता दी। डा० वकील ने विशेष विमान से दिल्ली के लिए प्रस्थान किया। दिल्ली पहुँचने के पूर्व ही पण्डितजी का शरीर छूट चुका था।

अरोटा फटने की बात सुनने पर इन्दिराजी ने दिल्ली के प्रसिद्ध कारडियोलाजिस्ट सर्जन डा० सेन तथा गोपीनाथ को तत्काल बुलाने के लिए डा० राजू से कहा। दोनों विशेषज्ञों को अविलम्ब सूचना दे दी गई। डा० राजू ने मुझे बताया। इन्दिराजी की इच्छानुसार किसी भी

डाक्टर को कहीं से भी बुलाने के लिए सभी कटिबद्ध थे। कोई भी प्राप्य उपाय, उपचार तथा सहायता अविलम्ब प्राप्त हो सकती थी।

इस समय पण्डितजी को साँस लेने में कष्ट हो रहा था। साँस के साथ धीमी-धीमी आवाज आने लगी थी। स्पष्ट मालूम हो रहा था। हृदय को साँस लेने में कष्ट हो रहा था। हृदय को परिश्रम करना पड़ता था।

लगभग १० बजे डा० सिकन्द, १० बजकर १५ मिनट पर डा० एम० पी० सिंह तथा १० बजकर ३० मिनट के आसपास प्रायः आगे पीछे डा० सेन और डा० गोपीनाथ प्रधानमन्त्री-भवन पर पहुँच गये।

डाक्टर गोपीनाथ ने पण्डितजी के हृदय तथा छाती की परीक्षा की। पण्डितजी की बीमारी हृदय-गति के दौरे के कारण नहीं थी। यह बात डाक्टरों ने निर्विवाद रूप से निश्चित की थी। समाचार-पत्रों में छपा था। विदेशी डाक्टर तथा कृत्रिम फफड़े बाहर से मँगाये गये थे। जहाँ तक मुझे पता लग सका है यह बात ठीक नहीं उतरी। यद्यपि उस समय इस समाचार का प्रतिवाद किसी भी गैर सरकारी या अर्ध सरकारी सूत्र से नहीं किया गया था।

आपरेशन का विचार

डाक्टर गोपीनाथ ने परीक्षा के पश्चात् मत प्रकट किया। इस परिस्थिति में आपरेशन नहीं किया जा सकता। बीमारी बहुत आगे बढ़ चुकी है। आपरेशन करने पर केवल मात्र एक प्रतिशत बचने की सम्भावना हो सकती है। डा० गोपीनाथ इस प्रकार की बीमारियों में आपरेशन कर चुके थे। वे इसके विशेषज्ञ थे। उनका अनुभव था। उनकी दृष्टि में इस परिस्थिति में आपरेशन करना असामयिक था। प्रातःकाल छ या सात बजे आपरेशन करने का प्रश्न उठ सकता था। किन्तु इस प्रकार की बिगड़ी स्थिति में आपरेशन के कारण मृत्यु की सम्भावना अधिक हो सकती थी।

श्री शास्त्रीजी से सलाह ली गई। शास्त्रीजी ने कहा—"पण्डितजी

की बीमारी के सम्बन्ध में इन्दिराजी से सलाह लेना जरूरी है। इस तरह के मामले में उनकी राय तथा इच्छा अंतिम माननी चाहिए।' उपराष्ट्रपति को इन्दिराजी ने फोन कर दिया था। वह राष्ट्रपति के पहुंचने के पूर्व आ चुके थे। वहीं साढ़े दस बजे तक रहे। आपरेशन के विषय में शास्त्रीजी ने उपराष्ट्रपति डा० जाकिर हुसेन साहब से पूछा। जाकिर हुसेन साहब ने इन्दिराजी से विचार करने की राय दी। श्रीमती इन्दिरा गांधी से उन्होंने कहा— अगर मेरे वालिद इस हालत में होते तो मैं कभी उनका आपरेशन करने की राय नहीं देता। मेरी राय में आपरेशन करना ठीक नहीं है। लेकिन इस मामले में आपकी राय से ही काम करना मुनासिब है।

इन्दिराजी की राय आपरेशन कराने की नहीं हुई। अतएव आपरेशन करने का विचार अन्तिम रूप से त्याग दिया गया। डाक्टर भी स्वयं इतना बड़ा खतरा उठाने के लिए सम्भवतः तैयार नहीं थे।

कोई भी इस दोष का भागी नहीं बनना चाहता था। कोई यह कलंक का टीका नहीं लगवाना चाहता था कि मृत्यु उसके कारण हो गई। डा० सेन ने सम्भवतः पण्डितजी को नर्सिंग होम में ले जाने की बात उठाई थी। परन्तु यह विचार भी त्याग देना पड़ा। डाक्टर सेन ने, कहा जाता है कि आपरेशन करने का सुझाव दिया था।

बात फैल गई थी। पण्डितजी का अरोटा फट गया है। पेट में रक्त एकत्रित हो रहा है। पण्डितजी का शव जब नीचे उतार कर रखा गया तब भी उनका पेट कुछ उठा हुआ दिखाई दे रहा था। शव के चित्रों से भी स्पष्ट यही झलकता है। लोगों ने यही कहा। पेट में रक्त एकत्रित हो गया। इसलिए पेट का फूल जाना स्वाभाविक था।

परन्तु यह धारणा गलत प्रमाणित हुई। पेट में खून एकत्रित नहीं हुआ था। खून निकलने के कारण पेट नहीं फूला था। इस पर प्रकाश आगे चलकर डालूँगा।

एक मत है कि अरोटा अर्थात् महाधमनी फटने पर जीवित रहना असम्भव है। तत्काल मृत्यु होना अवश्यम्भावी है। अतएव अरोटा

कटने की बात भी नहीं बनती।

डा० सेन ने पण्डितजी के पेट मे रक्त का पता लगाने के लिए वाम भाग से सुई प्रविष्ट की। किन्तु रक्त का पता नहीं चला। मुझे बताया गया। डा० सेन ने चार स्थानों पर सुई का प्रवेश किया था। मैंने वहाँ उपस्थित एक जिम्मेदार व्यक्ति से पूछा। उसने स्मरण कर बताया। एक बार डा० सेन ने सुई अवश्य पेट में घुमाई थी। उस समय रक्त नहीं मिला था। सम्भव है उसी समय कुछ घुमाकर चारों तरफ देखा हो। चाहे सुई एक बार पेट में घुमाई गई या चार बार परन्तु यह निर्विवाद है कि पेट में रक्त नहीं मिला। सुई रक्तरंजित नहीं निकली। मेरे एक मित्र ने बताया। वह परीक्षण साढ़े ग्यारह बजे दिन में हुआ था।

यह एक विचित्र पहेली थी। मैं डाक्टर नहीं हूँ। बीमार भी नहीं पड़ता। अस्पताल से भय लगता है। बीमारियों तथा उनके उपचारों और नामों का मुझे कम ज्ञान है। साधारण व्यक्ति के समान जिज्ञासा अवश्य रहती है। महाधमनी फटी तो खून गया कहाँ ? यदि खून पेट में एकत्रित नहीं हुआ था तो पेट शवावस्था में अपेक्षाकृत उठा हुआ क्यों मालूम पड़ता था ?

मैंने स्वास्थ्यमन्त्री श्रीमती सुशीला नायर तथा डा० राजू से इस विषय में विचार-विमर्श किया। डा० सुशीला नायर को सब बातें दिल्ली वापस लौटने पर मालूम हो गई थी। और डा० राजू पण्डितजी की बीमारी के प्रारम्भ के समय प्रातः ८ बजे से उपस्थित थे। डा० सुशीलाजी ने मुझे बताया कि अरोटा फटा नहीं बल्कि 'चिर' गया था। चिरने का अर्थ उसी प्रकार होगा जैसे कच्ची लकड़ी सूखन पर चिरक जाती है। अथवा जैसे मिट्टी का बर्तन चिटरा जाता है। अथवा पानी का रबड़ या लोहे का पाइप जैसे किंचित् कटन या जंग लग जाने के कारण पसीजने लगता है। दोनों व्यक्तियों से जो कुछ जानकारी मैंने प्राप्त की है उसे उनकी अनुमति के बिना प्रकट करना शिष्टाचार के विरुद्ध है। परन्तु ये बातें पत्रों में आ चुकी हैं। मुझे एक अनभिज्ञ के नाते ज्ञानार्जन करना था। अतएव उसी दृष्टि से उनसे इसका कारण

जानने की जिज्ञासा की। उसी जिज्ञासा को यहाँ लिपिबद्ध कर देना अनुचित नहीं होगा। इससे अनेक व्याप्त भ्रमों का निराकरण होगा। विशेषज्ञों को किसी प्रकार निष्कर्ष पर पहुँचने में कुछ सहायता मिलेगी।

प्रश्न सरल है। महाधमनी फटी या चिर गई तो उसका खून यदि पेट मे नहीं गया तो कहाँ गया ? मुझे नक्शा खींच कर सर्वप्रथम श्री डा० राजू ने बताया कि महाधमनी में तीन परतें होती हैं। एक परत अगर फट जाय, उससे खून निकलने लगे, खून पहली और दूसरी परत के बीच जाने लगता है। डा० सेन की सुई वहाँ तक पहुँची या नही कहना कठिन है। इस पर कोई विशेषज्ञ अपनी राय दे सकते हैं। अरोटा पेट मे नही फटा था। उसकी पहली, दूसरी तथा तीसरी तीनों परतें फटतीं या चिर जाती तो उसी समय खून के पेट में जाने की सम्भावना थी। यदि अरोटा लीक करने लगता है तो स्वत या तो जुड़ जाता है अथवा सांघातिक रूप धारण कर लेता है। ऐलोपैथी के अनुसार हजारों में कोई एक मरीज ऐसे केस में बच पाता है।

करीब १० बजकर ३० मिनट के पश्चात् पण्डितजी के मुख का रग कुछ बदलने लगा। वे पीले किंवा निष्प्रभ होने लगे। औषधियों की प्रतिक्रिया बंद हो गई थी। डाक्टर महानुभावों का समूह पण्डितजी के बगल वाले पूर्वी कमरे अथवा बरामदे में खड़ा चिन्तित विचार-विमर्श में लीन था।

सुरक्षा सचिव श्री सरीन ने अपना कार्यालय प्रधानमन्त्री-भवन के स्वागत-कक्ष के पार्श्ववर्ती कमरे में नीचे बना लिया। वहाँ से सर्वत्र आदेश तथा सूचना दी जाने लगी। यह नहीं कहा गया कि क्या होगा। परन्तु जिनकी आवश्यकता इस समय हो सकती थी सब को सतर्क, सावधान तथा किसी भी कार्यवाही के लिए तैयार रहने के लिए कहा गया। यह भी आदेश दे दिया गया कि चुपचाप सब इन्तजाम अविलम्ब ठीक कर लिया जाय। पण्डितजी की मृत्यु का समाचार किस प्रकार तथा किन शब्दों में दिया जायगा इसका भी प्रारूप तैयार कर लिया गया था। यह एक प्रकार से मान लिया गया था कि पण्डितजी की जीवन

ज्याति कुछ घण्टों या क्षणों में बुझ सकती है। वातावरण की उदासी बढ़ती जाती थी। चारों ओर से निरुत्साह अन्य अधिकारी उसे गम्भीर होती जाती थी। सुरक्षा विभाग का कोई डाक्टर पण्डितजी के उपचार से सम्बन्धित नहीं था। सुरक्षा विभाग के जो डाक्टर अस्पताल में काम करते थे वहाँ से बुलाने पर आए थे। अतएव पण्डितजी के उपचार का प्रबन्ध सैनिक विभाग के जिम्मे नहीं सुपुर्द किया गया था।

नीचे प्रधानमन्त्री भवन में एक तरफ मृत्यु के पश्चात् क्या होगा उसकी सूक्ष्म से सूक्ष्म डिटेल की परियोजना बनाई जा रही थी। और दूसरी ओर वहीं से ऊपर डाक्टर पण्डितजी को मृत्यु से छुटकारा दिलाने का प्रयास कर रहे थे।

उपस्थित डाक्टरों को निम्नलिखित वर्गों में उनके विशेषज्ञ होने के आधार पर रखा जा सकता है

कर्नल डी०एस० राजू स्वास्थ्य उपमन्त्री, फिजिशियन—डा० के० एल० विग, ले० कर्नल पी० सी० डाडा डा० एम० एम० सिंह डा० एच० एल० खोसला कर्नल नास सर्जन—डा० बलदेवसिंह डा० गोपीनाथ कर्नल आर०डी० अय्यर, डा० एस०के० सेन अन्य डाक्टर—डा० बी० के० सिकण्ड डा० एस० गुलेरिया डा० ए० एन० बेदी डा० एस० पी० सिंह, डा० आर० के० करोली लैबोरेटरी इन्चार्ज—डा० टी० चटर्जी एनस्थेसिस्ट—कर्नल टण्डन रक्त चढ़ाने के इन्चार्ज—डा० आर० नारायण राष्ट्रपति-भवन की डिस्पेंसरी—कर्नल एस० एस० मैन डा० वेदप्रकाश, डा० डोगरा। कहा जा सकता है जहाँ तक एलोपैथी तथा आधुनिक शल्य एवं औषध-विज्ञान का संबंध था सभी प्रकार के विशेषज्ञ डाक्टर वहाँ उपस्थित थे। अन्य कोई भी डाक्टर श्रीमती इन्दिराजी तथा किसी के सुझाव पर अविलम्ब बुलाये जा सकते थे। उक्त डाक्टरों ने अपनी पद्धति के अनुसार चिकित्सा करने में कोई कसर नहीं उठा रखी होगी। ऐसा न मानने का कोई कारण प्रतीत नहीं होता। उनके संकल्प तथा अभिप्राय पर किसी प्रकार की शंका करना, उनके प्रति अन्याय करना होगा। रह गई बात मत और विचार

को । इस सम्बंध में यही कहा जा सकता है। प्रत्येक व्यक्ति का अपना मत तथा विचार होता है। उसका मत किंवा विचार गलत हो सकता है परन्तु उसके मनोभाव पर संदेह करना उचित नहीं होगा।

स्थिति की गुरुता का अनुभव कर विदेश मन्त्रालय ने भी काम आरम्भ कर दिया। हैदराबाद हाउस से १० बजकर ३० मिनट पर श्री सुरेन्द्रसिंह ने विदेश विभाग के प्रधान सचिव श्री एम० जे० देसाई को सूचना दी। उसके पश्चात् राजेश्वरदयाल आदि को स्थिति की गम्भीरता तथा क्या करना चाहिए की सूचना दी गई। फोटोग्राफर लोग पण्डितजी का चित्र लेना चाहते थे। उन्हें रोका गया। समाचार-पत्रों के संवाददाताओं का समूह एकत्रित हो गया था। सबको किसी प्रकार का समाचार नहीं दिया गया। किन्तु लोगों की मुखाकृति तथा मुद्रा देखकर स्पष्ट प्रतीत होने लगा कि स्थिति हाथ के बाहर होती जा रही है। निकटवर्ती कुटुम्बी, संबंधी आदि को जिन्हें बुलाना आवश्यक समझा गया अविलम्ब आने के लिए सूचना दे दी गई। बाह्य उपचार का क्रम पूर्ववत् चलता रहा। पण्डितजी उत्तान सोए थे। उनका मुख किंचित् दाहिनी तरफ झुका था। लोकसभा में श्री नन्दाजी तथा राज्यसभा में श्री कृष्णमाचारी ने पण्डितजी की शोचनीय अवस्था के संबंध में सदनों को सूचनाएं दे दी।

भाग्य और भविष्य



मध्याह्न पूर्व ११ बजकर ३० मिनट पर डाक्टरों ने अपनी राय दे दी। पण्डितजी के जीवन की कोई आशा नहीं है। वे बचेंगे नहीं। डाक्टरों ने सब प्रकार की आशा त्याग दी थी।

यह एक ऐसा समाचार था जिसके सुनने की किसी ने कल्पना नहीं की थी। केवल ५ घण्टे की इस स्थिति में इस प्रकार परिवर्तन हो सकता है यह सब के लिए असंभावित था। पण्डितजी अपने बीच से उठ जायेंगे। देश बिना उनके हो जायगा। यह एक ऐसी बात थी जो मन को अनायास विचलित कर देती थी।

यदि पण्डितजी दो चार रोज बीमार रहते चारपाई पर पड़े रहते, धीरे-धीरे स्थिति बिगड़ती तो परिस्थितियों तथा पर-पूर्वा पर विचार कर देश तथा जनता इस असहनीय समाचार को सुनने की तयारी कर लेती। भवितव्यता होगी। उसका सामना करना होगा। यह सभी जानते हैं। परन्तु पण्डितजी की बीमारी इतनी शीघ्र बिगड़ जायगी वे इतनी जल्दी हमारे बीच से उठा लिये जायेंगे यह समाचार वज्र पात-तुल्य देश-विदेश तथा लोगों पर पड़ा।

भारत की समस्त शक्ति पण्डितजी में केन्द्रीभूत थी। भारत की सभी परिस्थितियाँ सभी नीतियाँ तथा राजनीतिक जीवन गत १६ वर्षों में उनकी देन थे। भविष्य की उनकी जो परियोजना थी उनके

साथ चली गई। वे कुछ बोल न सके। किसी को कुछ बता न सके। जो जैसा था, वैसा ही जहाँ का तहाँ रह गया।

पण्डितजी को मृत्यु के नाम से चिढ़ थी। वे मृत्यु से घबराते नहीं थे। किन्तु वह मृत्यु की बात उसकी विभीषिका उससे उत्पन्न होने वाले भय उसके चिंतन से उत्पन्न होने वाली दुर्बल भीरुता से घृणा करते थे। उनसे कभी कोई मृत्यु के विषय में प्रश्न करता था, तो वे बिगड़ जाते थे।

ज्योतिष का उपहास

ज्योतिषियों की बातें उनके कानों तक पहुंचती थीं। उनके कुछ शुभाकांक्षी उनकी जन्मपत्री लग्न मुहूर्त तथा समय की गति, वार्षिक फल आदि दिखाते थे। ज्योतिषियों से सम्पर्क स्थापित करते थे। वे सब सुनते थे। परन्तु उनकी अंतरात्मा भीतर ही भीतर विद्रोह करती थी। वे ज्योतिष आदि पर विश्वास नहीं करते थे। श्री सम्पूर्णानन्द (राज्यपाल राजस्थान) ज्योतिष पर बहुत विश्वास करते हैं। एक दिन पण्डित जी ने मुझे एक पुरानी बात बताई। सम्पूर्णानन्द के ज्योतिष प्रेम का उन्होंने परिहास किया था। उस पर श्री सम्पूर्णानन्द ने शायद उत्तर दिया था। अथवा अपनी नाराजगी जाहिर की थी। पण्डितजी स्वयं वह बात मुझे सुनाकर मुस्कराने लगे। ज्योतिष में पण्डितजी का विश्वास के स्थान पर 'इटरेस्ट' था। उसे अन्य विद्याओं के समान एक विद्या मानते थे। उसका जिस प्रकार इस समय उपयोग किया जाता है उसे देखकर उन्हें उससे चिढ़ हो गई थी। अपनी बुद्धि पर अपने कर्म पर विश्वास न कर ज्योतिष पर निर्भर हो जाना वह बुरा मानते थे। किसी प्रकार की स्व भावना किसी प्रकार का 'स्टैगनेन्ट' करने वाला विचार उनकी प्रकृति के विरुद्ध था। यदि भविष्य ज्योतिष की गणना पर ही निर्भर है तो वह मनुष्य को दैववादी 'फैटलिस्ट' तथा 'आइडल' बना देता है। वह आत्मविश्वास खो बैठता है। वह कहते थे मनुष्य का अपना भाग्य अपने हाथ में रखना चाहिए। उसे किसी दूसरे

को सौंप देना उसमें दुबलता उत्पन्न करता है। मनुष्य फिसल जाता है। वह कोई 'स्टैंड' नहीं ले सकता।

सन् १९६२ की बीमारी के पश्चात् उनमें दुबलता ने प्रवेश किया था। शरीर दुर्बल होने लगा था। शरीर की अवस्था का प्रभाव मन पर तथा बुद्धि पर पड़ने लगा था। दुबलता से आक्रान्त व्यक्ति कोई भी आशाजनक बात सुनने की अपेक्षा करता है। दिन वार जन्म, फल कहने वाले ज्योतिष की बात करने वाले समय-कुसमय इस मानवीय दुर्बलता का लाभ उठाने से नहीं चूकते। मुख्यतः वे लोग जिनका पेशा धन अर्जन करना होता है अथवा परिस्थितियों से लाभ उठाना चाहते हैं। इन परिस्थितियों में चाटुकारों की बन आती है। वे अच्छे से अच्छे मनुष्य को सबल से सबल व्यक्ति को दुबल बना देते हैं। सद्गुणों के स्थान पर दुर्गुण उत्पन्न कर देते हैं।

पण्डितजी को पहले कुछ मालूम नहीं था। दरबारी लोग प्रत्येक समाज में सर्वदा किसी न किसी रूप में रहते हैं। वे अपने स्वार्थ किंवा प्रयोजन-सिद्धि के लिए अपनी चाटुकारिता और मनुष्य की दुर्बलता का लाभ उठाकर अपना प्रयोजन सिद्ध करना चाहते हैं। पण्डितजी के साथ यही बात हुई—उनके कान तक यह बात पहुँचाने के लिए कि अमुक व्यक्ति उनके लिए कुछ कर रहा है उनका हितैषी है। इसकी प्रतिक्रिया सज्जनों पर आभार प्रदर्शन करने तथा किसी प्रकार उपकृत करने की होती है। उपकृत कर वह अपनी कृतज्ञता प्रकट करते तथा उऋण होने का प्रयास करते हैं। चाहे वह स्वयं कुछ न करना चाहें तथापि उनके समीप रहने वालों पर इसका असर पड़ता है। वे स्वयं कुछ न कुछ कर देना चाहते हैं। निःसन्देह इस स्थिति से बहुत कुछ लाभ उठाया गया है। मुझे स्वभावतः ऐसे आदमियों से चिढ़ है। उन्हें मैं निम्नकोटि से निम्नतर में रखने में नहीं संकोच करूँगा। जो अपने माता-पिता अपने सगे-सम्बन्धी अपने अड़ोस-पड़ोस के लोगों के प्रति धानकर समझ कर कुछ नहीं करना चाहता किन्तु केवल किसी को प्रसन्न करने के लिए, अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए गिरने के लिए तैयार

रहता है। हमें उन अमन समाइयों की याद आती है जो ब्रिटिश-काल में कलक्टर साहब को माला पहनाने के लिए, उनके चपरासियों को बख शीश देने के लिए अपने बच्चों के मुख का पसा काटकर अथवा उन्हें भूखा रखकर व्यय करते थे। इस प्रकार के प्राणी समाज के शत्रु हैं। ब्रिटिश सत्ता के लोप के वे एक कारण थे और वर्तमान शासन-व्यवस्था की बदनामी के भी वे एक प्रकार से मुख्य स्तम्भ हैं।

पण्डितजी ज्योतिष पर विश्वास न करते हुए क्यों इस प्रकार की बातें सुनने लगे थे यह उनकी प्रकृति के अनुकूल कैसे हुआ? इसकी मैं यही व्याख्या कर सकता हूँ। पण्डितजी की आदत थी। सबकी बात सुन लेते थे। किसी भावुक की बात किसी विवेकी की बात अन सुनी कर उसका जी दुखाना नहीं चाहते थे। परन्तु उनके हृदय में बैठा सबल मन यह सब होते हुए भी काम अपने ढग से करता था। उसमें कभी व्यतिक्रम नहीं हुआ। मैं काशी का निवासी हूँ। पण्डितजी का मेरा परिचय सन् १९२१ से रहा है। हमने साथ काम किया है। परन्तु पण्डितजी ने मुझ से ज्योतिष आदि के विषय में कभी जिज्ञासा नहीं की। मैं स्वय ज्योतिष पर विश्वास इसलिए नहीं करता कि जो होने वाला है यदि उसे होना ही है तो उसे जानकर क्या होगा। ज्योतिष एक विज्ञान हो सकता है। परन्तु जिस प्रकार औषधि सभी रोगों को अच्छा नहीं कर सकती सभी व्याधियों को दूर नहीं कर सकती मृत्यु को भगा नहीं सकती अर्थात् स्वय अपने में पूर्ण नहीं है उसी प्रकार ज्योतिष भी एक विज्ञान है। परन्तु वह भी पूर्ण नहीं है। पूर्ण तो केवल परमात्मा है।

एक वर्ष तक सतर्क रहें

देहरादून जाने के एक दिन पूर्व पण्डितजी से सायकाल उनके निवासस्थान पर भेंट हुई थी। बातों ही बातों में मैंने कहा आपको एक वर्ष सतर्क रहना चाहिए। वे कुछ चौंके। शायद मैं ज्योतिष की बात अथवा उनके भविष्य के विषय में काशी के किसी पण्डित से पूछ-

कर आया हूँ सोचने लगे। मैंने किंचित हँसकर कहा 'वर्षों का कहना है यदि आपकी स्थिति में इसी प्रकार सुधार होता रहा तो एक वर्ष बीतने पर सात-आठ वर्ष तक शरीर और चल सकता है। पण्डितजी ने तुरन्त अपनी उंगली के पोर पर गिन कर मुस्कराते हुए कहा 'चार महीना हो गया।' मैंने हँसकर कहा 'यह ज्योतिष नहीं साधारण बात है। एक वर्ष तक शरीर यदि व्याधि का आक्रमण सह गया तो वह इसका आदी हो जायेगा। शरीर में सहने की क्षमता स्वभावतः उत्पन्न हो जायेगी। पण्डितजी ने मुस्कराकर कहा 'ठीक-ठीक, अच्छा देहरादून से लौटने पर बातें होंगी।' मैंने कहा 'यदि आप मुनासिब समझें तो २७ मई को प्रातःकाल संसदीय दल की कार्यकारिणी की बैठक रख ली जाए।' उन्होंने अपनी डायरी निकालकर नोट किया। बोले 'ठीक है मैं दस बजे संसद भवन में आ जाऊँगा।'

पण्डितजी अपनी जेब में पतली तीन मास की डायरी रखते थे। प्रत्येक तीन मास के पश्चात् डायरी बदल जाती थी। वह हल्की होती थी अतएव जेब में रखने में किसी प्रकार की असुविधा तथा भारीपन का अनुभव नहीं होता था। पण्डितजी का हाथ लिखते समय कुछ दिनों से काँपने लगा था। उन्हें लिखने में कष्ट होता था, इसका अनुभव गत चार मासों से उनकी बगल में बैठने के कारण मैं कर रहा था। उनकी उंगली तथा कलाई में कम्पन ने प्रवेश किया था। वह ढलती उम्र का तकाजा था।

पण्डितजी गीता के भक्त थे। वे गीता पढ़ते थे। गीता भारतीय दर्शन तथा विचारधाराओं का एक 'डाइजेस्ट' है। उसमें उन सभी तत्त्वों का समावेश हो जाता है जिनकी मान्यताएँ हिन्दू धर्म में प्रचलित हैं। संक्षेप में सारभूत सब कुछ उसमें मिल जाता है। पण्डितजी गीता पढ़ते थे। उन्हें गीता के श्लोक स्मरण थे। एकान्त में वे कभी दुहराते थे। परन्तु किसी के सम्मुख नहीं उच्चारण करते थे। उनमें संस्कृत नहीं जानने के कारण एक हीन भावना थी। उच्चारण कहीं गलत न हो जाये। लोग हँसने न लगें। उन्होंने प्रथम लोकसभा में

सुरक्षा सचिव श्री सरीन से मैंने पूछा कि क्या निश्चय किया जा सकता है कि पण्डितजी की मृत्यु १ बजकर ४० मिनट के पूर्व हुई। सम्भवतः यह समय १ बजकर ३० से १ बजकर ३५ के बीच रहा होगा। उन्होंने दृढ़ता से कहा। आकाशवाणी दिल्ली १ बजकर ४० मिनट पर अंग्रेजी प्रसारण तथा १ बजकर ५० मिनट पर हिन्दी प्रसारण बन्द कर देता है। अंग्रेजी प्रसारण बन्द होने के १ मिनट या २ मिनट पूर्व उन्हें समाचार मिल गया था। उन्होंने ए० आई० आर० से अविलम्ब सम्पर्क स्थापित किया। आदेश दिया। बहुत महत्त्वपूर्ण समाचार का प्रसारण किया जायगा। वे लोग तैयार बैठे रहें। श्री खेरा ने भी इसी समय श्री सरीन को सूचित किया कि राष्ट्रपति महत्त्वपूर्ण घोषणा करने वाले हैं, प्रबन्ध कर लिया जाय। पण्डितजी को पुनर्जीवित करने का प्रयास डाक्टर १ बजकर ४० से १ बजकर ५९ मिनट तक करते रहे। जब उन्होंने देखा कि कृत्रिम रूप द्वारा प्राणवायु का सचार शरीर में होना असम्भव है तो उन्होंने अन्तिम घोषणा १ बजकर ५९ मिनट पर कर दी। उसके पश्चात् यन्त्रवत् शासनादेश तथा कार्यक्रम जो पहले ही से तैयार थे चल पड़े।

आकाशवाणी पर समाचार घोषित किया जाय इसकी विधिवत सूचना श्री खेरा ने श्री सरीन को दी। और श्री सरीन ने फोन से आकाशवाणी विभाग को जो महत्त्वपूर्ण घोषणा प्रसारण निमित्त तैयार था, आदेश दिया कि समाचार प्रसारित किया जाय। इस समय के समाचार प्रसारण के लिए कोई लिखित अथवा औपचारिक शब्दावली आकाशवाणी को नहीं दी गई। केवल फोन पर सरीन ने कहा 'पण्डितजी का देहान्त हो गया है। इसकी सूचना कृपया तुरन्त रेडियो से दे दीजिए।'

आकाशवाणी ने सूचना दी परन्तु कुछ ही समय पश्चात् वह बन्द हो गया। सम्भवतः और किसी विज्ञप्ति अथवा सूचना प्रसारण के लिए रुक गये होंगे। आकाशवाणी की ओर से इसका एक स्पष्टीकरण तत्पश्चात् दिया गया।

संसद में भी यह प्रश्न उठा था। परन्तु इसमें आकाशवाणी का मुझे कोई दोष दिखाई नहीं देता। इसके पीछे कुछ दूषित मनोवृत्ति उन लोगों की है जो आकाशवाणी की नीति से नाराज थे। इस समय का उन्होंने खूब लाभ उठाया।

दर्शक आने लगे

पण्डितजी के देहावसान का समाचार बाहर फैल गया था। इस समय तक बाहर संसद सदस्य तथा दूतावासों के विशिष्ट व्यक्ति इकट्ठे होने लगे थे। गर्मी बहुत पड़ रही थी। लोग पण्डितजी के दर्शनों के इच्छुक थे। अतएव दर्शनार्थियों के लिए गेट न० ३ से प्रवेश करने का निर्देश किया गया। फिर सब वापस गेट न० ३ से ही आते थे। गेट न० ४ का फाटक बन्द कर दिया गया था।

एक घंटे तक दर्शनार्थियों के दर्शन करने के पश्चात् पण्डितजी के दर्शनार्थियों का आना बन्द कर दिया गया। पण्डितजी का शरीर, हिन्दू प्रथा के अनुसार भूमि पर नहीं उतारा गया। जिस चारपाई पर उनकी मृत्यु हुई थी उसी पर उनका पार्थिव पड़ा रहा। उन्हें भूमि-शय्या नहीं दी गई। सम्भवतः किसी के ध्यान में यह बात न आई होगी।

प्रश्न उपस्थित हुआ पण्डितजी का शव-संस्कार किस प्रकार और किस समय किया जाय। बरामदे में इस समय लालबहादुर शास्त्री मुरारजी देसाई, नन्दाजी डाक्टरगण और इन्दिरा गांधी थे। स्वास्थ्यमन्त्री डा० सुशीला नायर भी पहुँच गई थीं। निश्चय हुआ। प्रातःकाल आठ बजे राजकीय तथा सैनिक सम्मान के साथ उनकी शव यात्रा का आयोजन किया जाय।

गरमी कड़ी थी। बाहर लू चल रही थी। रात्रि पर्यन्त शव अवि कृत अवस्था में पड़ा रहना सम्भव नहीं था। दर्शनार्थियों के निमित्त शव कहाँ रखा जाय? यह प्रश्न था। तात्कालिक प्रश्न था शव सुर क्षित किस प्रकार दूसरे दिन तक रह सकेगा। बाहर अपार भीड़ एकत्रित हो रही थी। लोग उमड़े चले आ रहे थे।

निश्चय किया गया कि शव दर्शनार्थ नीचे रखने के पूर्व उसको सुरक्षित रखने के उपाय कर लिये जाएँ। एतदर्थ डाक्टरों को तत्सम्बन्धी उपचार करने के लिए आदेश दिया गया।

लगभग २ बजकर ४० मिनट पर श्रीमती विजयलक्ष्मी बम्बई के डाक्टरों के साथ पहुँचीं। श्रीमती कृष्णा भी आईं। उनके पति उनके साथ थे। साथ में विजयलक्ष्मी की लड़की और दामाद भी थे। पण्डितजी के स्वर्गवास की सूचना हवाई जहाज पर रेडियो से मिल चुकी थी। उन्होंने अपने प्रिय भाई के मृत शव को चारपाई पर पड़ा देखा। वे बिलख उठीं। इन्दिराजी के गले लगकर सिसकने लगीं।

विजयलक्ष्मी पण्डित पण्डितजी के शव के समीप आईं। उन्होंने अपने सहोदर भाई को देखा। उनकी आँखों में उमड़ते आँसू अनायास रुक गये—भाई के मुख पर चिर-शान्ति देखकर। भाई के मुखमण्डल पर स्थित शान्ति जैसे उनके हृदय में स्थित होकर उन्हें स्वस्थ कर रही थी। भाई ने उनकी आँखों को अश्रुपूर्ण देखने की कभी कल्पना नहीं की थी। उनकी दिवंगत अन्तरात्मा ने जैसे छोटी बहिन के हृदय में प्रवेश कर आँसुओं को रोक दिया था। जैसे उनसे कह दिया था कि तुम्हारे नेत्रों में उमड़े आँसू क्या मुझे शान्ति दे सकेंगे ! मत रो बहिन !

विजयलक्ष्मीजी स्वयं मुझे न बता सकीं कि उनके आँसू भाई के मुखमण्डल पर विराजती चिर-शान्ति के कारण अनजाने क्यों रुक गये। उनकी विह्वलता के स्थान पर शोक के स्थान पर शान्ति क्यों आ गई थी। मैं इसमें देखता हूँ उस अदृश्य शक्ति का हाथ उस आत्मा की सर्वव्यापकता का रूप जो अदृश्य रूप से चित्त बुद्धि मन कल्पना विवेक एवं क्रिया को प्रभावित तथा नियन्त्रित करता रहता है। दिवंगत आत्मा कहीं गई नहीं थी। हमारी स्थूल दृष्टि में वह स्वयं उसी प्रकार अदृश्य थी जैसे जीवितावस्था में शरीर में रहते हुए भी अदृश्य रहती है। शरीर में हम उसके अभाव का अनुभव नहीं करते। शरीर से भिन्न होने पर उसके अभाव का अनुभव होता है, उसके अदृश्य किंवा सूक्ष्म रूप का अनुभव होता है। पण्डितजी की उसी आत्मा ने अपने सहोदर

सम्कार एवं अतीव स्नेह के कारण अपनी बहिन की आँखों में आत आँसुओं को रोककर उनके स्थान पर शान्ति भर दी। वह उनसे कह रही थी—यह रोने का समय नहीं है।

उस समय वहाँ गीता का पाठ हो रहा था। बहिन भी भाई के पास बैठ गई, उसी गीता को सुनने जिस गीता को उसने भाई से पढ़ा था अपने भाई से सुना था—अपने भाई को याद कर सुनाया था। अर्थ पूछा था शंकाओं का समाधान किया था।

शव में इंजेक्शन

३ बजे के पश्चात् डा० वेदी ने कर्नल डाक्टर आर० डी० अय्यर को फोन किया कि पण्डितजी के शव को सुरक्षित रखने के लिए शरीर में इंजेक्शन लगाना आवश्यक है। अतएव इसका अविलम्ब प्रबन्ध किया जाय। डा० वेदी ने अपने सहयोगियों के साथ इंजेक्शन का प्रबन्ध करना आरम्भ कर दिया।

कर्नल अय्यर ने लेडी हार्डिंग अस्पताल की प्रोफेसर डा० श्रीमती अच्चया को फोन पर इंजेक्शन के निमित्त अविलम्ब आने के लिए सूचना दी। कर्नल अय्यर आये। उनके आने के कुछ समय बाद श्रीमती डा० अच्चया एक लेडी डाक्टर के साथ प्रधानमन्त्री के कमरे में प्रविष्ट हुईं।

सफदरजंग अस्पताल से शव रक्षक इंजेक्शन देने के यन्त्रादि मँगाये गये। सर्वश्री डाक्टर दिलबागराय मेहदी, डा० एम० एम० दत्ता और डाक्टर रहमान यन्त्रादि सामान लेकर आ गये। पण्डितजी का कमरा डाक्टरों के अतिरिक्त जन-शून्य कर दिया गया। इंजेक्शन तैयार किया गया। कर्नल अय्यर तथा डाक्टर श्रीमती अच्चया ने पण्डितजी के शव के वाम पार्श्व की फेमरल आर्टरी में इंजेक्शन लगा दिया। चार बजे सायं के आस-पास इंजेक्शन लगाया गया। इंजेक्शन लगाने में लगभग एक घंटा लगा। इंजेक्शन लगने के समय श्रीमती इन्दिरा गांधी विजयलक्ष्मी पण्डित, तथा कृष्णा हथीसिंह बगल वाले कमरे में बैठी थीं। और मैं

पण्डितजी के बन्द दरवाजे के समीप श्री देसाई आदि के साथ चुपचाप खड़ा हो गया था। पण्डितजी की मृत्यु के पश्चात् डाक्टरों ने कोई औपचारिक घोषणा उनकी मृत्यु के विषय में नहीं की। मृत्यु के पश्चात् केवल 'स्टेटमेंट' दिया गया Heart Attack & Shock.

पी० टी० आई० ने सूचना दी Perusal cause of death of Mr Nehru was haemorrhage of the Aorta, the Artery leading from the heart—it was declared in Delhi on Thursday

उपेक्षित का उपयोग



बाहर भयंकर गरमी पड़ रही थी। लू भी चल रही थी। अतएव पण्डितजी के शव को विकृत होने से बचाने के लिए उनके कमरे में बरफ तथा चार पखे चारों ओर लगा दिये गये। कमरा ठण्डा हो गया। उसे ससद सदस्यों आदि के दर्शन कर लेने के पश्चात् बन्द कर दिया गया। पण्डितजी का शरीर सुरक्षित रखने के लिए इंजेक्शन आदि देने की क्रिया में लगभग एक घण्टा लग गया।

श्री नन्दाजी ने इसी समय के बीच लगभग तीन बजे सक्रमण काल के लिए प्रधानमन्त्री होने की शपथ ली। अन्य मन्त्रियों ने सायं काल के लगभग शपथ ली।

बाहर धूप होने पर भी भीड़ उमड़ती चली आ रही थी। पहले घोषणा की गई शव दर्शनार्थ ५ बजे नीचे रखा जायेगा। किन्तु चार बजे तक कुछ न हो सका। अतएव पुन घोषणा की गई कि शव ६ बजे नीचे रखा जायेगा। शवयात्रा प्रात काल आठ बजे होगी।

प्रश्न उपस्थित हुआ। पण्डितजी का शव किस स्थान पर रखा जाय। श्री मुरारजी देसाई तथा श्री टी० टी० कृष्णमाचारी मुख्य सलाहकार थे। मन्त्रिमडल ने श्री टी० टी० कृष्णमाचारी को इस कार्य के लिए नियुक्त किया था। उनके सकेत पर कार्य हो रहा था। एक विचार यह था स्वर्गीय मौलाना आजाद तथा पन्तजी के समान पोटिको

अर्थात् बरसाती की सीढ़ी पर शव इस प्रकार रखा जाय कि शव का कुछ हिस्सा बरसाती तथा शेष भीतरी सीढ़ी पर सिर की तरफ उठा तथा पैर की तरफ झुका रहे। और पंक्तिबद्ध लोग बरसाती के तीन चौथाई भाग से दर्शन करते हुए चले जाएँ।

डा० वेदी ने इसका विरोध किया। अन्य डाक्टरों को भी यह विचार पसन्द नहीं आया। भयंकर गरमी तथा उसकी शव पर होने वाली प्रतिक्रिया की चिन्ता थी। बावजूद इन्जेक्शन के गरमी में शव कहीं विगलित न हो जाय यह मुख्य विचारणीय विषय था। शव किस फ्रेम पर रखा जाय विचार एक न हुआ। पण्डित गोविन्दवल्लभ पन्त का शव रखने के लिए एक फ्रेम तयार किया गया था। सैनिक विभाग ने उसे कहीं रखा था। परन्तु समय पर उसका पता नहीं चल सका। उसी समय एक लम्बी काली टेबुल पर निगाह पड़ी। वह शव रखने के लिए आदर्श समझी गई। इसे भावी कहते हैं जो उपेक्षित टेबुल केवल सामान रखने की सामग्री थी जिस पर कभी किसी का ध्यान नहीं गया होगा वही पण्डितजी के अन्तिम शयन की साधन बनी। अतएव वह काली पतली लम्बी टेबुल जिस पर फूल, किताब तथा सजावट इत्यादि की वस्तुएँ सजाई जाती थी लाई गई। निश्चय हुआ कि इसी पर शव रखा जाय। उस टेबुल को बरसाती के मध्य दरवाजे में रखा गया। पहले यह देखा गया। मौलाना आजाद तथा पन्तजी की तरह रखा जाय अथवा कोई दूसरा रूप अख्तियार किया जाय। मौलाना आजाद तथा पन्तजी के मकान एक ही तरह के थे। उनकी बरसाती के बाद बरामदा था। बरामदे में आने के लिए कुछ सीढ़ियाँ थीं। वहाँ शव रखने पर चारों तरफ से देखा जा सकता था।

परन्तु प्रधानमन्त्री भवन में बरसाती के पश्चात् तुरन्त सीढ़ी चढ़कर दरवाजे मिलते थे। दरवाजा की दीवारें मोटी थीं। अतएव दरवाजे और बरसाती की सीढ़ी पर रखने पर शरीर का काफी भाग दरवाजे की दीवार से छिप जाता। शव पर ठण्ढी हवा नहीं पहुँचाई जा सकती थी। इस समय मैंने भी अपनी राय दी। शव को भीतर ही

बरसाती के मध्यवर्ती दरवाजे के सम्मुख रखा जाय। वाद-विवाद के पश्चात् निश्चय किया गया। जो बड़ा बरामदा शीशे के द्वारों से आवृत था उसके भीतर मध्यवर्ती द्वार के सम्मुख रखा जाये। सभी द्वार बन्द कर दिये जायें। कमरे के रूप में परिणत इस स्थान पर पंखा कूलर तथा बरफ का काफी इन्तजाम कर लिया जाये। खाली टेबुल बाहर रख कर देखी गई। सब ने यह राय पसन्द की।

मध्यवर्ती दरवाजे पर रोक लगाने के लिए मिस्त्री बुलाये गये। वे दरवाजों की दीवार के बीच में चार छेद रेलिंगनुमा लकड़ी लगाने के लिए करने लगे ताकि लोग बाहर से अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर सकें। पुष्प आदि पैर तक ही सीमित रह जायें। जिस समय एक सिख मिस्त्री दीवार में छेद करने के लिए छेनी और हथौड़ा चलाने लगा तो अपना मन विचलित हो गया। मैं वहाँ से हटकर ऊपर चला गया।

प्रतीक्षातुर भीड़

विलम्ब हो रहा था। बाहर उपस्थित अपार भीड़ व्याकुल हो रही थी। नीचे रेलिंग पंखा कूलर आदि लगाने में दो घण्टों की देर थी। ऊपर कमरे में भी शव तयार होने में विलम्ब लग रहा था। पण्डितजी को नीचे लाना था। ऊपर-नीचे दोना जगहों पर कार्यों में तेजी आ गई। ऊपर कुछ ही लोग जा सकते थे। हम लोग पण्डितजी के बन्द कमरे के सामने वाले गलियारे में खड़े थे। कुछ समय पश्चात् पण्डितजी जिस कमरे में अपनी टेबुल पर बठकर काम करते थे हम सब उसमें चले गये। वहीं प्रायः मन्त्रणाएँ होती थी। वहाँ कुर्सियाँ रखी थी। मैं भी खड़ा-खड़ा थक गया था अतएव बैठ गया।

पण्डितजी के कमरे के अन्दर कनल अय्यर डा० बदी डा० रता डा० रहमान डा० डोरा स्वामी डा० श्रीमती अब्बैया तथा नत्थू थे। इंजेक्शन की क्रिया समाप्त होने के बाद प्रश्न उपस्थित हुआ। क्या किया जाय? हिन्दुओं में रीति है। बिना सिले वस्त्र द्वारा शव को आच्छादित करते है। श्वेत वस्त्र का कफन लपेटा जाता है। मृतो

यज्ञोपवीतादि पहनाए जाते हैं। शव के नीचे कुशा रखी जाती है। उस पर कम्बल या वस्त्र रख कर शव उस पर रख देते हैं। परन्तु पण्डितजी के शव के साथ वह सब कुछ नहीं किया गया।

शव की सवारी

पश्चिमी प्रणाली है। मृतक को उसके पहनने के वस्त्र पूरी तरह पहनाकर लोगों के दर्शनार्थ तथा श्रद्धांजलि अर्पण निमित्त रख देते हैं। विदेशों से विशिष्ट राजनीतिक पुरुष शवयात्रा में सम्मिलित होने के लिए आने वाले थे। उनके आने तक शव को रखना था। अत एव निश्चय किया गया। शवयात्रा प्रात: ८ के बजाए मध्याह्नकाल में की जाय। जनता के दर्शनार्थ शव ५ बजे सायंकाल तक नीचे रखा जाय। उस समय तक विदेशों से आने वाले पहुँच जाएँगे। पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव ने यहाँ भी कार्य किया। इन्दिराजी इसी परिणाम पर पहुँचीं। पण्डितजी गर्मियों में जिस प्रकार कुरता पाजामा सदरी तथा टोपी लगाते थे उसी प्रकार उन्हें सजाकर नीचे रखा जाये। उसी रूप में उनकी शवयात्रा की जाय।

पण्डितजी के शरीर पर इस समय तक सोते समय पहना वस्त्र पूरा पाजामा तथा कुरता था। पण्डितजी यद्यपि ब्राह्मण थे, परन्तु यज्ञोपवीत नहीं पहनते थे। उन्हें संस्कार न मानते भी अन्त तक वह नहीं पहनाया गया। यह रिवाज है। कोई हिन्दू यदि द्विजातीय होता है तो शव को स्नानादि कराने के पश्चात् उसे यज्ञोपवीत पहना दिया जाता है।

पण्डितजी के यहाँ एक जोड़ा कपड़ा सर्वदा नया रखा रहता था। नौरोज के दिन वे नवीन वस्त्र पहनते थे। कभी-कभी भूल से वस्त्र नहीं बन पाते थे। अतएव इस दिन के लिए एहतियातन नये सिले कपड़े रखे रहते थे। नौरोज के लिए बनाकर रखे वस्त्र निकाले गये। कुरता सदरी, चूड़ीदार पाजामा तथा टोपी का सेट बना रखा था।

मृत्यु के पश्चात् शरीर कुछ कड़ा हो जाता है। उसमें लचक नहीं

रह जाती। शरीर की संधियाँ काम नहीं करतीं। अतएव चूड़ीदार पाजामा पैर मोड़कर पहनाना कठिन था। दर्जी मोहम्मद हसन को पण्डितजी का पाजामा सीने के लिए कहा गया।

मैं इस समय प्रधानमन्त्री भवन के विशिष्ट डाईनिंग हाल में आकर बैठ गया था। वहाँ कुछ स्त्रियाँ बैठी थीं। दो चार मेरे साथी और आकर बैठ गये। यह हाल दूसरी मंजिल में जाने वाली सीढ़ी के बाईं तरफ तथा पण्डितजी का कमरा सीढ़ी के दाहिनी तरफ पड़ता था। मैंने अपनी आँखों देखा वृद्ध दर्जी पण्डितजी के पाजामे का कपड़ा लेकर इस हाल की दूसरी तरफ से कमरे में गया। पाजामा सीकर लाया।

राजनीतिक मृत्यु नहीं

इस समय कुछ बूँदें पड़ने लगी थीं। मुझसे एक विशिष्ट व्यक्ति ने हाल में आकर कहा बाहर भीड़ में आकर लोगों को समझाइये। मुझे यह बे-वक्त की शहनाई बुरी लगी। मैंने कहा 'यह समय भाषण देने का नहीं है। उन्होंने तुरन्त उत्तर दिया 'महात्माजी की मृत्यु के समय यह सब हुआ था। मैंने कहा 'मुझसे नहीं होगा। बाहर भीड़ व्याकुल थी। दो बजे दिन से एकत्रित लोगों को वहाँ खड़े-खड़े ६ बज गये। श्री मुरारजी देसाई ने लोगों को समझाने की चेष्टा की। किन्तु वर्षा आ जाने के कारण लोग हटने लगे। मुझे स्मरण है। महात्माजी की मृत्यु के समय सरदार पटेल ने आकाशवाणी से स्थिति साफ करने के लिए भाषण दिया था। अन्यथा देश में भयंकर दंगा आरम्भ हो जाता। अल्पमतों की जान खतरे में पड़ जाती। पण्डितजी की मृत्यु स्वाभाविक थी। उसमें कोई राजनीतिक बात नहीं थी। किसी उथल-पुथल की आशंका नहीं थी।

अन्तिम चरणस्पर्श



समय बीतता जाता था। कफन सीने में लगभग एक घण्टा लग गया। इस समय सायंकाल के ६ बज चुके थे। रेलिंग लगाने के लिए नीचे पोर्टिको के मध्यवर्ती द्वार में ४ छेद हो चुके थे। उनमें लकड़ी डालने का काम चालू था। दो बढ़ई लकड़ी पर रन्दा करके उन्हें ठीक कर रहे थे। काली टेबुल बगल में पड़ी थी। दो कूलर लाकर फिट किये गये। चार स्टैण्डिंग पंखे भी मंगा लिये गये। सम्भावना हो गई थी साढ़े सात बजे तक सब कुछ शव रखने के लिए तैयार मिलेगा। शव के दोनों ओर कुछ दूर पर बरफ रखने का प्रबन्ध कर लिया गया ताकि शीतल हवा पण्डितजी के शव को लगती रहे। ठण्डक के कारण शव किसी प्रकार बिगड़ न सके।

सायंकाल सात बजे श्री खेरा ने सरीन को सूचना दी। मन्त्रिमण्डल ने श्री टी० टी० कृष्णमाचारी को प्रबन्ध का भार सौंपा है। अतएव अब वह उन्हीं से सलाह-मशविरा किया करें।

इस समय तक टेबुल रखने के लिए ईंट और सीमेण्ट का कुछ ऊँचा पाया बना लिया गया था। उसी पर टेबुल रखी गई थी। सीमेण्ट का प्रयोग इसलिए किया गया था कि पाया मजबूत रहे और किसी धक्के वगैरह से हिल न सके। श्री टी० टी० कृष्णमाचारी ने कहा यह प्रबन्ध ठीक नहीं है। परन्तु कुछ विचार-विनिमय के पश्चात् निश्चय किया गया

मि सैनिक विभाग द्वारा सुनिश्चित व्यवस्था में व्यतिक्रम उपस्थित करना अच्छा नहीं होगा। बात केवल यह थी कि टेबुल के अगले दोनों पाये सीढ़ी पर रख दिये जायें और ईंटा कुछ हटा दिया जाय। परन्तु इससे मस्तक की तरफ बहुत ऊँचा हो जाता था और पैर द्वार के बहुत समीप पड़ते थे। लाश के स्पर्श करने की सम्भावना थी। शव हिल डुल सकता था। अतएव सीमेण्ट का लगा पाया तोड़ा नहीं गया। उसी पर टेबुल रख दी गई।

पण्डितजी कश्मीरी थे। कश्मीरी प्रथा के अनुसार भूमि पर कुशा या घास बिछाकर, उस पर कम्बल अथवा वस्त्र बिछाकर, शव रखा जाता है। ऊपर से एक चादर उढ़ा दी जाती है सिर ढक दिया जाता है। लोग बैठकर गीता का पाठ करते हैं। मस्तक उत्तर की तरफ तथा पाँव दक्षिण की तरफ कर सुला दिया जाता है।

पण्डितजी के शव के साथ दक्षिण-उत्तर का कोई भेद नहीं किया गया। शव उसी लकड़ी की चारपाई पर पड़ा रहा जिस पर उनकी प्राणवायु छूटी थी।

शव-स्नान की कश्मीरी प्रथा

पण्डितजी को स्नान कराकर कपड़े पहनाकर यथाशीघ्र नीचे दर्शनार्थ उतारना था। कश्मीरी ब्राह्मण शव को सर्वप्रथम जल से स्नान कराते हैं। उसके पश्चात् दूध से स्नान कराते हैं। तत्पश्चात् मधु-स्नान अर्थात् शरीर में मधु मलते हैं। दही भी मला जाता है।

पण्डितजी का स्नान साधारण ढंग से हुआ। उनके नहाने के लिए दो लोहे की बाल्टियों में बाथरूम में पानी रखा रहता था ताकि 'शावर' के रुक जाने पर बाल्टी का पानी लोटे में लेकर स्नान किया जा सके। पण्डितजी गर्म जल से स्नान नहीं करते थे। जल साधारण रहता था। वही पानी जो उनके बाथरूम में प्रातःकाल स्नान करने के लिए रखा गया था उसी से उनको स्नान कराया गया।

पण्डितजी का शरीर डाक्टर बेदी तथा मत्यू ने मिलकर पकड़ा।

यहाँ उस समय डाक्टर दत्ता भी उपस्थित थे। शरीर उठाने पर चार-पाई का गद्दा खींच लिया गया। चारपाई की लकड़ी के तख्ते पर पण्डितजी का शरीर रख दिया गया। चारपाई के नीचे टब रख दिया गया ताकि चारपाई से गिरता जल कमरे में न फैलने पावे। जल तख्ते के दरारों से स्वतः नीचे गिर गया। लोहे की बाल्टी वाला पानी बाथ रूम से नत्थू उठा लाया। डा० वेदी तथा नत्थू ने रात्रि में पहने वस्त्र उतारे।

मैंने नत्थू से आग्रह करके पूछा—जब साबुन लगाकर पण्डितजी को स्नान करा रहे थे तो कहीं पण्डितजी के शरीर पर किसी प्रकार के खून जमने, खून रुकने का या नीला निशान दिखाई दिया। उसने स्मरण कर बताया—मृत्यु के पश्चात् और स्नान कराते समय शरीर के किसी भाग में किसी प्रकार का निशान नहीं दिखाई दिया। उनके पाँव पर जहाँ से खून शरीर में प्रवेश कराया गया था, उस जगह कटने के सिवाय और कहीं शरीर में कोई परिवर्तन नहीं दिखाई दिया। उनके दोनों हाथों के अंगूठे हृदय-देश पर नमस्कार करते रूप में तथा पाँव का भी अंगूठा यथावत् बँधा रहा। वे शान्तिवन के दाह-स्थान में चिता पर खोले गये।

पण्डितजी शायद आटा बसोन साबुन लगाते थे। उनका साबुन बाथरूम में रखा था। वही साबुन शरीर पर लगाकर उन्हें स्नान कराया गया। शरीर पोंछा गया। शरीर चारपाई से उठाकर लकड़ी पर पड़े जल के तौलिये से पोंछा गया। एक बड़ा तौलिया बिछा दिया गया। उसी पर स्नान के पश्चात शरीर रख दिया गया।

शरीर पर पाउडर तथा यूडी कालोन लगाया गया। तब तक उनका खद्दर का पाजामा बनकर तैयार हो गया था। लगभग ७ बजे उन्हें पाजामा पहनाया गया। नौराज पर पहनने के लिए स्वच्छ खद्दर का कुरता सदरी टोपी रखी थी। वह लाई गयी। उसे डा० वेदी तथा नत्थू ने मिलकर पण्डितजी को पहनाया। सदरी पहनने के पश्चात् उसकी ऊपरी जेब में रुमाल रख दिया गया। सिर पर टोपी लगाने का

इन्दिरा गान्धी, सुशीला नायर, राजन नेहरू और मुरारजी देसाई। मुरारजी के पीछे तीसरी पंक्ति में श्री जाकिर हुसेन थे। उनके पीछे मैं था, सीढ़ी से नीचे हाथ में उतरते समय लगभग २५ आदमी ऊपर तक सीढ़ी पर रहे होंगे। पण्डितजी का मस्तक श्वेत तकिये पर हिलने के कारण दाहिनी तरफ झुक गया था। लगभग ८ बजकर दस मिनट पर पण्डितजी का शव काली टेबुल पर रख दिया गया। इस समय मेघ आकाश से बिलख कर गिर रहे थे। बाहर भीड़ वर्षा के कारण कम हो गई थी। पण्डितजी चुपचाप टेबुल पर जैसे सोते हाथ जोड़े सबकी श्रद्धांजलि लेते हृदय पर हाथ रखे सबके नमस्कारों का उत्तर दे रहे थे।

पण्डितजी का शव नीचे रखने के पश्चात् एक अध्याय और 'सस पेंस' समाप्त हुआ कि शव कब रखा जायगा। आगे क्या कार्यवाही की जाय। इस पर विचार-विनिमय करना आवश्यक हो गया।

श्री लालबहादुर शास्त्री उन दिनों बिना विभाग के मन्त्री थे। संसद में कमरा नं० ६ में मन्त्रिमण्डल तथा कांग्रेस संसदीय दल की कार्य कारिणी की बैठक होती है। कमरा नम्बर १० प्रधानमन्त्री का कमरा है। कमरा नम्बर ८ समन्-भवन का श्री लालबहादुरजी को दिया गया था। समय पड़ने पर वे अविलम्ब पण्डितजी के पास पहुँच जाय। सायं काल तक यह निर्विवाद हो गया था कि प्रधानमन्त्री पद के दो उम्मीद वार क्षेत्र में हैं श्री लालबहादुर शास्त्री और मुरारजी देसाई। अतएव इन दोनों को केन्द्र बनाकर ज्ञात किंवा अज्ञात रूप से प्रचार कार्य आरम्भ हो गया था।

शास्त्रीजी ने जो वैदेशिक कार्य देखते थे शव के नीचे रखते ही आदेश दिया कि उनके निवास-स्थान पर वैदेशिक मन्त्रालय के अधि कारियों की एक बैठक अविलम्ब बुलाई जाय।

शास्त्रीजी के निवास-स्थान मार्ग (मोतीलाल नेहरू) प्लेस में जहाँ अब नवीन प्रधानमन्त्री-भवन बन गया है बैठक आयोजित की गई। बैठक में सर्वश्री लक्ष्मीमेनन दिनेशसिंह सी० एस० झा महाबुरसिंह तथा सुरेन्द्रसिंह उपस्थित थे।

यह बैठक ८-३० के पश्चात् हुई। वहाँ एक योजना बना ली गई। किस प्रकार विदेशों से आने वाले राजकीय विशिष्ट व्यक्तियों का प्रबन्ध किया जाय। इतने लोग आने के लिए उत्सुक थे कि कठिनाई का अनुभव होने लगा। विदेशों से आने वाले व्यक्ति अपने दूतावासों में ठहर सकते थे। फिर भी उनके साथ आने वाले लोगों के लिए व्यवस्था करना आवश्यक था। सभी दूतावासों में इतना स्थान नहीं था कि वे एक साथ दस-पाँच अपने देश से आने वाले लोगों का ठहरा सकें।

शोक तथा समवेदना के तार इतने अधिक आने लगे थे कि टेलीग्राफ आफिस का काय एक प्रकार से ठप हो गया था। कोई तार भेजना अथवा पाना असम्भव हो गया था।

हैदराबाद-निवास इण्डिया गेट के समीप में विदेश मन्त्रालय के पास ८ टलेक्स यूनिट थे। 'रूटर' तथा एसोशिएटड प्रेस से भी सम्बन्ध था। इसके अतिरिक्त संयुक्तराष्ट्र संघ अमेरिका, ब्रिटिश तथा सोवियत दूतावासों के पास अपने टलेक्स थे। उनसे पता चल जाता था कि बाहर से कौन-कौन शिष्ट-मण्डल आ रहा है। कारण यह था कि समाचार मिलते ही सभी देशों में शोक तथा समवेदना के सन्देश भेजने के साथ भारत आने का प्रबन्ध होने लगा। उनके देशों में मृत्यु की जो प्रतिक्रिया हुई—तथा कौन लोग शवयात्रा में सम्मिलित होने के लिए आ रहे हैं समाचार एजेन्सियाँ अपने स्रोत से समाचार टलेक्स से भेजने लगीं।

रात्रि काल में विदेशी राजपुरुषों का आना आरम्भ हो गया। पालम हवाई अड्डे पर प्रबन्ध किया गया। विदेश से आने वाले शिष्ट-मण्डलों की व्यवस्था की गई कि वे हवाई अड्डे से सीधे पण्डितजी के शव के पास ले जाये जाएँ अन्यथा उन्हें उनके दूतावासों में भेजा जाय। पुलिस तथा अन्य सम्बन्धित अधिकारियों को इस प्रकार के आदेशों की सूचना भेज दी गई।

हैदराबाद हाउस का मुद्रण मन्त्रालय रात्रि में भी खुला रखा गया। स्थिति की गम्भीरता का अनुभव सभी कर्मचारियों तथा अधिकारियों ने कर लिया था। किसी को सन्देश भेजने की आवश्यकता नहीं हुई।

सब हैदराबाद हाउस में आकर अपने काय पर लग गये। जैसे ही कार्य क्रमादि तैयार हो गये उन्हें दूतावासों में भेजा गया।

मृत्यु की रात्रि २८ मई को २ बजे रात्रि अर्थात् शव रखने के ५ घण्टा पश्चात् तक सब कायक्रम बना लिया गया। सब प्रबन्धों की सूचना श्रीमती इन्दिरा गांधी को २ बजे रात दी गई। वह सुरेन्द्रसिंह को लेकर विजयलक्ष्मी पण्डित के पास गईं। वहां निश्चय किया गया कि निचले भाग के गलियारे के सीढ़ी वाले पार्श्ववर्ती कमरे को खाली करा दिया जाये। विदेशों से आने वाले विशिष्ट व्यक्तियों तथा शिष्ट मण्डलों को सर्वप्रथम श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित तथा कृष्णा हथीसिंह वहां 'रिसीव' करेंगी। उसके पश्चात् वे पण्डितजी क शव के समीप अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए जाएंगे। इस समय तक रात्रि के ३ बज गये थे। लोगों का आना प्राय रुक गया था। मैं भी अपने निवास-स्थान १५ कनिंग लेन पैदल ही वापस चला आया।

भारत के सभी गवनर, मुख्यमन्त्री तथा यथासाध्य मन्त्रीगण दिल्ली की तरफ दौड़ पड़े थे। उनके लिए सवारी का प्रबन्ध कम से कम करना था। कुछ लोगों को कह दिया गया था कि उन्हें केवल सवारी दी जायगी किन्तु वे निवास का स्थान स्वय निश्चय करलें। इस प्रकार कुछ गवनर तथा मन्त्रीगण अपने प्रदेश के ससद सदस्यों तथा केन्द्र के मन्त्रियों क यहां ठहरे।

आकुल अनार्थव



बिजली की कड़क के साथ पानी खूब बरस गया था। तीन मूर्ति की सड़कों पर जल एकत्रित हो गया था। भीड़ छंट गई थी। थोड़े लोग रह गए थे। फिर भी दर्शनार्थी जो पेड़ों की छाया में या किसी मकान के बरामदों में अथवा अपनी मोटरों में वर्षा से बचने के लिए रह गए थे, वे पण्डितजी के शव के दर्शनार्थ पोर्टिको में आने लगे।

मस्तक की तरफ एक पण्डित बैठकर गीता-पाठ करने लगे। दो सैनिक अधिकारी पण्डितजी के दोनों ओर खड़े थे। मस्तक के दोनों ओर टेबुल के पाये से दो झण्डे बांध दिये गये। शरीर पर श्वेत वस्त्र तथा उसके ऊपर बड़ा झण्डा पड़ा था। यह क्रम उनके शव उठने तक जारी रहा। भीतर पोर्च के पीछे वाले कमरे में, जहाँ से दक्षिणी लान तथा दाहिनी ओर वाले हाल में ऊपर जाने वाली सीढ़ी का द्वार खुलता था, दिवाल से सटा कर एक चौकी रख दी गई थी। उस पर एक लाउड स्पीकर लगा दिया गया था। वहाँ पर दो-तीन पण्डित बैठकर संस्कृत में श्लोक-पाठ कर रहे थे। वहीं ही कभी-कभी बालिकाएँ भजन भी गा देती थीं। पण्डितजी के दक्षिण तथा वाम पार्श्व में बर्फ की सिल्लियाँ रख दी गई थीं। वाम भाग में कूलर लगा दिया गया था। स्टैंडिंग पंखा भी दोनों पार्श्वों में लगा दिया गया था। लोगों के पीछे से प्रवेश करने पर नियन्त्रण लगा दिया गया था। पण्डितजी का शव जहाँ पर रखा

था वहाँ चारों ओर शीशे के दरवाजे लगे थे। अतएव किसी तरफ से भी उनका दर्शन किया जा सकता था। सुरक्षा की दृष्टि से मेहराबों को शीशे के झरोखों तथा स्क्रीन और दरवाजों से बन्द कर दिया गया था।

रात में भी दर्शनार्थी

रात्रि-पर्यन्त लोग दर्शनार्थ आते रहे। कुछ व्यक्तियों ने शंका प्रकट की थी। रात्रि में लोग नहीं आ सकेंगे परन्तु बात निर्मूल रही। वर्षा का जल रुकते ही अर्थात् आकाश के आँसू थमते ही अश्रुपूर्ण आकुल नयन-मय श्रद्धालु जन-समुदाय निशा को निशा न मान कर दर्शनार्थ आने लगा। कुछ लोगों ने यह समझा कि प्रातःकाल अधिक भीड़ हो जायगी अतएव जिनके पास परिवहन के साधन थे अथवा जो किराये की गाड़ी कर आ सकते थे उन्होंने रात्रि मे दर्शन किया। मैं रात्रि को १० बजे अपने निवास-स्थान लौट आया। कोई सवारी नहीं मिली अतएव पैदल ही आना पड़ा। जो भी खाली सवारियाँ तीन मूर्ति के पास दिखाई पड़ीं उन सभी को लोग आने और जाने का करार कर के लाए थे।

मार्ग में मुझे लोगों का ताँता तीन मूर्ति की ओर जाता हुआ मिलता गया। लोग उलटी दिशा से मुझे आता देखकर पूछने लगे कि दर्शन हो रहा है या नहीं। स्वीकृति में सिर हिला देने पर उनका उदास मुख कमल खिल उठता था। पैदल चलने वालों में साधारण गरीब जनता थी। उनमें बाल-वृद्ध, युवा प्रौढ़ नर-नारी सभी थे। सब आतुरगति से प्रधानमन्त्री भवन की ओर चले जा रहे थे। उस गरीब जनता के पद त्राण-विहीन, पदत्राण-युक्त अचेतन मन के निर्देश पर उठते पद एक निर्दिष्ट स्थान पर यथाशीघ्र पहुँचने के लिए शीघ्रातुर थे। भारतीय जनता की यह श्रद्धा थी अपने उस नेता के प्रति जिसने अपने लिए कुछ नहीं किया था भारत के लिए तथा भारतीय जनता के लिए ही सब कुछ किया था। जिसने भारत को और भारतीय जनता को ऊपर उठाने तथा विश्व के राष्ट्रों में सम्माननीय स्थान दिलाने के महान प्रयास में अपनी आहुति दे दी थी। यह ऐसी निर्विवाद बात थी जो जनता के

हृदय में घर कर गई थी। जनता ने उनमें अपना रूप देखा था और पण्डितजी ने भी जनता में अपना रूप देखने का अथक प्रयत्न किया था। वे और जनता की भावना जैसे एकाकार होकर मूर्तिमान हो उठे थे। मैं रात्रि में ११ बजे पुनः प्रधानमन्त्री के निवास-स्थान पर पहुँचा तो उतनी भीड़ नहीं थी तथापि वाहन प्राप्त साधन-सम्पन्न लोगों का आना जारी था।

प्रातःकाल होते ही दर्शनार्थियों की संख्या बढ़ने लगी। दर्शन करने के पश्चात् लोग लौटकर तीन मूर्ति मार्ग तथा शवयात्रा वाले मार्ग के दोनों ओर पटरियों पर खड़े होने लगे। पण्डितजी को जी भर देखने का मोह लोग नहीं संवरण कर पा रहे थे। लौटकर घर जाने और आने में व्यर्थ समय व्यतीत होता। दिल्ली में हड़ताल होने के कारण सवारी आदि की व्यवस्था गड़बड़ा गई थी। बहुत कम टैक्सियाँ तथा स्कूटर चलते दिखाई पड़ रहे थे। प्रातःकाल ६ बजे २८ मई को ब्रिटिश शिष्टमण्डल श्रद्धांजलि अर्पणार्थ पालम आया। उसके ५ मिनट पश्चात् रूस के वर्तमान प्रधानमन्त्री श्री कोसिगिन आये। इसी समय संयुक्त अरब गणराज्य के प्रतिनिधि का भी आगमन हुआ।

शोकातुर जनता

लगभग ८ बजे दिन तक प्रधानमन्त्री-भवन तक पहुँचने वाले सभी मार्गों पर आधा मील दूर पर ही सवारियाँ रुक जाती थीं और लोग पैदल चलकर ही प्रधानमन्त्री भवन में प्रवेश कर पाते थे। सर्वत्र सरकारी इमारतों पर झण्डे आधे झुके हुए थे। सभी प्रकार के आमोद प्रमोद, दुकानें, तथा कार-बार के स्थान बन्द हो गए थे। लोग शवयात्रा के पश्चात् ही घर लौटकर पानी पीना चाहते थे। मैं समझता हूँ कि उस दिन विशाल दिल्ली नगरी की आधी आबादी ने मध्याह्न के पश्चात् जलपान किया होगा और लगभग एक लाख से ऊपर लोगों ने हिन्दू प्रथा के अनुसार अन्नग्रहण नहीं किया होगा।

शवयात्रा के लिए निर्धारित मार्ग की पटरियों पर प्रातःकाल से

हो जनता एकत्रित होने लगी थी। और यह तीन बजे के पश्चात् अथवा राजघाट पर शव पहुँच जाने के पश्चात् ही हटी। कम से कम दस लाख लोग उस दिन मध्याह्नोत्तर तक निराहार रहे।

पुष्पांजलियों का तांता

शव नीचे उतार कर रखने के पश्चात् रात्रि में राष्ट्रपति ने राज्यों के मुख्यमन्त्रियों ने तथा कांग्रेस संसदीय दल की तरफ से मैंने शव के चरणों पर पुष्पमाला चढ़ाई।

महाराज सिक्किम ने महारानी के साथ पण्डितजी के शव पर अपनी परम्परा के अनुसार रेशमी दुपट्टा चढ़ाया।

बौद्धलामा, मौलवी सिख ग्रन्थी तथा रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय के लोग अपने-अपने विश्वास के अनुसार दिवंगत आत्मा की शान्ति के निमित्त अपने धर्म-ग्रंथों का पाठ पीछे वाले कमरे में करने लगे। दक्षिणी बरामदे में एक दरी बिछी थी। उस पर कुछ महिलाएँ तथा पुरुष बैठे गीता-पाठ कर रहे थे। कुछ कश्मीरी महिलाएँ मस्तक नवाए शोका कुल बैठी थीं जैसे कश्मीर के जीवन में ज्योति भरने वाला स्नेह अचानक समाप्त हो गया है।

सीढ़ी वाले कमरे में बहुत लोग बैठे थे। उनमें कांग्रेस के नेता, देश के विशिष्ट लोग तथा विदेशी सज्जन थे। प्रधानमन्त्री-भवन के पूर्वी गलियारे के बगीचे की तरफ वाले द्वार से विदेशी दूतावासों के राजदूत तथा वहाँ के अधिकारी माला लेकर आते और अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर उसी मार्ग से लौट जाते थे।

पण्डितजी का मुख ताजा तथा मुद्रा कुछ ऐसी प्रतीत होती थी जैसे वह श्वेत तकिये पर शवासन की मुद्रा में लेटे कोई स्वप्न देख रहे थे। चारों ओर अर्पित होती श्रद्धांजलियाँ, विश्व के कोने-कोने से मिलते भाव-पुष्प किसी रंगमंच पर होते नाटक सदृश प्रतीत हो रहे थे। जैसे वे उस नाटक में इस जगत् के लोगों को पार्ट अदा करते देख मन ही मन मुस्करा रहे थे। उनके मुखमण्डल पर फैली वह नैसर्गिक मुस्कान

शोकातुरों को जैसे सान्त्वना दे रही थी।

प्रिय का प्रिय से समागम

शोकविह्वल जनता गुलाब की पखुड़ियों को पण्डितजी के चरणों पर चढ़ाती चली आ रही थी। पण्डितजी को गुलाब प्रिय था, प्रिय वस्तु प्रेमी के पास पहुँचाने में जो एक प्रकार के आनन्द की अनुभूति होती है वही अनुभूति जनता को पण्डितजी के चरणों पर गुलाब के फूल तथा पखुड़ियाँ चढ़ाकर, उनके शरीर से उनका स्पर्श कराकर, होने लगी।

भारत के नौनिहाल बच्चे जो पुष्प लेकर नहीं आए थे वे लोगों को पुष्प चढ़ाते देखकर अपनी भूल से व्याकुल हो जाते थे। कितने ही किसी समीपस्थ सज्जन से पुष्प माँगने और कितने ही निःसकोच प्रधानमन्त्री के उद्यान के पुष्प तोड़कर शव की ओर दौड़ पड़ते थे। उन्हें जैसे उनके जीवन की परम निधि मिल गई थी। वे अपने चाचा के पास चाचा की प्रिय वस्तु पहुँचाने में अपने जीवन की कृतकृत्यता अनुभव करते थे।

धर्मचक्र

पण्डितजी के शरीर पर तिरंगा झण्डा पड़ा था। धर्मचक्र प्रवर्तन का चक्र उनके हृदय-देश पर था। भगवान् बुद्ध के धर्मचक्र प्रवर्तन-सूत्र का प्रथम वाक्य जैसे वह सुना रहा था—'ये धम्मा हेतुप्रभव । ' दुनिया के सभी कार्यों अथवा धर्मों का कोई न कोई हेतु अर्थात् कारण होता है। जो उत्पन्न हुआ है उसका विनाश अवश्यंभावी है। और जिसका विनाश हुआ है वह पुन रूप ग्रहण करेगा।

वह यह भी घोषित कर रहा था पण्डितजी बुद्ध पूर्णिमा को मरना चाहते थे। उन्हें इच्छा-मृत्यु प्राप्त हुई है। उनके जीवन का सकल्प भारत की स्वतन्त्रता के साथ पूरा हुआ था और बुद्ध पूर्णिमा के दिन मरने की भी उनकी कल्पना साकार हुई। उनकी भगवान बुद्ध के

प्रति अटूट भक्ति का प्रतीक धर्मचक्र-चिह्न उनके हृदय-देश पर पड़ा उनके हृदय को मानो शान्त कर रहा था।

पण्डितजी का शव नीचे रखने के साथ ही दो सैनिक अधिकारी सावधान शोक-मुद्रा में उनके मस्तक के दोनों ओर खड़े हो गये थे। उनकी बदली होती रही। वे रात्रि-पर्यन्त और शव उठने के समय तक वहीं पर दण्डायमान खड़े रहे। उनका सैनिक वेश, स्वस्थ हृष्टपुष्ट शरीर, उनके शस्त्र प्रतीक थे शक्ति के। और उनके पास शक्तिविहीन जीवन हीन काया चिरनिद्रा में सोई थी। यह वह निद्रा थी जो एक बार आने पर पुनः खुलती नहीं। कितना विरोधाभास था मानव की काया के इन दो रूपों में।

कांग्रेस सेवादल के स्वयंसेवक तथा पुलिस अनियन्त्रित भीड़ का नियन्त्रण कर रही थी। प्रधानमन्त्री-भवन में प्रवेश होते ही व्याकुल अनियन्त्रित मानव स्वयं नियन्त्रित हो जाते थे जैसे श्रद्धामिश्रित आतंक उसे स्वतः नियन्त्रित एवं संयत कर देता हो।

काश, मैं योगी होता!

भंगी हरिजन गरीब फटे वस्त्रों में एक-दूसरे के कन्धों से रगड़ खाते राष्ट्रनिर्माता का दर्शन करने के लिए अपने उस देवता का दर्शन करने के लिए जिसने बिना भेदभाव के उनका जीवन-स्तर उन्नत करने का सतत प्रयास किया था, मूक भाव से चले आ रहे थे। उस समय मेरी आँखें भर आईं जब फटे-पुराने वस्त्रों में लिपटी एक महिला ने चिथड़ों में लपेटे अपने शिशु का मस्तक नेहरूजी के चरणों के समीप वाली रेलिंग से छुआकर उसके मस्तक की दाहिने हाथ से बलैयाँ लीं और पीछे से आती भीड़ के रेले ने उसे आगे बढ़ने को विवश किया तो आँचल से आँखें पोंछकर वह आगे बढ़ गई। काश मैं अन्तर्यामी योगी बनकर उसके हृदय की भावनाओं को लिख सकता।

पोर्च पर पहुँचते ही कितनी ही नारियाँ रोने लगती थीं। कितनी ही भद्र महिलाएँ रूमाल आँखों पर लगाकर सिसकने लगती

थीं। कितनी ही रेलिंग पर माथा टेक फुक्का फाड़कर विलाप करने लगती थीं। वे रेलिंग छोड़ती नहीं थीं। पुलिस अथवा स्वयंसेवक उन्हें सहारा देकर आगे बढ़ाते तो वे सर्वस्व लुटी-सी आगे बढ़ जाती थीं।

मर्मस्पर्शी वातावरण

पुष्पों की सुगन्ध से पोर्च तथा शवाश्रय-स्थान भर गया था। गुलाब, जूही, कमल तथा अन्य फूलों की मिश्रित सुगन्ध तथा वेदपाठियों के मधुर-गम्भीर घोष के साथ वैदिक मन्त्रों का उच्चारण—सब मिल कर मर्मस्पर्शी वातावरण उपस्थित कर रहे थे। बाहरी बरामदे में चढ़ी हुई मालाएँ सजाकर रखी जाने लगीं। उनकी सुगन्धि से प्रधानमन्त्री भवन सुगन्धित हो गया था—जैसे पण्डितजी के जीवन की पवित्रता एवं उनका सत्कार सुगन्ध बनकर भवन में व्याप्त हो गया था!

प्रातःकाल ८ बजे पण्डितजी के मित्र श्री लार्ड माउन्ट बेटन ने अपनी सैनिक वेशभूषा में आकर पण्डितजी को श्रद्धांजलि अर्पित की। उनकी दृष्टि जिस समय पण्डितजी के चिरपरिचित मुखमण्डल पर पड़ी तो मैंने स्पष्ट देखा कि उनकी आँखें किंचित् तरल हो गई थीं।

धीरे-धीरे प्रातःकाल के ९ बज गये। लोगों में एक सनसनी फैली। लोग सावधान हुए। प्रधानमन्त्री-भवन के गलियारे से ब्रिटिश प्रधान-मन्त्री सर एलिक डगलस होम भारतीय ब्रिटिश हाई कमिश्नर सर पाल गोरबूथ के साथ नतमस्तक पण्डितजी की शवशय्या की ओर बढ़ रहे थे। लोगों ने हटकर स्थान दे दिया। उन्होंने पण्डितजी पर हरित पत्तियों में गुम्फित श्वेत तथा रक्त गुलाब पुष्पों की माला चरणों के समीप रखी और मस्तक के समीप खड़े हो गये। निर्निमेष दृष्टि से पण्डितजी की चिरशान्त भव्य मुद्रा को निरखते रहे। उन्होंने मस्तक झुकाकर श्रद्धापूर्वक नमन किया। किंचित् काल पश्चात् जैसे उनकी समाधि टूटी। समीप खड़ी श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित तथा इन्दिरा गांधी से उन्होंने सान्त्वना के दो शब्द कहे। पुनः पण्डितजी की अन्तिम

झांकी लेकर लौट पड़े। बड़े कमरे में प्रवेश करते ही मेरा और उनका साक्षात्कार हुआ। मैंने नमस्ते की, उन्होंने हाथ बढ़ाया। हाथ मिलाने के बाद मैं सोचने लगा कि राष्ट्रमण्डल की यह गाँठ अब कब तक बँधी रहेगी क्योंकि इस गाँठ को बाँधने वाला तो चला गया।

अन्त्येष्टि की तैयारी



प्रश्न उपस्थित हुआ। पण्डितजी का दाह-सस्कार किस स्थान पर किया जाय। इसकी एक कहानी है। पण्डितजी ने स्वयं वह स्थान चुना था। जहाँ उनका दाह-संस्कार किया गया। उस स्थान को अब शान्ति-वन कहते हैं। यह स्थान महात्माजी के दाह-स्थान, जिसे आजकल लोग भ्रमवश गांधीजी की समाधि कहते हैं, के वाम पार्श्व में है। यमुना की तरफ एक फर्लांग उत्तर दिशा में पड़ता है।

भारत के प्रथम राष्ट्रपति स्वर्गीय श्री राजेन्द्र बाबू थे। सन् १९६१ में एक समय वे बहुत बीमार पड़ गये। चिकित्सकों ने उनकी जीवन-रेखा क्षीण होती बताई। कुछ दिनों की आशा की जाती थी।

प्रतिरक्षा विभाग के संयुक्त मंत्री श्री सरीन इस सम्बन्ध में पण्डितजी से दो-तीन बार मिले। पण्डितजी ने स्वर्गीय राजेन्द्र बाबू के पार्थिव शरीर के दाह-संस्कार निमित्त स्थान चुना। वहीं स्वयं उनकी चिता दाह-निमित्त सन् १९६४ में लगाई गई। पण्डितजी ने स्थान पसन्द किया था।

शान्ति-वन का स्थान तीन वर्ष पहले बहुत नीचा था। पानी भर जाता था। प्रतिरक्षा विभाग के ध्यान में यह स्थान था। श्री राजेन्द्र-प्रसादजी की बीमारी के समय यह स्थान मिट्टी से पाटा जाने लगा। तयारियाँ की जाने लगीं। उनके देहावसान के समय किस प्रकार काम

किया जायगा—इसका पूरा कार्यक्रम बना लिया गया था।

प्रतिरक्षा विभाग के उच्चाधिकारी राष्ट्रपति के स्वास्थ्य की खबर प्रतिक्षण लिया करते थे। देहान्त होने की अवस्था में कार्यक्रम के अनुसार सरकारी यंत्र चला देने की सुनिश्चित योजना बन गई थी। विस्तार के साथ योजना बना ली गई थी। किस अधिकारी के ऊपर क्या उत्तरदायित्व होगा। शवयात्रा का मार्ग निश्चित हो गया था। सबको काम बाँट दिया गया था।

राजाओं की अन्त्येष्टि

भारत के लिए नवीन बात थी। सन् १८५७ के पश्चात् भारत पूर्णतया पराधीन हो गया था। दिल्ली के अन्तिम बादशाह बहादुरशाह का देहावसान रंगून में हुआ था। लोग भूल गये थे। भारत के राजा अथवा बादशाह की अन्त्येष्टि किस प्रकार की जाती थी। मुगलों के राज्य के अन्तिम सौ वर्ष बड़ ही दयनीय रहे हैं। इतने बादशाह इतने कम समय के लिए दिल्ली के सिंहासन पर बैठते उतरते तथा मरते रहे कि उनका नाम तक भुला जा चुका है। बादशाहों का शव-संस्कार किस प्रकार राजकीय ढंग से किया गया था अथवा किया जाना चाहिए था। पुराने कागजातों से पता नहीं चलता।

अधिकतर दिल्ली के बादशाह मार गये थे। अतएव बहुतों का शव संस्कार राजकीय लवाजमे तथा ठाट-बाट से नहीं हुआ था। राष्ट्रपति भारतीय राष्ट्र का सर्वोच्च सत्ता-सम्पन्न पुरुष था। अतएव उसकी अन्त्येष्टि उसी भव्यतापूर्ण समारोह से होनी चाहिए थी।

भारतीय सम्राटों की अन्त्येष्टि के विषय में कुछ साहित्य प्राप्य है। उनके अनुसार इस समय कार्य होना कठिन था। भगवान् बुद्ध ने अपना संस्कार चक्रवर्ती राजा और सम्राट् के समान करने के लिए आदेश दिया था। उसका वर्णन महापरिनिर्वाण सुत्त में मिलता है। वाल्मीकि रामायण में दशरथ और राम आदि राजाओं के शव-संस्कारों का वर्णन मिलता है। किन्तु अब समय बदल गया है। लोगों के विचारों तथा

रहन-सहन में परिवर्तन हो गया है। पुराने धार्मिक संस्कारों का महत्त्व घटता आ रहा है। अतएव पश्चिमी राष्ट्रों मे राष्ट्रपतियों तथा राजाओं के सदृश होने वाली अन्त्येष्टिक्रिया करने की कल्पना की गई थी।

भारत में कभी राष्ट्रपति नहीं था। पहले राष्ट्रपति का अन्तिम राजकीय संस्कार किस प्रकार किया जाय ये सब बातें ब्रिटेन के बादशाहों के शव-संस्कार के आधार पर परिकल्पित की गईं।

पण्डित जवाहरलालजी ने प्रतिरक्षा विभाग के अधिकारियों के साथ मिलकर तीन चार बैठकों में राष्ट्रपति की शवयात्रा तथा संस्कार की योजना बना ली थी। विस्तृत रूपरेखा तयार कर ली गई थी। उसे नत्थीबद्ध कर रख दिया गया था।

श्री राजेन्द्रप्रसादजी की दशा २१ जुलाई सन् १९६१ को बहुत खराब हो गई। वे डा० सेन के नर्सिंग होम तिलक ब्रिज, नई दिल्ली में भर्ती थे। पण्डित जवाहरलालजी उनको देखने गये। उस दिन यह निश्चय कर लिया गया कि राष्ट्रपति भवन में उनका शव राजकीय सम्मान के साथ रखा जायगा। पण्डितजी ने राष्ट्रपति-भवन में वह स्थान आकर देखा भी।

दूसरे दिन २२ जुलाई को पण्डितजी पुन: राजेन्द्रप्रसादजी को देखने के लिए गये। राजेन्द्र बाबू की अवस्था कुछ ठीक थी। पण्डितजी का हाथ पकड़ते हुए बोले— आंधी निकल गई।' राष्ट्रपति अच्छे होने लगे। भवन मे उनके निर्जीव शव के स्थान पर दुर्बल सजीव काया ने प्रवेश किया। और शव संस्कार की नत्थी फाइल दाखिल दफ्तर कर दी गई।

समस्त परिकल्पना फाइल में पड़ी रह गई। कौन कल्पना कर सकता था कि पण्डितजी अनजाने अपनी शवयात्रा की योजना बना रहे थे। यदि दैव है तो शायद यह सब होता देखकर वह अवश्य मुस्करा रहा होगा।

पण्डितजी की हालत खराब है। इसकी सूचना लगभग १॥ बजे

प्रतिरक्षा मन्त्रालय को मिल गई थी। श्री सरीन ने पुरानी फाइल निकाल ली। महात्मा गांधी की मृत्यु के समय क्या प्रक्रिया हुई थी। उसकी फाइल ढूंढकर निकाली गई। सुरक्षा विभाग दोनों फाइलों का अध्ययन कर एक सुनिश्चित योजना बनाने में लग गया। सब प्रबन्ध पूर्व योजना के अनुसार करने का संकल्प कर लिया गया। सबको अविलम्ब तैयार रहने का आदेश दे दिया गया। पण्डितजी का अन्तिम श्वास टूटने के पहले ही सब कुछ यथावत् तय हो गया था। केवल आदेश मिलने का विलम्ब था।

स्थान का चुनाव

पण्डितजी के अन्तकाल के पश्चात् ही समस्या उठ खड़ी हुई। कहाँ दाह-संस्कार किया जाय ? प्रतिरक्षा अधिकारी श्री सरीन ने अविलम्ब सुझाव दिया। महात्मा गांधी के दाह-स्थान के पार्श्व में राष्ट्रपति के लिए स्थान निश्चित किया गया था। उसी के उत्तर की तरफ एक फर्लांग दूर सार्वजनिक अन्त्येष्टिक्रिया-स्थान का निर्माण हो गया है। स्थान पण्डितजी ने पसन्द किया था। देख चुके थे। राष्ट्रपति की अन्त्येष्टि वहीं होने वाली थी।

श्रीमती इन्दिरा गांधी से भी राय ली गई। पण्डितजी ने कभी कोई इच्छा प्रकट की थी या नहीं ? उनसे मालूम हुआ। पण्डितजी ने एक बार कहा था उनका दाह-संस्कार जहाँ महात्माजी का हुआ था उसी के समीप किया जाय। शान्ति-वन का स्थान महात्माजी की समाधि से दूर नहीं था। बल्कि सवसाधारण के लिए बनी संस्कारभूमि तथा गांधीजी के दाह-स्थान के मध्य में था। गांधीजी और जनता में नेहरूजी एक कड़ी थे। अतएव दाह-स्थान भी उनकी उस कड़ी का एक प्रतीक बन गया।

किंचित् विचार-विनिमय के पश्चात् यही स्थान पण्डितजी के दाह-स्थान के लिए निश्चित कर लिया गया। यही कारण है पण्डितजी के मृत्यु-काल से लेकर कुल २२ घण्टे में सब कुछ बनकर तैयार हो गया

था। इन २२ घण्टों में रात्रि भी शामिल है।

प्रधानमन्त्री की मृत्यु भारत के लिए एक नई बात थी। कभी इस बात की कल्पना नहीं की गई थी कि प्रधानमन्त्री की शवयात्रा का क्या रूप होगा। इस विषय पर विचार होने लगा। प्रधानमन्त्रियों के निधन पर क्या क्रियाएँ की जाती हैं। इसके अध्ययन का समय नहीं था। इस परिस्थिति में क्या किया जाता है। इसकी अपेक्षा यह चिन्ता अधिक थी कि पण्डितजी का शव भयकर गरमी के कारण अधिक समय तक किस प्रकार सुरक्षित रखा जा सकता था। अधिक से अधिक २४ घण्टे में दाह-संस्कार करना आवश्यक था।

कुछ लोगों का विचार था दो दिन तक शव रखा जाय। विदेशों से लोगों के आगमन में सुविधा होगी। बहुत आशा थी। विश्व के राष्ट्र-नेता दिल्ली आने के लिए दौड़ पड़ेंगे। किन्तु बीतते घण्टों के साथ आशा शोकजनित निराशा में परिणत होने लगी। मुख्य प्रश्न में लोग उलझ गए। पण्डितजी का उत्तराधिकारी कौन होगा। उसकी चिन्ता विश्व के राजनीतिज्ञों तथा देश के कर्णधारों को अधिक हो गई थी।

भीषण गरमी पड़ रही थी। अधिक समय तक शव रखने का विचार त्यागना पड़ा। हिन्दू रीति के अनुसार शव का एक दिन से अधिक घर में रहना अच्छा नहीं समझा जाता। अतएव निश्चय किया गया शव-यात्रा २८ मई को एक बजे आरम्भ की जाय। इस प्रकार चौबीस घंटों से अधिक प्रतीक्षा भी नहीं करनी पड़ती। विदेश से आने वाले तब तक दिल्ली पहुँच भी सकते थे। कुछ लोगों का सुझाव था कि शवयात्रा २९ मई को की जाय। विदेश से जो लोग आना चाहेंगे वे पहुँच जायेंगे। परन्तु भयकर गरमी के कारण यह विचार त्यागना पड़ा।

सैनिक विभाग ने निश्चय किया कि शवयात्रा २८ मई को २ बजे दिन आरम्भ की जाय। सैनिक मन्त्रालय ने सभी विभागों को विधिवत् काय करने की सूचना दे दी।

तत्काल प्रतिरक्षा विभाग ने इसकी सूचना सर्वत्र प्रसारित कर दी। चीफ इंजीनियर श्री जैन को अविलम्ब श्मशान भूमि चिता-स्थान,

मार्ग पर भीड़ को नियन्त्रित रखने के लिए 'बेरिकेडिंग' का प्रबन्ध सौंप दिया गया। यह भी निश्चय कर लिया गया। भूतपूर्व राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद के आसन्न मृत्यु-काल के समय जो योजना शवयात्रादि निमित्त बनाई गई थी उसी के अनुसार प्रधानमन्त्री की शवयात्रा का प्रबन्ध कर लिया जाय।

सैनिक संरक्षण में

सनिक विभाग के संरक्षण में पण्डितजी का शव २७ मई को साय काल ६ बजे आ गया था। प्रतिरक्षा विभाग ने निश्चय किया कि जब तक शव प्रधानमन्त्री-भवन से न उठाया जाये, तब तक स्थल नभ तथा नौसेना विभाग के जनरल तथा उनके समकक्ष अधिकारी सायकाल ६ बजे से २८ मई तक प्रति क्षण सतर्क दृष्टि रखें। इसके अतिरिक्त ६१ केवेलरी के दो अश्वारोही पण्डितजी के शव के पाँवों की तरफ अपने भालों को उल्टा रखे बाहर की तरफ देखते रहेंगे। शवयात्रा निमित्त सनिक केन्द्रीय अनुशासन हेडक्वार्टर डिपो तथा रिकार्ड एरिया के अन्तर्गत सौंपा गया। शवयात्रा मार्ग में स्थल सेना के ८०० सैनिक सड़कों पर खड़े किये गये। दो पल्टनें जिनमें प्रत्येक में एक सैनिक अधिकारी, २ जी० सी० ओ० तथा १० ओ० आर० थे सबसे आगे चलने के लिए नियुक्त किये गये। दो प्लाटून जिनमें एक अधिकारी दो जी० सी० ओ० तथा ३० ओ० आर० थे पीछे चलने के लिए नियुक्त किये गये। शव-स्थान पर अन्तिम अभिवादन के रूप में फायरिंग दल में एक एन० सी० ओ० तथा १२ सिपाही नियुक्त किये गये। चौबीस बिगुल बजाने वाले तथा राजपूताना राइफल्स रेजिमेंट सेन्टर का एक बैंड तैयार किया गया। बेला रोड तथा दाह-स्थान पर ७२५ सनिक नियुक्त किये गये।

नौसेना के सभी पदों के ७० व्यक्ति तथा २० सैनिक तोप गाड़ी जिन पर पण्डितजी का शव जाने वाला था खींचने के लिए नियुक्त किये गये। वायुसेना के ५०० व्यक्ति सम्मिलित रूप से नियुक्त किये

ये तथा वायुसेना के २० सैनिक तोप गाड़ी खींचने के लिए नियुक्त किये गये।

स्थल, नौ तथा वायुसेना के चीफ आफ स्टाफ मुख्य 'पाल बीयरर' (अर्थी उठाने वाले) नियुक्त किये गये। उनके साथ साधारण पाल बीयरर में दो स्थलसेना के लेफ्टिनेण्ट जनरल, नौसेना के २ रीयर एडमिरल तथा वायुसेना के २ वाइस मार्शल थे। साधारण बीयरर में ६ स्थलसेना के अधिकारी तथा उन्हीं के समकक्ष नौ तथा वायुसेना के अधिकारी नियुक्त किये गये। शवयात्रा के कासम कमांडर मेजर जनरल भगवतीसिंह, जो दिल्ली तथा राजस्थान सेना के जी० ओ० सी० थे नियुक्त किये गये।

एक बजे से पहले

समय भागता जा रहा था। प्रधानमन्त्री भवन में एकत्रित विशिष्ट साधारण तथा अन्य लोगों का मन भारी होता जाता था। एक बजे मध्याह्न का काल समीप आता जाता था। यही समय निश्चित किया गया था पण्डितजी का शव तोप की गाड़ी पर रखने का। आने-जाने की चहल-पहल धीरे-धीरे खतम हो रही थी। शनैः-शनैः शान्त तथा स्तब्ध वातावरण अनायास गम्भीर होने लगा। सब एक-दूसरे के मुख की ओर देखते थे। कोई कुछ कहना नहीं चाहता था सुनना नहीं चाहता था। पण्डितजी सर्वदा के लिए यह स्थान छोड़ने वाले हैं। जहाँ उन्होंने बैठकर सोलह वर्ष तक लोगों का नेतृत्व किया, विश्व की राजनीति को मोड़ दिया। भारत के निर्माण की परिकल्पना की। सबका मोह त्यागकर वे चले जायेंगे। और फिर कल यह स्थान क्या हो जायेगा—कल्पना बड़ी दुष्कर थी।

शवयात्रा के पूर्व ठीक ११ बजे प्रधानमन्त्री के भवन का फाटक एक हल्की आवाज करता बन्द हुआ। लोगों को सुनाता वह घड़ी आ गई जब विदाई होगी। वह विदाई होगी जिसके बिछुड़ने पर फिर कोई मिलता नहीं।

पण्डितजी के शव को सजाने की तयारी चुपचाप होने लगी। इसी समय खबर आई। प्रसिद्ध फिल्म प्रोड्यूसर महबूब खाँ खबर सुनते ही मर गये। हाफिज इब्राहीम राज्यपाल पंजाब को चोट आई। कितने लोग उस दिन रोये, कितनी माताएँ बिलखीं, कितनी बहनों ने आँखों से बहते आँसूओं पर अपना अंचल लगाया और कितने शिशु हक्के-बक्के अपने माता-पिता का मुख देखकर कुछ पूछना चाह रहे थे—गिनती कर कौन बता सकता है।

प्रातःकाल तीन बजे से भीड मार्गों पर एकत्रित होने लगी थी। लोग १० १५ मील पैदल चलकर आये थे। सड़कों के दोनों पाद-पथों पर कहीं-कहीं १० १० और १५ १५ की पंक्तियों में लोग एक-दूसरे के पीछे खड़े हो गये थे। उस भीषण गरमी में, उस भीषण आतप में लोग चुपचाप अजमि बाँधे खड़े थे।

विश्व की वेदना



विदेशों से विशिष्ट राजनीतिक व्यक्ति हवाई जहाजों से आने लगे और भारत में इलाहाबाद, लखनऊ, चंडीगढ़ तथा मेरठ से स्पेशल ट्रेनें दिल्ली के लिए रवाना होने लगीं। स्पेशल ट्रेनों में इतनी भीड़ थी कि नरमुंडों के सिवाय और कुछ भीतर दिखलाई नहीं देता था।

तीन मूर्ति के चारो ओर लगभग १ लाख भारतीय नागरिक पंडितजी की शवयात्रा के दर्शनार्थ एकत्रित हो गये थे। भीड़ इतनी अधिक हो गई थी कि ३ व्यक्ति तीन मूर्ति के पास दबकर मर गये। लगभग १५० व्यक्ति घायल हुए। एक व्यक्ति धनप्रकाश आयु ५२ वर्ष, सहारनपुर से अपने कुटुम्ब के साथ आया था। वह दबकर चल बसा। दूसरा व्यक्ति मेरठ का था। तीसरा व्यक्ति बद्रीनाथ खण्डेलवाल, ४२ वर्ष की आयु का अजमेर का था। पुलिस का घेरा था। पीछे से भीड़ का धक्का आ रहा था। इस समय भीड़ मनुष्यों की ठोस कतार के साथ इस प्रकार हिलती पीछे तथा आगे बढ़ती थी जैसे समुद्र की अफेनिल लहरें गर्व के साथ आगे आती और जाती हों।

प्रधानमंत्री-भवन के मुख्य द्वार से विदेशी दूतावासों तथा विशिष्ट पुरुषों की गाड़ियों का प्रवेश होता था। किन्तु लगभग ११ बजे दिन के भीड़ की वृद्धि तथा दर्शनार्थियों की आतुरता देखकर फाटक बन्द कर देना पड़ा। शव नीचे रखने से अब तक लगभग १७ घंटों में ५

ख़ास व्यक्तियों ने पण्डितजी के शव का दर्शन कर उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की थी। पुष्पों चर्खे के सूत की मुण्डियों के अतिरिक्त धान तथा मोन्हूरी का श्वाधा तन पण्डितजी पर पड़ता था। फाटक बन्द कर देने पर भी स्थिति में सुधार नहीं हो सका। लोग लोहे के फाटक पर चढ़ गये। फाटक लाँघकर भीतर दखल करने पहुँचना चाहते थे।

बहुत-से वृद्ध प्रधानमंत्री-भवन की रेलिंग तथा फाटक के सीखचों के लोहों के द्वारा भीतर की एक झलक मिल जाने के लिए आतुर थे। शव की झलक न मिलने पर उनके मुख शोक से खुल जाते थे और अश्रुधारा कपोल पर बह निकलती थी।

फिर भी जब कभी किसी मोटर के प्रवेश के लिए फाटक खुलता तो मोटर प्रवेश के पूर्व ही इतनी अधिक भीड़ प्रवेश कर जाती थी कि मोटर पीछे और लोग आगे हो जाते थे। फाटक के अन्दर प्रवेश करते ही भीड़ तेजी के साथ पोर्टिको में दर्शनार्थ दौड़ती थी। बच्चे छूट जाते थे। स्त्रियाँ गिर पड़ती थीं। साड़ियाँ दौड़ने में बाधक होती थीं। उन्हें साड़ी पर क्रोध आता था। एक हाथ से साड़ी और दूसरे हाथ से बच्चा सँभाले दौड़ती थी। कुछ स्त्रियाँ बच्चे बगल में दबाये बेतहाशा दौड़ती शव के समीप तुरन्त पहुँच जाना चाहती थी। भीड़ बढ़ती गई। स्थिति बिगड़ती गई। भीड़ रोकना असम्भव हो गया।

सनिक अधिकारियों ने एक उपाय ढूँढ़ निकाला। प्रधानमन्त्री भवन में प्रवेश निमित्त एक और मार्ग मुख्य द्वार से दक्षिण पार्श्व की ओर जाती हुई चहारदिवारी में था। उसमें मुख्य द्वार की अपेक्षा फाटक छोटा था। निश्चय किया गया कि मुख्य द्वार अविलम्ब बन्द कर दिया जाय। पण्डितजी का शव शवयात्रा के निमित्त तैयार किया जा रहा है—कहा गया। अतएव ठीक दिन के ११ बजे मुख्य द्वार दर्शकों की आशा पर पानी फेरता बन्द हो गया। प्रधानमन्त्री-भवन में जो भीड़ पहुँच चुकी थी वह दर्शन कर लौट आई। विदेशी दूतावासों से तथा विदेशों से आये हुए श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों के लिए दूसरा फाटक खोल दिया गया। उसमें से केवल अधिकार प्राप्त गाड़ियाँ भीतर प्रवेश पाने लगीं। भीड़

का ध्यान इस ओर था भी नहीं। जिस सड़क पर वह फाटक पड़ता था वहाँ भीड़ भी अधिक नहीं थी। निश्चय किया गया कि दिन के ११ बजे से १ बजे तक केवल विदेशी आगन्तुकों के दर्शनार्थ प्रवेश खुला रखा जाय।

लगभग ११ बजकर ३० मिनट पर पाकिस्तान के विदेशमन्त्री श्री भुट्टो ने प्रधानमन्त्री को श्रद्धांजलि अर्पित की। वह प्रातःकाल ८ बजे वायुयान से दिल्ली पहुँचे थे। चीनी दूतावास के राजदूत तथा विशिष्ट अधिकारी लोगों ने पण्डितजी पर माला चढ़ाई। उनके प्रवेश करते ही कौतूहलवश मैं उनके साथ हो गया था। वे पण्डितजी के शव के पास आये माला चढ़ाई, करबद्ध नमस्कार किया और बिना किसी से कुछ बोले लौट पड़े। उन्होंने अनुभव किया कि वहाँ उपस्थित भारतीय दर्शनार्थियों में उनके प्रति स्नेह नहीं था। उनके मस्तक नत थे। शायद वे अपराधी मन से पश्चात्ताप का अनुभव कर रहे थे। उनके बन्धुता के पाखण्ड और उनके आक्रमण निःसन्देह पण्डितजी की जीवन रेखा क्षीण करने में सफल हुए थे।

पाकिस्तान के विदेशमन्त्री भुट्टो को मैंने ध्यानपूर्वक देखा। उनकी दृष्टि विमल नहीं थी फिर भी जैसे वे सोच रहे थे—किसी दिन के अविभक्त हिन्दुस्तान के नेता, स्वयं उनके भी नेता, जिनकी कभी जय-ध्वनि अनेक बार की होगी, जिनके दर्शन के लिए उत्सुक रहे होंगे, जिनके कारण कोटि-कोटि भारतीय मुसलमान अपने को सुरक्षित समझते रहे हैं जिनके कारण पाकिस्तान स्वयं अपने को खुशकिस्मत मानता था, जिनकी मृत्यु का समाचार सुनकर पाकिस्तान की गरीब जनता ने भी दुःख अनुभव किया था वही नेता उनसे बिछुड़कर चल बसा है।

इसी समय लगभग ११ बजकर ४४ मिनट पर दिल्ली में भूकम्प हुआ। धरती हिल उठी। यह एक विचित्र अभूतपूर्व बात थी। इस समय शव-वाहक तोपगाड़ी ने प्रधानमन्त्री-भवन में प्रवेश किया। शव यात्रा के लिए केवल १ घंटा १६ मिनट और रह गया था। भारतभूमि

अपने लाल की विदाई का दुःख सहन नहीं कर सकी। उसने अपना शोक अपनी कम्पित काया द्वारा प्रकट कर दिया।

विदेशी विशिष्ट व्यक्ति

विदेशों से आकर जिन मन्त्रियों विशिष्ट व्यक्तियों तथा राजनीतिक नेताओं ने महान् भारतीय नेता को श्रद्धांजलि अर्पित की थी और जिन्होंने इतने स्वल्प समय में किसी न किसी प्रकार पहुँचने का प्रबन्ध कर लिया था वे निम्नलिखित थे

(१) ग्रेट ब्रिटेन—लार्ड माउंट बेटन महारानी एलिजाबेथ के प्रतिनिधि

(२) यूनाइटेड किंगडम—(१) प्रधानमन्त्री श्री होम (२) श्री इविली गार्नर (३) डंकन सडी (४) लेडी सेबोर्न

(३) श्रीलंका—प्रधानमन्त्री श्रीमती भण्डारनायक अपने ५ साथियों के साथ

(४) यूगोस्लाविया—(१) श्री पीटर स्टोम्बोलिक अध्यक्ष संघ परिषद् (२) श्री न्द्राहिल जिगोष उपाध्यक्ष संघ सभा (३) श्री बोरेन रिजिक उपमुख्याधिकारी एशियाई विभाग विदेश मन्त्रालय

(५) नेपाल—श्री तुलसीगिरि सभापति मन्त्री परिषद् महाराजा नेपाल तथा नेपाल सरकार के प्रतिनिधि

(६) संयुक्त अरब गणराज्य—श्री शफी, उपराष्ट्रपति तथा उनका दल

(७) रूमानिया—(१) श्री पियार्जे स्पोस्टस प्रथम उपराष्ट्रपति (२) एडमंड मेजिस सेक्नि उपविदेशमन्त्री (३) श्री औरेस बर्डेलीन भारत स्थित राजदूत, (४) श्री डोब्रे, वदेशिक अधिकारी

(८) संयुक्त समाजवादी सोवियत गणराज्य संघ—श्री कोसिगिन उपप्रधानमन्त्री (अब प्रधानमन्त्री) तथा उनका दल

(९) ईरान—ईरान के शाह के प्रतिनिधि श्री नवाब सदर अन्तर्देशीय मन्त्री ३ अन्य मन्त्री तथा भारतीय राजदूत

(१०) नाइजीरिया—विदेशमंत्री

(११) युगाण्डा—श्री नरेन्द्र पटेल स्पीकर, श्री मसूप सतल्ला मंत्री या ओमोमा एम० पी०

(१२) अलजीरिया—श्री बहिमी सबहदर, यू० ए० आर० स्थित अलजीरिया के राजदूत

(१३) ट्यूनिशिया—(१) श्री मागी स्मिम विदेशमंत्री श्री हुबीब बार सिबा (जूनियर) मुख्य सचिव

(१४) दक्षिण कोरिया—श्री तोंग बान ली भारत स्थित दक्षिण कोरिया के राजदूत

(१५) कनाडा—श्रान पपदमन कनाडा सरकार के प्रतिनिधि

(१६) मोरक्को—डाक्टर श्री अहमद बलाय राजा के प्रतिनिधि।

अमरिका के विदेशमंत्री श्री डान रस्क और सहायक विदेशमंत्री श्री फिलिप्स तालबाट रक्षामंत्री श्री चौहान के साथ अमरिका से सीधे १५ घंटा में हवाई जहाज से दिल्ली आये। वे अपने दल के साथ हेलिकाप्टर से सीधे शान्ति-वन के दाह-स्थान पर लगभग ८ बजे पहुँचे। फ्रांस के राज्यमंत्री श्री लुइ जायस पालम से हेलीकाप्टर द्वारा सीधे दाह-स्थान पर पहुँचे। जापान के राजदूत डा० श्री काटा मत्सुदैरा पण्डितजी की शवयात्रा में सम्मिलित थे परन्तु जापान के विदेशमंत्री श्री मासा पाशी ओहिरा रात्रि के १० बजे जापान से नई दिल्ली पहुँचे। जापान के प्रधानमंत्री की ओर से श्री हुमाना एके शार्मी ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

विश्व के प्रायः सभी देशों से विशिष्ट व्यक्ति श्रद्धांजलि अर्पित करने आना चाहते थे। किन्तु सभी देशों से वायुयान-सम्बन्ध मार्ग से नहीं था। साधन-सम्पन्न देश वायुयान का प्रबन्ध कर सकते थे परन्तु छोटे राज्य जिनके पास हवाई जहाज नहीं थे नहीं सम्मिलित हो सके। अन्तर्राष्ट्रीय वायुयान-सेवा निश्चित समय और निश्चित मार्ग से चलती है। अतएव उनसे भी विशेषतया लाभ नहीं उठाया जा सका। अन्त्येष्टि का समय इतना कम था कि विश्व के सभी राष्ट्र चाहकर भी

नहीं आ सकते थे।

दक्षिण वीतनाम के प्रतिनिधि-गण आये। सबसे अधिक विकलता कम्बोडिया के राजा ने दिखाई। कम्बोडिया तथा दक्षिण-पूर्व एशिया में प्रथा प्रचलित है जिस दिन मृत्यु होती है उसी दिन दाह-संस्कार कर देते हैं। दक्षिण-पूर्व एशिया में हिन्दू प्रथा का अनुकरण किया जाता है। कम्बोडिया के राजा ने समझा कि २७ मई को ही अन्त्येष्टि क्रिया समाप्त हो जायगी। आकाशवाणी से जो समाचार प्रसारित किया गया था उसमें अन्त्येष्टि किस समय होगी इसकी सूचना नहीं दी गई थी। मैं ऊपर लिख आया हूँ कि अनिश्चित मनःस्थिति होने के कारण शव यात्रा का समय बदलता रहा। अतएव बहुत-से देशों ने पहुंचना असम्भव समझकर विचार त्याग दिया। भारत-स्थित दूतावासों को अपने अपने देशों की तरफ से श्रद्धांजलि अर्पित करने का आदेश भेज दिया।

जिस समय आकाशवाणी से निश्चित रूप से २८ मई को मध्याह्नोत्तर शवयात्रा का समाचार प्रकाशित किया गया उस समय विभिन्न राष्ट्रों की राजधानियों में दिल्ली पहुँचने का अप्रत्याशित प्रयास किया जाने लगा। यह समाचार दक्षिण-पूर्व एशिया तथा बौद्ध देशों के लिए वज्राघात-तुल्य प्रतीत हुआ। कम्बोडिया के राजा ने अथक परिश्रम दिल्ली पहुँचने के लिए किया। परन्तु उनका किसी प्रकार दिल्ली पहुँचना सम्भव नहीं हो सका। यही अवस्था थाईलैंड तथा अन्य देशों की हुई। जापान के विदेशमंत्री सायंकाल २८ मई को पहुँचने में समर्थ हो सके। पण्डितजी के दिवंगत होने का सबसे अधिक दुःख अनुभव करने वाले अफ्रीका के नव-स्वतन्त्रता प्राप्त देश तथा एशियाई राष्ट्र थे। उन्होंने असे अपना महान् नेता खो दिया था जिसकी प्रेरणा पर उन्हें स्वतन्त्रता प्राप्त हुई थी और उन्हें अपने देश तथा आजादी के मूल्य का अनुभव हुआ था।

ब्रिटिश प्रधानमंत्री ने सर पाल गोरबूथ के साथ ठीक ९ बजे पण्डितजी को श्रद्धांजलि अर्पित की थी। लन्दन-स्थित भारतीय राजदूत श्री जीवराज मेहता भी ब्रिटिश प्रधानमंत्री के साथ ही लंदन से आये

थे। बर्मा की श्रीमती नो विन (बर्मी राष्ट्रपति की धर्मपत्नी) तथा विदेशमंत्री ऊर्थी हृन सायंकाल श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए पहुँचे।

भारत-स्थित विदेशी दूतावासों में कोई ऐसा शेष नहीं रह गया था जिसने श्रद्धांजलि न अर्पित की हो। यहाँ उनके नाम गिनाना इस लेख का कलेवर बढ़ाना मात्र होगा।

हिन्दू-परम्परा

भारत के राज्यपालों मुख्यमन्त्रियों तथा अन्य विशिष्ट राजनीतिक नेताओं ने माल्यार्पण कर तथा रीथ रखकर श्रद्धांजलि दी। मद्रास के मुख्यमंत्री श्री भक्तवत्सलम ने वरदाचारी स्वामी कांजीवरम से लाये पुष्प पण्डितजी पर अर्पण किये। मैं समझता हूँ कि धार्मिक भावना से प्रेरित होकर केवल भक्तवत्सलमजी ने धार्मिक परम्पराओं के सम्बन्ध में पण्डितजी के विचारों की परवाह न करते हुए, हिन्दू-परम्परा का निर्वाह किया। अन्य राज्यपालों तथा मंत्रियों ने विदेशी शैली के अनुसार माला अर्पण कर अपने कर्तव्यों का औपचारिक ढंग से पालन किया। पण्डितजी के शव के स्थान के पीछे वाले कमरे में तीन ब्राह्मणों द्वारा वेदमंत्रों का पाठ लाउडस्पीकर से बाहर तक पहुँच रहा था। उनके मस्तक के दोनों ओर लगे शवों के बीच एक पण्डितजी गीता पढ़ रहे थे।

शवयात्रा का समय समीप चला आ रहा था। लगभग १२ बजकर ३० मिनट पर भारतीय रोमन कैथोलिक ईसाई वर्ग की तरफ से आर्क बिशप जोसफ फरनीदस, आर्क बिशप एन्जिलो फरनीदस तथा बिशप सम्मेलन में आये हुए प्रतिनिधिगण आर्क बिशप्स एवं अन्य रोमन कैथोलिक व्यक्ति श्वेत वस्त्र में आये। वे एक वृत्त बनाकर खड़े हो गये। नेहरूजी के परमप्रिय अंग्रेजी गीत 'ऐबाइड विद मी' 'लीड काइण्डली टू लाइट' इतने मार्मिक स्वर में उन्होंने गाये कि अनुभव होने लगा जैसे शोक स्वयं मूर्तिमान होकर उतर आया है।

मद्रास के लामा विद्यार्थियों तथा भिक्षुओं का दल श्रद्धांजलि

अर्पित करने आया था। पण्डितजी को कश्मीर राज्य-स्थित लद्दाख प्रदेश की राजधानी लेह प्रिय थी। वहाँ की उन्होंने अपनी युवावस्था में यात्रा की थी। उस समय श्रीनगर-लद्दाख की सड़क नहीं बनी थी। केवल पगडण्डी का मार्ग था। टट्टुओं पर चढ़कर यात्रा की जाती थी। मैं लद्दाख से जब १९६३ में लौटकर आया तो पण्डितजी ने अपनी इस प्रारम्भिक यात्रा का स्वयं वर्णन किया था। चीनी आक्रमण के पश्चात् सड़क बनाने का कार्य आरम्भ किया गया है। अपनी यात्रा के समय मैंने स्वयं अनुभव किया कि उन दिनों वह यात्रा कितनी कष्टप्रद और दुरूह रही होगी। अभी भी पूर्ण सड़क बनकर तयार नहीं हुई है। पण्डितजी उन दिनों ४ दिनों में घोड़े और टट्टू पर सवारी कर लद्दाख पहुँचे थे। लद्दाख का जीवन, वहाँ की वास्तुकला आदि सर्वथा भिन्न है। वह दूसरा जगत् मालूम होता है स्वप्न-नगर प्रतीत होता है। वहाँ के लामा विद्यार्थियों से पण्डितजी विशेष प्रेम रखते थे। सन् १९६२ में काशी-यात्रा के समय वे सारनाथ गये थे। मैंने वहाँ के छोटे-छोटे लामा बच्चों से उनका परिचय कराया था। हमें याद है उन्होंने बच्चों से उनकी भाषा में कुछ शब्द कहे थे। बच्चे प्रसन्न होकर नाच उठे थे। वहीं के लामा-दल ने विनयपिटक के सूत्रों का पाठ किया। उनका उच्चारण उनके पाठ की शैली इतनी परिष्कृत तथा मधुर थी कि सुनने की इच्छा होती है। एक ओर ईसाई पादरियों का गान हुआ था। उसे मैं खड़ा संगीत कह सकता हूँ। लामा लोगों की वाणी में गद्य था। उनमें गंगा की लहरों की तरह मृदुल आरोह-अवरोह था। इस प्रकार पण्डितजी को ब्राह्मण के नाते उनकी यात्रा के मध्य वैदिक मन्त्र गान बौद्ध धर्म के आजीवन प्रेम के कारण त्रिपिटक पाठ गान तथा पाश्चात्य शिक्षा में प्रभाव तथा प्रेम के कारण पाश्चात्य संगीत प्राप्त हुआ।

शव अर्थी पर रखने के ठीक १५ मिनट पूर्व राष्ट्रपति राधाकृष्णन् उपराष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन शव के वाम पार्श्व में १५ फुट की दूरी पर खड़े हो गये। उनके पीछे मैं भी खड़ा हो गया। वहाँ बरफ की सिल्लियाँ रखी थी। पंखा चल रहा था। दूसरी ओर शव के दक्षिण पार्श्व

में ५ फुट की दूरी पर लार्ड माउंट बेटन तथा लेडी पामलाटिन, श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित तथा श्रीमती कृष्णा हठीसिंह आर समीप खड़े थे। पाँव के समीप इन्दिरा गांधी खड़ी थीं।

करुण वातावरण

इस समय लगभग १ बजा था। वातावरण इतना करुण हो चला था कि उसका वर्णन करने में मेरी लेखनी असमर्थता का अनुभव करती है। वहाँ उपस्थित सभी लोगों का मस्तक नत हो गया था। पण्डितजी की प्रफुल्ल शान्त मुखमुद्रा पर सबकी स्थिर दृष्टि लगी थी। कोई कुछ बात नहीं रहा था। कोई कुछ कर नहीं रहा था। केवल पंखे की हवा की आवाज सुनाई पड़ रही थी। बाहर एकत्रित लोग नीरव हो गये थे। एक महामानव इस भवन में अंतिम विदा लेने वाला था। अपना नीड़ त्यागने वाला था। चिड़िया अपना घोंसला छोड़ने वाली थी। पखेरू उड़ने वाला था।

■ विशिष्ट सैनिक अधिकारियों ने शोकमुद्रा में नतमस्तक प्रवेश किया। मुख्य पाल-बीयरर तथा चीफ पाल-बीयरर ने हाल में प्रवेश किया। उन्होंने पंक्तिबद्ध सैनिक अभिवादन किया। पाल-बीयररों में स्थलसेना के मुख्य अधिकारी 'स्टाफ' नौसेना के मुख्य अधिकारी तथा नभसेना के मुख्य अधिकारी थे। वे ६ पाल-बीयरर हाल में आये। उनमें स्थलसेना के २ लेफ्टिनेण्ट जनरल जलसेना के २ रीयर एडमिरल और २ एयर वाइस मार्शल थे। उन लोगों ने पंक्तिबद्ध शव का अभिवादन किया तथा शव के दोनों पार्श्वों में यथास्थान ३ फुट के फासले पर खड़े हो गये। उनके पश्चात् ६ बीयरर अर्थात् शव को उठाने वालों ने प्रवेश किया। उनमें स्थलसेना के जनरल रैंक के २ अधिकारियों तुल्य उसी रैंक के जल तथा नभसेना के अधिकारी थे।

बीयरर-दल शव के मस्तक-प्रदेश की ओर आया। उन्होंने वहाँ से पाद-प्रदेश की ओर नत खड़े होकर सैनिक अभिवादन किया।

उपस्थित जन-समुदाय का हृदय उन्हें देखते ही धक-सा हो गया।

वे चुपचाप शव-शय्या के पास स्थिर खड़े हो गये। शव-शय्या के दक्षिण पार्श्व में पाद-दिशा की ओर दीवार के पास स्ट्रेचर रख दिया गया। रखने से किंचित् ध्वनि हुई। उस ध्वनि से नीरवता भंग हुई। दूसरे अध्याय का पन्ना उलटा। विदाई का संकेत मिला। करुणा गम्भीर होने लगी।

मन कहता था वे न आते तो अच्छा था। वे पण्डितजी को ले जायेंगे। जिसके दर्शन निमित्त हम आते थे। जिसे निरन्तर देखने की अपेक्षा रखते थे जिसे श्रद्धांजलि अर्पित करने में विश्व अपना गौरव का अनुभव कर रहा था। और वे अब पण्डितजी को ले जायेंगे। हम देखते रह जायेंगे। कुछ चाहकर भी नहीं कर सकेंगे। वे सदा के लिए चले जायेंगे। सबकी आँखें भर आई। दृढ़ता पलायन करने लगी। मन का रुका बाँध टूटने लगा।

सैनिक अधिकारियों का मुख झुका था। वे अपने को अपराधी-सा समझ रहे थे। उनकी मनोभावना उनकी लज्जित आँखों में झलक रही थी। वे जैसे कोई गुनाह करने जा रहे हों। वे छीनने चले थे हम लोगों से उसे जिसे हम स्नेह से अपने बीच रखना चाहते थे। कोई यह नहीं समझेगा कि काल ने ही उन्हें हमसे छीना है क्योंकि काल तो अदृश्य है। सबकी आँखें देखेंगी उन्हीं को जो उठाकर ले जाने वाले थे, या उसको जो अशक्त अपनी शैया पर शान्त पड़ा जगत् का नाटक देख रहा था।

इन्दिरा गांधी पण्डितजी के दक्षिण पार्श्व में पाद प्रदेश के समीप दीवार के सहारे खड़ी थीं। स्ट्रेचर की मनहूस आवाज के साथ वे हटीं। स्ट्रेचर पण्डितजी का स्वागत करने के लिए आगे बढ़ा।

यह संकेत था। वेला आ गई। किसी ने किसी की तरफ देखने का साहस नहीं किया। किसी ने कुछ कहने का प्रयास नहीं किया। सबकी वाणी मूक थी। केवल आँखें देख रही थीं। कान सुन रहे थे। मन नीरव वातावरण की नीरवता में लीन होने लगा। नीरवता ही जैसे कर्ता-धर्ता बन बैठी। आदेश देने लगी।

सैनिक अधिकारियों ने स्ट्रेचर फैलाया। आर्द्र अश्रुबिन्दुओं के साथ आँखें दूसरी ओर किंचित् घूम गईं। नीरवता भंग करती खट से आवाज हुई। स्ट्रेचर अपना हृदय खोलने लगा। सबकी दृष्टि उस ओर चली देखने स्ट्रेचर का विचित्र स्वागत। स्ट्रेचर पर वस्त्र फैलाया गया स्वस्थ काया को अपने अंक में लेने के लिए। धन्य होगा वह अज्ञात सूत कातने वाला जिसके काते श्वेत उज्ज्वल कोमल सूत के बिछावन पर उज्ज्वल काया अपनी लम्बी यात्रा के एक पड़ाव पर किंचित् काल विश्राम करेगी।

चुपके-चुपके सैनिक अधिकारियों के सबल हाथ शव की ओर बढ़े। सबके लोचन पण्डितजी की धवल काया पर स्थिर हो गये। जीवित सबल हाथ अर्मजीवित दुर्बल बाहु मूल में पद में और कटि प्रदेश के नीचे प्रवेश कर गये।

एक हल्की सी हिलन। फूल-सी उज्ज्वल काया जीवित पुरुषों के कर-पल्लवों पर आ गई। सैनिक अधिकारियों ने पहले पाद-देश को उठाया पुनः शरीर को उठाया। पैर आगे थे। सिर पीछे था। उसे कन्धों पर रखकर उन्होंने शव को स्ट्रेचर पर रखा। वह करुण दृश्य देखकर कितने रो उठे। कितनों ने मुख फेर लिया। कितनी उपस्थित महिलाएँ कपोलों पर अश्रुसरिता बनाती एक-दूसरे के स्कन्ध प्रदेश पर मुख रखकर सिसक उठीं। सिसकियों के बीच काया स्ट्रेचर पर आ गई।

भूमि शय्या

हिन्दू संस्कार ने अलग्रान अपना कार्य किया। पण्डितजी को भूमि शय्या नहीं मिली थी, स्ट्रेचर पर उन्हें भूमि-शय्या मिली। हिन्दुस्तान की भावनाओं का प्रतीक तिरंगा झण्डा उनके शरीर पर फैल गया। धर्मचक्र चिह्न शून्य-अवधि पर भगवान् बुद्ध के आशीर्वाद स्वरूप शान्त स्थिर हो गया।

वे पुष्प जिनसे उन्होंने आजीवन स्नेह किया था, आजीवन अपनी शेरवानी में बटन में लगाते रहे उनके वक्षस्थल पर बिखर गये। इस

वियोग की वेला में।

सैनिक अधिकारियों ने शव सहित स्टेचर उठाया। पर आगे थे सिर पीछे था। बीयरर लोग गम्भीरतापूर्वक कदम उठाते हुए प्रधान मन्त्री भवन के हाल की सीढ़ी उतरने लगे। मुझे स्मरण है। लार्ड माउंट बेटन ने कुछ कहा। उपस्थित सैनिक अधिकारियों ने गम्भीर निःश्वास के साथ सावधान होकर सैनिक अभिवादन किया।

शव घर छोड़ बाहर चला तोप की गाड़ी पर सवारी करने उज्ज्वल ज्योति सदा के लिए अपने पीछे छोड़ती अन्धकार का और स्वयं चलती प्रकाश की ओर याद दिलाती श्रुति वाक्य—'तमसो मा ज्योतिर्गमय'—ठीक एक बजकर १० मिनट पर जब सूर्य का रथ सन्ध्या से मिलने चल चुका था।

मैंने देखा। दार्शनिक राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन की उंगलियाँ नेत्रों से बहती अश्रुधारा की गति को रोकने को उठी। ईसाइयों के कण्ठ से उठती गम्भीर करुण लहरियाँ विलीन हो गई गीत के अन्तिम चरण में। उच्चरित वेद-मन्त्र शान्त हो गये महामानव की शान्ति-धन की ओर शान्त शवयात्रा के लिए बजते सैनिक बैण्ड की प्रथम गत के साथ। तोपगाड़ी के चक्र स्मरण दिलाने लगे भगवान् बुद्ध की वाणी का—'जिसका उदय हुआ है उसका अस्त होगा। जिसका जन्म होता है उसका फिर जन्म होता है। जिसका जन्म होता है उसकी मृत्यु होती है। जिसकी मृत्यु होती है उसका जन्म होता है। इसी का नाम है कालचक्र।

श्राद्ध में विश्वास नहीं

कुछ समाचारपत्रों में यह समाचार छपा था कि पण्डितजी का श्राद्ध शव उठने के पूर्व हुआ था। यह बात ठीक नहीं है। पण्डितजी श्राद्ध में विश्वास नहीं करते थे। मैं अन्यत्र इस विषय पर प्रकाश डाल चुका हूं। यद्यपि भारतीय परम्परा इसके विपरीत है। आर्यों ने सभी व्यक्त एवं अव्यक्त किंवा जीवित एवं मृत के मध्य किसी प्रकार का

व्यवधान या खाई होने की कल्पना नहीं की है। अव्यक्त किंवा अदृश्य जगत् का दृश्य अथवा व्यक्त जगत् के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध सदा बना रहता है। मृत व्यक्ति कभी मृतक नहीं समझा जाता। माना जाता है कि वह इस जगत् का रूप त्यागकर अन्य जगत् अथवा अन्य रूप में स्थित रहता है।

मृत्यु के साथ की क्रियाओं को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है प्रेतक्रिया तथा पितृक्रिया। मृत व्यक्ति प्रेत माना जाता है जब तक सपिण्डीकरण क्रिया नहीं कर ली जाती, उसके पश्चात् वह प्रेत से 'पितर' हो जाता है।

मृत्यु के समय व्यक्ति अन्नमय कोष का त्यागकर प्राणमय कोष प्राप्त करता है। प्राणमय कोष प्राप्त करने के पश्चात् समस्या उपस्थित होती है अन्नमय कोष के नष्ट करने की। यह कार्य होता है दाह संस्कार द्वारा शरीर को अग्नि में भस्म कर देने पर।

चाहे श्राद्ध हो या न हो परन्तु अन्नमय कोष का नाश अवश्यम्भावी हो जाता है अन्यथा कभी का सुन्दर सुरभित शरीर कुरूप एवं दुर्गन्ध प्रसारित करता दूसरों की मृत्यु का कारण बन सकता है। पण्डितजी का अन्नमय कोष उनका जड़ गाड़ी पर जब प्रसाधनों से आच्छादित जड़ता की निस्सारता का उद्घोष करता, जागृतों को स्मरण दिलाता बैण्ड की ध्वनि पर सैनिकों के शोक के साथ उठते कदमों के साथ चला अग्नि का आलिंगन करने। छान्दोग्योपनिषद् के शब्दों में—

तं प्रेतं दिष्टमितो अग्नय एव हरन्ति यत एवेतो यतः संभूतो भवति।

—'वे उस दिवंगत को ले चले उस अग्नि के समीप जहाँ से वह आया था, जहाँ से उसने जन्म लिया था।'

शांतिवन की ओर



प्रधानमंत्री भवन के द्वारमंडप अर्थात् पोर्च के बाहर सड़क पर विशिष्ट व्यक्तियों की गाड़ियाँ पंक्तिबद्ध लगी थीं। गाड़ियों का क्रम निश्चित कर लिया गया था। कार पास २७ मई को रात्रि में बांट दिए गए थे।

पण्डितजी की अर्थी बाहर निकलने वाली है। उसका दर्शन होगा। वे उसी सड़क से जाएँगे जिससे प्रतिदिन आया-जाया करते थे। उनके दर्शनार्थ प्रातःकाल ६ बजे तक १ लाख व्यक्तियों की भीड़ तीन मूर्ति मार्ग पर एकत्रित हो गई। तीन मूर्ति मार्ग से विजय चौक तक किंग जार्ज एवेन्यू जाने वाली सड़क पर लगभग ५ लाख व्यक्ति दर्शनार्थ चुपचाप खड़े थे।

कल वर्षा का एक झोंका आ चुका था। अंधड़ भी आया था। उससे गरमी कुछ कम हो गई थी। कल गरमी ३८.५ डिग्री थी और आज कम होकर ३६.८ डिग्री रह गई थी। परन्तु भीड़ के कारण उसमें कमी नहीं मालूम होती थी। एवेन्यू का पार्श्व-पथ ठंडा हो गया था। तृषित दूर्वादल में जैसे जान आ गई थी। भगवान इन्द्र ने मानो अगणित नर नारियों के लिए किंचित् शांति प्रदान का ध्यान रख कर फुहार छोड़ दी थी। कृत्रिम साधनों द्वारा पानी छिड़क कर सड़क तथा घास के लानों को सींचने की आवश्यकता नहीं रह गई थी।

शायद यह कहना ठीक होगा। प्रकृति ने किवा अव्यक्त शक्ति ने अपनी ओर से शवयात्रा का प्रबंध करना आरम्भ कर दिया था। सूर्य की गरमी कल की अपेक्षा २ डिग्री कम हो गई थी। मेघ जल बरसा गया था। अपन झकोरे के साथ समस्त कूड़ा-करकट उड़ा ले गया था। उसने दूर्वादलों तिनकों और बादलों को जैसे झकझोर कर जगा दिया था। यह संदेश देते हुए—'कल महापुरुष आने वाले हैं। उनका स्वागत करना। सचेत रहना। तुम्हारी शाखाएँ मनुष्य भार से टूट न जायें। और दूर्वादल तुम प्यासे थे। तुम्हें जल मिल गया। इस महान् पवित्र तीर्थयात्रा के निमित्त आने वालों की अश्रुसिक्त आंखों और वेदना व्यथित हृदय को कम से कम तुम कुछ तो शीतलता प्रदान करना।

द्वारमंडप के दक्षिण पार्श्व में सुनिश्चित योजना के अनुसार शव-यात्रा के जलूस का गठन कर लिया गया था। फायरिंग दल द्वारमंडप की ओर मुख कर सावधान खड़ा था। अग्रगामी अनुरक्षक दल जिसमें बैण्ड तथा बिगुल बजाने वाले भी थे तीन मूर्ति स्थित मुख्य तोरणद्वार की ओर मुख कर खड़े हो गए थे। अर्थी की गाड़ी के पृष्ठ भाग में चलने वाला सैनिक दल मुख्य तोरणद्वार से लेकर द्वारमंडप के दक्षिण प्रवेश मार्ग तक सन्नद्ध होकर खड़ा हो गया था।

अर्थी को द्वारमंडप से तोरणद्वार तक आने में १० मिनट लगे।

पण्डितजी की अर्थी के द्वारमंडप में आते ही कालम कमाण्डर मेजर जनरल श्री भगवती सिंह ने आदेश दिया—'प्रेजेण्ट आर्म्स' साथ ही पुनः आदेश दिया—'रिवर्स आर्म्स'। उनके आदेश के साथ बन्दूक की नली का सामने करते हुए धीरे-धीरे अर्द्ध चक्राकार घुमाकर सैनिकों ने हथियार उल्टे पकड़ लिये दोनों हथेलियाँ एक के ऊपर एक बन्दूक के उल्टे कुन्दे पर रख कर व नत-मस्तक खड़े हो गए। अर्थी शव-वाहक तोप गाड़ी पर रख दी गई। पुनः आदेश मिला। सैनिकों ने शस्त्र कंधा पर रख लिये। फायरिंग दल अपने निर्दिष्ट स्थान पर जाकर खड़ा हो गया।

शवयात्रा के प्रयाण का क्रम यह रखा गया था।

(१) समाचारपत्रों के संवाददाताओं की गाड़ियाँ।

(२) रामधुन तथा भजन गायकों की गाड़ी।

(३) कासम कमाण्डर राजस्थान क्षेत्र के मेजर जनरल श्री भगवतीसिंह खुली जीप पर।

(४) अग्रगामी अनुरक्षक दल जिसमें स्थल जल तथा नभ सेना की दो-दो पल्टनें थी। प्रत्येक पल्टन में ३० सैनिक थे। स्थलसेना में आठवीं डोंगरा रेजिमेंट के सैनिक थे।

(५) फायरिंग दल—१ नान कमिशंड अफसर, ८ डोगरा रेजिमेंट तथा १२ अन्य रैंक के सैनिक।

(६) बैण्ड।

(७) नभसेना की पल्टनें प्रत्येक में ३० सैनिक थे।

(८) बिगुल बजाने वाले २४।

(९) अर्थी उठाने वाले ७।

स्थलसेना (१) मेजर जनरल डी० बी० चोपड़ा (२) मेजर जनरल एस० पी० वोहरा (३) मेजर जनरल एम० एन० बत्रा।

नौसेना (४) कैप्टन के० के० सजन, (५) कैप्टन बी० एन० कमठ।

नभसेना (६) एयर कमोडोर एन० सी० विवान (७) एयर कमोडोर एच० मुलगावकर।

(१०) मुख्य पाल-बीयरर ३—

(१) जनरल जे० एन० चौधरी, (२) वाइस एडमिरल बी० एस० सोमन, (३) एयर मार्शल ए० एम० इंजीनियर।

(११) अर्थी को ६० स्थल, नौ तथा नभ सेना के सैनिक खींच रहे थे।

(१२) पाल-बीयरर ६—

स्थलसेना (१) लेफ्टिनेण्ट जनरल ए० सी० इयप्पा (२) लेफ्टिनेण्ट जनरल एम० एस० पठानिया।

नौसेना (३) रीयर एडमिरल पी० एन० से ले, (४) कमोडोर एस० एन० कोहली।

नभसेना (५) एयर वाइस मार्शल एस० एन० गोपाल, (६) एयर वाइस मार्शल वी० वी० मसले।

(१३) राष्ट्रपति के अंगरक्षक।

(१४) मुख्य शोक प्रदर्शक।

(१५) स्थलसेना की दो पल्टनें प्रत्येक में ३० सैनिक।

(१६) बैण्ड।

(१७) नौसेना की २ तथा नभसेना की २ पल्टनें प्रत्येक में ३० सैनिक।

(१८) विशिष्ट शोक-प्रदर्शक अपने पद-गौरव किंवा वरीयता के क्रम से।

(१९) विशिष्ट शोक-प्रदर्शक वर्दी में।

(२०) शोक-प्रदर्शक बिना वर्दी।

कालम कमाण्डर ने आदेश दिया—'स्लो मार्च'। शस्त्र उल्टे किये सैनिकगण सैनिक प्रथा के अनुसार मंद गति से बैण्ड की शोक-धुन पर पग उठाते चलने लगे। उनकी गति का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि द्वारमण्डप से तोरणद्वार तक पहुँचने में १० मिनट लग गये। तीन मूर्ति के पास पहुँचते ही कालम कमाण्डर ने आदेश दिया—'क्विक-टाइम' अर्थात् शोक-सूचक अति मन्द गति के स्थान पर एक मिनट में ६० कदम की गति से सैनिकों के पाँव उठने लगे।

शोक-प्रदर्शकों का क्रम

शोक-प्रदर्शन करने वालों का क्रम इस प्रकार रखा गया था

(१) खुली मोटर पर श्रीमती इन्दिरा गांधी तथा दाह-संस्कार करने वाले पण्डितजी के नाती तथा इन्दिरा गांधी के कनिष्ठ पुत्र

समय। तत्पश्चात् श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित तथा श्रीमती कृष्णा हठीसिंह आदि।

(२) राष्ट्रपति।

(३) उपराष्ट्रपति।

(४) प्रधानमंत्री।

(५) ब्रिटेन के प्रधानमंत्री श्री डगलस होम (२) लार्ड माउंट बेटन (ब्रिटेन की रानी के प्रतिनिधि) (३) श्रीमती भंडारनायक (श्रीलंका) (४) श्री कोसिगिन (तत्कालीन रूस के उपप्रधानमंत्री इस समय प्रधान मंत्री) (५) श्री पीटर स्टाम्बोलिक (यूगोस्लाविया), (६) श्री तुलसी गिरि (नेपाल) (७) श्री भुट्टो (पाकिस्तान) (८) गृहमंत्री (ईरान)।

(६) नेहरूजी के कुटुम्ब के निकट सम्बन्धी।

(७) केन्द्रीय मंत्रिमंडल के सदस्यगण।

(८) दूतावास के अधिकारी उनका क्रम वारंट के आर्टिकल १० के वरीयता के अनुसार रखा गया था।

(९) सैनिक वेष में दिल्ली स्थित अधिकारी।

(१०) सादे वेष में शोक-प्रदर्शक।

(११) सभी सिविल अधिकारी आर्टिकल ३० के अनुसार वरीयता के क्रम से।

(१२) तत्पश्चात् कार पास लगी मोटरों की लम्बी पंक्ति थी।

लगभग ५ मिनट अर्थी की गाड़ी को प्रधानमंत्री-भवन के फाटक से बाहर निकलने में लग गये। आगे जाता जलूस रुक गया। आतुर दर्शनार्थी चारों ओर से टूट पड़े। एक वृक्ष की शाखा पर लोग बैठे थे। दर्शन की आकांक्षा में शाखा पर बैठे लोग उचकने लगे। शाखा टूट गई। बीस व्यक्ति घायल हो गये। सात घायल व्यक्ति विलिंगडन अस्पताल पहुँचाये गए।

धारावत् लाल गुलाब की पंखुड़ियाँ शव पर बरसने लगीं। अर्थी गुलाब के फूलों से आच्छादित हो गई। तीन मूर्ति के समीप से राष्ट्रपति भवन तक की सीधी साउथ एवेन्यू वाली सड़क पर खड़े लोगों की

आँखें पण्डितजी के गुलाब से कोमल उज्ज्वल शान्त मुखमंडल पर पड़ीं। अर्थी की गाड़ी इतनी ऊँची थी कि सब कोई उनके मुखारविन्द की झाँकी ले सकते थे।

लोगों ने देखा उस पार्थिव शरीर को जिस देखने के लिए जीवन-काल में लालायित रहते थे। और जीवन-हीन काल में प्रचंड गरमी के प्रकोप में मध्याह्न सूर्य की चुभती प्रखर किरणों के नीचे वे ६ या ७ घण्टों से निर्विकार रूप से खड़े थे। अपने पार्थिव शरीर को अन्न-जल बिना सुखाते सहर्ष ताड़ना देते हुए।

और दूसरी ओर नेहरू-युग के अन्तिम अध्याय को सर्वदा के लिए बन्द करता प्रधानमंत्री-भवन का विशाल लौह तोरणद्वार एक हलकी आवाज के साथ बन्द हो गया। जैसे खिसकता जो गया वह अब इस रूप में नहीं लौटेगा।

वेदनामय वातावरण

जनता के कंठ से ध्वनि उठी। उसमें वेदना थी। आँखों से नीर बह चला। उसमें गंगा-यमुना थी। मस्तक झुक गये। उनमें सम्मान था। अंजलिबद्ध कर-पल्लव मिल गये। उनमें श्रद्धा थी। नारियों के अचल नेत्रों से लग गये। उनमें बिछोह की पीड़ा थी। वृद्धों के शांत लोचन अर्थी की ओर उठ गये। उनमें प्रश्न था। नारियों ने कोख में शिशुओं को हृदय से लगाकर दबका लिया। उनमें बाहर वेदना फूट कर न निकलने की भावना थी। युवक स्तम्भित देखते थे। फिर उनका हाथ अकस्मात् उठता था। कंठ से ध्वनि निकलती थी। 'नेहरू अमर हो।' बच्चे अनायास रोते चिल्ला उठते थे— चाचा नेहरू।

अर्थी एक-एक इंच कर अग्रसर होने लगी। पीछे छूटते लोग समझते थे। उन्होंने कुछ खो दिया। अर्थी पास आती देखकर आगे वाले लोग समझते थे। उन्होंने कुछ पा लिया। अर्थी कभी-कभी भीड़ के कारण रुक-रुक जाती थी। फिर आगे बढ़ती थी। तोपगाड़ी एक सुरभित पुष्पाच्छादित रथ-तुल्य प्रतीत होती थी।

साउथ एवेन्यू की सीधी सुन्दर सड़क के दोनों तरफ राष्ट्रपति-भवन तथा प्रधानमंत्री-भवनों के मध्य संसद सदस्यों के फ्लैट बने हैं। इस सड़क से पण्डितजी प्रतिदिन कम-से-कम चार बार आते-जाते थे। कितने ही दर्शनार्थी उनके दर्शनार्थ वहाँ खड़े हो जाते थे। अपनी छोटी कार पर पण्डितजी सबका अभिवादन लेते दोनों करबद्ध हाथों को उठाते थे। नमस्कार का उत्तर देते जाते थे। आज वे अपनी कार पर इस तरफ नहीं आ रहे थे। वे थे आज शववाहक गाड़ी पर। उनके कर-पल्लव बंधे थे। उठ नहीं सकते थे। वे आगे झुककर अपनी मुस्कान के साथ हाथ बढ़ाकर उत्तर नहीं दे सकते थे। उनकी काया सोई थी। उठने में असमर्थ। बँधी थी अर्थी पर। और मृत्यु की सन्देश-वाहक तोप की जड़ काया पर मृत्यु द्वारा अपहृतप्राण जनता के हृदय-सम्राट् जवाहर ने सवारी की थी। वे आज किसी ओर जाने के लिए मुक्त नहीं थे।

मार्ग समाप्त करते अर्थी की गति में कुछ तीव्रता आ गई। लगभग २ बजकर ५ मिनट पर शव-वाहक गाड़ी किंग जार्ज एवेन्यू पार कर विजय चौक में पहुँची। प्रधानमंत्री-भवन से विजय चौक तक का मध्यवर्ती लगभग एक मील का मार्ग ४५ मिनटों में पार किया जा सका।

विजय चौक

साउथ ब्लाक की खिड़कियों, बरामदों छतों तथा मार्ग में पड़ने वाली सभी इमारतों में मानव ऊपर से नीचे तक लदे थे। महामानव की विदाई के लिए मानव ने अपने शरीर से पथों के पार्श्वों वृक्षों की अवलियों, लैम्प के खम्भों फव्वारों तथा भवनों को सजाया था। जहाँ भी कहीं थोड़ा स्थान सहारे के लिए मिला मनुष्य अपने जीवन का मोह त्याग कर, उसी का आश्रय ले लेता था। उस समय विजय चौक तथा समीपवर्ती स्थानों एवं भवनों पर लगभग ५ लाख व्यक्ति रहे होंगे। विजय चौक में २० या २५ व्यक्ति गरमी के कारण मूर्छित होकर गिर पड़े थे।

विजय चौक के समीप लोग ६०-६० की पंक्तियों में ठोस दीवार

की तरह खड़े थे। उस विजय चौक में जहाँ प्रतिवर्ष बैठकर पण्डितजी 'समापन-समारोह' देखा करते थे। जिसके पृष्ठ-भाग में केन्द्रीय सचिवालय था और राष्ट्रपति भवन था। जिसके वाम पार्श्व में संसद-भवन था। जहाँ तक दृष्टि जाती थी लोग भरे पड़े थे।

विजय चौक केन्द्रीय सचिवालय तथा राष्ट्रपति भवन पर अर्ध नत राष्ट्रीय झंडा फहरा रहा था। संसद भवन का अर्ध झुका झण्डा अपने उस नेता को श्रद्धांजलि दे रहा था। जहाँ उसके पिता की वाणी गूँजी थी। जहाँ वह संविधान सभा तथा संसद में अपनी विवेकपूर्ण मधुर वाणी द्वारा ऐतिहासिक भाषणों तथा प्रश्नोत्तरों से विश्व-इतिहास के न जाने कितने अध्यायों को खोलने एवं बन्द करने के साथ-ही-साथ इतिहास के पृष्ठों पर कितने विराम तथा अर्ध-विराम चिह्न खींचा करता था।

अर्थी ने प्रवेश किया राजपथ पर। उस पथ पर जहाँ प्रति वर्ष गण-राज्य दिवस का महान् समारोह होता था। जहाँ असंख्य नर-नारी पण्डितजी को देखते ही जय-जयकार करते थे। बच्चे उन पर पुष्प फेंकते थे। खुशी से नाच उठते थे। स्नेह-विह्वल नारियाँ मुस्कराकर उनका स्वागत करती थीं। जहाँ वे भारत को स्मरण कराते थे भारतीय पौरुष, शक्ति तथा सांस्कृतिक झाँकियाँ। उन्हें देखकर जन-समूह हर्षोन्मत्त हो जाता था। शुष्क धमनियों में नवजीवन संचारित होता था। वहीं आज वे स्वयं आ रहे थे—एक झाँकी बनकर।

राजपथ पर

जिस राजपथ पर भारतीय सैनिक सुभाषमी वीर रसपूर्ण बैण्ड की धुन पर, उत्साहपूर्वक, उमंग से पग उठाते बढ़ते, भारतीय नागरिकों की करतल-ध्वनि के साथ मार्च करते थे, आज उसी के दोनों तरफ मराठा रेजिमेण्ट के सैनिक शोक-मुद्रा में खड़े थे। उनके समीप अर्थी आती। वे शस्त्र उल्टे कर लेते थे। उनकी आँखों से सवित अश्रु बिन्दु, उनकी हथेली पर गिरते। जैसे अपने प्रिय का तर्पण निर्मम अश्रु

जम से करते।

गणराज्य-दिवस की परेड के दिन विशाल भीमकाय गगनचुम्बी तोपें आगे-आगे चलती थीं। उन पर सैनिक गर्व करता था। उनके पहियों की आवाज कायर हृदय को कँपा देती थी। युवक-हृदय को उमंगित करती थी। आज उनके स्थान पर ट्रक पर बैठा गायक-समूह 'रघुपति राघव राजाराम' की धुन गाता चला जा रहा था।

गणराज्य-दिवस पर जितनी भीड़ राजपथ पर होती थी उससे चौगुनी भीड़ एकत्रित थी। प्रतीत होता था। भीड़ का रेला टूटकर शवयात्रा का समस्त सुनियोजित कार्यक्रम छिन्न-भिन्न कर देगा। तथापि सैनिक तथा पुलिस दल भीड़ को यथास्थान स्थित रखने में समर्थ हो सका।

राजपथ के दोनों पार्श्वों में जनता २० से १०० की पंक्ति में खड़ी थी। राजपथ-स्थित वृक्षों पर फलों की तरह मनुष्य लद गये थे। इतने अधिक लोग एकत्रित हो गये थे कि सम्राट पंचम जार्ज की मूर्ति वाले गोलाकार लान की एक इंच भूमि खाली दिखाई नहीं देती थी। मालूम होता था। मैदान में दूर्वादल के स्थान पर आज मानव-समूह उग आया है।

इण्डिया गेट के समीप अर्थी पहुँची। कोलाहल हुआ। रोने की आवाज आने लगी। लोग बिलखने लगे। सड़क किंग जार्ज के मण्डप के खम्भों पर पण्डितजी की पूर्ण झलक लेने के लिए चढ़ गये। रेले में २ व्यक्ति बुरी तरह घायल हो गये। सफदरजंग अस्पताल पहुंचाये गए। अर्थी का जुलूस समाप्त होते ही भीड़ पीछे लग जाती थी।

इण्डिया गेट से अर्थी का जुलूस तिलक मार्ग से अग्रसर हुआ। इण्डिया गेट से तिलक पुल तक की भीड़ का रुख कुछ और था। तिलक मार्ग की पटरी तथा आधी सड़क भीड़ से भर गई थी। सहस्रों व्यक्ति बंगलों के अलिन्दों, कबूतरों छतों और चहारदीवारी पर खड़े अथवा बैठे थे। कुछ लोग मार्ग तथा बंगलों के वृक्षों की शाखाओं पर चढ़ गये थे।

वे शाखा पकड़े थे। मालूम होता था कि वृक्षों ने मानव-फल देना आरम्भ कर दिया है। इस मार्ग पर अपेक्षाकृत बालक अधिक थे। उन्होंने 'चाचा नेहरू' का सूय नारा लगाया।

अनेक विदेशी पर्यटक दो-दो चार-चार के समूहों में अपने फोटो कैमरे के साथ खड़े थे। वे इस अभूतपूर्व दृश्य को स्तब्ध होकर देख रहे थे कि भारतीय जनता किस प्रकार अपने प्रिय नेता को श्रद्धांजलि अर्पित कर रही थी।

उच्चतम न्यायालय का भवन तथा उसका मैदान मनुष्यों से भर गया था। सम्मुख वाले दोनों बस-स्टापों की छतों पर लोग चढ़ गये थे। परन्तु उनका भार वहन करने में असमर्थ छत अर्थी आने के पूर्व स्वयं धराशायी हो गई थी।

लोकमान्य तिलक की भव्य प्रतिमा के सम्मुख सड़क के ऊपर रेल का पुल था। इसे पहले हार्डिंग ब्रिज कहते थे। अब तिलक ब्रिज कहते हैं। सड़कें पुरानी तथा नवीन दिल्ली को मिलाती हुई मथुरा रोड, इण्डिया गेट तथा मण्डी हाउस की तरफ जाती थीं। यहाँ अपार भीड़ थी। मैं देखकर चकित हो गया। पुल के तोरण तक में आदमी पक्षियों की तरह बैठे थे।

एक शटल पसेंजर गाड़ी आ रही थी। पुल पर पहुँची। अर्थी आती देखकर यात्रियों ने जंजीर खींच ली। गाड़ी खड़ी हो गई। डिब्बों से निकलकर हजारों यात्री डिब्बों की छत पर चढ़ गये। अर्थी ज्योंही पुल के पास पहुँची ऊपर खड़े सहस्रों नर-नारियों के करपल्लवों द्वारा श्रद्धांजलि स्वरूप लाल गुलाब की पखुड़ियों की धारवत् वृष्टि शव पर होने लगी।

बिहार तथा आगरा रेजिमेंट के सैनिक तिलक मार्ग से लेकर शान्ति-वन तक खड़े थे। सड़कों पर पंक्तिबद्ध शोक प्रदर्शनार्थ खड़े सैनिकों की संख्या १० सहस्र थी। प्रत्येक सैनिक टुकड़ी के सम्मुख जिस समय अर्थी आती थी उनका अधिकारी आदेश देता था। सैनिक उल्टे शस्त्र करते हुए सैनिक अभिवादन करते थे। अर्थी गुजर जाने पर पुनः

शस्त्र सीधे कर लेते थे।

यहाँ विचित्र स्थिति हुई। पीछे से रेला आया। भीड़ सड़क पर पीछे से आगे बढ़ आई। लगभग १२ व्यक्ति बेहोश हो गये। सेंट जान एम्बुलेन्स के सेवकों न उनका प्राथमिक उपचार किया। तिलक पुल के पश्चात् सैनिक नियंत्रण एक प्रकार से टूट गया। जनता जलूस में शामिल हो गई। जनता जलूस का मुख्य अंग बन गई।

अब अर्थी की यात्रा इन्द्रप्रस्थ मार्ग से हुई। इन्द्रप्रस्थ मार्ग जहाँ से आरम्भ होता था वहाँ वाम पार्श्व में एक पुरानी 'अब्दुल नबी' की ध्वस्त मसजिद थी। (अब इसका जीर्णोद्धार हो गया है और यह रक्षित इमारत घोषित कर दी गई है) उस पर जनता ऊपर से नीचे तक बैठी थी। पुरानी दिल्ली के निवासी तिलक पुल से शान्ति-वन तक के मार्ग पर श्रद्धांजलि अर्पित करने तथा शवयात्रा देखने आये थे।

इन्द्रप्रस्थ मार्ग से शान्ति-वन तक का मार्ग पुरानी दिल्ली की पूर्वी सीमा पर है। सुगमता से जनता यहाँ पहुँच सकती थी। यहाँ मदान भी इतना था कि आराम से लोग कहीं भी खड़े होकर शवयात्रा की पूरी झाँकी ले सकते थे।

मार्ग के दोनों ओर काफी खुले मैदान तथा खेत और बबूल के कँटीले जंगल हैं। सुगमतापूर्वक दिल्ली की पूरी आबादी उसमें समा सकती थी। वहाँ दबने घायल होने अथवा मूर्छित होने का प्रश्न ही नहीं था। पीछे इतना मदान था कि भीड़ से निकलकर लोग खुले मैदान में आ सकते थे। किसी भी स्थान से पण्डितजी की काया का दर्शन किया जा सकता था। प्रश्न केवल समीप और दूर से देखने का था।

जंगल से चमन

पन्द्रह वर्ष पूर्व जब मैं दिल्ली में संसत्सदस्य होकर आया तो यहाँ बबूल का जंगल था। कोई उस तरफ जाता नहीं था। कुछ झोंपड़ियाँ मात्र पड़ी थीं। इस स्थान को चमन बनाने की परिकल्पना पण्डितजी के मन में आई थी। दिल्ली के नूतन स्थापत्य कल्पनाकार पण्डितजी

की कल्पना का मूर्त रूप भवन सामने खड़ा था। इन्द्रप्रस्थ मार्ग पण्डितजी के कारण आधुनिकतम नव-निर्मित भवनों का दर्शनीय स्थान बन गया था। इन्द्रप्रस्थ मार्ग तथा इन्द्रप्रस्थ एस्टेट निर्माण करने की पण्डितजी की कल्पना साकार हो गई थी। उस साकार कल्पना ने मनुष्यों को अपने अंक में लेकर कल्पनाकार के शव-दर्शन का सुयोग उपस्थित किया था।

इन्द्रप्रस्थ मार्ग के पश्चात् रिंग रोड की इमारतों पर जनता-ही-जनता खड़ी या बैठी दिखाई देती थी। जो लोग दर्शन कर चुके थे वे भी और दर्शन की अभिलाषा से पीछे के मैदानों से दौड़ते आगे जाकर खड़े हो जाते थे। दर्शनाभिलाषी दौड़ते थे। कूदते जाते थे।

इन्द्रप्रस्थ मार्ग तथा रिंग रोड होता हुआ जलूस राजघाट की ओर मुड़ा। बिजली सप्लाई कम्पनी के समीप वाले मैदान में चारों ओर से लोग राजघाट की ओर भागते हुए दिखाई दे रहे थे। समूहों में आदमी दौड़ रहे थे। भीड़ के कारण जलूस का पृष्ठ-भाग मुख्य भाग से टूट गया था। जलूस के मध्य में भीड़ घुस आई थी।

अर्थी के पीछे केवल मानव-समुद्र दृष्टिगोचर हो रहा था। अर्थी के पीछे पंक्तिबद्ध चलने वाली कारों की शृंखला टूट गई थी। दूसरे मार्गों से गाड़ियाँ दाह-स्थान पर पहुँचने लगीं।

लगभग ३ बजकर ३० मिनट पर अर्थी गांधीजी की समाधि के सम्मुख पहुँची। समाधि के मुख्यद्वार से ७५ गज की दूरी पर शव-वाहक गाड़ी खड़ी हो गई। गांधीजी का शव यहाँ आने के १६ वर्ष पश्चात् महात्माजी के शव के साथ आने वाले स्वयं पण्डित जवाहरलाल नेहरू का शव आज उपस्थित हुआ था।

अर्थी इस स्थान पर पहुँचते ही नर-नारियों ने संयुक्त रूप से भक्तिपूर्वक गाया—'सीताराम-सीताराम भज मन प्यारे सीताराम।' यहाँ से अर्थी आगे बढ़ी। भजन गाने वालों के कई समूह रामधुन गाते शान्ति-वन की ओर पैदल चलने लगे। यहाँ भीड़ इतनी अव्यवस्थित हो गई कि ५२ व्यक्ति घायल हो गये।

जलूस का क्रम बिगड़ गया। विशिष्ट व्यक्तियों की मोटरें मार्ग मे रह गईं। मोटरें पंक्ति म न चलकर इक्की-दुक्की चलने लगीं। ब्रिटिश प्रधानमन्त्री की कार मुख्य जलूस-पंक्ति से पीछे छूट गई। लार्ड माउण्ट बेटन तथा लेडी पामिला छिक्स कार त्यागकर पदल चलने लगे। कार का आगे बढ़ना असम्भव हो गया था। अनन्तर राष्ट्रपति भवन की कार उन्हें लेकर आगे चली।

राष्ट्रपति की कार भी भीड़ से घिर गई। उसका आगे बढ़ना कठिन हो गया। राष्ट्रपति के अंगरक्षक माग देने के लिए अनुनय करने लगे। पुलिस ने बड़ी कठिनता से भीड़ से उन्हें निकाला। तत्पश्चात् वे पुन जलूस क क्रम में सम्मिलित हो गये।

दिल्ली की शहर पनाह की पुरानी दीवार दिखाई पड रही थी। उस पर भी लाग बैठे थे। इस शहर पनाह की दीवार को गिराने की एक योजना बनाई गई थी। पण्डितजी ने इसे सुरक्षित रखने का आदेश दिया था। आज उन्ही क शव-दर्शनार्थियों के आश्रय का स्थान बनकर वह दीवार अपने को कृतकृत्य समझ रही थी।

छः मील लम्बा मार्ग समाप्त कर, लगभग २० लाख नर-नारियों के दर्शन कराती अर्थी शान्ति-वन की ओर अग्रसर हुई। दिल्ली ने इतनी अधिक भीड का प्रथम बार अनुभव १५ अगस्त सन् १९४७ को किया था। द्वितीय बार ३१ जनवरी सन् १९४८ को महात्माजी की शव यात्रा क समय किया था। उससे भी अधिक भीड का अनुभव दिल्ली ने तीसरी बार पण्डितजी की शव-यात्रा के समय किया।

आज की भीड़ तथा अन्य समयों की भीड़ों में अन्तर था। उक्त दोनो अवसरों पर दिल्ली की जनसख्या आठ लाख से अधिक नहीं थी। अगस्त में वर्षा-ऋतु का समय होता है और जनवरी में ठड पडती है। उन दिनों खुल आकाश के नीचे ठहरा रहा जा सकता है। परन्तु आज भयंकर गरमी पड़ रही थी। दिल्ली की आबादी २८ लाख तक पहुँच चुकी है। अतएव भीड़ की तादाद अधिक होना आश्चर्य की बात नहीं कही जा सकती। किन्तु वह भयकर गर्मी में इतनी देर तक खड़ी रही

यह आश्चर्य से खाली नहीं है।

इस बार भीड़ में ४० वर्ष की आयु से ऊपर के व्यक्ति अपेक्षाकृत कम थे। उनकी संख्या २० प्रतिशत से अधिक नहीं रही होगी। महिलाओं तथा शिशुओं की संख्या अनुपाततः उक्त दोनों अवसरों की अपेक्षा कम थी। उसका एकमात्र कारण भयंकर गरमी का होना कहा जा सकता है। कोमलांगी महिलाएँ तथा कोमल शिशु गरमी सहने के आदी नहीं होते। उनके लिए सूर्य की प्रखर किरणों के नीचे आठ-दस घंटे बिना जल के खड़े रहना एक प्रकार से असम्भव था। तथापि जो सह सकती थी वे महिलाएँ अन्त तक अपने स्थानों पर खड़ी रहीं। यही हाल बच्चों का था। राजपथ पर अन्य स्थानों की अपेक्षा शिशुओं तथा महिलाओं की संख्या अधिक थी।

तीन मूर्ति से राजघाट तक लाखों मनुष्यों के लिए जल की कोई व्यवस्था नहीं थी। सब स्थानों पर पानी की पुकार थी। दिल्ली नगर-निगम तथा कुछ सार्वजनिक संस्थाओं ने कतिपय स्थानों पर प्याऊ की व्यवस्था की थी। वह जलते तवे पर पानी की बून्द के समान थी। सबका गला सूख रहा था। कंठ से साफ आवाज नहीं निकलती थी। तथापि पण्डितजी के अंतिम दर्शन के लिए जनता इतनी उत्सुक थी कि अपने प्राणों की बाजी लगाकर भी मुश्किल से प्राप्त स्थानों को त्यागना नहीं चाहती थी।

दिल्ली के इस जन-समूह में लगभग ५ लाख व्यक्ति ऐसे रहे होंगे जिन्होंने बुलगानिन ख्रुश्चेव रानी एलिजाबेथ तथा राष्ट्रपति आइजनहावर के स्वागत-समारोहों को देखा होगा। उनमें पण्डितजी के प्रसन्न मुख का दर्शन किया होगा। इसमें ५ लाख जनता वह भी रही होगी जिसने राजपथ पर प्रतिवर्ष होने वाले गणराज्य-दिवस के अवसर पर उनका अभिनन्दन उस समय किया होगा जब वे परेड आरम्भ होने के ५ मिनट पूर्व राष्ट्रपति के आसन के सम्मुख सड़क पर खुली कार से गुजरते हुए सब लोगों के जय-जयकार के बीच आदर प्राप्त करते हुए राष्ट्रपति के अभ्यर्थनार्थ खड़े हो जाया करते थे।

जल उठी चिता



अर्थी शान्ति-वन से दो फर्लांग दूर रह गई थी। सैनिक प्रथा तथा क्रम के अनुसार जलूस का पुनर्गठन किया गया। सैनिक बैण्ड पर बजते शोक गीत की लय पर उल्टे शस्त्र लिये सैनिक मन्द गति से अग्रसर होने लगे। हेलिकाप्टर से लाल गुलाब की पंखुड़ियों की आकाश से बार-बार वृष्टि होने लगी।

घाट के पास पहुंचते ही अग्रगामी सैनिक टुकड़ियां घाट के अन्दर अग्रसर होती गई। उनके पीछे बैंड शोक धुन बजाता चला गया। वे दाएं तथा बाएं एक पंक्ति में दोनों तरफ खड़े हो गए। अर्थी-वाहक तोप-गाड़ी, शान्ति-वन के प्रवेशद्वार पर ठीक ४ बजकर ५ मिनट पर आकर खड़ी हो गई। पाल-बीयरर शव उठाने के लिए गाड़ी के सम्मुख पंक्ति-बद्ध खड़े हो गए। माला उठाकर लाने वालों का दल फायरिंग दल मुख्य शोक प्रदर्शनकर्ता विशिष्ट शोक प्रदर्शनकर्ता, वर्दीधारी शोक-प्रदर्शनकर्ता तथा गैर-वर्दीधारी शोक प्रदर्शनकर्ता क्रम से प्रविष्ट हुए। वे अपने निश्चित स्थानों पर जाकर बैठे तथा खड़े होते गए। पृष्ठ-भागीय अनुरक्षक दल ने प्रवेश नहीं किया। वह शव उतारने तक वहीं खड़ा रहा। शव गाड़ी से उतर जाने के पश्चात् उन लोगों ने अपनी पंक्ति भंग कर दी।

मुख्य पुरोहित प्रवेशद्वार से १५ कदम के अन्तर पर गाड़ी के

सम्मुख आकर खड़े हो गए। घाट पर स्थित कमाण्डर ने 'प्रजेण्ट आर्मे' का आदेश दिया। पुनः आदेश दिया—'रेस्ट ओन योर आर्म्स रिवर्स्ड'। उस क्षेत्र में स्थित सभी सैनिक सावधान होकर खड़े हो गए। सैनिक अधिकारियों ने सैनिक अभिवादन किया।

पाल-बीयररों ने पण्डितजी का शव तोपगाड़ी से उतारा। मुख्य पुरोहित आगे चले। उनके पीछे पाल-बीयररों के स्कन्ध प्रदेश पर पण्डितजी का शव चला। तत्पश्चात् मुख्य पाल-बीयरर मुख्य शोक प्रदर्शनकर्त्ता तथा अन्त में मालाएँ उठाने वाले थे।

चिता पर

वह छोटा-सा जलूस प्रवेश-मार्ग से चिता की ओर मन्द गति से बढ़ा। शव को चिता पर ठीक ४ बजकर १२ मिनट पर रखकर सैनिकों ने सैनिक अभिवादन किया। फिर वे वहाँ से हट गए। माला वालों ने शव के पाद भाग की ओर मालाओं को सजाकर रख दिया। उसके पश्चात् वे वहाँ से हटकर निश्चित स्थान पर आकर बैठ गए।

शव चिता पर रखने के पश्चात् पाल-बीयरर मदगति से शव की ओर बढ़े। शव के दोनों पार्श्व में खड़े हो गए। शव को सैनिक अभिवादन किया। अपने दाहिने हाथों से पण्डितजी के शव पर फले राष्ट्रीय झण्डे के छोरों को पकड़ा। संकेत पाते ही उन्होंने झण्डा ऊपर उठाया। वे बाएँ तथा दाएँ एक साथ घूमे। पण्डितजी के पाँवों की ओर देखते हुए—धीरे-धीरे बढ़ते गए। जब तक शरीर पर से झण्डा पूरा नहीं हट गया। झण्डे को तहकर उन्होंने सीनियर पाल-बीयरर को दे दिया। और अपने निश्चित स्थान पर आकर बैठ गये।

शान्ति-वन में विशिष्ट दर्शकों के लिए बड़ा घेरा बनाया गया था। उसके मध्य एक और घेरा साहे के पाइपों से घेरकर चिता के लिए तैयार किया गया था। अर्थी के शान्ति-वन पहुँचने के दो घंटे पूर्व से कितने ही राज्यपाल मुख्यमंत्री मन्त्री राजनीतिक नेता संसद सदस्य गण आदि आकर वहाँ बैठ गये थे।

शान्ति-वन के प्रवेशद्वार पर जनता सयत खडी थी। स्थान लाउड स्पीकरों तथा फोटोग्राफरों के झुण्ड से भरा था। एम्बुलेन्स कारें, जिनकी सख्या ५० थी आकस्मिक दुर्घटनाओं का सामना करने के लिए तयार खडी थीं।

१०० व्यक्ति बेहोश

जल का अभाव खटक रहा था। दिल्ली कारपोरेशन ने शान्ति वन तथा समीपवर्ती स्थानों में ५० नल लगवाये थे। किन्तु जनता को जल नहीं मिल सका। कितने ही नलों पर जलप्राप्ति निमित्त विवाद होने लगा था। दिल्ली कारपोरेशन के जलपूर्ति विभाग के मन्त्री को स्वय एक गिलास पानी नहीं मिल सका था। फिर दूसरों की बात क्या कही जाए। विशिष्ट व्यक्तियों के घेरे मे एक भी नल नहीं लगाया गया था। वहाँ किसी प्रकार भी जल पहुँचाने की व्यवस्था नही थी। अत एव शान्ति-वन के समीपवर्ती स्थानों में १०० से अधिक व्यक्ति बेहोश हो गए। कितने व्यक्तियों को इरविन अस्पताल पहुचाया गया। शान्ति वन के सबसे समीप वही अस्पताल पडता था।

चिता का चबूतरा १६ फुट लम्बा तथा १६ फुट चौडा वर्गाकार बनाया गया था। वह ५ फुट ऊँचा था। दूर से लोग चिता देख सकते थे। दो बुलडोजरों ने रात-दिन काम कर शान्ति-वन का ऊबड़-खाबड़ रेतीला मैदान समतल किया था। इस समय तक वह सुन्दर तथा आकर्षक बन गया था। रातोंरात लोहे के खम्भे गाड़कर उन पर लाउड स्पीकर तथा बिजली की रोशनी लगा दी गई थी।

दस मन चन्दन की लकडी सुगन्धित पदार्थ घी आदि सामग्री एकत्रित कर चिता के चबूतरे पर रख दी गई। शव पर से झण्डा हटा लेने के पश्चात् धार्मिक क्रिया आरम्भ हुई। शव पर पवित्र गंगाजल छिड़का गया। वेदमन्त्रों का उच्चारण चिता के समीप लगे लाउडस्पीकर से पण्डितगण करने लगे। कुछ गण्यमान्य लोग आकर अन्तिम दर्शन करने लगे। श्री मेनन जिस समय चिता पर चन्दन का टुकड़ा रख रहे थे तो

विचलित हो गये। श्री जीवराज मेहता चन्दन की लकड़ी चिता पर रखते समय गिरते गिरते बचे।

दशांग, गुगुल चन्दन का चूरा तथा अन्य सुगन्धित सामग्रिया से दाय भर गया। उज्ज्वल शरीर घी से मिश्रित सामग्रियों के चढ़ाने के कारण भूरा लगने लगा। श्वेत रेशमी चादर चिता पर चढ़ाई गई। गुलाब तथा गेंदे के पुष्पों की पखुड़ियों से समस्त दाव छिप गया।

मन्द-मन्द चलकर श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित तथा इन्दिरा गांधी चिता-स्थल पर आईं। विदेशों से आए आगन्तुक विशिष्ट राजनीतिक नेता पंक्तिबद्ध बैठ गये।

श्रीमती इन्दिरा गांधी तथा विजयलक्ष्मी पण्डित ने घी अर्पित किया, चन्दन का टुकड़ा पण्डितजी के चरणों पर रखा। एक महिला वहाँ बहुत दुखी थी। इन्दिराजी ने उसे सान्त्वना देते हुए उसके हाथ से चन्दन का एक टुकड़ा चिता पर रखवाया।

श्रद्धा की ज्योति

पंजाब के सगरूर जिले के एक सैनिक की प्रौढ़ पत्नी कसर बाई थीं। वह पण्डितजी की मृत्यु का समाचार सुनकर बस में बैठकर दिल्ली अपने गाँव से आई थीं। अपने हाथ से बनाए घी की छोटी कन स्तरी तथा पण्डितजी के साथ उसका लिया गया चित्र उसके पास था। उसे लोगों ने रोकना चाहा। उसने बिलखकर फोटो दिखाते हुए कहा—'पण्डितजी उसके गाँव गये थे। उनके साथ खींची गई यह फोटो है। मैं अपनी गाय का घी लाई हूँ। उसे चढ़ाऊँगी। घाघरा ओढ़नी धारी ग्रामीण महिला के अथक परिश्रम तथा अतीव श्रद्धा को देखकर घी चिता पर चढ़ाने के लिए उसे अनुमति दी गई। इस शोक काल में भी इस अनुमति से उसके मुख पर प्रसन्नता का जो प्रकाश फूट उठा था, वह वर्णनातीत है।

पण्डितजी के अनेक सम्बन्धियों में श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित की पुत्रियाँ, चन्द्रलेखा और नयनतारा, ताऊ श्री वंशीधर नेहरू तथा उनकी

पत्नी राजकुमारी नेहरू दूसरे ताऊ नन्दलाल नेहरू के द्वितीय पुत्र श्री मोहनलाल नेहरू के पुत्र रतनलाल नेहरू तथा उनकी पत्नी श्रीमती राजन नेहरू, भतीजियाँ श्रीमती श्यामकुमारी खान और श्रीमती शिव राजवती नेहरू और उनकी पुत्रियाँ श्रीमती शिवावत्त, श्रीमती पद्मा सेठ चचेरे भाई श्री बृजलाल नेहरू की पत्नी श्रीमती रामेश्वरी नेहरू तथा उनके दो पुत्र, बृजकुमार नेहरू और उसकी पत्नी तथा बलवन्त कुमार नेहरू चचेरी बहन की पुत्री श्रीमती लाडोरानी जुत्सी तथा उनकी पुत्री मनमोहनी सहगल श्रीमती पद्मा सेठ की दोनों पुत्रियाँ, श्रीमती कमला नेहरू के भाई डा० के० एन० कौल तथा बहन श्रीमती पी० एन० काटजू इन्दिरा गांधी के पति स्व० फिरोज गांधी की दो बहनें श्रीमती तहमीना गांधी तथा श्रीमती चन्दनपटेल आदि थे। शेख अब्दुल्ला तथा बख्शी गुलाम मुहम्मद ने पण्डितजी पर पुष्प चढ़ाये। इन्दिराजी के कनिष्ठ पुत्र संजय चिता-स्थल पर आये। उसे देखते ही लोगों की आँखें भर आई। वह संकेत था। इस बात का—पण्डितजी का पार्थिव शरीर कुछ काल पश्चात् ज्वालाओं में धू-धू-धू कर जलने लगेगा।

इन्दिराजी ने संजय के हाथों से चन्दन की लकड़ी पण्डितजी की चिता पर रखवाई। इन्दिराजी ने स्वयं अपने पिता के शरीर पर गंगा जल छिड़का। चन्दन की लकड़ी पिता के चरणों पर रखी। वह चिता के समीप कुछ मिनट तक खड़ी रहीं। संजय के अग्नि देने के किंचित् पूर्व पिता को हाथ जोड़ते हुए भरी आँखों और भरे मन से बोलीं—"पापा!" फिर वे मन्दगति से चिता के चबूतरे से उतर आईं। किन्तु उन्हें सन्तोष था। पिता के दुःख में वे अकेली नहीं थीं। यह दुःख विश्व ने अनुभव किया था। भारत की ४५ करोड़ जनता उनके दुःख की भागी थी।

इस समय भीड़ चिता-स्थान की [ओर टूटी। बड़ी कठिनता से सैनिकों तथा पुलिस के सिपाहियों ने स्थिति पर काबू पाया।

संजय अग्नि लेकर पण्डितजी के मुख की ओर बढ़े। इसी समय

उपराष्ट्रपति ने पण्डितजी का अन्तिम दर्शन किया। श्री लालबहादुर शास्त्री नन्दाजी तथा मुरारजी देसाई अपने नेता को प्रणाम कर, चबूतरे से उतर आये।

संजय ने अग्नि हाथ में लेकर चिता की तीन बार परिक्रमा की। यह संकेत था ऋग्वेद के शब्दों में— अपेत वीत वि च सर्प तात— 'कृपया जाइये, अब लौटिये यहाँ से।

चिता में अग्निप्रवेश

श्री संजय ने ठीक ४ बजकर ३७ मिनट पर पण्डितजी के पवित्र मुख के पास अग्नि-शिखा लगाई। फायरिंग दल ने बन्दूक का कुन्दा अपने दाहिने कन्धे पर रखकर दिवंगत के अन्तिम सम्मान में तीन बार फायरिंग किया।

इन्दिराजी चबूतरे से नीचे उतर आई थीं। वह भूमि पर बैठ गईं। अग्नि लगते ही वे दोनों हाथों से अपना मुख तोपकर रोने लगीं। आत्मजा कन्या के नेत्रों से निकलते उज्ज्वल जल-बिन्दुओं का स्नेह-तर्पण क्या पण्डितजी ने स्वीकार नहीं किया होगा?

उपस्थित १० लाख भारतीय जनता ने एक स्वर से जयनाद किया—नेहरू जिन्दाबाद 'जवाहरलाल अमर हों' और युवक हृदयों ने नारा लगाया—'चाचा नेहरू जिन्दाबाद'। महिलाएँ तथा पुरुष मिलकर रामधुन गाने लगे। चौबीस बिगुलरों ने 'लास्ट पोस्ट' बजाया। अनन्तर उन्होंने 'राउज' बजाया।

वहाँ उपस्थित सभी राजपुरुष सैनिक अधिकारी सावधान मुद्रा में खड़े हो गये। सैनिकों ने अपने दिवंगत नेता को अन्तिम सैनिक अभिवादन किया। सभी उपस्थित लोग नतमस्तक करबद्ध खड़े हो गये। केवल चिता की चिनगारियों की चटक और बिगुल की गत सुनाई पड़ रही थी।

फायरिंग दल ने सशस्त्र सैनिक अभिवादन किया। सैनिक अधिकारी सैल्यूट की मुद्रा में और साधारण सैनिक तथा सिपाही सावधान

नीरव खड़े हो गये।

अग्निज्वालाएं पार्थिव शरीर का आलिंगन करते ही एक मिनट के अन्दर नभ-मण्डल को धूम्र से भरती आत्मसात् करने लगीं।

चिता के चबूतरे से थोड़ा हटकर विशिष्ट महानुभावों के लिए घेरा बनाया गया था। उसमें राष्ट्रपति, ब्रिटिश प्रधानमन्त्री श्री डगलस होम, लार्ड माउण्ट बेटन, श्रीमती पामिला हिक्स, श्री डीन रस्क, श्री कोसिगिन, श्री भुट्टो, महाराज तथा रानी सिक्किम, श्रीलंका की प्रधान मन्त्री श्रीमती भण्डारनायक, श्री तुलसीगिरि, ईरान के गृहमन्त्री, फ्रांस के प्रतिनिधि आदि बैठे थे।

श्री डीन रस्क, श्री चौहान तथा श्री चेस्टर बाउल्स के साथ थे। वे हेलीकाप्टर से वहाँ पहुँचे थे। फ्रांस के मन्त्री प्रतिनिधि भी हेलीकाप्टर से पहुँचे थे। श्री डीन रस्क पर धूप से बचने के लिए छाता ताना जाने लगा। उन्होंने छाता लगाने से इन्कार कर दिया। धूप में खड़े और बैठे रहना उन्होंने श्रेयस्कर समझा।

अग्नि-ज्वालाओं में दाब छिपने लगा। लार्ड माउण्ट बेटन बहुत देर तक सिसकियाँ लेते बैठे रहे। बलगेरिया के राजदूत की पत्नी बेहोश हो गईं। उन्हें स्ट्रेचर पर बाहर ले जाया गया।

लाल किले पर ज्वालाधूम

पछुआ हवा बह रही थी। चिता से उठती धूम-राशि, चिनगारी तथा ज्वालायें [illegible] नी दिल्ली की ओर [illegible] लगीं। वे जामा मस्जिद जैन-मन्दिर [illegible] गुरुद्वारा [illegible] ती हुई चलीं। वे उस ओर [illegible] लगीं जिस [illegible] की वाणी [illegible] अगस्त को [illegible]। जहाँ वे निय [illegible] [illegible] जहाँ उन्होंने [illegible] के [illegible] के कपोल पर [illegible] है। [illegible] [illegible]। वहाँ [illegible]

लाल किला जिसने अनेक बादशाहों की निरीह हत्या होते देखी थी। जिसने बादशाहों के शवों को लावारिस की तरह मैदान में अपनी खाई में पड़े देखा था। जिसने यह भी देखा था। बादशाहों के मरने पर दिल्ली वालों ने आँसू नहीं बहाये थे। जिसने चाँदनी चौक में अनेक बार कत्ले-आम देखा था। आज उसी ने अपनी रक्त पाषाणी आँखों से देखा। भारतवर्ष की उमड़ती जनता को अपने हृदय-सम्राट को हृदय-द्रावक श्रद्धांजलि देते। उस महान् व्यक्ति को जिसने भारतीय जनता की महानता की कल्पना की थी। जिसकी शवयात्रा किसी बादशाह की शवयात्रा की तरह शोभा-यात्रा मात्र नहीं थी।

मृत्यु को अमरत्व मिला

राज्यों साम्राज्यों की श्मशान भूमि दिल्ली जिसने अपने जीवन में बहुत उलट-पलट देखे थे। जिसका समस्त इतिहास रक्त रंजित है। जिसकी कहानी लूट-पाट की कहानी है। उसने अपने अध्याय में जुड़ते देखी एक शान्ति-दूत की कहानी। उसने चिता की उठती सुरभि में अपने ऊपर से उड़ती नीलगगन में विलीन होती चिता की धूम्र राशि में अनुभव किया। यह सुरभि थी जो मृत्यु को अमरत्व में बदल देती है।

चिता धू-धू जलती रही। प्रचण्ड ज्वाला शान्त होती गई। जैसे निद्रा गम्भीर होने लगी। जनता रात्रि-पर्यन्त चिता के समीप आती रही। हाथ जोड़ती रही। आँसू बहाती रही। चिता में पुष्प घृत तथा सुगन्धि डालती रही। पण्डितजी का शरीर शान्त लोगों की श्रद्धा के बीच अग्नि में भस्म होता रहा। ऋग्वेद के मन्त्र का स्मरण कराता—'प्रेहि प्रहि पथिमि' 'आओ आओ सनातन पथ पर' और अन्नमयकोष तेजी से विघटित होता रहा।

नीरव खड़े हो गये।

अग्निज्वालाएँ पार्थिव शरीर का आलिंगन करते ही एक मिनट के अन्दर नभ-मण्डल का धूम्र से भरती आत्मसात् करने लगी।

चिता के चबूतरे से थोड़ा हटकर विशिष्ट महानुभावों के लिए घेरा बनाया गया था। उसमें राष्ट्रपति ब्रिटिश प्रधानमन्त्री श्री डगलस ह्योम लार्ड माउण्ट बेटन श्रीमती पामिला हिक्स श्री डीन रस्क, श्री कोसिजिन श्री भुट्टो महाराज तथा रानी सिक्किम श्रीलंका की प्रधान मन्त्री श्रीमती भण्डारनायक श्री तुलसीगिरि ईरान के गृहमन्त्री फ्रांस के प्रतिनिधि आदि बैठे थे।

श्री डीन रस्क श्री चौहान तथा श्री चेस्टर बोल्स के साथ थे। वे हेलीकाप्टर से वहाँ पहुँचे थे। फ्रांस के मन्त्री प्रतिनिधि भी हेलीकाप्टर से पहुँचे थे। श्री डीन रस्क पर धूप से बचने के लिए छाता खोला जाने लगा। उन्होंने छाता लगाने से इन्कार कर दिया। धूप में खड़े और बैठे रहना उन्होंने श्रेयस्कर समझा।

अग्नि-ज्वालाओं में शव छिपने लगा। लार्ड माउण्ट बेटन बहुत देर तक सिसकियाँ लेते बैठे रहे। बलगेरिया के राजदूत की पत्नी बेहोश हो गईं। उन्हें स्ट्रेचर पर बाहर ले जाया गया।

लाल किले पर ज्वालाधूम

पछुआ हवा बह रही थी। चिता से उठती धूम्र राशि चिनगारी तथा ज्वालाएँ पुरानी दिल्ली की ओर जाने लगीं। वे जामा मस्जिद जैन-मन्दिर तथा शीशगंज गुरुद्वारा के ऊपर उड़ती हुई चलीं। वे उस ओर लाल किले पर जाने लगीं जिसके प्राचीर से पण्डितजी की वाणी गत १६ वर्षों से जनता १५ अगस्त को सुनती आई थी। यहाँ वे नियमित रूप से १५ अगस्त को राष्ट्रीय पताका फहराते थे। यहाँ उन्होंने गाउन पहनकर, आजाद हिन्द फौज के बंदियों के सफाई के वकील की हैसियत से अन्य भारत प्रसिद्ध वकीलों के साथ पैरवी की थी। यहीं से उन्होंने भारतीय जनता विश्व तथा राष्ट्र को सन्देश दिये थे।

लाल किला जिसने अनेक बादशाहों की निरीह हत्या होते देखी थी। जिसने बादशाहों के शवों को लावारिस की तरह मैदान में अथवा अपनी खाई में पड़े देखा था। जिसने यह भी देखा था। बादशाहों के मरने पर दिल्ली वालों ने आँसू नहीं बहाये थे। जिसने चाँदनी चौक में अनेक बार कत्ले-आम देखा था। आज उसी ने अपनी रक्त पाषाणी आँखों से देखा। भारतवर्ष की उमड़ती जनता को अपने हृदय-सम्राट को हृदय-द्रावक श्रद्धांजलि देते। उस महान व्यक्ति को जिसने भारतीय जनता की महानता की कल्पना की थी। जिसकी शवयात्रा किसी बादशाह की शवयात्रा की तरह शोभा-यात्रा मात्र नहीं थी।

मृत्यु को अमरत्व मिला

राज्यों साम्राज्यों की श्मशान भूमि दिल्ली जिसने अपने जीवन में बहुत उलट-पलट देखे थे। जिसका समस्त इतिहास रक्त रंजित है। जिसकी कहानी लूट-पाट की कहानी है। उसने अपने अध्याय में जुड़ते देखी एक शान्ति-दूत की कहानी। उसने चिता की उठती सुरभि में अपने ऊपर से उड़ती नीलगगन में विलीन होती चिता की धूम्र राशि में अनुभव किया। वह सुरभि थी जो मृत्यु को अमरत्व में बदल देती है।

चिता धू-धू जलती रही। प्रचण्ड ज्वाला शान्त होती गई। जैसे जैसे निशा गम्भीर होने लगी। जनता रात्रि-पर्यन्त चिता के समीप जागती रही। हाथ जोड़ती रही। आँसू बहाती रही। चिता में पुष्प, घृत तथा सुगन्धि डालती रही। पण्डितजी का शरीर शान्त लोगों की श्रद्धा के बीच अग्नि में भस्म होता रहा। ऋग्वेद के मन्त्र का स्मरण कराता—'प्रेहि प्रेहि पथिभिः' 'जाओ जाओ सनातन पथ पर' और अन्नमयकोष तेजी से विघटित होता रहा।

श्रद्धाञ्जलि



निशा-आगमन के लगभग २ घण्टे पश्चात् उज्ज्वल धवल-वर्ण शशि-बिम्ब नभोमण्डल में उठने लगा। पण्डितजी की चिता खूब धधक कर शशि के आकाश में शनै-शनै उठने और रंग बदलने के साथ साथ अपने धधकते अंगारों का रूप बदलने लगी। पृथ्वी पर अग्नि वर्ण अंगारों में भयंकर उष्णता थी। आकाशगामी धवल चन्द्र-बिम्ब किंचित् अंगार-वर्ण होते हुए भी शीतलता का सृजन करने लगा था। शशि अग्नि का क्रूर कर्म देख न सका। जिस काया से कोटि-कोटि मानवों का स्नेह था उसे क्रूरतापूर्वक नष्ट करते देखकर, शशि भी द्रवित हो गया था। उसकी अमृत-तुल्य सरबरी से बरसता शान्त रस जैसे लोगों के सूर्य द्वारा तप्त शरीर तथा मन एवं पृथ्वी को शान्त करने लगा। प्रकृति ने स्वयं चिता ठण्डी करने के प्रयास में शशि का सरल आदेश दिया था।

दिन की भयंकर उष्णता के पश्चात् कृष्ण-पक्ष द्वितीया के शशि ने मुक्त सरबरी-दान में संकोच नहीं किया। शशि का मूक निवेदन अंगारों ने सुना। चिता की उग्रता समाप्तप्राय होने लगी। वह स्वतः बुझने लगी।

रात्रि-पर्यन्त नर-नारी आते रहे। श्रद्धांजलि अर्पित करते रहे। चन्द्र-किरणों के प्रकाश में कालिन्दी की ओर से आती हुई ठण्डी हवाएँ

चिता की अग्नि का मन्द-मन्द शान्त होना देखने लगीं। उषा की अरुण लाली ने चिता का रूप बदल दिया। जगत् परिवर्तनशील है। चिता भी परिवर्तन की साक्षी देती। पण्डितजी की पार्थिव काया को भस्म करने वाली चन्दन की लकड़ियों को भी भस्म करने में सकुचित न हुई। उसने चरितार्थ कर दिया जलाने वाला स्वयं जलकर भस्म होता है।

पण्डितजी की चिता से कभी क्षीण धूमशिखा उस समय नभो मण्डल की ओर किसी की श्रद्धा की कहानी कहती उठ पड़ती थी जब कोई श्रद्धालु उसमें गुगुल अथवा दशांग छोड़कर कृतार्थ होता था। पावन सुरभि फैलती थी। पण्डितजी के जीवन की सुरभि की एक याद दिलाती पुनः शान्त हो जाती थी। ब्राह्म-मुहूर्त में लोगों का आगमन प्राय रुक गया था।

भुवन भास्कर की प्रातःकालीन अरुण किरणराशि के विकसित होते-होते चिता के चारों ओर पुनः दर्शनार्थी एकत्रित होने लगे। इस समय चिता प्रायः शान्त हो गई थी। चिता पर श्वेत भस्म की एक परत में जम गई थी। चन्दन के कोयले स्वयं जलकर श्वेत भस्म रूप में परिणत हो गये थे। चारों ओर की लकड़ियों ने जले चिता की भस्म में स्थिर होकर उसे चैत्य का रूप दे दिया था। चिता बीच में उठी। चारों ओर ढालू होते-होते चबूतरे के स्तर में मिल गई थी। उसके पश्चात् श्रद्धांजलियों द्वारा अर्पित पुष्पराशि चबूतरे की सीमा का अतिक्रमण करती कुछ भूमि में भी फैल गई थी। चिता के चबूतरे पर चढ़ने के लिए ४ सीढ़ियाँ ईंटों की बनी थीं।

लगभग ५॥ बजे प्रातःकाल सूर्य-बिम्ब चन्द्रमा को निष्प्रभ करता पूर्व से आलोक-पुंज छोड़ता आकाश में उठने लगा था। उसकी किरणों की प्रखरता के साथ ही-साथ शान्ति-वन में मानव-आगमन में तीव्रता आ गई। आठ बजे तक सोपानों को पुष्पराशि ने अपनी गोद में ले लिया। अग्नि में पुष्प छोड़ना वर्जित माना गया है। पुष्प चिता को भस्म में न छोड़कर सीढ़िया तथा चबूतरे पर श्रद्धापूर्वक रखे जाने लगे। जनता करबद्ध दिवंगत की आत्मा को चिरशान्ति के लिए भगवान्

श्रद्धाञ्जलि



निशा-आगमन के लगभग २ घण्टे पश्चात् उज्ज्वल धवल-वर्ण शशि बिम्ब नभोमण्डल में उठने लगा। पण्डितजी की चिता खूब धधक कर शशि के आकाश में धनै-शनै उठने और रंग बदलने के साथ साथ अपने धधकते अंगारों का रूप बदलने लगी। पृथ्वी पर अग्नि वर्ण अंगारों में भयंकर उष्णता थी। आकाशगामी धवल चन्द्र-बिम्ब किंचित् अंगार-वर्ण होते हुए भी शीतलता का सृजन करने लगा था। शशि अग्नि का क्रूर कर्म देख न सका। जिस काया से कोटि-कोटि मानवों का स्नेह था उसे क्रूरतापूर्वक नष्ट करते देखकर, शशि भी द्रवित हो गया था। उसकी अमृत-तुल्य सरवरी से बरसता शान्त रस जैसे लोगों के सूर्य द्वारा तप्त शरीर तथा मन एवं पृथ्वी को शान्त करने लगा। प्रकृति ने स्वयं चिता ठण्डी करने के प्रयास में शशि को सरल आदेश दिया था।

दिन की भयंकर उष्णता के पश्चात् कृष्ण-पक्ष द्वितीया के शशि ने मुक्त सरवरी-दान में संकोच नहीं किया। शशि का मूक निवेदन अंगारों ने सुना। चिता की उग्रता समाप्तप्राय होने लगी। वह स्वतः बुझने लगी।

रात्रि-पर्यन्त नर-नारी आते रहे। श्रद्धांजलि अर्पित करते रहे। चन्द्र किरणों के प्रकाश में कालिन्दी की ओर से आती हुई ठण्डी हवाएँ

चिता की अग्नि का मन्द-मन्द शान्त होना देखने लगीं। उषा की अरुण लाली ने चिता का रूप बदल दिया। जगत् परिवर्तनशील है। चिता भी परिवर्तन की साक्षी देती। पण्डितजी की पार्थिव काया को भस्म करने वाली चन्दन की लकड़ियों को भी भस्म करने में सकुचित न हुई। उसने चरितार्थ कर दिया जलाने वाला स्वयं जलकर भस्म होता है।

पण्डितजी की चिता से कभी क्षीण धूमशिखा उस समय नभोमण्डल की ओर किसी की श्रद्धा की कहानी कहती उठ पड़ती थी जब कोई श्रद्धालु उसमें गुगुल अथवा दशांग छोड़कर कृतार्थ होता था। पावन सुरभि फैलती थी। पण्डितजी के जीवन की सुरभि की एक याद दिलाती पुनः शान्त हो जाती थी। ब्राह्म-मुहूर्त में लोगों का आगमन प्रायः रुक गया था।

भुवन भास्कर की प्रातःकालीन अरुण किरणराशि के विकसित होते-होते चिता के चारों ओर पुनः दर्शनार्थी एकत्रित होने लगे। इस समय चिता प्रायः शान्त हो गई थी। चिता पर श्वेत भस्म भी एक परत में जम गई थी। चन्दन के कोयले स्वयं जलकर श्वेत भस्म रूप में परिणत हो गये थे। चारों ओर की लकड़ियों ने जैसे चिता को भस्म में स्थिर होकर उसे चैत्य का रूप दे दिया था। चिता बीच में उठी। चारों ओर वायु होते-होते चबूतरे के स्तर में मिल गई थी। उसके पश्चात् श्रद्धांजलियों द्वारा अर्पित पुष्पराशि चबूतरे की सीमा का अतिक्रमण करती कुछ भूमि में भी फैल गई थी। चिता के चबूतर पर चढ़ने के लिए ४ सीढ़ियाँ ईंटों की बनी थीं।

लगभग ५॥ बजे प्रातःकाल सूर्य-बिम्ब चन्द्रमा को निष्प्रभ करता पूर्व से आलोक-पुंज छोड़ता आकाश में उठने लगा था। उसकी किरणों की प्रखरता के साथ-ही-साथ शान्ति-वन में मानव-आगमन में तीव्रता आ गई। आठ बजे तक सोपानों को पुष्पराशि ने अपनी गोद में ले लिया। अग्नि में पुष्प छोड़ना वर्जित माना गया है। पुष्प चिता की भस्म में न छोड़कर सीढ़ियों तथा चबूतरे पर श्रद्धापूर्वक रखे जाने लगे। जनता करबद्ध दिवंगत की आत्मा की चिरशान्ति के लिए भगवान्

से प्रार्थना करती आने-जाने लगी। वहाँ भी शामियाने लगा दिये थे।

चिता के चबूतरे के समीप सनातनधर्म सभा की तरफ से रामायण तथा दिल्ली गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के तत्त्वावधान में गुरु-ग्रन्थ साहिब का अखण्ड पाठ आरम्भ हो गया था। लाउडस्पीकर से उनकी ध्वनि दूर तक पहुँचती थी। स्मरण दिलाती थी। भस्म के धूम धड़क्के के पश्चात् शान्ति लौटी है। शान्ति तीर्थ-स्थानों में भावुक हृदय को मिलती है। निःसन्देह इस समय शान्ति-वन तीर्थ-स्थल बन गया था। विश्व की आँखें किसी दिन के सर्वसत्ता-सम्पन्न पुरुष को राख के ढेर के रूप में देखकर जीवन की निस्सारता पर क्षणमात्र के लिए विचार करने लगी।

भस्म की शक्ति

हीरा अग्नि में जलकर वज्र भस्म बन जाता है। प्राण रक्षा करता है। परन्तु हीरे की कनी प्राणदान के स्थान पर प्राणनाश का कारण होती है। सुवर्ण लोह ताम्र रजत पारा अभ्रक शंख, सीप आदि धातु और निर्जीव जड़ पदार्थों को मनुष्य खा नहीं सकता। वे उसके शरीर पर कोई प्रभाव नहीं डालते। परन्तु ये ही जड़ निर्जीव पदार्थ अग्नि में भस्म होते हैं। अपना नाम और रूप खोते हैं। औषधि बन जाते हैं प्राण रक्षा करते हैं। रूप-परिवर्तन के साथ अगाध शक्ति उत्पन्न होती है। जो शक्ति उनके मौलिक रूप में नहीं होती। वही अपना सर्वस्व अग्नि में स्वाहा कर देने के पश्चात् भस्म-रूप में शक्तिसम्पन्न प्राणरक्षक हो जाती है। क्या भारतीयों ने इस मौलिक तथ्य को सत्य समझकर मानव काया को भस्म करके उसे पूर्व से भी अधिक शक्तिशाली बनाने की बात सोची थी? लोहा धातु या कोई पदार्थ जमीन में गाड़ा या फेंका जाय तो वह जंग लगने से ताप तथा वायु के थपेड़ों में अपनी जीवन-श्री खोता है। और शक्तिहीन तुल्य अपने तत्त्वों को विघटित करता है। उसमें कोई शक्ति नहीं रह जाती। मैं सोचता हूँ आर्यों की दृष्टि कितनी पैनी थी।

क्या मनुष्य का काया के विषय में यह बात सत्य नहीं होगी। मनुष्य भी जल जाने पर भस्म बन जाता है। यदि हीरा सुवर्ण, मोती, सीप, धातादि की भस्मों में शक्ति आ जाती है तो मनुष्य के जलने पर उसके भस्म हो जाने से क्यों नहीं शक्ति आयेगी। यदि धार्मिक कथा पर विश्वास करें तो मनुष्य जलने पर, भस्म बन जाने पर भगवान् शिव के शरीर का चिता भस्म-रूप में अंगराग बनता है। उनके मस्तक पर त्रिपुण्ड रूप झलकता है। भगवान् ने मनुष्य के इस त्याग को, इस भस्म बनने की प्रक्रिया के महत्त्व को उसके मूल्य को समझा है। उसे साधिकार स्वीकार किया है। वैज्ञानिकों के अनुसन्धान के लिए इसे छोड़ देना उचित होगा कि मनुष्य की भस्म में क्या शक्तियाँ विशेष हो जाती हैं। मैं यही समझता हूँ यदि उसमे शक्ति नहीं होती तो वह शिव के मस्तक पर नहीं चढ़ती। जीवितावस्था में मनुष्य शिव के युगल चरण-कमलों के वन्दन की आकांक्षा करता है। चाहे पण्डितजी जीवित अवस्था में अपनी पूजा और चरणस्पर्श कराना नापसन्द करते रहे हों परन्तु उनकी काया की आहुति अग्नि में पड़ने पर, उसके भस्म बन जाने पर, वे स्वयं तीर्थस्थल बन गये।

रात्रि-पर्यन्त लगभग ६० हजार व्यक्तियों ने जलती चिता के सम्मुख आकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इस श्रद्धांजलि में हिन्दू जाति का दर्शन छिपा था। जो व्यक्त एवं अव्यक्त में अन्तर नहीं मानता। भगवान् से भय करना दूर रहना, सहमना उसे एक सम्राट की तरह शक्तिशाली समझकर उसके डर से चिन्तित रहना स्वीकार नहीं करता। बल्कि मानता है मनुष्य स्वयं भगवान् मे मिल जाता है। सायुज्यता प्राप्त करता है। मृत्यु के पश्चात् स्वयं महादेव-स्वरूप हो जाता है। अतएव भारतीय संस्कृति मृत्यु को शोक नहीं मानती। उसे शाश्वत जीवन के परिवर्तन का एक रूप मात्र समझती है। मृत्यु केवल स्थूल रूप का परिवर्तन करती है। आत्मा नहीं मरती।

जापान तथा अन्य देशों के प्रतिनिधि जो कल शवयात्रा में सम्मिलित नहीं हुए थे अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने शान्ति-वन की

ओर चल पड़े थे।

आज सर्वप्रथम श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों में जापान के विदेश मंत्री थे। वे तीन रीथ लाये थे। उन्होंने महात्माजी की समाधि पर एक रीथ चढ़ाया। तत्पश्चात् एक प्रधानमंत्री जापान और दूसरा अपनी तरफ से पण्डित जवाहरलालजी की चिता के सम्मुख रखा। क्रमशः नाइजीरिया, युगाण्डा फ्रांस के गृहमंत्री, बर्मा के शिष्टमण्डल, रूस के शिष्टमण्डल दक्षिण कोरिया के शिष्टमण्डल तथा ट्यूनीशिया के शिष्ट-मण्डल के नेता श्री मोंगी स्लिम ने जो संयुक्त राष्ट्रसंघ की जनरल असेम्बली के अध्यक्ष रह चुके थे रीथ चढ़ाया। श्रीलंका की प्रधानमंत्री श्रीमती भण्डारनायक ने आज भी आकर रीथ चढ़ाया। यह उनके गाढ़े स्नेह का परिचायक था।

चिता ठण्डी हो जाने पर उसे एक चौखूटे टीन के बक्स से ढक दिया गया। दर्शनार्थी चिता में पुष्प आदि छोड़ते थे। अग्नि शान्त हो जाने के कारण हरे पुष्पों का जलना कठिन था। भस्म हवा के कारण उड़ न सके तथा अस्थि सुरक्षित रह सकें इसलिए उसे ढकना आवश्यक था। यह कार्य दूरदर्शिता का द्योतक कहा जायगा। अन्यथा लोग चिता भस्म लेने के लिए टूट पड़ते।

शस्त्रधारी सिपाहियों को वहाँ तैनात कर दिया गया। आदेश दे दिया गया। चिता के चबूतरे पर कोई चढ़ नहीं सके। अतएव पुष्पादि टीन के चारों तरफ तथा चबूतरे की सीढ़ियों पर रखे जाने लगे।

लगभग मध्याह्न काल के पश्चात् दक्षिण भारतीय जनता अत्यधिक संख्या में आने लगी। बात यह थी कि बद्रीनाथ तथा केदारनाथ की यात्रा का यह समय था। दक्षिण से आये यात्री बद्रीनाथ जाना चाहते थे। पण्डितजी के निधन का समाचार मार्ग में सुना। दिल्ली में दाह संस्कार का हाल सुनकर यात्रा स्थगित कर दी। वे छोटे-छोटे समूहों में नवीन तीर्थस्थल शान्ति-वन में आकर अपनी श्रद्धांजलियाँ अर्पित करने लगे। एक बार तो दर्शनार्थियों की पंक्ति एक मील लम्बी हो गई थी। चिता के ऊपर शामियाना लगाकर उसे तीन तरफ से घेर दिया

गया था। खुले स्थान से जनता पुष्पार्पण तथा प्रणाम करती चली जाती थी।

संसद भवन में

एक ओर जनता शान्ति-वन आकर श्रद्धांजलि अर्पित कर रही थी। दूसरी तरफ जनता के प्रतिनिधिगण संसद-भवन के दोनों सदन लोक-सभा तथा राज्यसभा में ठीक ११ बजे मिले। कांग्रेस दल की कार्य-कारिणी समिति की बैठक १० बजे संसद-भवन में होने की मैंने सूचना दी थी। बैठक समय पर हुई। वास्तव में यह बैठक प्रधानमंत्री के चुनाव का कार्यक्रम निश्चित करने के लिए हुई थी। परन्तु निश्चय किया गया आज शोक प्रस्ताव स्वीकृत कर बैठक कल के लिए स्थगित कर दी जाय।

लोकसभा मिलने पर अध्यक्ष सरदार श्री हुकुमसिंह ने श्री गुल-जारीलाल नन्दा की ओर संकेत किया। श्री नन्दा ने लोकसभा में दिवंगत पण्डित श्री जवाहरलालजी के सम्बन्ध में शोक प्रस्ताव उपस्थित किया। उन्होंने अपना शोक भाषण समाप्त किया—"जवाहरलाल आज मृत हैं परन्तु वे तब तक रहेंगे जब तक भारत रहेगा।

प्रस्ताव का समर्थन प्रत्येक दल के नेताओं ने किया। सब श्री रंगा (चित्तूर) नेता स्वतंत्र दल सुरेन्द्रनाथ द्विवेदी (कादरपाड़ा) नेता प्रजासमाजवादी दल, बृजराजसिंह नेता जनसंघ (बरेली) करणीसिंह (बीकानेर) निर्दलीय याज्ञिक (अहमदाबाद) नेता यूनाइटेड प्रोग्रेसिव पार्लियामेण्टरी ग्रुप गोविन्ददास कांग्रेस (जबलपुर) रामसेवक यादव (बाराबंकी उ० प्र०) नेता समाजवादी दल कृष्णन् मनोहरन् (मद-रास) नेता द्रविड़ मुनेत्र कजगम (डी० म० के०) बी० पी० मौर्य नेता, रिपब्लिकन दल (अलीगढ़) प्रकाशवीर शास्त्री नेता निर्दलीय (बिजनौर) मुहम्मद इस्माइल नेता मुसलिम लीग दल (मनजौरी), आचार्य कृपलानी अनएटेच्ड (अमरोहा), बिशनचन्द्र सेठ नेता हिन्दू-सभा (एटा उ०प्र०) बदरुज्जा निर्दलीय (मुर्शिदाबाद—बंगाल), सरदार कपूरसिंह स्वतंत्र (लुधियाना—पंजाब) ए०के० गोपालन् नेता, कम्युनिस्ट

ओर चल पड़े थे।

आज सर्वप्रथम श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों में जापान के विदेश मंत्री थे। वे तीन रीथ लाये थे। उन्होंने महात्माजी की समाधि पर एक रीथ चढ़ाया। तत्पश्चात् एक प्रधानमंत्री जापान और दूसरा अपनी तरफ से पण्डित जवाहरलालजी की चिता के सम्मुख रखा। क्रमशः नाइजीरिया युगाण्डा, फ्रांस के गृहमंत्री, बर्मा के शिष्टमण्डल, रूस के शिष्टमण्डल दक्षिण कोरिया के शिष्टमण्डल तथा ट्यूनीशिया के शिष्ट मण्डल के नेता श्री मोंगी स्लिम ने जो संयुक्त राष्ट्रसंघ की जनरल असेम्बली के अध्यक्ष रह चुके थे रीथ चढ़ाया। श्रीलंका की प्रधानमंत्री श्रीमती भण्डारनायक ने आज भी आकर रीथ चढ़ाया। यह उनके गाढ़े स्नेह का परिचायक था।

चिता ठण्डी हो जाने पर उसे एक चौकूटे टीन के बक्स से ढक दिया गया। दर्शनार्थी चिता में पुष्प आदि छोड़ते थे। अग्नि शान्त हो जाने के कारण हरे पुष्पों का जलना कठिन था। भस्म हवा के कारण उड़ न सके तथा अस्थि सुरक्षित रह सके इसलिए उसे ढकना आवश्यक था। यह कार्य दूरदर्शिता का द्योतक कहा जायगा। अन्यथा लोग चिता भस्म लेने के लिए टूट पड़ते।

शस्त्रधारी सिपाहियों को वहाँ तैनात कर दिया गया। आदेश दे दिया गया। चिता के चबूतरे पर कोई चढ़ नहीं सके। अतएव पुष्पादि टीन के चारों तरफ तथा चबूतरे की सीढ़ियों पर रखे जाने लगे।

लगभग मध्याह्न काल के पश्चात् दक्षिण भारतीय जनता अत्यधिक संख्या में आने लगी। बात यह थी कि बद्रीनाथ तथा केदारनाथ की यात्रा का यह समय था। दक्षिण से आये यात्री बद्रीनाथ जाना चाहते थे। पण्डितजी के निधन का समाचार मार्ग में सुना। दिल्ली में दाह संस्कार का हाल सुनकर यात्रा स्थगित कर दी। वे छोटे-छोटे समूहों में नवीन तीर्थस्थल, शान्ति-वन में आकर अपनी श्रद्धांजलियाँ अर्पित करने लगे। एक बार तो दर्शनार्थियों की पंक्ति एक मील लम्बी हो गई थी। चिता के ऊपर शामियाना लगाकर उसे तीन तरफ से घेर दिया

गया था। खुले स्थान से जनता पुष्पार्पण तथा प्रणाम करती चली जाती थी।

संसद भवन में

एक ओर जनता शान्ति-वन आकर श्रद्धांजलि अर्पित कर रही थी। दूसरी तरफ जनता के प्रतिनिधिगण संसद भवन के दोनों सदन लोकसभा तथा राज्यसभा में ठीक ११ बजे मिले। कांग्रेस दल की कार्यकारिणी समिति की बैठक १० बजे संसद-भवन में होने की मैंने सूचना दी थी। बैठक समय पर हुई। वास्तव में यह बैठक प्रधानमन्त्री के चुनाव का कार्यक्रम निश्चित करने के लिए हुई थी। परन्तु निश्चय किया गया मात्र शोक प्रस्ताव स्वीकृत कर बैठक कल के लिए स्थगित कर दी जाय।

लोकसभा मिलने पर अध्यक्ष सरदार श्री हुकुमसिंह ने श्री गुलजारीलाल नन्दा की ओर संकेत किया। श्री नन्दा ने लोकसभा में दिवंगत पण्डित श्री जवाहरलालजी के सम्बन्ध में शोक प्रस्ताव उपस्थित किया। उन्होंने अपना शोक भाषण समाप्त किया—'जवाहरलाल आज मृत हैं, परन्तु वे तब तक रहेंगे जब तक भारत रहेगा।'

प्रस्ताव का समर्थन प्रत्येक दल के नेताओं ने किया। सर्वश्री रंगा (चित्तूर) नेता स्वतंत्र दल सुरेन्द्रनाथ द्विवेदी (केन्द्रपाड़ा) नेता प्रजासमाजवादी दल, बृजराजसिंह नेता जनसंघ (बरेली) [illegible] (बीकानेर) निर्दली याज्ञिक (अहमदाबाद) नेता यूनाइटेड [illegible] पार्लियामेण्टरी ग्रुप, गोविन्ददास कांग्रेस (जबलपुर), [illegible] (बाराबंकी, उ० प्र०) नेता, समाजवादी दल, कृष्णन् [illegible] राम) नेता द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (डी० एम० के०) डी० [illegible] रिपब्लिकन दल (अलीगढ़) प्रकाशवीर शास्त्री [illegible] (बिजनौर) मुहम्मद इस्माइल नेता मुस्लिम लीग [illegible] आचार्य कृपलानी अनएटैच्ड (अमरोहा) [illegible] सभा (एटा उ०प्र०), बदरुद्दजा निर्दलीय (मु[illegible] कपूरसिंह स्वतंत्र (लुधियाना-पंजाब) [illegible]

मार्क्सिस्ट सनोनिस्ट (केरल) मे दिवगत के कुटुम्ब के साथ समवेदना तथा शोक प्रकट किया। लोकसभा २ बजकर २३ मिनट पर पहली जून तक के लिए पण्डितजी के सम्मान में स्थगित कर दी गई।

राज्यसभा ठीक ११ बजे दिन २६ मई को मिली। उपराष्ट्रपति श्री जाकिर हुसैन आसन पर थे। राज्यसभा के नेता श्री एम० सी० छागला ने शोक प्रस्ताव उपस्थित किया। उन्होंने अपना वक्तव्य यह कहते हुए समाप्त किया—पण्डितजी ने देश की राष्ट्रीय एकता उन्नति समृद्धि, विकास तथा विश्वशान्ति के लिए अपना समस्त जीवन अर्पित किया था।

प्रस्ताव का समर्थन सर्वश्री दयाभाई पटेल नेता स्वतन्त्रदल (गुजरात) भूपेश गुप्त नेता कम्युनिस्ट दल (पश्चिम बगाल) गगाशरण सिंह नेता प्रजासमाजवादी दल (बिहार) अटलबिहारी वाजपेयी नेता जनसघ (उ० प्र०) ए० डी० मणी नेता निर्दलीय (म० प्र०) गौडमुराहरि (उ० प्र०) जैरामदास दौलतराम (मनोनीत) जी० रामचन्द्रन् (मनोनीत) बी० के० गायकवाड़ (महाराष्ट्र) अब्दुल समद (मदरास) और चेयरमन डा० जाकिर हुसैन साहब ने अन्त में भाषण दिया। प्रस्ताव स्वीकृत होने पर राज्य सभा पहली जून तक के लिए स्थगित कर दी गई।

लोकसभा तथा राज्यसभा में शोक-प्रदर्शन किया गया। परन्तु ससद भवन की एक तीसरी सभा और केन्द्रीय कक्ष में होती है। उसे सयुक्त बैठक कहते हैं। केन्द्रीय कक्ष के हाल म सविधान सभा की बैठकें हुई थी। यह इतना बडा हाल है कि दोनो सदनो के लोग यहाँ आराम से बैठ सकते है।

मैंने दोनों सदनों के सब दलों के सदस्यो की एक बैठक ठीक २॥ बजे केन्द्रीय कक्ष म आयोजित की। इसकी अध्यक्षता के लिए मैंने दोनों सभा के सबसे वयोवृद्ध सदस्य और नेता डा० श्री अणे के नाम को प्रस्तावित किया। सर्वसम्मति से श्री अणे ने आसन ग्रहण किया। सभी दल के लोगों म श्रद्धांजलियाँ अर्पित की। इस सभा में औपचारिकता की बात नहीं थी। सभी वक्ताओं ने अपने हृदय की भावनाओं को स्पष्ट

तया सरल रूप से प्रकट किया। सभी सदस्यों ने इस बात पर जोर दिया कि नेता का चुनाव निर्विवाद होना चाहिए। शोक प्रस्ताव स्वीकृत होने के पूर्व मैंने प्रस्ताव रखा। केन्द्रीय कक्ष में एक स्थान चित्र लगाने के लिए खाली है। वहाँ पण्डितजी का चित्र लगा दिया जाए। इस कार्य के लिए चेयरमन राज्यसभा तथा अध्यक्ष लोकसभा के साथ एक सर्व-दलीय कमेटी बनाई जाय। किसी चतुर शिल्पी चित्रकार द्वारा चित्र बनवाकर लगाया जाय। प्रस्ताव स्वीकृत हो गया। चित्र के लिए रुपया उतारने का भार मुझ पर सौंपा गया। कालान्तर में मैंने रुपया उतार कर स्पीकर को दे दिया। कुछ बड़े गण्यमान्य पूंजीपतियों ने पण्डितजी का निःशुल्क चित्र भेंट करने के लिए कहा। किन्तु मैंने यही निश्चय किया। पण्डितजी का चित्र केवल संसद सदस्यों के चन्दे से ही बनाया और लगाया जाय।

सभा में निम्नलिखित दलों के नेताओं ने भाषण किया—

१ सर्वश्री हिरेननाथ मुकर्जी नेता कम्युनिस्ट दल २ गंगाचरण सिंह नेता प्रजासमाजवादी दल ३ अटलविहारी बाजपेयी नेता जनसंघ ४ रामसेवक यादव नेता संयुक्त समाजवादी दल ५ रानी गायत्री देवी नेता स्वतंत्र दल ६ बी० पी० मौर्य नेता रिपब्लिकन दल ७ कण्णन् मनोहरन (डी० एम० के०) ८ मुहम्मद इस्माइल नेता मुसलिम लीग ९ डा० एल० एम० सिंघवी, नेता इण्डिपेण्डेण्ट पार्लियामेण्टरी दल, १० त्रिदीपकुमार चौधरी नेता पू०पी०पी०जी०दल ११ प्रकाशवीर शास्त्री नेता निर्दलीय दल १२ विशनचन्द्र सेठ नेता हिन्दू महासभा १३ आचार्य जे० बी० कृपलानी अनएटेच्ड तथा १४ के० सी० रेड्डी उपनेता कांग्रेस दल और गुलजारीलाल नन्दा कार्यवाहक प्रधानमन्त्री।

अन्तर्राष्ट्रीय शोकसभा

सायंकाल रामलीला मैदान में सार्वजनिक शोकसभा राष्ट्रपति डा० श्री राधाकृष्णनजी की अध्यक्षता में हुई। इस स्थान पर पण्डितजी रानी-एलिजाबेथ, मुकगानिन, क्रु श्चेव, राष्ट्रपति आइजनहावर कर्नल

नासिर, सऊदी अरब के शाह सऊद तथा ईरान के बादशाह आदि की विशाल सभाओं में स्वागत भाषण कर चुके थे। उनके समय में यहाँ हुई सभाएँ अन्तर्राष्ट्रीय नहीं हुई थीं। उनके निधन पर उनकी शोकसभा अन्तराष्ट्रीय स्तर पर हुई। विशाल मंच पर विशाल सभा में यदि कोई बात अखरती थी तो वह स्वयं पण्डितजी की अनुपस्थिति थी। दिल्ली निवासियों की, भारतवासियों की आँखें इस प्रकार की विशाल सभाओं में पण्डितजी को देखने की आदी हो गई थीं।

भारतीय नेताओं के अतिरिक्त निम्नलिखित विदेशों के प्रतिनिधियों ने मार्मिक श्रद्धांजलि अर्पित की

१—महामहिम श्री एस० बाहुनी—अलजीरिया के राजदूत।

२—श्रीमती भण्डारनायक—लंका की प्रधानमन्त्री।

३—श्री लुई जोक्स फ्रांस मन्त्रिमंडल के सदस्य।

४— मस्योशी ओहिरा जापान के विदेशमन्त्री।

५—, डोंगवोन ली दक्षिण कोरिया।

६—, डा० अहमद बेनफ्रोग मोरक्को के शाह के प्रतिनिधि।

७— जार्ज एपोस्टल रूमानिया मंत्रिमण्डल के उपाध्यक्ष।

८— मोंगी स्लिम ट्यूनीशिया के विदेशमन्त्री।

९—, कमूले सलसा युगाण्डा के मन्त्री।

१०— अलेक्से कोसिजिन रूस के उपप्रधानमन्त्री (अब प्रधानमन्त्री)

११—,, हुसैन शाफी संयुक्त अरब गणराज्य के उपराष्ट्रपति।

१२—, डीन रस्क संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के विदेश मन्त्री।

१३— स्टाम्बोलिक युगोस्लाविया के प्रधानमन्त्री।

शंका उत्पन्न होती है कि विदेश से आये हुए अन्य प्रतिनिधियों ने सभा में भाग क्यों नहीं लिया। कारण स्पष्ट है। विदेश के आगन्तुक गण्यमान्य सज्जन एक निश्चित कार्यक्रम के अनुसार आये थे। बहुतों को मालूम भी नहीं था कि सार्वजनिक सभा होगी। उसमें श्रद्धांजलि अर्पित करनी होगी।

चार देशों के सात प्रतिनिधि २८ मई के दिन सायंकाल अर्थात्

सभा होने के पूर्व प्रस्थान कर चुके थे। प्रस्थान करने वालों में निम्न-लिखित थे

१–ब्रिटेन के प्रधानमंत्री श्री एलस डगलस होम।

२–रानी एलिजाबेथ के प्रतिनिधि—लार्ड माउण्ट बेटन तथा उनकी कन्या श्रीमती पामिला हिक्स।

३–बर्मा के राष्ट्रपति नी० विन० की धर्मपत्नी और श्री यू० थी० हून बर्मा के विदेशमंत्री।

४–ईरान के गृहमंत्री श्री जवाद सदर।

५–नेपाल मन्त्रिमण्डल के सदस्य श्री तुल्सीगिरि।

विचित्र उलझन पैदा हो गयी थी। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका तथा रूस दोनों के प्रतिनिधियों में से कौन सर्वप्रथम भाषण करें। किस देश को प्राथमिकता दी जाय। अन्त में समस्या का हल इस प्रकार किया गया। अक्षर के अनुसार अर्थात् एल्फाबेटिकल नाम के अनुसार देशों के प्रतिनिधियों को बुलाया जाय। इसमें सबके पद-गौरव तथा प्रतिष्ठा को किसी प्रकार ठेस लगने वाली नहीं थी। अस्तु अल्जीरिया के प्रतिनिधि को सर्वप्रथम बोलने का अवसर दिया गया। उस देश का नाम 'अ' से आरम्भ होता है। वर्णमाला का प्रथम अक्षर नागरी तथा अंग्रेजी दोनों लिपियों के अनुसार है।

पाकिस्तान के समाचारपत्रों ने एक मनगढ़त बात फैला दी। पाकिस्तान के प्रतिनिधि श्री भुट्टो को बोलने नहीं दिया गया। यह सर्वथा मिथ्या बात थी। भारत-स्थित पाकिस्तान हाई कमिश्नर को टेलीफोन किया गया। श्री भुट्टो को बोलना है। उत्तर मिला उन्हें ६-३० बजे से ७-३० बजे तक एक जगह और जाना है। श्री भुट्टो से सम्पर्क स्थापित नहीं हो सका। श्री भुट्टो ने स्वयं स्पष्टीकरण किया। इस विवाद का निराकरण कर दिया कि उनके प्राइवेट सेक्रेटरी ने उन्हें सूचना नहीं दी थी। वे सभा में सम्मिलित नहीं हो सके। इसका उन्हें दुःख है। पाकिस्तान में पहुँचकर उन्होंने इस बात को और साफ कर दिया।

भारतीय नेताओं में राष्ट्रपति के अतिरिक्त सर्वश्री जाकिरहुसैन उपराष्ट्रपति गुलजारीलाल नन्दा, लालबहादुर शास्त्री, कामराज नाडार मुरारजी देसाई, आचार्य कृपलानी (निर्दलीय) अमृत डांगे (कम्युनिस्ट दल), मसानी (स्वतन्त्र), नाथपाई (प्रजासमाजवादी) दीनदयाल उपाध्याय (जनसंघ) और गुलाम सादिक (मुख्यमन्त्री कश्मीर) आदि ने भाषण किया।

मंच पर राष्ट्रपति के दाहिनी तरफ बाबा विचित्र सिंह दिल्ली के मेयर, उपराष्ट्रपति जाकिरहुसैन आदि तथा बाईं तरफ श्रीमती इंदिरा गांधी, श्री गुलजारीलाल नन्दा श्रीमती भण्डारनायक श्री कोसिजिन (रूस) श्री डीन रस्क (संयुक्त राष्ट्र अमरिका) तथा द्वितीय पंक्ति में पीछे सर्वश्री कामराज नाडार तथा लालबहादुर शास्त्री आदि देश विदेश के गण्यमान्य विशिष्ट व्यक्ति कुर्सियों पर आसीन थे।

राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन् ने शोक प्रकट करते हुए कहा नेहरू केवल भारत के सेवक नहीं थे। बल्कि मानव-जगत् के थे। आधुनिक भारत को बनाकर उन्होंने स्वतः अपने लिए महत्वशाली स्मारक का निर्माण कर लिया है। राष्ट्रपति ने माननीय विशिष्ट अतिथियों को हार्दिक धन्यवाद दिया जिन्होंने भारत के शोक में सम्मिलित होकर अपनी आत्मीयता का परिचय दिया है।

अल्जीरिया के प्रतिनिधि ने कहा— 'अल्जीरिया के लोग आपके दुःख को अपना दुःख समझते हैं। भारतीय जनता को पण्डितजी के निधन के कारण भयंकर धक्का लगा है। मैं अल्जीरिया की जनता तथा श्री बेनबेला की ओर से शोक तथा समवेदना प्रकट करता हूँ।

श्रीलंका की प्रधानमन्त्री श्रीमती भण्डारनायक ने कहा 'यह कितना आश्चर्यजनक लगा होगा जब किसी सुप्रभात में यह अनुभव किया गया होगा कि भारत बिना जवाहरलाल का है। अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में विवेक नैतिकता गम्भीरता तथा आशा उनकी वाणी से निकलती थी।

फ्रांस तथा जनरल श्री डी० गाल के प्रतिनिधि श्री मूई जोक्स ने

कहा—"एक व्यक्ति दिवगत हुआ है जो मानव-जाति का गौरव था। मानवता ने आज सहिष्णुता, स्वतन्त्रता स्वाधीनता तथा शान्ति के सबसे बड़े सरक्षक को खो दिया है।

जापान के परराष्ट्र मन्त्री श्री ओहिरा ने कहा 'नेहरू के निधन से एक उज्ज्वल नक्षत्र अस्त हो गया है। एक प्रकाश-पुञ्ज बुझ गया है। उनके निधन पर दिल्ली में जो भूकम्प तथा तूफान आया उनसे प्रतीत होता है कि उनकी मृत्यु पर भूमि तथा आकाश दोनों ही रो पड़े।

श्री साग वान ली (दक्षिण कोरिया के प्रतिनिधि) ने कहा 'जवाहरलालजी से केवल भारत की क्षति नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व का क्षति हुई है। कोरिया और भारत जवाहरलालजी के लिए समानवाची थे।

श्री आर्जे एपास्टल (अल्बानिया मन्त्रिमण्डल के उपाध्यक्ष) ने कहा—'नेहरू सर्वमान्य भारतीय राजनीतिज्ञ नेता और अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में एक असाधारण व्यक्ति थे।

मोरक्को के शाह के प्रतिनिधि ने अपने देशवासियों की तरफ से शोक प्रकट किया।

ट्यूनीशिया के विदेशमन्त्री श्री मोंगी स्लिम ने कहा 'उन्होंने अपनी भारतीय स्वाधीनता के साथ ही मानवता की सुख-समृद्धि के लिए संघर्ष किया है। वे हमारे भाई थे। अतएव हमारा देश दुःखी है।'

युगाण्डा के मन्त्री श्री कल्से सत्तला ने कहा—'पण्डितजी की मृत्यु का समाचार पूर्वी अफरीका में बड़े दुःख के साथ सुना गया है। हमें धक्का लगा है। उनका निधन हमारी हानि है।"

रूस के उपप्रधानमन्त्री श्री कोसिजिन ने कहा—'नेहरूजी का जीवन जनता के लिए समर्पित था। उनके दिवगत होने के कारण रूस की जनता को दुःख हुआ है। वे एक युग के महान नेता स्वाधीनता के सेनानी तथा सच्चे देशभक्त थे। उनका नाम सोवियत जनता को बड़ा प्रिय इसलिए है कि उनका नाम उपनिवेशवाद को समाप्त करने तथा अन्तर्राष्ट्रीय जगत् की समस्याओं को शान्तिपूर्ण ढग से हल करने के प्रयास से जुड़ा हुआ है। उनकी सरलता, उनकी नम्रता, उनकी मान-

भारतीय नेताओं
उपराष्ट्रपति गुलजा
नाडार मुरारजी देस
(कम्युनिस्ट दल), म
दीनदयाल उपाध्याय
कश्मीर) आदि ने श

मंच पर राष्ट्रप
मेयर उपराष्ट्रपति
गांधी श्री गुलजारी
(रूस) श्री डीन रु
पीछे सर्वश्री कामरा
विदेश के गण्यमान्य

राष्ट्रपति डा० रा
केवल भारत के सेवक
भारत को बनाकर उन्ह
निर्माण कर लिया है।'
हार्दिक धन्यवाद दिया।
अपनी आत्मीयता का प

अल्जीरिया के प्रति
दुःख को अपना दुःख स
निधन के कारण भयंक
तथा श्री बनवेला की आ

श्रीलंका की प्रधान
कितना आश्चर्यजनक मर
किया गया होगा कि भ
जगत् में विशेष नैतिक
निकलती थी।

फ्रांस तथा जनरल थ

हटाती है। इस पुरातन देश को स्वाधीनता की दिशा में अग्रसर करती है।

"वह महामानव जिसने स्वाधीनता सम्बन्धी गांधीजी के स्वप्न को साकार करने हेतु अपना समस्त जीवन अर्पण कर दिया था, हमें छोड़ कर चला गया। उस महामानव की इच्छा थी कि हम उसके सम्बन्ध में उसे एक ऐसे व्यक्ति के रूप में विचार करें जिसने अपने समस्त मस्तिष्क और हृदय से भारत और भारतीय जनता से प्रेम किया था। भारत और भारतीय जनता के लिए उनका प्रेम पूर्ण मानवता के लिए उनके प्रेम का प्रतीक था।

श्री पी० स्टाम्बोलिक (युगोस्लाविया संघ परिषद् के अध्यक्ष) ने अन्त में कहा — 'नेहरू जगत् में इसलिए स्मरण किये जायगे कि उन्होंने उपनिवेशवाद के विरुद्ध तथा भारतीय स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया था।"

भारतीय नेताओं में संक्रमणकालीन प्रधानमंत्री श्री नन्दा ने कहा— "नेहरू द्वारा पथप्रदर्शित मार्ग पर चलना तथा लोकतन्त्र को मजबूत बनाना है। देश की रक्षा तथा उसकी एकता पर पूरी शक्ति लगा देना है।"

श्री लालबहादुर शास्त्री ने कहा 'हम चाहे लड़खड़ाएँ लेकिन हम हिम्मत नहीं हारेंगे। मजबूती से खड़े रहेंगे। मजबूती से खड़े होंगे और आगे बढ़ेंगे। वे एक सिपाही तथा सिपहसालार थे। वे हमारे ऊपर एक बोझा छोड़ गये हैं। यह देश एक रहेगा। हम मिलकर रहेंगे। हम तगड़े बनेंगे। हम अपने देश की चहारदिवारियों की पूरी तरह से जी-जान से हिफाजत और रक्षा करेंगे। हमें विश्वास है हमारा देश इसमें साथ देगा। इसी सच्चे मानी में ईमानदारी के साथ पण्डित जवाहरलालजी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करेगा।

आचार्य कृपलानी ने कहा—"मेरे जीवन में सबसे दुखदायी बात यह रही है कि उनके अति निकट सम्पर्क में होते हुए भी बहुत-सी बातों में मेरा मन उनसे नहीं मिलता था। किन्तु देश की भलाई के विषय में रिश्ता और दोस्ती का ख्याल नहीं रखा जाता है। किन्तु उन्होंने एक बात

नेता, उनकी सच्चाई तथा सद्भावना का छाप सवदा अमिट रहेगी। आधुनिक युग के इस असाधारण राजनीतिक नेता, महान मस्तिष्क एवं विशाल हृदयधारी मानव का सबसे बड़ा संस्मारक यह होगा कि विश्व को युद्ध, सघर्ष एवं अशान्ति से बचाया जाय।"

स० अरब गणतन्त्र के उपराष्ट्रपति श्री हुसन साफी ने कहा—"नेहरू ने जिस दीपशिखा का विश्व के लिए ज्योतिमय किया है उससे विश्व सवदा विकास तथा स्वतन्त्रता के पथ पर अग्रसर होता रहेगा। उनके व्यक्तित्व में समस्त भारत परिलक्षित होता था। उनके जैसा व्यक्ति विश्व के लिए एक देन है।

सयुक्त राष्ट्र अमरिका के विदेशमन्त्री श्री डीन रस्क ने कहा—"साधारण अवसाद की इस एकता में सम्मिलित होने के लिए विश्व के नेताओं ने पारस्परिक मतभेदों को विस्मृत कर दिया है। विश्व के सामान्य से सामान्य जन—नर-नारी तथा बच्चे अनुभव करते हैं कि शांति, सौजन्य तथा मानव मात्र के भ्रातृत्व का एक महान पोषक उनसे जुदा कर दिया गया है।

"यदि हमें अपनी शोक-विह्वलता में सान्त्वना की आवश्यकता हो तो हमें उस नेता के कृतित्वों में अन्वेषण करना चाहिए जो हमसे बिछुड़ चुका है। भारतीय लोकतन्त्र जो विश्व का सबसे बड़ा लोकतन्त्र है, हमारे युग पर पण्डितजी की महान छाप का प्रतीक है। उन्होंने भारतीयों और विश्व के लिए यह थाती छोड़ जाने के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन उत्सर्ग किया था।

'हमें पण्डित नेहरू के वे अमर शब्द सर्वदा स्मरण होते रहेंगे जो उन्होंने महात्मा गांधी के निधन के समय कहे थे। जिस प्रकाश ने देश को अनेक वर्षों से ज्योतिर्मय रखा है वही इस देश के भविष्य के कितने ही वर्षों को ज्योतिर्मय करता रहेगा। एक सहस्र वर्ष पश्चात् भी यह प्रकाश दृष्टिगत होता रहेगा। उसे यह विश्व देखेगा। उससे अगणित नर-नारियों को सान्त्वना प्राप्त होती रहेगी। कारण, यह प्रकाश एक ऐसी वस्तु का प्रतीक है, जो हम सही मार्ग दिखाती है। गल्तियों से दूर

हटाती है। इस पुरातन देश को स्वाधीनता की दिशा में अग्रसर करती है।

"वह महामानव जिसने स्वाधीनता सम्बन्धी गांधीजी के स्वप्न को साकार करने हेतु अपना समस्त जीवन अर्पण कर दिया था, हमें छोड़कर चला गया। उस महामानव की इच्छा थी कि हम उसके सम्बन्ध में उसे एक ऐसे व्यक्ति के रूप में विचार करें जिसने अपने समस्त मस्तिष्क और हृदय से भारत और भारतीय जनता से प्रेम किया था। भारत और भारतीय जनता के लिए उनका प्रेम पूर्ण मानवता के लिए उनके प्रेम का प्रतीक था।

श्री पी० स्टाम्बोलिक (युगोस्लाविया संघ परिषद् के अध्यक्ष) ने अन्त में कहा—"नेहरू जगत् में इसलिए स्मरण किये जायेंगे कि उन्होंने उपनिवेशवाद के विरुद्ध तथा भारतीय स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया था।'

भारतीय नेताओं में संक्रमणकालीन प्रधानमंत्री श्री नन्दा ने कहा—"नेहरू द्वारा पथप्रदर्शित मार्ग पर चलना तथा लोकतन्त्र को मजबूत बनाना है। देश की रक्षा तथा उसकी एकता पर पूरी शक्ति लगा देना है।"

श्री लालबहादुर शास्त्री ने कहा 'हम चाहे लड़खड़ाएँ लेकिन हम हिम्मत नहीं हारेंगे। मजबूती से खड़े रहेंगे। मजबूती से खड़े होंगे और आगे बढ़ेंगे। वे एक सिपाही तथा सिपहसालार थे। वे हमारे ऊपर एक बोझा छोड़ गये हैं। यह देश एक रहेगा। हम मिलकर रहेंगे। हम तगड़े बनेंगे। हम अपने देश की चहारदिवारियों की पूरी तरह से जी-जान से हिफाजत और रक्षा करेंगे। हमें विश्वास है हमारा देश इसमें साथ देगा। इसी सच्चे मानी में ईमानदारी के साथ पण्डित जवाहरलालजी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करेगा।

आचार्य कृपलानी ने कहा—"मेरे जीवन में सबसे दुखदायी बात यह रही है कि उनके अति निकट सम्पर्क में होते हुए भी बहुत-सी बातों में मेरा मन उनसे नहीं मिलता था। किन्तु देश की भलाई के विषय में रिश्ता और दोस्ती का ख्याल नहीं रखा जाता है। किन्तु उन्होंने एक बात

सिखाई कि चाहे विचारों में कितना भी मतभेद क्यों न हो परन्तु व्यक्ति से सदा प्रेम करना चाहिए।"

जनसंघ के नेता श्री दीनदयाल उपाध्याय ने कहा— प्रधानमंत्री श्री नेहरू में से प्रधानमंत्री की पूर्ति हो जायगी परन्तु नेहरू की पूर्ति नहीं हो सकती।"

स्वतंत्र दल के नेता मसानी ने कहा—"वे ब्रिटिश साम्राज्य से लोहा लेने वाले बागी और बहादुर सिपाही के रूप में ज्यादा याद आते हैं।

प्रजासमाजवादी दल के नेता श्री नाथपाई ने कहा— 'नेहरूजी भारत को मध्ययुग के पिछड़ेपन से निकालकर आधुनिक प्रगतिशील युग में लाए।

उपराष्ट्रपति श्री जाकिर हुसन ने दिल्ली के मशहूर शायर गालिब का शेर पढ़ा—

हरएक मुकाम वही है मकी से सर बसर
मजनू जो मर गया तो जगल उदास है

उन्होंने निम्नलिखित पद पढ़कर अपनी श्रद्धांजलि दी—

जग सूना है तेरे बगैर, आँखों का क्या हाल करे।
जब भी दुनिया बसती थी और अब भी दुनिया बसती है।

श्री मुरारजी देसाई ने कहा— 'भारतीय जनता गोपी है और कृष्ण स्वयं नेहरूजी थे। महात्मा गांधी के अतिरिक्त और किसी देश वासी को इतना प्रेम नहीं मिल सका है। नेहरूजी चाहते थे कोई भूखा न हो किसी के साथ अन्याय न हो। वे सबको निर्भय बनाना चाहते थे।

कम्युनिस्ट नेता श्री श्रीपाद अमृत डांगे ने कहा— 'नेहरूजी ने हमें अपनी आजादी के साथ दुनिया की आजादी के समन्वय की एक नवीन दृष्टि दी। इसीलिए वे समाजवाद की ओर झुके।'

कश्मीर के मुख्यमंत्री श्री सादिक ने कहा— 'आज कश्मीर से कन्याकुमारी तक हर सख्स रोता है। कश्मीर की मजज को वे अच्छी तरह समझते थे।

विशाल शोकसभा में इस प्रकार देश और विदेश के लोगों ने

श्रद्धांजलियाँ अर्पित कीं और सभा भरे मन से समाप्त हुई। और दूसरी तरफ प्रधानमन्त्री का तीन मूर्ति भवन निर्जीव-सदृश—सन्ध्या देवी के अंचल में मुख छिपाने लगा। और तीसरी ओर बिजली के प्रखर प्रकाश में श्वेत टिन के बक्स से ढकी नेहरूजी की भस्म पर जनता पंक्तिबद्ध न जाने कब तक पुष्पों और अपने छलछलाते नयनों के जल से श्रद्धांजलि देती रही।

अस्थि चयन



यमुना पार से धीरे-धीरे सूर्य की किरणें प्रस्फुटित होने लगीं। जनता शान्ति-वन के विस्तृत मैदान में आकर आसन ग्रहण करने लगी। रात भर में सैनिक विभाग ने प्रबन्ध ठीक कर लिया था। रात भर सैनिक चबूतरे पर सजग प्रहरी की तरह पहरा देते रहे। रात भर जनता आती रही। पुष्पांजलि देती रही। शशि-किरणें अमृत-सृजन करती रहीं। पृथ्वी को शीतल करती रहीं। चिता को शीतल करती रहीं।

सूर्योदय के आध घण्टा पश्चात् ६ बजे प्रातःकाल ३० मई को नेहरूजी के सगे-सम्बन्धी तथा स्नेही चिता के समीप आकर बैठने लगे। पुष्पांजलि देने वालों की पंक्ति लग गई। शान्ति-वन का वातावरण धार्मिक हो गया। गीता रामायण गुरुग्रंथ साहब के पाठ के साथ कुरान शरीफ की तिलावत होने लगी। सिखों ने लंगर खोल दिया था। कोई भी वहाँ आकर भोजन कर सकता था। लंगर में भोजन परोसने का कार्य युवक तथा युवतियाँ करती थीं। उनके सेवाभाव को देखकर भावुक हृदय अनायास उनकी तरफ चला जाता था। मन करता था। उनकी पवित्र सेवा भाव से उठती मनोभावना मा सर्वदा दर्शन करते रहें। उसमें पवित्रता की झाँकी मिलती थी।

चबूतरे के समीप राष्ट्रपति उपराष्ट्रपति राज्यपाल मुख्यमंत्री मंत्रीगण तथा गण्यमान्य महानुभाव आकर बैठ गये। लगभग दस हजार

व्यक्ति एकत्रित हो गये थे। अस्थि चयन का कार्यक्रम प्रसारित कर दिया गया था। जनता स्वच्छ वस्त्रों में स्नान कर आयी थी। शान्त मन, पवित्र भावना से पवित्र संस्कार में सम्मिलित होने के लिए आये थे।

श्रीमती डा० सुशीला नयर तथा पण्डितजी की भतीजियों ने राम धुन आरम्भ किया। रामधुन की पवित्र लहरियों ने शान्ति-वन का वातावरण और पवित्र बना दिया। किंचित् काल के लिए सांसारिक मोहमाया तथा बन्धनों से मुक्त होकर लोगों ने शान्ति तथा भगवान् के सान्निध्य का अनुभव किया। प्रार्थना का कार्यक्रम आरम्भ हुआ। पण्डित जवाहरलाल के साथ महात्मा गांधी की याद अनायास आने लगी।

श्वेत वस्त्रधारी पण्डितजी के दोनों नाती राजीव तथा संजय अपनी श्वेतवस्त्रधारिणी माता इन्दिरा गांधी के साथ पधारे। चिता पर रखा चौकोर ऊँचा टिन का बक्स हटा दिया गया। कर्म काण्डियों ने मन्त्रोच्चारण किया। चिता भस्म पर गंगाजल तथा दूध दोनों नातियों ने छिड़का। चिता पूर्णतया ठण्डी हो गई थी। श्वेत भस्मों पर श्वेत दूध तथा गंगाजल की बूँदें अपना अस्तित्व खोकर एकाकार हो गईं। अपना अस्तित्व पण्डितजी के साथ जोड़ने लगीं।

पण्डितजी की उज्ज्वल अस्थियाँ श्वेत भस्म के नीचे मनुष्याकार पंजर रूप में दिखाई पड़ती थीं। वे कुछ सिकुड़ी-सी थीं। अस्थियों के सन्धिस्थान की शिराओं तथा मांस के जलजाने के कारण प्रत्येक सन्धि से अस्थियों का खण्ड-खण्ड अलग हो गया था। अग्निदेव ने मांस मज्जा एवं शिराओं को आत्मसात् कर दिया था। अस्थियों पर दया प्रदर्शित की थी। शायद जगत् को पण्डितजी के नश्वर शरीर का रूप दिखाने के लिए छोड़ दिया था।

राष्ट्रपति राधाकृष्णन् ने कुछ मन्त्रों का उच्चारण किया। राजीव तथा संजय ने अपने नाना को शिरसा नमामि किया। भस्म पर झुके। उनके कोमल कर-स्पर्श हुआ जैसी हलकी भस्म-राशि को हटाने लगे।

भस्म की गोद में पड़ी शान्त, निर्जीव अग्नि से तप कर विघटित अस्थियाँ जीवन की निस्सारता की मौलिक मूक कहानी कह रही थीं। सन्धियों के बन्धन के अग्नि द्वारा आत्मसात् कर लेने पर प्रत्येक खण्ड अपना भिन्न भिन्न अस्तित्व बना चुका था। जीवन की एकता रखने वाली आत्मा की विदाई के पश्चात् शरीर की सभी एकताएँ विघटित होकर नष्ट हो चुकी थी। और यह उस विघटन प्रक्रिया का अन्तिम रूप था।

अस्थियों के खण्डों को उठाते ही मानवाकार पंजर का रूप लोप हो गया। पंजर अस्थि ढेर रूप में परिणत हो गया। नाम-रूप-शरीर अस्थियों का ढेर रह गया। नाम चिता की अग्नि-ज्वालाओं के साथ समाप्त हो चुका था। रूप का लोप हो जाने पर जो शेष रह गया था उसे नष्ट करने की तैयारी बड़े पैमाने पर होने लगी थी। पण्डितजी की भव्य काया के अवशेषों को ताम्र कलश में रखने का प्रयास किया जा रहा था। और वह भस्म भी उदास अपने अस्तित्व लोप होने की अपेक्षा ८ जून तक के लिए कर रही थी।

अस्थि चयन जब तक होता रहा श्रीमती इन्दिरा गांधी विजय लक्ष्मी पण्डित कृष्णा हठीसिंह पद्मजा नायडू पण्डितजी के निजी सेवक ड्राइवर आदि जो प्रतिदिन छाया की तरह उनके साथ लगे रहते थे। सेवा करते थे। अपने धैर्य को विचलित होने से रोकने में असमर्थ हो रहे थे। नतमस्तक अस्थि के एक-एक भाग का दर्शन करते राष्ट्रपति उपराष्ट्रपति, राज्यपाल मुख्यमन्त्री तथा मन्त्रीगण नतमस्तक मिथ्या काया के मिथ्यत्व का दर्शन दण्डायमान करते रहे। उन खड़े होने वालों में संक्रमण कालीन प्रधानमन्त्री श्री गुलजारीलाल नन्दा भविष्य के प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री कामराज शेख अब्दुल्ला उस समय तक शान्त खड़े रहे जब तक अस्थि-कलश में अस्थियाँ न पूर्णरूपेण अपना सकुचित आवास नहीं बना लिया।

अस्थि चयन के समय रामधुन तथा भजन होते रहे। गीता रामायण गुरु ग्रन्थसाहब तथा कुरान का पाठ होता रहा। कलश में अस्थि रखकर राजीव तथा संजय उन्हें राष्ट्रपति के पास लाए। राष्ट्र

पति तथा समवेत सज्जनों ने कलश पर पुष्पाञ्जलि अर्पित की। प्रणाम किया। राष्ट्रपति ने इस अवसर पर संक्षिप्त दार्शनिक भाषण दिया।

राजीव तथा संजय दोनों हाथों से कलश के निम्न प्रदेश को पकड़े हुए दग्धस्थान से शान्ति-वन प्रवेशद्वार की ओर अग्रसर हुए। उपस्थित नर-नारियों के कर-पल्लवों से श्रद्धापूर्वक पुष्पराशि चलते कलश पर बरसने लगी।

बड़ी कार लगी थी। पीछे की सीट पर कलश रख दिया गया। उसके दोनों पार्श्वों में राजीव तथा संजय बैठ गये। इन्दिराजी ड्राइवर की बगल में अगली सीट पर बैठ गईं। कार शान्ति-वन से प्रधानमन्त्री भवन की ओर चली। मालूम होता था पण्डितजी अपने भवन से निकल कर शान्ति-घाट पर अग्निस्नान करने गए थे। स्नान कर पुनः अपने निवास-स्थान की ओर लौट रहे थे। कितना अन्तर था तीन दिन पूर्व के मनुष्याकार अस्थि-मांस-मज्जा-शिरा-जाल पूर्ण शरीर और आज के मुट्ठीभर अस्थिपञ्जर में। और आठ कलशों में रखी भस्मों में।

अन्य ७ भस्म-कलश दूसरी गाड़ियों में रख दिये गये। दुःखी मनुष्य जीवन की नश्वरता की नीरव दुन्दुभि बजाता मोटरों का कारवाँ प्रधानमन्त्री-भवन की ओर उस मार्ग से चला जिस मार्ग से परसों पण्डितजी की अर्थी के साथ आया था।

कलशों का मुख श्वेत वस्त्रों से बंधा था। अस्थि चयन संस्कार ६० मिनटों में समाप्त हुआ। इस कारवाँ के प्रस्थान करते समय शायद ही शान्ति-वन के विस्तृत मैदान में कोई ऐसा व्यक्ति बचा होगा जिसके नेत्र आर्द्र न हो गये होंगे।

प्रधानमन्त्री भवन का विशाल लौह तोरणद्वार पण्डितजी के स्वागतार्थ खुला। चुपचाप खुला। चुपचाप कार भीतर प्रवेश कर गई। चुपचाप कलश कार से उतारे गये। चुपचाप अस्थि-कलश उनके बैठने वाली सोफा-कुर्सी पर अमलतास के वृक्ष के नीचे आसीन हो गया। शेष सातों भस्म-कलश उस अस्थि-कलश के चारों ओर अर्धचन्द्राकार रूप से रख दिये गये।

और पूर्ण कुसुमित अमलतास का हल्का पीत वर्ण पुष्प चुपचाप कमल पर अजस्र रूप से रातदिन अविराम गिरता रहा, याद दिलाता रहा। प्रकृति की गोद में, पंचतत्व में लीन पण्डितजी की काया पर प्रकृति ने स्वतः निरन्तर धारावत पुष्प-वर्षा होते रहने का कार्यक्रम निश्चित कर दिया था। और मनुष्य ने निश्चित कर दिया दूसरा कार्यक्रम। सैनिक अपने शस्त्र के साथ वहाँ आ गया। पहरा देने लगा। उस पर जो वहाँ से भाग नहीं सकता था। जो एक बन्दी की तरह पड़ा था। और जिसने बन्दी भारत को मुक्त करने का आजीवन प्रयास किया था।

यह स्थान हो गया एक नवीन तीर्थ। दर्शनार्थियों की पुष्पांजलि का केन्द्रबिन्दु। दूसरी तरफ विवाद चल रहा था। भारत का प्रधान मन्त्री कौन बने। कांग्रेस संसदीय दल के मन्त्री होने के नाते अपने ऊपर एक जिम्मेवारी थी। राजनीतिक जीवन विकट चीज हुआ करती है। कौन किसका विश्वास करे कब कौन क्या कर बैठेगा। राजनीति में कहना कठिन हो जाता है। यह अवस्था विश्वमात्र की है। भारत अप वाद नहीं। राजनीति में अस्थिरता का एक यह महत्त्वपूर्ण कारण कहा जाएगा।

उत्तराधिकारी का चुनाव

कांग्रेस वर्किंग कमेटी में एक दल था। चाहता था प्रधानमन्त्री के नाम का सुझाव वर्किंग कमेटी दे। प्रधानमन्त्री के उम्मीदवारों के पास पहुँचकर नाना प्रकार की अटपटांग बातें कही जाती थीं कान भरे जाते थे। कौन प्रधानमन्त्री होगा। इस बात को लेकर पदलोलुप महानुभावों तथा राजनीति की बागडोर अपने हाथों में रखने के इच्छुकों ने घिका मतों का जाल रचकर सन्दिग्ध वातावरण उपस्थित कर दिया था। कोई भी दो सदस्य परस्पर बात करने में सतर्क रहते थे।

मैं प्रारम्भ से ही इस विचार का था। प्रधानमन्त्री के निर्वाचन का उत्तरदायित्व कांग्रेस संसदीय दल पर है। जनता ने हमें जिस कार्य के लिए चुनकर भेजा है उसका निर्वाह हमें निःसंकोच होकर करना

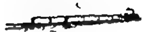
चाहिए। कल की कांग्रेस संसदीय दल की कार्यकारिणी की बैठक में निश्चित हो चुका था। आज समय निर्धारण तथा निर्वाचन के लिए बैठक की जायेगी। बैठक के लिए कल सायकाल एजण्डा लिखकर घर चला आया। लगभग दो घण्टे पश्चात् मालूम हुआ कि एजण्डा रोक दिया गया। मैं तुरन्त कार्यालय पहुँचा। एजण्डा घुमाना तथा अविलम्ब बैठक बुलाकर प्रधानमन्त्री के चुनाव कराने का दृढ़ निश्चय मैं कर चुका था। प्रधानमन्त्री के निर्वाचन में विलम्ब होना देश तथा विदेश दोनों को सदिग्ध वातावरण में रखना था। राजनीति में अनिश्चितता की यह स्थिति स्वस्थ नहीं कही जाती। राजनीति विज्ञान का विद्यार्थी होने के कारण इतना मैं समझता था। जिन महाशय ने एजण्डा रुकवा दिया था वे आये। मेरे पूछने पर कुछ उत्तर न दे सके। अतएव एजण्डा घुमाया गया।

बैठक होते ही मैंने कहा। अविलम्ब दिन तथा समय प्रधानमन्त्री के निर्वाचन के लिए निश्चित कर लिया जाय। कुछ मित्रों ने विरोध किया। एजण्डा पर यह विषय स्पष्ट नहीं लिखा था। परन्तु इस विरोध को निर्मूल इसलिए करार दिया गया कि कल की बैठक में निश्चय कर लिया गया था कि बैठक इसीलिए बुलाई जायगी। विवाद खड़ा हो गया। पुराने तर्क दुहराये गये। वर्किंग कमेटी समय तथा स्थान निश्चित करे। मेरा दिमाग इस विषय में साफ था। अन्ततोगत्वा बैठक १० बजे संसद-भवन में हुई। सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास किया गया अविलम्ब, प्रधानमन्त्री के निर्वाचन के लिए समय निश्चित किया जाय। कामराजजी से भी इस विषय में सलाह ले ली जाय। यहाँ और कुछ विशेष लिखना अप्रासंगिक होगा। विस्तार से पुनः कभी लिखूँगा। इसका फल हुआ। वर्किंग कमेटी तथा नेतृवृन्द को किसी निश्चय पर शीघ्र पहुँचने के लिए यह प्रस्ताव सहायक सिद्ध हुआ।

पण्डितजी के भवन में जिस समय भस्म-कलश रखा गया उसी समय से जनता की भीड़ कलश पर पुष्पार्पण करने के लिए एकत्रित होने लगी। पंक्तिबद्ध जनता आने लगी। प्रधानमन्त्री-भवन की निचली

मंजिल के हाल तथा बरामदे में गीता भजन तथा रामधुन का कार्यक्रम चलने लगा। एक बड़े मेज पर पण्डितजी का चित्र रख दिया गया। उसे माला तथा फूलों से सजाकर दीपक जला दिया गया। अस्थि-कलश पर पुष्पार्पण करने के पश्चात् वहाँ दर्शनार्थी आने लगे। पण्डितजी के चित्र को प्रणाम करते। उदास मन प्रधानमन्त्री भवन से बाहर निकल जाते।

प्रयाग के लिए प्रस्थान



पण्डितजी के अस्थि-कलश की अन्तिम-यात्रा प्रयाग-संगम पर अस्थिविसर्जनार्थ होने वाली थी। इसका प्रबन्ध सुरक्षा तथा गृह विभाग ने मिलकर विस्तार के साथ बना लिया था। महात्मा गांधी का अस्थि प्रवाह संगम में किया गया था। उस समय की फाइलें निकाल ली गईं। एक खाका बना-बनाया मिल गया था। उसमें किंचित् संशोधन एवं परिवर्धन करने के पश्चात् सुनिश्चित योजना सुविधाजनक बना ली गई।

स्वर्गीय श्री दासप्पा उन दिनों रेलवे-मन्त्री थे। उन्होंने रेल-अधिकारियों के साथ सूक्ष्म-से-सूक्ष्म ब्यौरे सहित दिल्ली स्टेशन से प्रयाग तक का कार्यक्रम बना लिया। गाड़ी के लौटने का भी कार्यक्रम निश्चित कर लिया गया था। कुछ विशिष्ट सज्जन वायुयान से जाने वाले थे उनका भी कार्यक्रम निश्चित कर लिया गया। प्रधानमन्त्री भवन का हरा दूर्वापूर्ण लान सूना लगता था। दर्शनार्थियों के पैरों की रगड़ के कारण लान की घास हरित के स्थान पर कुछ उजली लगने लगी थी।

पण्डितजी के अन्नमय शरीर का अवशेष धातु आज विदा होने वाला है अतएव ब्राह्ममुहूर्त से ही तैयारी होने लगी थी। स्थान धूप अगरबत्ती तथा पुष्पों से सुवासित हो गया था।

पण्डितजी का कलश पूर्ववत् उनकी प्रिय सोफा कुर्सी पर, जिस पर

वे नित्य बैठा करते थे, पुष्पों से सुसज्जित विराजमान था। एक पण्डित जी मन्द-ध्वनि से गीता पढ़ रहे थे। वहीं पर रामधुन तथा भजन का आयोजन कर दिया गया था।

ठीक प्रातःकाल ६ बजे ७ जून को श्रीमती इन्दिरा गांधी, कृष्णा हठीसिंह तथा पद्मजा नायडू आईं। वे प्रणाम कर यथास्थान बैठ गईं। मधुर लय से प्रार्थना आरम्भ हुई। बीसों लोग प्रार्थना में सम्मिलित थे।

पण्डितजी का अस्थि-कलश उठाने के पूर्व शेख अब्दुल्ला ने जसमिन-पुष्प अस्थि-कलश पर चढ़ाया। पण्डितजी के निजी सेवक तथा कर्मचारियों ने पुष्पांजलि आर्द्र-नेत्रों से अर्पित की। उन्होंने भूमि पर लेटकर अपने स्वामी का साष्टांग दण्डवत किया। तत्पश्चात् सर्वश्री लालबहादुर शास्त्री नन्दा और चौहान ने माल्यार्पण किया।

राजीव तथा संजय नंगे पांव श्वेत वस्त्र पहने ठीक ६ बजकर २० मिनट पर अस्थि-कलश के समीप आये। उन्हें देखते ही सबकी आँखें भर आईं। व कुर्सी के पास आकर खड़े हो गये। करबद्ध अपने नाना को श्रद्धा-भक्तिपूर्वक प्रणाम किया। संकेत मिलने पर उन्होंने कलश के नीचे हाथ लगाया। महिलाओं के आँचल नेत्रों से लग गये। पण्डित जी के वे सेवक जिन्होंने पण्डितजी की सेवा में अपना पुरुषार्थ लगा दिया था, रो उठे। पण्डितजी की उस सोफा-कुर्सी पर, जिस पर वे अपने जीवनकाल में बैठा करते थे जिस पर वे दिवंगत होने पर भी अस्थि-रूप नौ दिनों तक दर्शनार्थियों को देखते जीवितावस्था तुल्य बैठे रहे उस पर रखे कलश को राजीव तथा संजय ने ठीक ६ बजकर २५ मिनट पर उठाया।

तोपगाड़ी सादगी से पुष्पों द्वारा सजाई गई थी। गत २८ मई को शवयात्रा के समय तोपगाड़ी जैसी थी उसी प्रकार आज भी रखी गई थी। उस पर आयताकार दुहरी रेलिंग लगा प्लेटफार्म बना था। उसके पास में वर्गाकार एक छोटा मंच जिस पर श्वेत वस्त्रों से लपेटा गया एक चौकोर आसन बना था। उसी पर कलश रखने के लिए स्थान बना था। उस पर कलश रख दिया गया। दोनों ओर सशिर उल्टी बन्दूक

बाईं तरफ दबाये बाएँ हाथ से कुन्दा तथा दाहिने हाथ को पीठ से ले जाकर बन्दूक की नली पकड़कर, शोक-मुद्रा में खड़े हो गये थे।

अमलताश के नीबू रंग के पुष्प कलश उठने पर एक-एक करके उस खाली कुर्सी पर एक-एक टोप अश्रु-बिन्दु की तरह चुपचाप गिरने लगे। पण्डितजी का शव २७ तथा २८ मई को भवन के सेण्ट्रल हाल के जिस द्वार के सम्मुख दर्शनार्थ रखा गया था उसी द्वार की सबसे ऊपर वाली सीढ़ी पर राजीव तथा संजय कलश लेकर खड़े हो गये। डिटेचमेंट ने जो द्वारमण्डप में पंक्तिबद्ध खड़ा था 'आर्म प्रजेण्ट' अर्थात् सैनिक अभिवादन किया।

प्रधानमंत्री-भवन के द्वारमण्डप के सामने वाले लान में सीढ़ियों के समीप नभसेना का बैण्ड खड़ा था। अस्थि के द्वार-देश पर आते ही सैनिकों ने 'आर्म प्रजेण्ट' किया। जब तक अस्थि-कलश तोपगाड़ी पर पूर्णतया रख नहीं दिया गया सैनिक अभिवादन की मुद्रा में खड़े रहे। उसके पश्चात् वे 'आर्डर आर्म' तथा 'शस्त्र कन्धे' की मुद्रा में अपनी गाड़ियों पर चले गये।

इस छोटे से अस्थि-यात्री-दल ने ठीक ६ बजकर ४५ मिनट पर प्रधानमंत्री भवन से प्रस्थान किया। पहले का कार्यक्रम ६ बजकर ३० मिनट पर प्रस्थान करने का था। १५ मिनट की देर हो गई। नभसेना के बैण्ड ने शोकगान 'फ्लावर्स आफ दि फोरेस्ट' की धुन बजाई।

अस्थि-वाहक गाड़ी के अग्रिम भाग में स्थल, नौ तथा नभसेना के प्रधान एक गाड़ी पर थे। जलूस के सबसे आगे ब्रिगेडियर शिव दयालसिंह थे। तोरणद्वार तक पण्डितजी के निजी सेवक गाड़ी के पीछे-पीछे आँसू बहाते आये। सैनिक उस समय तक शोक धुन बजाते रहे जब तक कि पण्डितजी की अस्थि-वाहक गाड़ी ने प्रधानमंत्री-भवन के लौह तोरणद्वार को सदा और सर्वदा के लिए पार किया। अस्थि-वाहक गाड़ी के बाहर निकल जाने पर बैण्ड वाले गाड़ी पर बैठकर दूसरे मार्ग से नई दिल्ली स्टेशन की तरफ रवाना हो गये। अस्थि-वाहक गाड़ी के पृष्ठभाग में इन्दिरा गांधी आदि की गाड़ियों की पंक्ति मन्दगति से

वे नित्य बैठा करते थे, पुष्पों से सुसज्जित विराजमान था। एक पण्डित जी मन्द-ध्वनि से गीता पढ़ रहे थे। वहाँ पर रामधुन तथा भजन का आयोजन कर दिया गया था।

ठीक प्रातःकाल ६ बजे ७ जून को श्रीमती इन्दिरा गांधी, कृष्णा हठीसिंह तथा पद्मजा नायडू आईं। वे प्रणाम कर यथास्थान बैठ गईं। मधुर रूप से प्रार्थना आरम्भ हुई। बीसों लोग प्रार्थना में सम्मिलित थे।

पण्डितजी का अस्थि-कलश उठाने के पूर्व शेख अब्दुल्ला ने जैसमिन-पुष्प अस्थि-कलश पर चढ़ाया। पण्डितजी के निजी सेवक तथा कर्मचारियों ने पुष्पांजलि आर्द्र-नेत्रों से अर्पित की। उन्होंने भूमि पर लेटकर अपने स्वामी को साष्टांग दण्डवत किया। तत्पश्चात् सर्वश्री लालबहादुर शास्त्री, नन्दा और चौहान ने माल्यार्पण किया।

राजीव तथा सजय नंगे पाँव श्वेत वस्त्र पहने ठीक ६ बजकर २० मिनट पर अस्थि-कलश के समीप आये। उन्हें देखते ही सबकी आँखें भर आईं। वे कुर्सी के पास आकर खड़े हो गये। करबद्ध अपने नाना को श्रद्धा भक्तिपूर्वक प्रणाम किया। संकेत मिलने पर उन्होंने कलश के नीचे हाथ लगाया। महिलाओं के आँचल नेत्रों से लग गये। पण्डित-जी के वे सेवक जिन्होंने पण्डितजी की सेवा में अपना पुरुषार्थ लगा दिया था रो उठे। पण्डितजी की उस सोफा-कुर्सी पर, जिस पर वे अपने जीवनकाल में बैठा करते थे जिस पर वे दिवगत होने पर भी अस्थि-रूप नौ दिनों तक दर्शनार्थियों को देखते जीवितावस्था तुल्य बैठे रहे उस पर रखे कलश को राजीव तथा सजय ने ठीक ६ बजकर २५ मिनट पर उठाया।

तोपगाड़ी सादगी से पुष्पों द्वारा सजाई गई थी। गत २८ मई को शवयात्रा के समय तोपगाड़ी जैसी थी उसी प्रकार आज भी रखी गई थी। उस पर आयताकार सुनहरी रेलिंग लगा प्लेटफार्म बना था। उसके पास में वर्गाकार एक छोटा मंच बिना श्वेत वस्त्रों से लपेटा गया एक चौकोर आसन बना था। उसी पर कलश रखने के लिए स्थान बना था। उस पर कलश रख दिया गया। दोनों ओर सैनिक उल्टी बन्दूक

बाईं तरफ दबाए, बाएँ हाथ से कुन्दा तथा दाहिने हाथ को पीठ से ले जाकर बन्दूक की नली पकड़कर, शोक-मुद्रा में खड़े हो गये थे।

अमलतास के नीबू रंग के पुष्प कम्पन उठने पर एक-एक करके उस खाली कुर्सी पर एक-एक टाप अश्रु-बिन्दु की तरह चुपचाप गिरने लगे। पण्डितजी का शव २७ तथा २८ मई को भवन के सेण्ट्रल हाल के जिस द्वार के सम्मुख दर्शनार्थ रखा गया था उसी द्वार की सबसे ऊपर वाली सीढ़ी पर राजीव तथा संजय कलश लेकर खड़े हो गये। डिटेचमेंट ने जो द्वारमण्डप में पंक्तिबद्ध खड़ा था 'आर्म प्रजेण्ट' अर्थात् सैनिक अभिवादन किया।

प्रधानमन्त्री-भवन के द्वारमण्डप के सामने वाले लान में सीढ़ियों के समीप नभसेना का बैण्ड खड़ा था। अस्थि के द्वार-तल पर आते ही सैनिकों ने 'आर्म प्रजेण्ट' किया। जब तक अस्थि-कलश तोपगाड़ी पर पूर्णतया रख नहीं दिया गया सैनिक अभिवादन की मुद्रा में खड़े रहे। उसके पश्चात् वे 'आर्डर आर्म' तथा 'शस्त्र कन्धे' की मुद्रा में अपनी गाड़ियों पर चले गये।

इस छोटे से अस्थि-यात्री-दल ने ठीक ६ बजकर ४५ मिनट पर प्रधानमन्त्री-भवन से प्रस्थान किया। पहले का कार्यक्रम ६ बजकर ३० मिनट पर प्रस्थान करने का था। १५ मिनट की देर हो गई। नभसेना के बैण्ड ने शोकगान 'फ्लावर्स आफ दि फोरेस्ट' की धुन बजाई।

अस्थि-वाहक गाड़ी के अग्रिम भाग में स्थल नौ तथा नभसेना के प्रधान एक गाड़ी पर थे। जलूस के सबसे आगे ब्रिगेडियर गिल दयालसिंह थे। तोरणद्वार तक पण्डितजी के निजी सेवक नाथू के पीछे-पीछे आँसू बहाते आये। सैनिक उस समय तक शोक धुन बजाते रहे जब तक कि पण्डितजी की अस्थि-वाहक गाड़ी ने प्रधानमन्त्री भवन के सिंह तोरणद्वार को सदा और सर्वदा के लिए पार किया। अस्थि-वाहक गाड़ी के बाहर निकल जाने पर बैण्ड वाले गाड़ी पर बैठकर दूसरे रास्ते से नई दिल्ली स्टेशन की तरफ रवाना हो गए। अस्थि-वाहक गाड़ी के पृष्ठभाग में इन्दिरा गांधी आदि की गाड़ियों की पंक्ति [illegible]

चलने लगी। अस्थि-वाहक गाड़ी के साथ मोटरों का एक काफिला था। ये गाड़ी के पीछे चलने लगे। यह गाड़ियों का जलूस तीन मूर्ति मार्ग किंग जार्ज एवेन्यू, विजय चौक राजपथ और जनपथ के चौराहे से राजपथ छोड़कर जनपथ होता हुआ कनाटप्लेस तथा जनपथ के चौराहे पर पहुँच गया।

वहाँ से गाड़ी एक सैनिक जलूस के साथ चलने वाली थी। अग्रगामी अनुरक्षक दल में स्थलसेना के ३३ नौसेना के ३३ तथा नभसेना के ३३ सनिक थे। उनके पीछे बैंड था। उसके पीछे गाड़ी थी। उसे आज सैनिक नहीं बल्कि एक खुली गाड़ी खींच रही थी। प्रधान मंत्री भवन से रेलवे प्लेटफार्म तक लम्बे मार्ग पर ३ हजार सनिक उल्टे शस्त्र के साथ पंक्तिबद्ध खड़े थे।

पृष्ठभागीय अनुरक्षक दल में स्थलसेना के ३३ नौसेना के ३३ तथा नभसेना के ३३ सैनिक थे। पथ के दोनों तरफ स्थल नौ तथा नभसेना के सनिक शोक-मुद्रा में खड़े थे।

कालम कमाण्डर जलूस के पंक्तिबद्ध होते ही आगे आ गये। गाड़ी के पीछे शोक प्रदर्शनकर्ता थे। वे सनिक मन्दगति से नई दिल्ली स्टेशन की ओर चलने लगे। सैनिक बैंड की गति पर पद उठाते और रखते चले। अन्य शोक प्रदर्शक नतमस्तक गाड़ी के पीछे अनुकरण करने लगे। उनमें उपराष्ट्रपति जाकिर हुसैन सरदार हुकुमसिंह नन्दाजी लालबहादुर शास्त्री तथा संसद सदस्य मुख्य थे। पृष्ठभाग में भी तीनों सेनाओं के ९९ सनिक अनुरक्षक दल में थे।

आज जनता की मनोवृत्ति पूर्वकालीन शवयात्रा तुल्य नहीं थी। जनता काष्ठमूर्तिवत् शान्त पथ के दोनों पार्श्वों में खड़ी थी। शोर नहीं हो रहा था। एक-दूसरे को देखकर स्वयं लोग चुप हो जाते थे। जिह्वा की अपेक्षा आँखों के संकेत से मनोभावना व्यक्त कर देते थे। स्थान-स्थान पर लोग मिलकर रामधुन गाते थे। पूरे सैनिक सम्मान के साथ यात्रा आरम्भ हुई थी। भारतीय जनता ने अनुपमेय स्नेह का परिचय दिया था।

मैं कुछ पहले स्टेशन आ गया था। श्री सत्यनारायण सिंह भी मेरे पश्चात् पहुँच गये थे। स्टेशन पर आकाशवाणी के कार्यकर्त्ता पहुँचकर व्यवस्था ठीक कर रहे थे। क्षण-क्षण का समाचार प्रसारित हो रहा था। आकाशवाणी की तरफ से प्रधानमन्त्री-भवन तीन मूर्ति मार्ग जन पथ-कनाट सर्कस के चौराहे, स्टेशन वाली सड़क सेरीमोनियल रोड तथा कनाट सर्कस के चौराहे एवं सेरीमोनियल प्लेटफार्म से प्रसारण का प्रबन्ध किया गया था। सेरीमोनियल प्लेटफार्म के मण्डपद्वार के बाहर सैनिक पंक्तिबद्ध खड़े थे। मण्डपद्वार की सीढ़ी से प्लेटफार्म पर आने वाले द्वार तक मध्यवर्ती मार्ग जिससे अस्थि जाने वाली थी दोनों ओर विशिष्ट व्यक्ति खड़े थे। बीच में खास कारपेट मण्डप द्वार से प्लेटफार्म की सीढ़ी तक बिछाया गया था। उसके बाएँ पार्श्व में राजदूतगण विदेशी दूतावासों के अधिकारी तथा वाम पार्श्व में भारतीय विशिष्ट व्यक्ति थे। पाला के न्यायमन्त्री जो इसी कार्य के लिए शोक प्रदर्शनार्थ आये थे, अपने शिष्टमण्डल के साथ उपस्थित थे। राजदूतावास से सोमा से ७ बजकर १५ मिनट प्रातः स्टेशन पर आने के लिए निवेदन कर दिया गया था।

मेरे पहुँचने के पाँच मिनट पश्चात् राष्ट्रपतिजी पहुँचे। राष्ट्रपति ट्रेन के प्रस्थान करने से आध घण्टे पूर्व पहुँच गये थे। मैं उनकी बगल में प्लेटफार्म पर जाने वाली सीढ़ी के पास खड़ा हो गया। यहाँ पर कुछ समय पश्चात् कामराज नाडार भी आ गये। मन्त्रीगण तथा अन्य विशिष्ट व्यक्ति अस्थि-जलूस में थे। संसद-सदस्य तथा गाड़ी से संगम तक की यात्रा करने वाले व्यक्ति गाड़ी में यथास्थान बैठ गये थे। अस्थि गाड़ी में रखने के पश्चात् ही गाड़ी चल देने वाली थी। अतएव सभी जाने वाले यथास्थान बैठ चुके थे।

शिष्टाचारीय (सेरीमोनियल) प्लेटफार्म के समीप पहुँचने पर सैनिक स्लो टाइम में उल्टे शस्त्र के साथ चलने लगे। द्वारमण्डप के समीप पहुँचते ही स्लास तथा समसमा से सैनिक शस्त्र कन्धे पर रख कर चलने लगे। नौसैनिक स्नाप आम की मुद्रा में आगे बढ़े। द्वार-

मण्डप के पास पहुंचने पर अग्रगामी अनुरक्षक दल बण्ड दल के सहित सीधा आगे बढ़ गया। पुन: वे दाहिनी ओर मुड़ गये। बैण्ड उनके दाहिने पार्श्व था। डिटेचमेंट २ तथा १२ पंक्तिबद्ध अपने स्थान पर द्वारमण्डप से प्रवेशद्वार तक एक-दूसरे के सामने-सामने खड़े हो गये। अस्थि-वाहक गाड़ी द्वारमण्डप के बाहर मध्य में आकर खड़ी हो गई। राजीव तथा संजय गाड़ी के पीछे खड़े हो गये।

गाड़ी के रुकते ही अनुरक्षक दल के कमाण्डर ने 'जनरल सल्यूट' का आदेश दिया। उसके तुरन्त पश्चात् ही 'प्रजेण्ट आर्म' की आज्ञा दी। बण्ड ने सैनिक धुन बजाई। कुछ समय पश्चात् उल्टे शस्त्र पर हाथ रखकर आराम की मुद्रा में खड़े हो गये। उसके पश्चात् कलश उठाने वाले सीढ़ी से गाड़ी पर चढ़े उन्होंने कलश उठाया।

डिटेचमेंट ने भी आम प्रजेण्ट अनुरक्षक दल के आदेश पर किया। कुछ समय पश्चात् शस्त्र उल्टे करते हुए दायें तथा बाएँ घूम गये और द्वारमण्डप के प्रवेशद्वार की ओर मुख कर खड़े हो गये। इस समय बैण्ड प्लेटफार्म और द्वारमण्डप के हाल के मध्यवर्ती मार्ग के वामपार्श्व में शोक धुन बजा रहा था। अस्थि-कलश के साथ राजीव तथा संजय ने सैनिकों की पंक्ति के मध्य से द्वारमण्डप से भीतर हाल में प्रवेश किया उनके पीछे स्थल सेना तथा नभसेना के मुख्याधिकारी 'चीफ आफ स्टाफ' थे। आसन पर कलश रखने के पश्चात् डा० राधाकृष्णन् लालबहादुर कामराज राजदूतगण भारत के मन्त्री श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए पंक्तिबद्ध खड़े हो गये। सब श्वेत रंग से रंगी धोती के प्रवेशद्वार के सम्मुख पहुँच गये। मेरी आँखें पहली बार न जाने क्यों नौ-सैनिकों की शोकगान धुन तथा पण्डितजी की अस्थि के गाड़ी में प्रविष्ट होते समय भर आई।

मुझे २७ मई से पण्डितजी की भस्म को आकाश से गिराते समय तक यह समय अत्यन्त करुण लगा। पण्डितजी की गाड़ी देखकर मन दुःखी हो गया। पण्डितजी दिल्ली आये थे। राज्य-भार सँभाला था। आज व दिल्ली से विदा हो रहे हैं। अब कभी नहीं लौटेंगे। विदाई की

यह वेदना अनायास मन में उठने लगी। सैनिकों के बैण्ड से मुझे रुला देने वाली ध्वनि निकलती प्रतीत हो रही थी। मैं वहाँ ठहर न सका। भीड़ से निकलकर दूर पर आकर खड़ा हो गया।

अस्थि-स्पेशल

अस्थि-कलश की गाड़ी बाहर भीतर श्वेत रंगी तथा एयर कण्डीशन थी। बाहर चारों तरफ छोटी-छोटी राष्ट्रीय झण्डियाँ लगाकर सजा दी गई थी। भीतर भी सुचारु रीति से श्वेत पुष्पों की लड़ी से खूब सजाई गई थी। अस्थि-कलश के चारों ओर छत से श्वेत पुष्पों की लड़ियाँ झूल रही थीं। लाल गुलाब की पंखुड़ियाँ फर्श पर तथा अस्थि कलश के चौकोर आसन पर बिखरी थीं। आसन तिरंगे झण्डों से लिपटा था। फर्श पर श्वेत खद्दर की चान्दनी बिछी थी। इन्दिराजी स्वयं श्वेत वस्त्र धारण किए थीं। स्पेशल ट्रेन का और कोई डब्बा नहीं सजाया गया था। एक ही डब्बा सजने के कारण लोगों की दृष्टि अनायास आकृष्ट हो जाती थी। अस्थि-कलश कहाँ रखा है।

कश्मीर के शंकराचार्य पर्वत से कुछ मिट्टी आई थी। पण्डितजी को कश्मीर के जो पुष्प प्रिय थे। वे मँगा लिये गये थे। यह कश्मीर में पुष्पों के मुकुलित होने का ऋतु था। अतएव यथेष्ट पुष्प आ गये थे। मिट्टी तथा पुष्प पण्डितजी के साथ प्रयाग तक गये। वहाँ मिट्टी का भी प्रवाह अस्थि के साथ कर दिया गया। कमला नेहरू का देहावसान सन् १९३६ में हो गया था। उनकी अस्थि एक चाँदी की डिबिया में पण्डितजी अपने पास रखते थे। यह बात केवल इन्दिरा गांधी तथा विजयलक्ष्मी पण्डित जानती थीं। वह अस्थि भी साथ प्रयाग चली।

अस्थि डब्बे में फ्लड लाइट का प्रबन्ध था। उजाले के कारण बाहर से खूब अच्छी तरह चौड़ी खिड़की से भस्म-कलश दिखाई पड़ता था।

भस्म-कलश लेकर बोगी में राजीव, संजय तथा इन्दिरा गांधी ने ठीक ८ बजकर १० मिनट पर प्रवेश किया। श्वेत पुष्पों से सजी श्वेत गाड़ी में भस्म-कलश पहुँचा। भस्म-कलश रखने के लिए बनी

पीठिका के कोनों पर खड़े सैनिकों ने अस्थि को सैनिक अभिवादन किया। तत्पश्चात् शस्त्र उल्टे कर शोक-मुद्रा में नतमस्तक बाहर देखते हुए खड़े हो गये। भस्म कलश पीठिका अर्थात् आसन पर रख दिया गया।

सैनिक बारी बारी से बदले जाते थे। चार की संख्या में अस्थि कलश के चारों कोनों पर, बाहर देखते हुए इलाहाबाद पहुँचने तक रात दिन वे खड़े रहे। प्रत्येक ठहरने वाले स्टेशन पर चार सैनिक उतरते थे। बोगी के दोनों तरफ उल्टे शस्त्र किये द्वार के समीप प्लेटफार्म पर शोक मुद्रा में खड़े हो जाते थे। गाड़ी के अन्दर धूम्रपान करना वर्जित था। डब्बे में एक तरफ रामधुन तथा भजन और गीता पढ़ने वाले तथा दूसरी ओर श्रीमती इन्दिरा गांधी एवं कुछ विशिष्ट लोग तथा सगे-सम्बन्धी बैठे थे।

अस्थि प्रवाह का कार्यक्रम त्रयोदशाह के दिन रखा गया था। पण्डितजी की स्वास २७ मई को दिल्ली में बन्द हुई थी। अस्थि प्रवाह ८ जून को संगम में किया गया। मेरी दृष्टि में यह उचित काम नहीं हुआ। धार्मिक परम्परा के अनुसार दसवाँ अर्थात् मृत्यु के १० दिन के अन्दर अस्थि-विसर्जन करना आवश्यक माना गया है। एकादशाह के दिन कुटुम्बी जन शुद्ध होते हैं। त्रयोदशाह के दिन पुण्य कर्म तथा ब्राह्मण भोजनादि प्रेत की पितृलोक यात्रा के निमित्त पिण्ड दानादि किया जाता है। किन्तु पण्डितजी के यहाँ कोई व्यवस्था नहीं थी। कोई निश्चित योजना धार्मिक संस्कार की नहीं बनाई गई था। श्रीकृष्णदत्त भारद्वाज, माडर्न स्कूल दिल्ली ने श्री नन्दाजी को ३१ मई को ही इस सम्बन्ध में पत्र लिखा था। अस्थि-प्रवाह ५वीं जून के पहले किया जाय तो उत्तम होगा। उन्हें उत्तर दे दिया गया—सब कार्यक्रम निश्चित कर लिया गया है। अतएव उसमें परिवर्तन की गुंजाइश नहीं है।

प्रयाग में अस्थि प्रवाह का कोई धार्मिक महत्त्व नहीं है। कुछ दिन से यह प्रथा चल निकली है। मैंने शास्त्रों में बहुत खोजा कि इस बात का कोई प्रमाण तथा उल्लेख मिल जाय परन्तु कहीं मिल नहीं सका।

पण्डितजी को प्रयाग से उनका घर होने के कारण विशेष प्रेम था। अतएव उन्होंने सबसे इस बात पर जोर दिया कि प्रयाग संगम पर अस्थि विसर्जन किया जाय। सोमवार ८ जून को सार्वजनिक छुट्टी दिल्ली में घोषित कर दी गई थी।

जिस दिन ३० मई को अस्थि चयन शान्ति-वन में किया गया था उसी दिन उत्तर प्रदेश सरकार को तार दे दिया गया था कि ८ जून को अस्थि प्रवाह प्रयाग संगम पर होगा। महात्माजी का अस्थि प्रवाह १३वें दिन हुआ था। उसी के आधार पर मैं समझता हूँ कि पण्डितजी के अस्थि प्रवाह का दिन निश्चित कर लिया गया।

अधिकारियों की २ जून, १९६४ को बैठक हुई। उसमें १८ बोगी की स्पेशल गाड़ी का प्रबन्ध किया गया। कुछ समाचार-पत्रों ने स्पेशल में २० डब्बों का होना लिखा है। कुछ ने १८ और कुछ ने १९ डब्बों के स्पेशल का वर्णन किया है। मैंने इस विषय में अनुसन्धान किया। इस सम्बन्ध में मालूम हुआ कि ४ जून सन् १९६४ को पुनः अधिकारियों की एक बैठक हुई। जिसमें पूर्व योजना में यह संशोधन किया गया कि ४ एयर कंडीशन के स्थान पर ३ एयर कंडीशन डब्बे और ८ प्रथम श्रेणी के डब्बों के स्थान पर ९ प्रथम श्रेणी के डब्बे होंगे। एक जनरेटर के स्थान पर २ जनरेटर कार स्पेशल में लगाई गईं। इस प्रकार स्पेशल गाड़ी का गठन निम्नलिखित प्रकार से किया गया

(१) २ इंजिन (२) १ ब्रेकवान (३) ९ प्रथम श्रेणी के डब्बे (४) १ डब्बा वेस्टी बूल्स-सिक्यूरिटी स्टाफ आदि के लिए, (५) १ अस्थि-कलश का डब्बा, (६) ३ एयर कण्डीशन के डब्बे (७) ३ प्रथम श्रेणी के डब्बे (८) १ द्वितीय श्रेणी का डब्बा, (९) १ ब्रेकवान (१०) २ जनरेटर।

कुल—१९ डब्बे
 २ इंजिन
 ———
 २१

पण्डितजी के सम्बन्धियों तथा कुटुम्बियों के लिए २१ एयर कन्डी

थान ४० प्रथम श्रेणी तथा ६ तृतीय श्रेणी के स्थान सुरक्षित किये गये। द्वितीय श्रेणी में सैनिक ३६, पुलिस ५० प्रधानमंत्री भवन के सेवक ६ तथा चपरासियों के लिए तृतीय श्रेणी में ३० स्थान सुरक्षित रखे गये थे। संसद-सदस्यों के लिए प्रथम श्रेणी के १०५ स्थान सुरक्षित रखे गये थे। इसी प्रकार कुछ स्थान विभिन्न विभागों तथा विशिष्ट सज्जनों के लिए रक्षित रखे गये थे।

निम्नलिखित व्यक्तियों के लिए विभिन्न प्रकार के स्थान निश्चित किये गये थे

सम्बन्धी ६० मंत्रीगण २० संसद-सदस्य ७० नान आफिसल ५०, दिल्ली पुलिस ३०, सैनिक ६० रेलवे ५०, अधिकारी ५० (आकाश वाणी सहित), प्रेस ५०।

कुल—४४०

प्रेस वालों में १८ विदेशी समाचार एजेंसियों के व्यक्ति थे।

किन्तु जितने लोगों के लिए स्थान निश्चित किये गये थे वे सब नहीं जा सके। गाड़ी में जाने वालों के जब नाम माँगे गये तो बहुत नाम आये। सबकी व्यवस्था की गई। परन्तु समय पर लोग नहीं आये। मंत्रीगण जो स्पेशल के साथ जाने वाले थे वे वायुयान से रवाना हुए। कारण यह था कि सबका मन मन्त्रिमण्डल के गठन की तरफ लगा था। बहुत उम्मीदवार पैदा हो गये थे। कुछ को भय हो गया था। कहीं वे नवीन मंत्रिमण्डल में स्थान न प्राप्त कर सकें। मैं जिस बोगी में था उसमें २८ व्यक्तियों के लिए प्रथम श्रेणी के स्थान रक्षित थे। लेकिन गाड़ी रवाना होने पर मैंने देखा उसमें कुल ८ व्यक्ति थे। यह मुझे अच्छा नहीं लगा।

स्पेशल गाड़ी के पूर्व एक पाइलेट इंजिन भी २० मिनट आगे चलता था। इसका उद्देश्य यह था कि लाइन साफ रहे और किसी प्रकार की दुर्घटना की आशंका न रह जाय।

स्पेशल गाड़ी निम्नलिखित स्टेशनों पर रुकी

	पाइलेट	स्पेशल	रुकना	गति
नई दिल्ली	आ०-प्र०	आ०-प्र०	मिनट	५० मील प्रतिघन्टा
	७ ३०	८		"
गाजियाबाद	८ १०-८ ३	८ ४०-९ १०	३०	"
खुरजा	९ ५०-१० ०५	१० २० १० ४०	२०	"
अलीगढ़	११ ०० १२ १०	११ ३० १२ ३०	६०	
हाथरस	१२ ४० १२ ५०	१३ ०५ १३ २५	२०	
टूण्डला	१३ ५५ १४ १०	१४ २५ १४ ५५	३०	"
फिरोजाबाद	१४ ४५ १५ ०५	१५ २०-१५ ५०	३०	"
शिकोहाबाद	१५ ५०-१६ ०५	१६ २०-१६ ४०	२०	"
इटावा	१७ ५ १७ २	१७ ३५ १८ ५	३०	
फफूंद	१८ ३० १८ ४५	१९ ० १९ २०	२०	"
कानपुर	२ १५-२२ २०	२ ४५ २२ ५०	१२५	
फतेहपुर	२३ ५ १ ३०	०० २० २ ००	१००	
मनौरी	——— ———	४ ०५-०४ १०	५	
इलाहाबाद	६ ३० ———	५ ००		

स्पेशल ट्रेन में मध्याह्न तथा रात्रिकाल के भोजन का प्रबन्ध किया गया था। दक्षिण भारत उत्तर भारत तथा यूरोपीय ढंग तीनों प्रकार के खाद्य पदार्थ के पैकेट तैयार रख लिये गये थे। उन्हें प्रत्येक डब्बे में बांट दिया गया था। गाड़ी में कौन व्यक्ति किस डब्बे और किस सीट पर बैठेगा इसकी सूचना एक कार्ड पर लिखकर ६ जून का सायंकाल यात्रा करने वालों के पास पहुँच गई थी।

महात्मा गांधी की स्पेशल ट्रेन ११-२-४८ को प्रातःकाल ५॥ बजे प्रयाग के लिए रवाना हुई थी और दूसरे दिन प्रातःकाल ६ बजे प्रयाग पहुँची थी। उसे दिल्ली से प्रयाग पहुँचने में २८ घण्टे लगे थे। पण्डित जवाहरलालजी की स्पेशल ८ बजे प्रातःकाल प्रस्थान कर ठीक ५ बजे प्रयाग २१ घण्टे में पहुँची थी। अन्तर यह था कि महात्माजी के समय जाड़े के दिन थे। सूर्योदय उस दिन ११ फरवरी को ६ बजकर २७

यान, ४० प्रथम श्रेणी तथा ६ तृतीय श्रेणी के स्थान सुरक्षित किये गये। द्वितीय श्रेणी में सैनिक १६, पुलिस ५० प्रधानमंत्री भवन के सेवक ६ तथा चपरासियों के लिए तृतीय श्रेणी में ३० स्थान सुरक्षित रखे गये थे। संसद-सदस्यों के लिए प्रथम श्रेणी के १०५ स्थान सुरक्षित रखे गये थे। इसी प्रकार कुछ स्थान विभिन्न विभागों तथा विशिष्ट सज्जनों के लिए रक्षित रखे गये थे।

निम्नलिखित व्यक्तियों के लिए विभिन्न प्रकार के स्थान निश्चित किये गये थे

सम्बन्धी ६० मंत्रीगण २० संसद-सदस्य ७० नान आफिसल ५० दिल्ली पुलिस ३० सैनिक ६० रेलवे ५०, अधिकारी ५० (आकाशवाणी सहित) प्रेस ५०।

कुल—४४०

प्रेस वालों में १८ विदेशी समाचार एजेंसियों के व्यक्ति थे।

किन्तु जितने लोगों के लिए स्थान निश्चित किये गये थे वे सब नहीं आ सके। गाड़ी में जाने वालों के जब नाम माँगे गये तो बहुत नाम आये। सबकी व्यवस्था की गई। परन्तु समय पर लोग नहीं आये। मंत्रीगण जो स्पेशल के साथ जाने वाले थे वे वायुयान से रवाना हुए। कारण यह था कि सबका मन मंत्रिमण्डल के गठन की तरफ लगा था। बहुत उम्मीदवार पैदा हो गये थे। कुछ को भय हो गया था। कहीं वे नवीन मंत्रिमण्डल में स्थान न प्राप्त कर सकें। मैं जिस बोगी में था उसमें २८ व्यक्तियों के लिए प्रथम श्रेणी के स्थान रक्षित थे। लेकिन गाड़ी रवाना होने पर मैंने देखा उसमें कुल ८ व्यक्ति थे। यह मुझे अच्छा नहीं लगा।

स्पेशल गाड़ी के पूर्व एक पाइलेट इंजिन भी २० मिनट आगे चलता था। इसका उद्देश्य यह था कि लाइन साफ रहे और किसी प्रकार की दुर्घटना की आशंका न रह जाय।

स्पेशल गाड़ी निम्नलिखित स्टेशनों पर रुकी

	पाइलेट	स्पेशल	रुकना	गति
नई दिल्ली	आ०-प्र०	आ०-प्र०	मिनट	५० मील प्रतिघण्टा
	७ ३०	८		״
गाज़ियाबाद	८ १०-८.३०	८ ४०-९ १०	३०	
खुरजा	९.५०-१० ०५	१० २० १० ४०	२०	
अलीगढ़	११ ०० १२ १०	११ ३० १२ ३०	६०	
हाथरस	१२ ४० १२ ५०	१३ ०५ १३ २५	२०	״
टूण्डला	१३ ५५ १४ १०	१४ २५ १४ ५५	३०	״
फिरोज़ाबाद	१४ ४५ १५ ०५	१५.२० १५ ५०	३०	
शिकोहाबाद	१५ ५० १६ ०५	१६ २० १६ ४०	२०	
इटावा	१७ ०५ १७ २०	१७ ३५ १८ ०५	३०	।
फफूंद	१८ ३० १८ ४५	१९ ००-१९ २०	२०	
कानपुर	२० १५-२२ २०	२० ४५ २२ ५०	१२५	״
फतेहपुर	२३ ५० १ ३०	० २० २ ००	१००	
मनौरी	—— ——	०४ ५-०४ १०	५	״
इलाहाबाद	४ ३० ——	५ ००		

स्पेशल ट्रेन में मध्याह्न तथा रात्रिकाल के भोजन का प्रबन्ध किया गया था। दक्षिण भारत, उत्तर भारत तथा यूरोपीय ढंग तीनों प्रकार के खाद्य पदार्थ के पैकट तैयार रख लिये गये थे। उन्हें प्रत्येक डब्बे में बाँट दिया गया था। गाड़ी में कौन व्यक्ति किस डब्बे और किस सीट पर बठेगा इसकी सूचना एक कार्ड पर लिखकर ६ जून को सायंकाल यात्रा करने वालों के पास पहुँच गई थी।

महात्मा गांधी की स्पेशल ट्रेन ११-२-४८ को प्रातःकाल ५॥ बजे प्रयाग के लिए रवाना हुई थी और दूसरे दिन प्रातःकाल ९ बजे प्रयाग पहुँची थी। उसे दिल्ली से प्रयाग पहुँचने में २८ घण्टे लगे थे। पण्डित जवाहरलालजी की स्पेशल ८ बजे प्रातःकाल प्रस्थान कर ठीक ५ बजे प्रयाग २१ घण्टे में पहुँची थी। अन्तर यह था कि महात्माजी के समय जाड़े के दिन थे। सूर्योदय उस दिन ११ फरवरी को ६ बजकर २७

मिनट पर हुआ था। पण्डितजी के समय ग्रीष्म ऋतु था और सूर्योदय ५ बजकर १४ मिनट पर हुआ था। महात्माजी की अस्थि ब्राह्म मुहूर्त में पहुँची थी। जवाहरलालजी की अस्थि प्रभातकाल में प्रयाग पहुँची थी। परन्तु दोनों सूर्योदय से पूर्व ही पहुँच गई थीं। महात्माजी की स्पेशल उन सभी स्टेशनों पर खड़ी हुई थी जिन पर जवाहरलालजी की खड़ी हुई थी। केवल अपवाद यह था कि जवाहरलालजी की स्पेशल मनौरी पर रुकी परन्तु महात्माजी की स्पेशल मनौरी पर न रुककर रसूलाबाद में ८ बजकर १० मिनट रात्रि से लेकर प्रातःकाल ५ बजकर ३० मिनट तक रुकी रही। अर्थात् रात्रि में महात्माजी की स्पेशल रुकी रही। परन्तु प० जवाहरलालजी की स्पेशल रात्रि पर्यन्त चलती रही। महात्माजी की स्पेशल प० जवाहरलाल की स्पेशल की अपेक्षा कम समयों तक स्टेशनों पर ठहरती रही। महात्माजी की स्पेशल फतेहपुर तक ४ घण्टा १ मिनट तक मार्गों में रुकी जबकि पण्डितजी की स्पेशल ८ घण्टा १० मिनट मार्गवर्ती उक्त स्टेशनों पर ठहरी थी।

महात्माजी की स्पेशल में एयर कण्डीशन नहीं था। प्रथम और द्वितीय श्रेणी के डब्बे नहीं थे। उसमें केवल तृतीय श्रेणी के ४ डब्बे तथा एक द्वितीय श्रेणी के गार्ड का डब्बा था। इस प्रकार महात्माजी की स्पेशल में कुल ४ डब्बे तृतीय श्रेणी के थे। जबकि पण्डितजी की स्पेशल में ११ डब्बे रखे गये थे। तथा एयर कण्डीशन के ४ डब्बे थे। अस्थि एयर कण्डीशन में रखी गई थी।

गृह विभाग ने तार द्वारा ३० मई को जिस दिन अस्थि चयन किया गया था, उत्तर प्रदेश सरकार को सूचित कर दिया था कि अस्थि विसर्जन का कार्यक्रम ८ जून सन् १९६४ को किया जायगा। कुछ दिन पश्चात् विस्तृत कार्यक्रम भी भेज दिया गया।

विचार था कि सभी लोग स्पेशल ट्रेन से यात्रा करेंगे परन्तु कुछ समय पूर्व २ हवाई जहाजों का प्रबन्ध किया गया। प्रथम हवाई जहाज सुरक्षा विभाग का डाईकाउण्ट था। यह ६ बजे प्रातःकाल पालम से प्रयाग के लिए छूटा। उसमें निम्नलिखित व्यक्तियों के लिए स्थान सुर

क्षित रखा गया सर्वश्री (१) लालबहादुर शास्त्री और उनके साथ अन्य ३ व्यक्ति (५) सरदार स्वर्णसिंह (६) श्री सुब्रह्मण्यम (७) राजबहादुर (८) नित्यानन्द कानूनगो (९) रघुरमैया (१०) हाजर-नवीस (११) वी० आर० भगत (१२) दिनेशसिंह (१३) महमद मेहदी (१४) प्रधानमन्त्री के व्यक्तिगत सचिव (१५) कामनवेल्थ सचिव (१६) विदेश मन्त्रालय के विशेष सचिव (१७) बी० एस० मूर्ति।

दूसरा सुपर कान्स्टलेशन हवाई जहाज ५॥ बजे प्रातःकाल पालम से इलाहाबाद के लिए रवाना हुआ। उसमें निम्नलिखित व्यक्तियों के लिए स्थान सुरक्षित था सर्वश्री (१) टी० टी० कृष्णमाचारी (२) कामराज नाडार, कांग्रेस अध्यक्ष (३) मनोमन (प्रधानमन्त्री कांग्रेस) (४) यशवन्त राव चौहान (५) महावीर त्यागी (६) सरदार हुकुम सिंह (अध्यक्ष लोकसभा) (७) रामसुभग सिंह (८) एस० के० डे (९) ओ० वी० अलगेशन (१० ११) श्रीमती डा० सौन्दरम तथा उनके पति (१२) एल० एन० मिश्र (१३) नाथपाई (१४) विभूति मिश्र (१५) आर० आर० मुरारका (१६) एम० जे० देसाई, प्रधान सचिव विदेश विभाग (१७) वाइस एडमिरल बी० एस० सोमन (१८) सचिव लोकसभा (१९) सुरक्षा मन्त्री का व्यक्तिगत स्टाफ (२०) सी० एन० एस० के ए० डी० सी०।

मैं नहीं कह सकता कि उक्त सज्जनों म से कितने लोगों ने वायुयान से यात्रा की अथवा कुछ और लोगों को वायुयान में स्थान दिया गया। सर्वश्री जाकिर हुसन नन्दा कृष्ण मेनन, मुरारजी देसाई, जगजीवन राम हुमायू कबीर, शेख अब्दुल्ला बक्शी गुलाम मुहम्मद तथा १०४ ससद सदस्य स्पेशल ट्रेन से ही गये थे। नवम्बर सन् १९६३ में नेहरूजी ने अपनी जीवितावस्था में ट्रेन यात्रा दुर्गापुर से चितरजन तक प्रथम ए० सी० ट्रेम इंजिन का धक्काकर उद्घाटन करने के निमित्त की थी। आज उनकी अन्तिम ट्रेन से यात्रा थी।

स्टेशम से गाड़ी छूटने के कुछ ही पूर्व एक ६५ वर्षीया वृद्धा हाथ

में पुष्प लिये रोती पण्डितजी के डब्बे के पास पहुँचने का अथक प्रयास कर रही थी। लोगों के सम्मुख, थाना के व्यायाम-त्री तथा बहुत लोग खड़े थे। महिला का परिश्रम देखकर एक सिपाही ने उसे सहारा दिया। वह डब्बे के पास आई। इन्दिरा गांधी डब्बे के द्वार पर आ गई। उन्होंने वृद्धा को पण्डितजी के अस्थि पर चढ़ाए पुष्प दिये। वृद्धा के श्रद्धा के पुष्प पण्डितजी के अस्थि-कलश पर प्रसन्नतापूर्वक बिखर गये। वह अपने अंचल से आँसू पोंछती जब तक ट्रेन दिखाई पड़ रही थी एक-टक देखती रही।

आज का दृश्य शान्त था हृदय को हिला देने वाला था। किसी प्रकार का शोरगुल नहीं था। धक्कमधक्का नहीं था। जो जहाँ खड़ा था वह वहीं स्थिर खड़ा था। अश्रुपूर्ण नेत्रों ने आज पण्डितजी को विदाई दी थी। गार्ड ने गाड़ी चलाने के लिए सीटी नहीं बजाई। गाड़ी के दोनों छोर पर तथा मध्य में तीन स्थानों पर हरी झण्डी लिये अधिकारी खड़े थे। उनकी झण्डी दिखाई देते ही २ इंजिनों तथा १६ बोगी वाली स्पेशल गाड़ी ठीक ८ बजकर १५ मिनट पर नयी दिल्ली के स्टेशन को पीछे छोड़ती आगे बढ़ी। प्लेटफार्म पर शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति रहा होगा जिसकी आँखें इस विदाई पर न भर आयी होंगी।

मार्ग में



नयी दिल्ली स्टेशन का प्लेटफार्म आगमन पर रोक लगा देने के कारण पूरा भरा नहीं था। किन्तु आउटर सिगनल से लेकर पुरानी दिल्ली स्टेशन तक रेलवे लाइन का मार्ग जनता से भरा था। समीपवर्ती मकानों पर भीड़ गुथी थी। मकान जैसे मनुष्यों के वन्दन वार तथा पुष्प मालाओं से सजा दिये गये थे। नयी दिल्ली से पुरानी दिल्ली तक की रेल की पटरियों के दोनों तरफ पहाड़ियों की चट्टानों में हरिजन झोपड़ी बनाकर रहते हैं। उन गरीबों की झोपड़ियों में सम्भ्रांत नागरिकों ने पण्डितजी की अस्थि-गाड़ी के दर्शनार्थ आश्रय लेना अच्छा समझा। हरिजनों की स्त्रियाँ अपने बच्चों को गोद में लिये चुपचाप गाड़ी का आना और चला जाना देखती रहीं। जैसे कुछ हो गया है। वह हो गया है जो नहीं होना चाहिए था। जनता ने जयनाद नहीं किया। वह आज दुःख से मूक थी। हृदय की भावनाएँ वाणी बनकर जिह्वा पर नहीं आ सकीं। शान्त जनता ने अन्तर्वेदना-जन्य प्रदर्शन द्वारा अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

पुरानी दिल्ली और शाहदरा के प्लेटफार्म भरे थे। जनता शान्त थी। वह पण्डितजी की शवयात्रा तथा शान्ति-वन में दर्शन प्राप्त कर चुकी थी। दर्शन के उल्लास के स्थान पर गम्भीरता आ गई थी। विदाई की वेदना ने उसे मूक बना दिया था।

उत्तर प्रदेश में प्रवेश करते ही भीड़ का रूप सर्वथा बदल गया।

गाजियाबाद से प्रयाग तक भारतवर्ष का सबसे लम्बा समतल मैदान है। पण्डित जवाहरलाल नेहरू का प्रदेश था। पण्डितजी उत्तर प्रदेश के सभी नगरों का भ्रमण कर चुके थे। वे अपने घर में जा रहे थे।

गाजियाबाद

गाजियाबाद में २५ हजार से अधिक की भीड़ रही होगी। दोनों तरफ प्लेटफार्म भरा था। गाड़ी मन्द गति से चलने लगी। प्लेटफार्म पर लोहे के पाइपों की रेलिंग लगाई गई थी। दुर्घटना से बचने का प्रबन्ध किया गया था। परन्तु प्रबन्ध छिन्न भिन्न हो गया। पुलिस तथा जनता दोनों ही अनुशासन रखने में असमर्थ थी।

गाजियाबाद पर दिल्ली का प्रभाव था। वहाँ भीड़ मिली-जुली थी। किन्तु आगे बढ़ने पर उत्तर प्रदेश की जनता मिली। उसका रूप रहन-सहन भिन्न था। रेल की पटरियों के दोनों तरफ दूर दूर से ग्रामीण आकर नतमस्तक खड़े हो गये थे। प्रत्येक छोटे स्टेशनों के बाहर बैल गाड़ी ऊँट साइकिल मोटर बस तथा ट्रक खड़े थे। जिसके पास जो साधन मिल गया था उसी पर सवारी कर दूर से आया था। छोटे स्टेशनों की छत पर बसों की छतों पर ट्रकों पर लोग खड़े थे।

खुरजा

खुरजा से स्टेशनों का वातावरण भी बदलने लगा। खुरजा से इलाहाबाद तक के स्टेशन जहाँ गाड़ी ठहरने वाली थी आम्र पल्लवों के तोरणों मालाओं तथा झण्डियों से सजाये गये थे। मालूम होता था पण्डितजी के स्वागतार्थ प्रत्येक स्टेशनों पर जनता उत्तम वस्त्रों में खड़ी है। महिलाओं ने अपनी बच्चियों का शृंगार किया था। बच्चों को उत्तम वस्त्र पहनाये थे। स्वयं रंग बिरंगे वस्त्रों में सजकर पण्डितजी का दर्शन करने उसी प्रकार आयी थीं जैसे उनकी जीवितावस्था में आती थीं।

खुरजा के स्टेशन पर २५ हजार से अधिक लोगों की भीड़ थी।

बुलन्दशहर, मेरठ, निकटवर्ती कस्बों तथा ग्रामों से चलकर लोग आये थे। बहुत लोग ४० मील की यात्रा समाप्त कर पहुँचे थे। रामधुन तथा भजन प्रातःकाल से स्टेशन पर अनेक समूहों ने गाना आरम्भ कर दिया था।

गाड़ी पहुँचते ही 'नेहरू जिन्दाबाद' के गगन भेदी नारों से नभ-मण्डल प्रकम्पित हो उठा। शाहदरा तक जनता किंचित् शान्त थी। गाजियाबाद में शान्ति तथा उल्लास दोनों का मिश्रण था। खुरजा के पश्चात् शान्त वातावरण कहीं देखने को नहीं मिला। सर्वत्र पण्डितजी की गाड़ी देखने की उत्कट भावना थी। उत्कट उत्साह था। जनता के जयजयकार के उद्घोष से स्पष्ट प्रकट हो रहा था।

खुरजा में विभिन्न संस्थाओं के लोगों ने पुष्पांजलि अर्पण की। खुरजा स्टेशन की छतों पर लाइन क्रासिंग के पुल पर सिगनलों पर, सर्वत्र युवक तथा बालक चढ़े। पण्डितजी के अस्थि-कलश के दर्शनार्थ व्याकुल थे। गाड़ी समीप पहुँचते ही हाथ उठा उठाकर पूरी ताकत से मुँह खोल-खोलकर नारे लगाने लगते थे। स्टेशन पर रेलिंग लगा था। प्रबन्ध अच्छा था। परन्तु रेला-रेली आरम्भ हो गई थी। यह सब अव्यवस्था जैसे-जैसे गाड़ी उत्तर प्रदेश में बढ़ने लगी बढ़ती गई।

अलीगढ़

अलीगढ़ के आउटर सिगनल से भीड़ का तांता आरम्भ हो गया था। सिगनलों पर बच्चे चढ़े थे। यार्ड में कोई भी सिगनल तथा खम्भा ऐसा नहीं था जो बच्चों से खाली रह गया था। रेलिंगों पर आदमी चढ़े और गुथे थे। यार्ड में खड़े माल गाड़ी के डब्बों तथा रेलवे इंजिनों के कोयले वाले डब्बों तथा इंजिन के अग्रिम भाग पर हर प्रकार का खतरा मोल लेकर भीड़ गुथी थी।

चारों ओर मानव-मुण्ड समुद्र उमड़ता दिखाई पड़ता था। केवल नरमुण्ड ही नरमुण्ड और नर-नारी ही परिलक्षित होते थे। वृक्षों पर, लाइन क्रासिंग के पुलों पर, समीपवर्ती मकानों पर, रेलवे की

इमारतों पर छज्जों पर, खिड़कियों पर जहाँ भी दृष्टि जाती और ठहरती थी केवल मनुष्य ही मनुष्य दृष्टिगोचर होते थे। गाड़ी अलीगढ़ साढ़े ११ बजे पहुँची। सूर्य की किरणें बहुत प्रखर नहीं हुई थी। लोगों में गरमी की व्यग्रता कम थी।

विद्यार्थी-समाज विशेष रूप से उपस्थित था। 'चाचा नेहरू' का नारा जो नई दिल्ली-खुरजा तक नहीं सुनाई पड़ा था, यहाँ पर सुन पड़ने लगा। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय का स्थान है। मुस्लिम संस्कृति सभ्यता का एक प्रकार से केन्द्र है। कुछ बुरकों में महिलाएँ दिखाई पड़ीं। विद्यार्थियों में पहचानना कठिन था। कौन मुसलमान हैं और कौन हिन्दू।

आउटर सिगनल से गाड़ी की गति पटरियों के दोनों ओर भीड़ होने के कारण अत्यन्त मन्द हो गई थी। प्लेटफार्म पर दर्शन करने का पंक्तिबद्ध प्रबन्ध किया गया था। एक तरफ से आने तथा दूसरी तरफ से निकल जाने का मार्ग बनाया गया था। मैं भी समीप आकर खड़ा हो गया। भीड़ देखने लगा। जहाँ मैं खड़ा था वहाँ से दर्शन कर बाहर निकलने का रेलिंगबद्ध मार्ग बनाया गया था। मुझे मुसलमानों की संख्या अपेक्षाकृत कम मिली। जितनी आशा यहाँ की जाती थी।

गाड़ी यहाँ से बढ़ी तो हजारों व्यक्ति रेल की पटरियों पर आ गये। गाड़ी का चलना कठिन हो गया। गाड़ी चींटी की तरह रेंगती बढ़ने लगी। नारा लगाते युवक गाड़ी के साथ दौड़ने लगे। लगभग एक मील तक यही अवस्था थी। तत्पश्चात् गाड़ी ने अपनी साधारण गति पकड़ी।

हाथरस

अलीगढ़ तथा हाथरस के बीच जनता लाइन के किनारों पर खड़ी मिलती गई। छोटे स्टेशनों पर खड़े लोग गाड़ी पर पुष्प तथा माला फेंक देते थे। हाथरस गाड़ी १ बजकर ५ मिनट पर पहुँची। गरमी बढ़ गई थी। लू चलने लगी थी। किन्तु गरमी प्यास, भूख तथा धूप— किसी को किसी प्रकार रोकने में असमर्थ थीं। हाथरस स्टेशन की छत

चहारदिवारों तथा टिन के छाजनों पर ग्‍मी में तपते लोग खड़े थे। स्टेशन के बाहर तथा रलव लाइन क किनारों पर ऊट ऊटगाड़ी बैल गाड़ी वनवाहक रथ बस इक्का तॉगा टट्टू घोड़ा हाथी जो भी साधन ग्रामों में उपलब्ध हो सका था उस पर लाग चढ़कर आये थे। वहाँ की भीड़ में महिलाऐं अपने बच्चों तथा बच्चियों क साथ अपक्षा कृत अधिक थीं। ग्रामीण महिलाएँ अपनी माड़नी तथा घाघरा में शिशुओं के साथ खड़ी पण्डितजी क विषय म अपन बच्चों का बान बताती उँगलियों स अस्थिवाहक डब्बा दिखाती उन्हें गोद म उठाकर उचकातीं। बच्चे उँगलियाँ अस्थिवाहक डब्बे की ओर उठाते 'चाचा नेहरू' कहकर चिल्ला उठते थे।

गरीबों की श्रद्धा

हाथरस तथा टूण्डला के बीच एक विचित्र दृश्य देखा। रेलवे लाइनों तथा मार्गवर्ती पुलों पर काम करने वाल गरीब मजदूर गामनों न अपने गरीबी ढग से पण्डितजी की अस्थिवाहक गाड़ी का स्वागत किया। एक जगह एक पुल बन रहा था। वहाँ गाड़ी की गति कुछ धीमी हुई। मैंने बाहर देखा। गरीब फटे चिथड़ों में लिपटे मजदूर पक्तिबद्ध रेलवे लाइन क किनारों पर दोनों हाथ जोड़े नतमस्तक खड़े थे। वे न तो नारा लगा रहे थ और न थाम रहे थ। उनके हाथों म गरीबी क कारण पुष्प नहीं थे। वे शान्त खड़े थे। गाड़ी उनकी आँखों के सामने स धीरे-धीरे गुजर रही था। व उस लम्बी स्पेशल गाडी क पूर्णतया गुजर जाने तक खड़ रहे। मेरा मन इस मूक श्रद्धांजलि का देखकर भर आया। मैं उनकी तरफ उस समय तक देखता रहा जब तक व दिखाई देत रहे। गाड़ी निकल जाते ही व फरसा आदि हाथों म लेकर पुन काम में लग गये। मैंने सोचा क्या इतना स्नेह किसी एक व्यक्ति ने भारत की कोटि-कोटि जनता स प्राप्त किया है?

टूण्डला

टूण्डला जंक्शन पर गाड़ी २ बजकर २५ मिनट पर पहुँची। यहाँ पर आगरा से भी काफी लोग पहुँच गये थे। भीड़ मिश्र थी। ग्रामीण तथा शहरी दोनों प्रकार के लोगों से प्लेटफार्म भरा था। लोहे के पाइप की रेलिंग लगाई गई थी। स्टेशन पुष्पों से सजाया गया था। गाड़ी के पहुँचते ही शोर होने लगा। लोग गाड़ी पर टूट पड़ना चाहते थे। नारा लगने लगा। यहाँ रामधुन तथा भजन के स्थान पर हल्ला-गुल्ला बहुत हुआ। एक के ऊपर दूसरे गिरे पड़ते थे।

महिलाएँ रो रही थीं। लोग उन्हें भी पीछे ढकेल कर आगे बढ़ना चाहते थे। भीड़ की तादाद ज्यों-ज्यों गाड़ी बढ़ती जाती थी पिछले स्टेशनों की अपेक्षा अधिक होती जाती थी। यहाँ भीड़ का कोलाहल देखकर इन्दिरा गांधी ने पण्डितजी के अस्थिवाहक डब्बे की खिड़की खोल दी। अब क्या था। डब्बा पुष्पों तथा रोष से भर गया। अनेक संस्थाओं के प्रतिनिधिगण शोक प्रस्ताव लिखकर लाये थे। उन्हें वे पुष्प के साथ अस्थि कलश पर चढ़ाने लगे। जिसने जिस प्रकार उचित समझा अपनी भावना तथा इच्छानुसार सहानुभूति तथा शोक प्रदर्शित किया। कुछ लोग कविता लिखकर लाये थे। उसे भी उन्होंने कलश पर चढ़ा दिया।

टूण्डला से फिरोजाबाद तक लाइन के किनारों पर ग्रामीण जनता पंक्तिबद्ध कड़ी धूप में खड़ी रही। हम लोगों ने अन्दाज लगा लिया। भीड़ बढ़ती जायेगी। हजारों में गणना करने के स्थान पर लाखों की गणना की जाने की तैयारी की जा रही थी।

फिरोजाबाद

फिरोजाबाद भारतवर्ष में नहीं विश्व में चूड़ियाँ बनाने का सबसे बड़ा केन्द्र है। गाड़ी यहाँ ३ बजकर २० मिनट पर पहुँची। जनता घण्टों से और कहीं-कहीं मार्ग में प्रातः काल से धूप में बैठी सूख रही थी।

मैंने अपने ४५ वर्ष के राजनीतिक जीवन में बहुत भीड़ देखी है।

परन्तु फिरोजाबाद में जो दृश्य देखा वह वर्णनातीत है। आउटर सिगनल से स्टेशन के दोनों किनारे ठसाठस भरे थे। प्लेटफार्म तथा बाहर एक लाख से कम लोग नहीं होंगे। पश्चिमी आउटर सिगनल से भीड़ ट्रेन के साथ हजारों की संख्या में दौड़ कर प्लेटफार्म की ओर आने लगी। चारों ओर से लोगों ने गाड़ी घेर ली। वे एक दूसरे को धक्का देकर आगे बढ़ना चाहते थे।

स्थिति काबू के बाहर हो गई। लाइन के बीच पर अवस्था अत्यन्त शोचनीय हो गई। भीड़ प्लेटफार्म पर किसी न किसी प्रकार पहुँचना चाहती थी। इस धक्कम-धक्का में ३ व्यक्ति दबकर मर गये। लगभग २० व्यक्ति घायल हो गये। पुलिस को बाध्य होकर लाठी का आश्रय लेना पड़ा। परन्तु लाठी के भय से लोग पीछे नहीं हटे। उमड़ती लहर की तरह भीड़ बढ़ती चली आ रही थी। मालूम होता था। भीड़ की लहर में गाड़ी स्वयं लहरों पर तिनके की तरह उठने लगेगा। शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति वहाँ रहा होगा जो भगवान से प्रार्थना न करता रहा कि किसी प्रकार गाड़ी सकुशल वहाँ से निकल जाये।

गरमी तथा लू से व्याकुल जनता का शरीर पसीने से भर गया था। दोनों हाथ छातियों पर रखे लोग आगे बढ़ने में हिचकते नहीं थे। महिलाएँ तथा बच्चे पीछे रह गये। वे दौड़ कर लाइन के दोनों किनारों पर खड़े हो गये। कोई ऐसा सिगनल गुमटी छत पुल रेलिंग चहार दिवारी गाड़ियों का डब्बा वहाँ शेष नहीं रह गया था जिस पर झुण्ड के झुण्ड लोग दर्शनार्थ अपने जीवन की परवाह न करके बैठे अथवा खड़े न थे। यहाँ गाड़ी अपने निश्चित समय से अधिक खड़ी रही। किसी प्रकार गाड़ी मानो मन्द गति से चींटी की तरह खिसकने लगी। प्लेटफार्म समाप्त हुआ। हम लोगों की जान में जान आई। अन्यथा कितने मरते और बचते इसकी कल्पना से मन काँप उठता था।

शिकोहाबाद

शिकोहाबाद समाचार भेज दिया गया था। फिरोजाबाद में क्या

दुदशा हुई। शिकोहाबाद में प्रबन्ध गाड़ी पहुँचने के पहले कर लिया गया। फिरोजाबाद में दब जाने के कारण लोगो की मृत्यु हो गई है। घायल हो गये है। यह समाचार शिकोहाबाद में भीड़ को संयत रखने में सहायक सिद्ध हुआ।

शिकोहाबाद गाड़ी अपने निश्चित समय ४ बजकर २० मिनट पर पहुँची। जनता संयत थी। अस्थि-कलश के सम्मुख एक टेबुल रख दिया गया था। उसी पर श्रद्धालु अपनी श्रद्धा के पुष्प रखते एक ओर से आते और दूसरी ओर से निकल जाते थे। फिरोजाबाद से यहाँ कम भीड़ थी। इन्दिरा गाँधी खिड़की से करबद्ध नमस्कार करने लगीं। जनता जवाहरलाल अमर रहें का नारा लगाने लगी। महिलाएँ सुविधापूर्वक दर्शन प्राप्त कर सकीं। उनमें अधिकतर रोती आईं। रोती गईं।

जसवन्तनगर

इटावा गाड़ी पहुँचने के २ मील पूर्व से भीड़ का तांता मिलने लगा। इटावा स्टेशन से पूर्व १० मील पहले जसवन्तनगर स्टेशन पर गाड़ी रुकने का कोई कार्यक्रम नहीं था। परन्तु भीड़ के कारण गाड़ी रुक गई। दर्शनार्थियों ने श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने कलश का दर्शन कर लिया तो गाड़ी प्रस्थान कर सकी। आज जनता के आदेश पर काम होने लगा था।

इटावा

इटावा में भीड़ होगी इसका अन्दाज मार्ग में पड़ने वाली जनता की पंक्ति देखकर लगा लिया गया था। सब लोग चिन्तित थे। कहीं फिरोजाबाद की पुनरावृत्ति न हो जाय। गाड़ी पहुँचने का निश्चित समय ५ बजकर ३५ मिनट सायंकाल था। परन्तु गाड़ी मार्ग में रुक जाने के कारण कुछ विलम्ब से पहुँची।

प्लेटफार्म पर तीस हजार की भीड़ थी। आउटर सिगनल से भीड़ का क्रम आरम्भ हो गया था। स्टेशन के समीप खुले मैदान में ठेलागाड़ी

बसगाड़ी ट्रक, ऊँट बस घोड़ा तथा साइकिलों की भरमार लगी थी। बीस-पच्चीस मील चलकर जनता आई थी। जनता यहाँ संयत थी। फिरोजाबाद की तरह ठेलमठेला नहीं था।

गाड़ी उत्तरी प्लेटफाम पर खड़ी थी। मुख्य प्लेटफार्म खाली था। मैं अपने डब्बे से बाहर दूसरे प्लेटफाम पर देखने लगा। भीड़ के कारण बाहर निकलना कठिन था। एक डब्बे से दूसरे डब्बे में जाने में काफी परिश्रम करना पड़ता था। फिर भी शंका बनी रहती थी। कहीं भीड़ में स्वयं न मिलकर पीछे धकेल दिया जाऊँ और गाड़ी सीटी देकर आगे बढ़ जाय। मैं मुँह ताकता रह जाऊँ।

दूसरी तरफ प्लेटफाम प्रायः खाली था। सबका लक्ष्य अस्थि-कलश वाले प्लेटफाम की तरफ हो गया था। मैं जिस बोगी में था वहाँ से ८ बोगी पश्चात् अस्थि-कलश वाली बोगी थी। मैंने देखा दूसरी तरफ वाले प्लेटफार्म पर महिलाएँ अपने बच्चों के साथ अधिक संख्या में कलश-बोगी की तरफ तेजी से चली आ रही थीं। वे अस्थि-कलश वाली बोगी का दर्शन दूर ही से कर सतोष कर लेना चाहती थीं।

उस प्लेटफार्म पर एक छड़ी लिये एक मलिन-वस्त्रा वृद्धा प्लेटफाम के नीचे पैर लटकाए बैठी थी। फटा पाजामा तथा मैला कुरता था। गले में एक काले धागे में लोहे की एक ताली लटक रही थी। उसमें ताँबे का तरिका था। उसके सिर के बाल खिचड़ी हो गये थे। गरीबी के कारण बुढ़िया गल गई थी। वह किसी गरीब मुसलमान की विधवा स्त्री रही होगी। उसे दिखाई भी कम देता था। आँखें मली थीं। मुख पर झुर्रियाँ थीं। पान खाने के कारण मैले कुरते पर पान के कुछ दाग पड़ गए थे। उसे शायद दिखाई कम देता था। गाड़ी आते ही वह चौंकी। इधर-उधर देखने लगी। अपनी छड़ी के सहारे उठी। उठ न सकी। फिर बैठ गई। आने-जाने वालों की तरफ याचनापूर्ण दृष्टि से देख रही थी। कोई उसे सहारा दे दे। किसी को अपनी ओर मुखातिब होता नहीं देखकर अपने ताली वाले गले में पड़े ताम्बे के तरिके से समय काटने के लिए दाँत खोदने लगी। उसमें भी उसका मन नहीं लगा। अन्त

में उसने एक परिचित को देखकर पुकारा। वह भी उसके जैसा ही गरीब अधेड़ था। उसने बुआ कहते हुए उसे हाथ का सहारा देकर उठाया। पूछा—जवाहरलाल को देखेगी। बुढ़ा को जैसे दुनिया की नियामत मिल गई। उसके उदासीन गरीबी के उच्छ्वासों से झुलसे मुखमण्डल पर विचित्र चमक आ गई। उसने गिड़गिड़ाकर कहा—हाँ वहाँ ले चल। उसने अपनी पूरी शक्ति एकत्रित की। उस गरीब प्रौढ़ व्यक्ति का सहारा लिया। अपनी गरीबी की गठरी से दबकर भी उछलती अस्थि-कमठ की ओर बढ़ी। मैंने सोचा—वह कौन शक्ति थी जो बुढ़ा को वहाँ तक खींच लाई थी। सहसा मेरे मन ने कहा—यह वह अव्यक्त शक्ति थी जिसने प्रत्येक गरीब भारतीय के दिल में जगह करली थी। क्योंकि वह उनके जीवनस्तर को उठाने में सर्वदा चिंतित रहता था। आज वे गरीब अनाथ हो गये थे। उसके लिए चिंतित हो रहे थे। उनकी कौन सुनेगा।

गाड़ी ७ बजे सायंकाल फफूंद पहुँची। भीड़ थी। परन्तु उग्र नहीं थी। संयत थी। सायंकाल हो गया था। सूर्यास्त हो चुका था। गरमी कम हो गई थी। लोगों के दिल और दिमाग दोनों ठण्डे हो गये थे।

कानपुर में ५ लाख दर्शनार्थी

फफूंद से गाड़ी कानपुर के लिए चली। कानपुर गाड़ी ८ बजकर ४५ मिनट पर पहुँची। कानपुर स्टेशन पहुँचने के चार मील पूर्व से ही रेलवे लाइन के दोनों तरफ समूहों में जनता खड़ी थी। कानपुर में ५ लाख से कम जनता नहीं रही होगी। यहाँ प्रबन्ध अच्छा किया गया था। मार्ग के स्टेशनों पर क्या घटनाएँ हुई, उनसे बचने का प्रबन्ध करने के लिए सूचना दे दी गई थी। किन्तु अव्यवस्था हो गई।

कानपुर में अव्यवस्था का कारण था। बांदा से दर्शन-स्पेशल गाड़ी कानपुर सेंटल स्टेशन तक चलाने की व्यवस्था की गई थी। यह स्पेशल बांदा से ठीक ६ बजकर ५० मिनट पर चलकर सायंकाल प्लेटफार्म नम्बर १ पर कानपुर में लगी। रेलवे विभाग ने शायद इस स्पेशल की सूचना प्रबन्धकों को नहीं दी थी। इस गाड़ी से ४००० यात्रियों का

आगमन हुआ था। यात्रीगण बाहर नहीं गये। स्टेशन के प्लेटफार्म पर घूमते रहे। अस्थि-स्पेशल के आते ही इन चार हजार व्यक्तियों का समूह प्लेटफार्म नम्बर एक की तरफ दौड़ पड़ा। अस्थि-स्पेशल तथा घेरा घेरकर सुरक्षित स्थान रखा गया था। उसमें अस्थि-स्पेशल के आते ही वे लोग घुस गये। बड़ा गोलमाल हो गया। सुनिश्चित योजना बिगड़ गई। दर्शनार्थी आमंत्रित विशिष्ट दर्शकगण तथा जनता एक में मिल गयी। कुछ पता नहीं चलता था। कौन क्या है। किसको वहाँ से हटाया जाये और किसको रखा जाये। पुलिस के लिए एक समस्या खड़ी हो गई।

परिणामस्वरूप ६ व्यक्ति बेहोश हो गये। चौबीस व्यक्तियों को सामान्य चोटें आईं। उनमें ड्यूटी पर लगे ४ अधिकारी भी थे। एक और दुर्घटना हो गई। स्पेशल ने कानपुर सेंट्रल से प्रस्थान किया। सी० ओ० डी० क्रासिंग के पास पहुँचते ही गाड़ी रुक गई। मालूम हुआ। स्पेशल की बोगी न० ४५७५ में आग लग गई थी। होमगार्ड का कमेंट एक श्री सीताराम शर्मा था। उसकी ड्यूटी क्रासिंग पर लगी थी। उसने आग की लपट निकलती देखी। उसने अविलम्ब गाड़ी के गार्ड को सूचना दी। गाड़ी रोक दी गई। बात यह थी। शोर्ट सर्किट उक्त बोगी में हो गया था। इसलिए आग की लपट तेजी से निकलने लगी थी। गाड़ी १० मिनट तक रुकी रही। तत्पश्चात् पुनः इलाहाबाद की तरफ रवाना हुई।

फतेहपुर

कानपुर से फतेहपुर का लम्बा मार्ग था। अर्द्ध रात्रि में गाड़ी फतेहपुर पहुँची। मार्ग में रात्रि के कारण भीड़ कम थी। कहीं स्टेशनों पर गैस की रोशनी जलाकर लोग एकत्रित थे। फतेहपुर में विशेष कोलाहल नहीं हुआ। फिर भी १० या १२ हजार जनता प्लेटफार्म पर आधी रात होने पर भी डटी रही।

फतेहपुर से मनौरी तक कोई विशेष उल्लेखनीय घटना नहीं हुई। इलाहाबाद समीप होने के कारण जो लोग इलाहाबाद पहुँच सकते थे, चले गये थे। मनौरी में गाड़ी प्रातःकाल ४ बजे केवल ५ मिनट के लिए रुकी। वहाँ एकत्रित जनता ने माल्यार्पण किया। गाड़ी के साथ यात्रा करने वाले व्यक्ति इलाहाबाद स्टेशन पर उतरने की तैयारी करने लगे।

संगम ...



फतहपुर से इलाहाबाद तक रेलवे लाइन के दोनों तरफ विशेष भीड़ नहीं थी। रात्रि का समय था। स्टेशन से संगम तक के साढ़े छः मील लम्बे मार्गों पर भोर से आकर जनता आसन ग्रहण करने लगी थी। इस मार्ग पर ३००० सैनिक शोक प्रदर्शनार्थ पंक्तिबद्ध खड़े थे।

इलाहाबाद रेलवे स्टेशन पर गाड़ी प्रातःकाल ५ बजने पर पहुँची। सिविल लाइन की तरफ वाले प्लेटफार्म पर गाड़ी लगी। भीड़ पर नियन्त्रण था। जनता नहीं के समान थी। प्लेटफार्म के सामने छोटा मैदान किंवा प्रांगण था। वहाँ से सड़क सीधी बड़े गिरजाघर की ओर सिविल लाइन में प्रवेश करती थी। मैदान में मोटरें खड़ी थीं। सब पर नम्बर लगा था। स्पेशल ट्रेन से यात्रा करने वाले प्रत्येक व्यक्ति का उसकी कार तथा संगम की नाव का नम्बर दे दिया गया था।

प्लेटफार्म के सीढ़ी के बहिर्गाम से २० कदम पर एक ट्रक पुष्पों से सजा खड़ा था। तोप गाड़ी पर अस्थि-कलश ले जाने का विचार ४ जून को ही त्याग दिया गया था। इसकी सूचना ५ जून को स्थानीय अधिकारियों को दे दी गई थी।

महात्मा गांधी का अस्थि-कलश बिना इंजन वाले सुसज्जित ट्रक पर रख कर गया था। महात्माजी मशीनों के प्रेमी नहीं थे। अतएव ट्रक से इंजन निकाल दिया गया था। महात्माजी का अस्थिवाहक ट्रक इला

हावड़ा स्टेशन के सम्मुख एक गराज में स्मृति-स्वरूप आज भी रखा है। उसे लोग देखते हैं। महात्माजी की स्मृति में श्रद्धा-भक्ति-पूर्वक प्रणाम करते हैं।

मुझे ट्रक की पुष्पों द्वारा सजाने की शैली कुछ परिचित मालूम हुई। मैं नीचे उतरा। काशी का परिचित माली ननकू दौड़ा मेरे पास आया। प्रणाम कहकर उसने बड़े गर्व से कहा भैया! मुझे सजाने के लिए बनारस से बुलाया गया है। रात भर मैं सजाया हूँ। कैसा सजा है? मैंने उसकी सराहना की। उसने बहुत से रीथ तैयार कर रखे थे। चढ़ाने वालों को वह बिना मूल्य दे देता था। मैंने १९४८ में महात्माजी के अस्थि-कलश का प्रवाह काशी के हरिश्चन्द्र घाट पर अपने हाथों किया था। उस समय उसने १६ फुट ऊँचा अस्थि-वाहक रथ सजाया था।

अस्थि-कलश वाली बोगी प्लेटफाम पर उस स्थान पर खड़ी हो गयी। जहाँ प्लेटफार्म से बाहर जाने वाली सीढ़ी तक लाल कारपेट बिछायी गई थी। बोगी के सामने दरी बिछी थी। श्री लालबहादुर शास्त्री आदि भोर में हवाई जहाज से पहुँच चुके थे। स्टेशन पर उपस्थित थे। लेफ्टिनेन्ट जनरल बहादुरसिंह मेजर जनरल गोविन्दसिंह तथा एयर कमाडोर मेहरा बोगी के दक्षिण पार्श्व में गाड़ी तथा प्लेटफाम के बीच सैनिक पोशाक में खड़े थे।

एक डिटेचमेन्ट तथा १२ सैनिक अस्थि-डब्बे के द्वार के सम्मुख २ की पंक्ति में सावधान खड़े थे। उनका मुख अस्थि-कलश की तरफ था। तीन क्रमश ५ कदम आगे डब्बे के द्वार की ओर मुख किये खड़े थे। कलश द्वार पर लाया गया। तत्काल डिटेचमेन्ट कमाण्डर ने 'प्रजेन्ट आर्म' का आदेश दिया। किंचित् काल पश्चात् 'रेस्ट आरम्स' का आदेश दिया गया। दोनों पंक्तियाँ डब्बे की ओर मुख किये दक्षिण तथा वाम पार्श्व में खड़ी हो गईं। कलश लेकर राजीव तथा संजय प्लेटफार्म पर उतरे। डिटेचमेन्ट कमाण्डर ने स्लो मार्च' की आज्ञा दी। कुमर्स ने भी कमाण्डर के आदेश पर मार्च किया। कलश के साथ अनुरक्षक

दल प्लेटफार्म के बहिर्मार्ग की तरफ चला।

कलशधारी राजीव तथा संजय प्लेटफार्म के बहिर्मार्ग की सबसे ऊपरी सीढ़ी पर शान्त खड़े हो गये। कूमर्स तथा डिटेचमेण्ट के सैनिक शीघ्रतापूर्वक सीढ़ियाँ उतर कर वाम पार्श्व में कलश के लिए खुला मार्ग देकर स्थित हो गये।

अग्रगामी तथा पृष्ठगामी अनुरक्षक सैनिक दल प्लेटफार्म के बहिर्द्वार के सम्मुख पंक्तिबद्ध खड़े थे। उन्होंने कमाण्डर के आदेश पर 'जनरल सैलूट' तथा 'प्रजेण्ट आर्म' किया। उस समय सैनिक बैण्ड 'फ्लावर आफ दी फोरेस्ट' की धुन बजाने लगा। किंचित् काल पश्चात् आदेश पर अनुरक्षक सैनिक दल ने बन्दूकें उलट कर भूमि पर रख लीं। कुन्दे पर हथेली के ऊपर हथेली रख कर नतमस्तक खड़े हो गये।

अस्थि-वाहक पुष्पाच्छादित गाड़ी सीढ़ी के पास मन्द गति से आई। राजीव तथा संजय ने अस्थि-कलश गाड़ी पर रख दिया। पण्डितजी के कुटुम्बी इन्दिरा गान्धी, विजयलक्ष्मी पण्डित गाड़ी पर बैठ गईं। उसी गाड़ी पर उत्तर प्रदेश की मुख्यमन्त्री सुचेता कृपलानी बैठीं। उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री विश्वनाथदास मोटर में पीछे थे। वे हमारे बहुत पुराने परिचित सन् १९३६ से हैं। राज्यसभा के सदस्य राज्यपाल होने के पूर्व थे। हमारा उनका स्नेह सम्बन्ध बड़े तथा छोटे भाई का था। उन्होंने मुझे देखा। अपनी गाड़ी में बैठा लिया। इलाहाबाद से लौटते समय तक हम लोग साथ-साथ रहे।

पण्डितजी के कुटुम्बी, विशिष्ट आमन्त्रितगण, संसद सदस्य, मन्त्री वर्ग, डिटेचमेण्ट तथा कूमर्स आदि अपनी-अपनी गाड़ी पर सवार हो गये। अग्रगामी अनुरक्षक दल के अधिकारी खुली जीप पर थे। आदेश मिलने पर अस्थि-कलश-वाहन मन्द गति से चलने लगा। रेलवे स्थान के बाहर आने पर अग्रगामी तथा पृष्ठभागीय अनुरक्षक दल विघटित हो गया। निर्धारित गाड़ियों पर सवार होकर संगम की ओर दूसरे मार्ग से रवाना हो गया।

स्टेशन से जलूस ने प्रस्थान किया। जलूस के गठन का निम्न-

लिखित प्रकार था —

१—अग्रगामी अनुरक्षक दल। एक अधिकारी तथा दो ओ० आर० एक खुली जीप पर थे।

२—खुली गाड़ियों पर एक, बारह तथा उन्नीस के डिटेचमेण्ट थे।

३—एक खुली जीप जिस पर उक्त तीनों सेना के जनरल तथा एयर कमोडोर थे।

४—अस्थि-वाहक ट्रक।

५—मोटरें।

६—पृष्ठगामी अनुरक्षक दल। एक अधिकारी तथा दो ओ० आर० खुली जीप पर थे।

गम्भीर शोक

इलाहाबाद में भीड़ का रूप अन्य स्थानों की अपेक्षा पूर्णतया भिन्न था। शोर, नारा धक्कम-धुक्की चीखना-चिल्लाना दौड़ना-धूपना, अनावश्यक उत्साह तथा उल्लास देखने के जो आदी हैं, उन्हें इलाहाबाद का रूप बिल्कुल पसन्द नहीं आया होगा। कुछ मित्रों ने मेरी राय पूछी। मैं बात समझ गया। केवल इतना कह सका। देश-काल-पात्र का सब चीजों पर प्रभाव पड़ता है। इलाहाबाद दिल्ली नहीं है। दिल्ली तीर्थस्थान नहीं है। वह राज्यों की राजधानी है। औपचारिकता तथा कृत्रिमता से दिल्ली का मौलिक रूप रंग गया है। प्रयाग तीर्थराज है। बारह वर्षों में यहाँ कुम्भ लगता है। छः वर्षों में अर्ध कुम्भी लगती है। देश के कोने-कोने से तीर्थराज प्रयाग की यात्रा होती है। सगम पर स्नान करने धर्मप्राण जनता आती है। यहाँ भारद्वाज आश्रम है। अक्षय वट है। महर्षि वाल्मीकि ने इसी क्षेत्र में राम-सीता की अमर कहानी लिपिबद्ध की थी। यहीं पर उन्होंने भारतीय दर्शनशास्त्र के प्राण याम वासिष्ठ रामायण की रचना की थी। प्रयाग मण्डल तथा क्षेत्र पर धार्मिक तथा भारतीय संस्कृति का व्यक्त तथा अव्यक्त प्रभाव पड़ना

अवश्यम्भावी था। इलाहाबाद के साढ़े ६ मील लम्बे मार्ग में इसका अनुभव मैंने अवश्य किया।

स्टेशन से जलूस साउथ रोड कनिंग रोड साउदर रोड होता आनन्द भवन की ओर चला। आनन्द भवन का मेरा अनुभव प्रथम जेल-यात्रा सन् १९२१ के समय का है। मैं उस समय केवल ११ वर्ष का था। प्रयाग से दैनिक 'इण्डिपेण्डण्ट' राष्ट्रवादी समाचार-पत्र स्वर्गीय प० मोतीलालजी आदि के तत्वावधान में निकलता था। यहाँ से उन दिनों 'पायनीयर' दैनिक भी निकलता था। यह सरकारी नीति का मुखपत्र था। 'लीडर' तीसरा अंग्रेजी दैनिक भारत म उदार दल तथा उसके विचारों का एकमात्र पोषक पत्र था। उसके सम्पादक स्वर्गीय श्री सी० वाई० चिन्तामणि थे। सन् १९२१ के आन्दोलन म 'इण्डिपेण्डण्ट' का प्रकाशन सरकार ने बन्द कर दिया। साइक्लोस्टाइल कर पत्र नाममात्र के लिए एक आन्दोलन चलाने तथा सरकारी नीति का उत्तर देने के लिए निकाला जाता था। काशी से साइक्लोस्टाइल से यही पत्र इलाहाबाद की कापी कर निकलता था। एक कापी इलाहाबाद से रेल द्वारा काशी आती थी। साइक्लोस्टाइल कर शहर में वितरण की जाती थी। काशी विद्यापीठ तथा श्री गांधी आश्रम मेरे सोनिया के बगीचे के पास ही चकरा पर एक बाग में स्थित थे। मुझे अच्छी तरह स्मरण है। आचार्य कृपलानी के तत्वावधान में दक्षिण के एक सज्जन सुन्दरम पत्र का प्रकाशन करते थे। मैं छोटा था। जेल से छूट कर आ चुका था। रेल का टिकट आधा लगेगा। अतएव यह काम मेरे जिम्मे किया गया। मैं उन दिनों पंजाब मेल से जिसे अब अमृतसर मेल कहते हैं काशी से प्रतापगढ़ जाता था। वहाँ से पैसेंजर पकड़ कर इलाहाबाद पहुँचता था। इलाहाबाद से छोटी लाइन पकड़ कर सायंकाल काशी लौटता था। यह क्रम कुछ दिनों तक चलता रहा। मुझे स्मरण है। अपनी पहली यात्रा पर मैं कुछ घबड़ा गया था। अकेले बाहर यात्रा करने का प्रथम अवसर था। खुफिया पुलिस वाले पीछा करते थे। रास्ता नहीं मालूम था। सायंकाल जब जाने का समय हुआ तो मैं

रोने-सा लगा था। आनन्द भवन के कोई विशिष्ट व्यक्ति वहाँ तक थे। वे बोले इतने छोटे बच्चे को भेज दिया। तत्पश्चात् मुझे एक सेवक से स्टेशन पहुँचवा दिया था। फिर तो परिचित हो गया था। कालान्तर में साइक्लोस्टाइल से भी पत्र का निकलना अर्थाभाव तथा अनुपयोगिता के कारण बन्द हो गया।

इलाहाबाद में काशी, जौनपुर मिर्जापुर, फतेहपुर तक के लोग आये थे। बहुत से परिचित सड़कों की पटरियों पर खड़े मिले। अस्थि कलश की यात्रा स्टेशन से आरम्भ हुई। मैं महात्माजी के अस्थि प्रवाह समारोह में इलाहाबाद नहीं आया था। मुझे स्वयं काशी में उसी दिन महात्माजी का अस्थि प्रवाह संस्कार धार्मिक कृत्य द्वारा करना था। अतएव दोनों अस्थि प्रवाहों के विषय में कुछ तुलना नहीं कर सकता।

जनता पंक्तिबद्ध अत्यन्त संयत रूप से सड़क के दोनों किनारों पर खड़ी थी। स्टेशन से संगम तक समस्त मार्ग पर बाँस तथा पाइपों से घेरा लगा दिया गया था। इलाहाबाद में कहीं घेरा नहीं टूटा और न कहीं लोग कूदकर अस्थि-कलश-वाहक गाड़ी के सामने आये। संयम भी पराकाष्ठा थी।

जनता कुछ ध्वनि नहीं कर रही थी। नारा नहीं लगता था। नेहरू जिन्दाबाद नेहरू अमर रहे चाचा नेहरू जिन्दाबाद—सब जैसे इलाहाबाद पहुँचते ही लोप हो गये थे। जनता करबद्ध खड़ी थी। अस्थि-कलश समीप पहुँचते ही करबद्ध नमस्कार करती थी। अपने स्थान पर खड़ी रह जाती थी। किसी ने गाड़ी के साथ दौड़ने का प्रयास नहीं किया। मैंने लोगों की आँखों में आँसू कम देखे। उनकी भावना हृदयस्थ थी। वह आँसू बनकर बाहर निकलने में सम्भवतः असमर्थ थी। यहाँ भावुकता नहीं थी। अपने प्राणी के वियोग की गहरी छाप हृदयों पर बैठी थी।

पण्डितजी की जन्मभूमि प्रयाग थी। वहाँ वे अपने साथियों के साथ खेलते थे। बड़े हुए थे। गलियों में घूमे थे। सड़कों पर चले थे। इलाहा

बाद और यहाँ के लोगों के लिए पण्डितजी कौतूहल की सामग्री नहीं थे। अपरिचित नहीं थे। घर के प्राणी-तुल्य थे। इलाहाबाद ने अपने प्राणी का स्वागत कृत्रिम प्रसाधनों द्वारा नहीं किया। आन्तरिक गम्भीर स्नेह एवं श्रद्धा-भक्ति से किया। वह अभिनन्दन था दाहका। यह प्रदर्शन था बनावट से दूर। वह स्वागत था अपने प्राणी का पुराने स्नेह बन्धनों की मनोरम स्मृतियों के साथ। उसमें मानव की कोमल भावनाओं का स्पर्श था। उस भावना का स्पर्श था जो अपने को प्रकट करने की अपेक्षा अपने में लीन रहने की ओर अधिक प्रवृत्त रहती है। मुझे अब भी सन्देह है। पाश्चात्य सभ्यता के वस्त्रधारियों तथा कोलाहल-मय जीवन के आदियों ने इलाहाबाद की जनता में स्नेह की कमी महसूस की होगी। परन्तु यह सर्वथा मिथ्या धारणा होगी। यहाँ का जन समुद्र छिछले जलस्तर पर तैरते बुदबुदों तुल्य नहीं था। यह था गम्भीर महासमुद्र के समान बुदबुदहीन जलस्तर। जिसकी गहराई नापना कठिन होता है।

इलाहाबाद ने पण्डितजी की पार्थिव अस्थि को देखा उस शान्त भरे मन वाली नारी-तुल्य जो प्रिय का स्वागत आँसुओं से नहीं, नत-मस्तक अपने हृदय में उसका पवित्र दर्शन कर करती है। उसमें लीन हो जाती है। इलाहाबाद की जनता के मन में पण्डितजी की कितनी मधुर स्मृतियाँ कितनी कहानियाँ जागृत हो उठी होंगी। कौन बता सकता है। उन पुरातन स्मृतियों के साथ उनमें पवित्र भावना का उदय हुआ था। उन्होंने पण्डितजी को दिवंगत महादेव स्वरूप समझ कर नमस्कार किया।

निःसन्देह प्रभात काल में नेहरू का नगर निःशब्द था। अस्थि-वाहक गाड़ी ने ६ बजकर ३० मिनट पर आनन्द-भवन के फाटक के अन्दर मुहुर-मुहुर प्रवेश किया। वह पण्डितजी की एकमात्र अचल सम्पत्ति थी। उनका कौटुम्बिक आवास था। अस्थि-कलश उतार कर गुलमोहर पादप की छाया में एक चबूतरे पर रख दिया गया। वहाँ पर पण्डितजी के सम्बन्धी एकत्रित थे। अस्थि रखते ही करुण रुदन-ध्वनि महिलाओं

के कण्ठ से फूट निकली थी। आनन्द भवन के कर्मचारी, सेवक तथा पड़ोसी अस्थि-कलश को प्रणाम कर पुष्पार्पण करने लगे।

आनन्द-भवन के मैदान में बहुत बड़ा शामियाना लगा था। उत्तर प्रदेश की सरकार की तरफ से प्रबन्ध था। सोफा कौच तथा कुर्सियाँ लगी थीं। अस्थि-कलश के साथ आने वाली मोटर गाड़ियों पर आने वाले लोग शामियाने में आकर बैठ गये। शीतल जल का प्रबन्ध था। बहुत-सी परिचित शकलें दिखाई पड़ीं। सब लोग बातचीत में लग गये। मैं पण्डितजी के अस्थि-कलश के पास जान-बूझकर नहीं गया। वहाँ महिलाएँ थीं। घरेलू वातावरण था। उनके पास पहुँचकर, उनके लिए एक समस्या स्वरूप बनकर, उनकी आजादी में विघ्न उपस्थित करना पसन्द नहीं कर सका। अतएव विस्तार से नहीं लिख सकता कि वहाँ एक घण्टे तक क्या होता रहा।

आनन्द भवन से पुन अस्थि-कलश ने ठीक ७ बजकर ३० मिनट पर अपनी अंतिम यात्रा-निमित्त संगम के लिए प्रस्थान किया। काट रोड त्रिवेणी रोड सान्य होता जलूस संगम पहुँचा। किले के समीप अस्थि-वाहक गाड़ी रुक गई। वहाँ से पुन सैनिक प्रथा के अनुसार जलूस गठित किया गया। जलूस पर हवाई जहाज से पुष्प-वर्षा ठहर ठहर कर होती रही। हैलीकाप्टर से रंगीन चित्र लेने का प्रबन्ध किया गया था।

किले के समीप अग्रिम अनुरक्षक दल तथा राजपूत रेजिमेण्ट का बैण्ड रुक गया। वे दक्षिण की तरफ घूम कर पंक्तिबद्ध वस्त्रादि ठीक करते हुए सावधान खड़े हो गये। निश्चित स्थान पर अस्थि-कलश की गाड़ी आकर रुक गई। सभी लोग अपनी गाड़ियों से उतर गये। पैदल चलने लगे। यहाँ से बैण्ड 'फ्लावर्स आफ दी फारेस्ट' की धुन बजाता उल्टे शस्त्र वाले सैनिकों की पंक्ति के साथ मन्द गति से घाट की ओर अग्रसर होने लगा।

अस्थि-कलश संगम के समीप ८ बजकर १८ मिनट पर प्रातःकाल पहुँचा। उसे स्थल-वाहन से उतार कर जल-वाहन पर ले जाना था।

अग्रगामी अनुरक्षक दल तथा डिटेचमेण्ट ने 'जनरल सलूट' दिया। आर्म्ज प्रजण्ट किया। किंचित् काल पश्चात् सैनिक उल्टे शस्त्र कर घाट की जेटी की ओर मुख कर नतमस्तक खड़े हो गये। सैनिक बैण्ड एबाइड वाई मी' की धुन बजाने लगा।

अस्थि-कलश गाड़ी से उतारा गया। सैनिकों की दोनो पंक्तियों के मध्य से राजीव तथा संजय कलश लेकर माँ जाह्नवी के शीतल तट की ओर चले। जल पर श्वेत रंग से रंगी यन्त्र चालित नौका 'डुकव' खड़ी थी। शायद दो इस प्रकार की नौकाएं थीं। श्वेत नौका पर अस्थि-कलश के साथ पण्डितजी के सगे सम्बन्धी पुरोहित आदि चढ़ गये। उसी पर वायरलेस से सूचना देने वाला एक सैनिक था। उसका कार्य था अस्थि कलश से गंगाजल पर छूटते ही दुर्ग में सूचना दे ताकि तुरन्त तोप दाग दी जाय। उसकी आवाज से विदित हो जाय कि पण्डितजी की इच्छानुसार उनकी उज्ज्वल अस्थि ने कल्लोलिनी गंगा की उज्ज्वल जलधार में चिर शान्ति निमित्त चारु तरंगों से तरंगित होते सदा-सर्वदा के लिए अन्नमय कोष का अस्तित्व लोप कर दिया है।

संगम पर लगभग तीन लाख व्यक्ति उपस्थित थे। नावों पर जनता बैठी थी। खड़ी थी। झुकी थी। लाखों व्यक्ति उथल जल में खड़े थे। अस्थि-कलश सहित नाव अन्य नावों के साथ संगम की ओर चली। धारा तेज थी। यत्नपूर्वक नाव जल में रोकी गई। मेरी नाव पीछे की नावों से धक्का खाती अकस्मात् अस्थि-कलश वाली नाव के समीप आ गई।

वैदिक मंत्रों का पाठ हुआ। संस्कार हुआ। वायुयान आकाश से दुबकी लगाकर तेजी से नीचे ठीक कलश के ऊपर पुष्प-वर्षा करता चला जाता। पुष्प-वर्षा का यह क्रम अस्थि-प्रवाह तक चलता रहा। संस्कार कृत्य समाप्त हुआ। प्रवाह का समय उपस्थित हो गया।

चिरंजीव राजीव तथा संजय ने अपने मान्यवर नाना का अस्थि कलश उठाया। लोग इसी दिन के लिए पुत्र की कामना करते हैं। संतति की कामना करते हैं। कुटुम्ब की कामना करते हैं। नातियों ने अपने

पितृजन्य कर्त्तव्य का पालन किया।

जाह्नवी और कालिन्दी की लोल लहरें मिलकर एकाकार हो रही थीं। त्रिवेणी बना रही थीं। अदृश्य तृतीय धारा सरस्वती प्रसन्न थी। उसका एकान्त उपासक उसके अंक मे आ रहा था। वेदध्वनि के बीच लाखों नर-नारियों के अश्रु तर्पण के बीच ठीक ८ बजकर ४० मिनट पर कलश कुछ ऊपर उठा। पुनः शनैः-शनैः उल्टा हुआ। कलश मुख से उज्ज्वल अस्थियाँ और कमला जी की अस्थियाँ शीतल जल मे शीतल होने लगीं। जलस्तर पर छल-छल की ध्वनि हुई। माता गंगे ने वर-वधू को छाती से चिपटाकर जैसे उन्हें थपथपा दिया। पुरातन अक्षयवट-धारी दुर्ग से तोपध्वनि हुई। लाखों नर-नारियों के अचल कानों से लग गये।

कमला और जवाहर

और पण्डित जवाहर लाल और कमला नेहरू की अस्थियाँ! उन पण्डितजी की अस्थियाँ जिन्होंने पाणिग्रहण संस्कार के समय अग्नि को साक्षी देकर ऋग्वेद के मंत्र के साथ वधू कमला का हाथ पकड़ा था

गृभ्णामि ते सौभग त्वाय हस्त
मया पत्या जरदष्टिर्यथासः।

निःसन्देह उन्होंने उसका जीवन के पश्चात् भी निर्वाह संगम तक किया। वह भी प्रतिज्ञा अग्नि के सम्मुख पुरोहितों ने दुहराई थी जन्म जन्मान्तर हम साथ रहेंगे

अन्योन्यस्या व्यभी चारो भवेदा मरणान्तिकः।
एष धर्मः समासेन ज्ञेयः स्त्री पुंसयोः परः॥
तथा नित्यं यतेयातां स्त्री पुंसौ तु कृत क्रियौ।
यथा नाति चरेतां तौ वियुक्ता वितरस्तरेम्॥

पण्डितजी तथा कमलाजी की पति-पत्नी की। अस्थियाँ अर्धनारी श्वर स्वरूप गंगा स्नान करती मृदुल शीतल प्रवाह के साथ चिर-यात्रा निमित्त चल पड़ीं।

और जलस्तर पर बिखर गये उनके प्रिय कश्मीर के कुसुमित

पुष्प। और भारतीयों की अजलियों से धारबद्ध छूटे श्रद्धा के फूल। स्मरण दिलाते जसे पाणिग्रहण सस्कार काल में अग्नि के सम्मुख लागों ने सफल जीवन-यात्रा के लिए उन्हें आशीर्वाद दिया है। और आज नर-नारियों की मगल-कामना स्वरूप उनकी जलस्थ अस्थि पर पुष्प बिखरे—उनकी सुखद अनन्त चिर-यात्रा निमित्त।

पार्थिव शरीर का मिलन इस लोक का मिलन अन्नमय काय का मिलन अपना अध्याय शेष करता, चला मिलने अनन्त से। और मेरी आँखों के सम्मुख मूर्तमान दण्डायमान हो गया यह भारतीय दर्शन जो कहता है, दो आत्माओं का मिलन पति-पत्नी का मिलन सस्कार का अटूट बन्धन है। यह मिलन होता है। जन्म-जन्मातर के लिए, उसका सम्बन्ध है अव्यक्त से।

पण्डितजी अपने अन्नमय काय के विघटन के अन्तिम चरण में उस इसे उद्घोषित करते हुए चले गगा की धारा में अपनी प्रिया के साथ।

लोल लहरियाँ लहराती चलीं। कहती चली। यह कहानी याबत गगा-जमुना की धारा रहेगी तावत लोग सुनते रहेंगे। अनुप्राणित होते रहेंगे। स्मरण करते रहेंगे। जिनकी एकमात्र कामना अपनी जीवन-ज्योति बुझाकर दूसरों के गृहों को ज्योतिर्मय करने की थी।

जलतल से अस्थियाँ चलीं। जल-स्तर पर छाया करते चल श्रद्धाजलियों से बरसे पुष्प—गगा की उस प्रशस्त धारा में चल जो भारत की नदी है जो भारतीय सस्कृति-सभ्यता की प्रतीक है, जिसका इतिहास भारत का इतिहास है। वे चलीं प्रयाग से गगा सागर की यात्रा करने। उन उपकूलों को अवलोकन करती जो गंगा की पवित्र धारा से उपकृत हुए थे। कुसुमित हुए थे। विकसित हुए थे। व चलीं महासागर की उत्ताल तरगों से मिलकर भारतीय सागर के तटों की यात्रा करने। कामना करतीं। भारत उनका था। भारत के वे थे। भारत उनमें था। उनमें भारत था। करती चरितार्थ

गायन्ति देवा किल गीत कानि
धन्यास्तु ते भारत भूमि भागे।

स्वर्गापवर्गास्पद मार्ग भूते
भवन्ति भूय पुरुषा सुरत्वात ।।
कर्माण्य सकल्पित तत्फलानि,
संन्यस्य विष्णौ परमात्म भूते ।
अवाप्य तां कर्म मही मनन्ते
तस्मिंल्लयं ये त्वमला प्रयान्ति ।।
जानीम नैतत्क्व वयं विलीने
स्वर्गप्रदे कर्मणि देह बन्धनम ।
प्राप्स्याम धन्या खलु ते मनुष्या
ये भारते नेन्द्रिय विप्र हीना ।।

नोट—समाचार-पत्रों में छापा था कि पण्डितजी की माता स्वर्गीय श्रीमती स्वरूप-रानीजी की कुछ अस्थि का प्रवाह भी इसी समय हुआ था। यह बात मिथ्या है। निःसन्देह इसका प्रतिवाद किसी से उस समय नहीं किया गया। यह एक भूल है।



चिदाकाश स्वयं ब्रह्म है। भूताकाश में ब्रह्माण्ड स्थित है। चित्ताकाश मनुष्य स्वयं है। चित्ताकाश में दर्पणस्वरूप मनुष्य जगत का दर्शन करता है। मृत्युकाल मे चित्ताकाश भूताकाश में लीन होता है। और जब वह चिदाकाश में लीन होता है तो उसे मुक्ति कहते हैं। भगवान के साथ सायुज्यता प्राप्त होना कहते हैं। ब्रह्मलीन होना कहते हैं।

पण्डित जवाहरलाल की प्रेरक कल्पना-शक्ति दार्शनिक थी। वह प्रेरक शक्ति सबल है। मनुष्य के क्रिया-कलाप की सूत्रधार है। अन जाने जीवन में मोड़ पैदा करती है। अनजाने विचारों में परिवर्तन लाती है। भविष्य का वाणी से कहलवा देती है। लेखनी से लिखवा देती है। उस शक्ति न पण्डितजी को निश्चय प्रेरणा दी। भारतीय दर्शन में भाकाश का क्या स्थान है। उसे उनकी लेखनी से लिखा दिया।

वे चित्ताकाश थे। चित्ताकाश भूताकाश में लीन होकर, चिदाकाश में लीन होने के निमित्त उन्मुख होता है। सन् १९५४ में वसीयतनामा लिखते समय उन्होंने लिखा था— 'मेरी भस्म को एक वायुयान से आकाश द्वारा खेतों पर बिखेर दिया जाय ताकि भारतीय किसान उसे भारतीय मिट्टी में मिला लें और वह भारत का अंग बन जाय।" तब शायद उन्होंने कल्पना नहीं की थी। वे वह लिख रहे थे। जो भारतीय

दर्शन का केन्द्र-बिन्दु है।

यहाँ प्राच्य और प्रतीच्य दोनों का विचित्र समन्वय उनकी लेखनी द्वारा प्रसूत हुआ है। आकाश में भस्म बिखेरने की कल्पना उनके अचेतन मन पर जन्म-जन्मान्तरों से पड़ी भारतीय दर्शन तथा आध्यात्मिक भावना का साकार रूप था। उसी प्रकार खेतों में मिलकर भारत के कण-कण में मिलकर वे कृषकों के बीच सर्वदा उपस्थित रहें उनकी भौतिक कल्पना का साकार रूप था। वे आध्यात्मिक तथा भौतिक दोनों विचारों के विचित्र समन्वय आजन्म रहे। मृत्युपरान्त भी रहना पसन्द किया।

शरीर रचना-निमित्त पाँच तत्त्वों को प्रकृति ने साधन बनाया है। उनके चार तत्त्व यथा पृथ्वी जल अग्नि और वायु मूल तत्त्वों में मिल चुके थे। पाँचवें तत्त्व आकाश से मिलने उनकी भस्म नभोपथ से चली।

वायु सेना के दिल्ली स्थित केन्द्रीय कार्यालय में ३ जून सन् १९६४ को पण्डितजी के सन् १९५४ वाले वसीयतनामे के अनुसार भस्म का आकाश द्वारा विसर्जन करने की योजना बनाई गई। स्थान निश्चय किया गया। सुनिश्चित योजना सम्बन्धित अधिकारियों के पास आदेश के साथ प्रेषित कर दी गई।

पहले २३ स्थानों पर आकाश द्वारा भस्म विसर्जन करने की योजना बनाई गई थी। लकद्वीप वालों के आग्रह पर लकद्वीप भी जोड़ कर संख्या २४ कर दी गई। कश्मीर में दो स्थानों पर भस्म और विसर्जित की गई। इस प्रकार २६ स्थानों पर भस्म विसर्जन का कार्यक्रम बनाया गया। प्रत्येक स्थान पर १०० ग्राम अर्थात् लगभग आध सेर भस्म विसर्जन की योजना बनाई गई। भस्म रखने के लिए आस्तीन जैसी छः फुट लम्बी नाइलोन की उज्ज्वल झोली तैयार की गई। उसमें बालू रखने का भी स्थान बना दिया गया। यह इसलिए किया गया था कि हवाई जहाज से भस्म छोड़ते समय थैली वायु के झोंके से जहाज से चिपकी न रहकर, बालू के बोझ के कारण नीचे झूलती रहे और उससे सरलतापूर्वक भस्म का विसर्जन हो जाय।

इस आस्तीन में १२ फुट लम्बी डोरी लगा दी गई थी। उसमें एक छोर पर एक लटका (हुक) लगा दिया गया था। परिवहन हवाई जहाज में फर्श पर एक पटरी लगा दी गई थी। उसे खोला जाता था। उसके द्वारा थैली हवाई जहाज के उड़ते समय नीचे लटका दी जाती थी। भस्म सरलतापूर्वक गिर जाती थी। थैली पुनः ऊपर खींच ली जाती थी। पटरी पुनः यथास्थान लगाकर बन्द कर दी जाती थी। इस प्रकार भस्म निश्चित स्थान पर खेतों में गिराई जा सकती थी। जहाँ दरवाजा अथवा खिड़की आसानी से खुल सकती थी वहाँ जिस प्रकार फौज को आकाश से सामान गिराकर पहुँचाया जाता है उस प्रकार छोड़ने का प्रबन्ध किया गया था। इस थैली को भस्म सहित एक श्वेत बक्स में सील मुहर लगाकर रख दिया गया। भस्म के गिर जाने पर थैली यथावत् लपेट कर रख ली जाती थी।

भस्म-विसर्जन की योजना १२ जून सन् १९६४ को प्रातःकाल ८ बजे से १२ बजे मध्याह्न के मध्य पूरी कर लेने का आदेश दिया गया था। निश्चित स्थानों पर रिहर्सल आदि कर अन्तिम सूचना केन्द्रीय वायु सेना कार्यालय में ९ जून तक माँगी गई थी। वायुयान १००० फुट से लेकर १० हजार फुट की ऊँचाई से ऊपर या नीचे दो चार बार उड़कर स्थान की परिक्रमा करते थे। हवाई जहाज उड़ जाने के पश्चात् श्वेत बक्स की सील मुहर खोलकर भस्म निकाली जाती थी।

नाइलोन की ६ फुट लम्बी पतली थली में दो गाँठें लगी थीं। थली लपेटकर बक्स में रख दी गई थी। हवाई जहाज उड़ जाने पर बक्स की सील मोहर तोड़ी जाती थी। उस हवाई जहाज के २० फुट फर्श पर लम्बा कर रखा जाता था। थैली ६ फुट लम्बी तथा उसके साथ सम्बन्धित कपड़े की डोरी १२ फुट लम्बी थी। गाँठ नम्बर (अ) सबसे पहले खोली जाती थी। इसी से भस्म आकाश द्वारा गिरती थी। गाँठ खोलकर पुनः थली लपेटी गई। धागे धागा अथ भस्म के ऊपर लपेटा गया।

रिहर्सल के समय थैली में कोयला अथवा गोबर की राख रखकर इसका अभ्यास किया गया था। भस्म छोड़ने के समय ए० वी० एम० हवाई जहाज की गति १०५ मील, इल्युशियन की २५० किलोमीटर प्रति घण्टा रखी गई थी। जिस समय भस्म का विसर्जन किया गया, उस समय गति और मन्द कर २१० किलोमीटर प्रति घण्टा कर दी गई थी।

दिल्ली में होने वाले कार्यक्रम का रिहर्सल ४ जून को कर लिया गया था। जून ६ को सात भस्म-कलश सुरक्षा मन्त्री को सुपुर्द कर दिए गये थे। सैनिक उच्च अधिकारी भस्म-कलश को प्रधानमन्त्री-भवन तीन मूर्ति से थैली में भरने के लिए लेकर निकले। दूसरे दिन ७ जून को आठवें अस्थि-कलश ने प्रधानमन्त्री-भवन से प्रातःकाल प्रयाग संगम के लिए प्रस्थान किया। अतएव सातों कलशों को प्रधानमन्त्री-भवन से हटाकर किसी सुरक्षित स्थान पर रखना आवश्यक हो गया था।

परिशिष्ट १ में अंकित स्थानों पर भस्म-विसर्जन लगभग एक मील के व्यास में हवाई जहाज उड़ाकर किया गया था।

श्री रसिकलाल जोशी सभापति कच्छ कांग्रेस ने कच्छ के लिए भस्म-विसर्जन करने की प्रार्थना की थी। परन्तु वह स्वीकार नहीं हो सकी। एक वर्ष के अन्दर ही कच्छ भारत तथा पाक के विवाद का कारण बन गया।

पालम हवाई अड्डे के लिए श्रीमती इन्दिरा गांधी ने श्रीमती कृष्णा हथीसिंह के साथ ६ बजकर ४५ मिनट पर प्रातःकाल प्रधानमन्त्री भवन से प्रस्थान किया। वे ६ बजकर ५५ मिनट पर पालम पहुँचीं। हवाई अड्डे पर वायुसेना के पंक्ति-बद्ध ५० सैनिक मार्ग के दोनों पार्श्व पर खड़े थे। पहुँचते ही उन्होंने सैनिक अभिवादन किया। दोनों पंक्तियों के मध्य भस्म के पीछे श्रीमती इन्दिराजी चलीं। उनके साथ एक अधिकारी चौकोर दवेत बक्स लिये था। दूसरे अधिकारी के हाथ में वस्त्र था। उनके बाईं तरफ एयर मार्शल इंजीनियर थे। उनके पृष्ठ-भाग में पुनः दो सैनिक अधिकारी अनुकरण कर रहे थे।

पण्डितजी यहाँ पर प्रसन्न मुद्रा में देहरादून से २६ मई को उतरे

थे। और आज उनकी भस्म पहलगाँव के लिए यहीं से १८ दिन पश्चात् प्रस्थान कर रही थी। इसी का नाम भवितव्यता है।

विशिष्ट डकोटा वही था जिस पर पण्डितजी तथा उनके कुटुम्बी यात्रा किया करते थे। श्रीमती कृष्णा हथीसिंह नजफगढ़ पर भस्म विसर्जन निमित्त गई थीं। डकोटा पिता की भस्म और पुत्री के साथ उस प्रदेश के लिए ठीक ७ बजे प्रातःकाल चला जहाँ से कभी पण्डितजी के पूर्वज आये थे।

बनिहाल पास पर उज्ज्वल बरसते बादल मार्ग रोके खड़े थे। जीवित पण्डितजी के स्वागत के आदी बनिहाल पास तथा उस पर उड़ती मेघ माला निर्जीव भस्म के स्वागत निमित्त उद्यत नहीं थी। हवाई जहाज पठान कोट लौटा। पुनः दूसरे मार्ग से जम्मू तथा ऊधमपुर होते हुए उसने १० बजे दिन कश्मीर उपत्यका में प्रवेश किया।

पहलगाँव पण्डितजी को प्रिय था। सुरम्य उपत्यका लिदर नदी के कलकल नाद द्वारा मुखरित थी। उपत्यका में स्थित मन्दिर स्मरण दिला रहा था कश्मीर में कभी रहे शव मत के प्राबल्य का। शेष नाग से प्रसूत स्रोतस्विनी तथा लिदर नदी संगम पर १० हजार फुट की ऊँचाई से १० बजकर २५ मिनट पर पुत्री ने पिता के भस्म का विसर्जन किया। डकोटा भस्म प्रवाह कर १ बजे इन्दिरा गांधी के साथ पालम लौट आया।

पालम से १५ मील दूर नजफगढ़ के समीपवर्ती खेता में भस्म विसर्जन के लिए श्रीमती कृष्णा हथीसिंह सबश्री राजीव तथा संजय हेलीकाप्टर से भस्म लेकर ७ बजकर ४५ मिनट प्रातःकाल पालम से उड़े। वायुयान के चालक श्री क० क० सैनी थे। ये पण्डितजी को लेकर पालम से देहरादून गये थे। देहरादून से पुनः २६ मई, सन् १९६४ को पण्डितजी को लेकर लौटे थे। आज वे पण्डितजी की मुट्ठी भर राख लेकर उड़े। भावी प्रबल है।

पूना राज-भवन में ठीक ६ बजे प्रातःकाल उच्च सैनिक अधिकारी पहुँचे। श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित भस्म तथा वायुसेना अधिकारियों

के साथ ८ बजकर ३० मिनट पर पूना हवाई अड्डे पर पहुँची। अहमदनगर के लिए जहाज ६ बजकर ३५ मिनट पर उड़ा। अहमदनगर जेल में 'भारत छोड़ो' आन्दोलन के सम्बन्ध में सन् १९४२ में पण्डितजी ने अपने जीवन का सबसे लम्बा बन्दी जीवन व्यतीत किया था। भस्म जेल के समीपवर्ती खेत पर छोड़ी गई।

दारजलिंग में बर्च हिल के बोटानिकल उद्यान में भस्म विसर्जन करने का कार्यक्रम था। मौसम की खराबी के कारण इस दिन कार्यक्रम सम्पन्न नहीं हो सका। यद्यपि बंगाल की राज्यपाल कुमारी पद्मजा नायडू इस कार्य के निमित्त सिलीगुड़ी के समीप हवाई अड्डे बगडोगरा पर पहुँच चुकी थीं। पद्मजाजी का पण्डितजी के परिवार के साथ एक कुटुम्बी के समान प्रारम्भ से ही सम्बन्ध रहा है।

मैसूर राज्य में बंगलोर के समीप हेसारघट्टी सरोवर के चारों तरफ हवाई जहाज से भस्म का विसर्जन किया गया।

पण्डितजी की भस्म प्रत्येक राज्यों के मन्त्रीगण ले गये थे। वह उन्होंने पुनः अपनी इच्छानुसार राज्य के विभिन्न स्थानों में विसर्जन करने के लिए परस्पर विभाजित की।

भारत की ३० नदियों से भी अधिक नदियों में भस्म का विसर्जन किया गया। उनमें गंगा, यमुना, अलकनन्दा, सरयू, सतलज, रावी, व्यास, सरस्वती (घग्घर) ब्रह्मपुत्र, नामसांग, सूसी, डिगारू, ऐसा, कृष्णा, कावेरी, गोदावरी, बेतवा, नर्मदा, क्षिप्रा, कोसी, दामोदर, मयूराक्षी, फल्गू, गंडक, बागमती, हुगली, सिन्धु, वितस्ता मुख्य हैं। सरोवरों में पुष्करजी (अजमेर) में भस्म का विसर्जन किया गया था।

उत्तर प्रदेश—बद्रीनाथ के समीप अलकनन्दा तथा हरिद्वार में गंगा में श्री शान्ति प्रपन्न शर्मा ने, लखनऊ में गोमती में मुख्य मन्त्री श्रीमती सुचेता कृपलानी ने, मथुरा में यमुना के विश्राम घाट पर श्री जगनप्रसाद रावत ने, काशी में हरिश्चन्द्र घाट गंगा में, श्री कमलापति त्रिपाठी और लखनऊ ने अयोध्या में सरयू में हुकमसिंह ने और सोरों स्थान पर यमुना में भस्म प्रवाह किया गया।

पंजाब—नंगल स्थान पर सतलज में मुख्य मंत्री प्रतापसिंह कैरों तलवारा पर व्यास नदी में सरदार दरबारासिंह माधोपुर बाग के समीप रावी में श्री मोहनलाल ने ओलू के समीप सरस्वती अर्थात् घग्घर और यमुना नगर में यमुना में भस्म प्रवाह किया गया।

राजस्थान—मुख्य मंत्री सुखाड़ियाजी ने पुष्करजी के पवित्र सरोवर में भस्म का प्रवाह किया।

मद्रास—मुख्य मंत्री श्री भक्तवत्सलम ने कन्याकुमारी में जहाँ बंगाल अरब तथा हिन्द महासागर का संगम है भस्म प्रवाहित किया।

आसाम—ब्रह्मपुत्र नदी में शुक्लेश्वर घाट गोहाटी में मुख्य मंत्री श्री चालिहा ने भस्म का प्रवाह किया।

आसाम के राज्यपाल श्री विष्णुसहाय ने नामसांग नदी में तजू के समीप और डिगारू नदी में भस्म का प्रवाह किया।

आन्ध्रप्रदेश—मूसी तथा ऐसा नदी के संगम पर गोलकुण्डा में जहाँ १६ वर्ष पूर्व महात्माजी का भस्म प्रवाह किया गया था वहाँ आन्ध्र के राज्यपाल श्री पट्टम थानुपिल्ले तथा श्री ब्रह्मानन्द रेड्डी ने भस्म का प्रवाह किया। विजयवाड़ा में कृष्णा नदी राजमुंद्री में गोदावरी नल्लौर के समीप पन्नार नदी पश्चिम वाहिनी स्थान पर कावेरी तथा महानदी में भस्म प्रवाहित किया गया।

मध्यप्रदेश—विदिशा के समीप बेतवा नदी में श्री शंकरलाल शर्मा तथा नर्मदा में श्री मिश्रीलाल गंगवाल उज्जैन में सिप्रा नदी में राज्यपाल श्री पाटस्कर ने भस्म का प्रवाह किया। ग्वालियर में श्री कन्हैयालाल खादीवाला तथा श्री गौतम शर्मा ने भस्म का प्रवाह किया।

केरल—मुख्यमंत्री श्री शंकर ने भारत नदी में तिरूनावाया स्थान में भस्म का प्रवाह किया।

बिहार—गंगा कोसी, दामोदर, मयूराक्षी, फल्गू घाघरा, गण्डक बागमती में भस्म का प्रवाह किया।

हिमाचल प्रदेश—मण्डी के समीप व्यास नदी में भस्म का प्रवाह

किया गया।

त्रिपुरा—गुमती नदी में भस्म का प्रवाह किया गया।

काश्मीर—कश्मीर के प्रयाग (वितस्ता सिन्ध-संगम) शान्दीपुर स्थान में भस्म का प्रवाह किया गया।

बंगाल—गांधी घाट पर बंगाल की राज्यपाल कुमारी पद्मजा नायडू ने भस्म का प्रवाह किया।

उड़ीसा—१४ स्थानों पर भस्म का प्रवाह किया गया।

पण्डितजी की भस्म तुषारमण्डित हिमाचल से लेकर स्नात कन्या कुमारी राजकोट से नागा प्रदेश, पर्वत शिखर, मरुस्थल सरित, पठार, हरित उपत्यका लहलहाते खेतों सूखे खेतों, वनों समुद्र की तरंगों, नदियों की चंचल उर्मियों, मरुत की लहरियों में मिलती कृषकों की मूक श्रद्धांजलि स्वीकार करती नगर निवासियों के जयघोष में विहरती, एक ही समय पर प्रातःकाल ८ बजे से १२ बजे मध्याह्न भारत भूमि में मिलकर उसके हृदय म प्रवेश कर भस्म औषधि तुल्य देश के शरीर को उसकी शिराओं को जीवनमय शक्तिमय बनाने की शान्त परि कल्पना में लग गई। पण्डितजी मरने के पश्चात् औषधि स्वरूप भस्म बनकर जजर दरिद्रता व्याधि-ग्रस्त भारतीय काया को शक्तिशाली बनाने में लग गये। भारतमाता को सान्त्वना देते गये 'मत रो माँ तेरे लाल हैं बहुतेरे।

उनकी यश काया उनकी कीर्तिलता, उनकी अमरवेलि आप पाठकों के स्नेह-सर्पण द्वारा निरन्तर तृप्त होती रहे। इस संकल्प से लिपिबद्ध पुस्तक निहित भाषा और भाव के अभाव को आप अपनी सहृदयता से विस्मृत करते रहें। इस एकान्त कामना के साथ इस कथा की समाप्ति में इस अकिंचन महाश्मशान भूमि काशी निवासी रघुनाथ सिंह की लेखनी अपने प्राक्तन पुण्य के फल-श्रुति का अनुभव करती कृतार्थ होती है।

आज स एक वर्ष पूर्व १२ जून सन् १९६४ ई० को पण्डितजी की पवित्र भस्म भारत भूमि में मिलकर एकाकार हो गई थी। घटना

यहूर महाप्रस्थान [की अलकार रहित रस रहित गाथा-वीथी में आप रसज्ञ ज्ञानी गण न विचरण कर जिस सुननना का परिचय दिया है उसके लिए लोक और परलोक में अन्तत: आपका कृतज्ञ रहूँगा।

यद्यपि दु खान्त रचना पुरातन भारतीय साहित्यिक परम्परा के अनुकूल नहीं है किन्तु मृत्यु केवल एक लोक से दूसरे लोक की यात्रा प्रशस्त करती है। प्रस्थान के लिए आह्वान करती है। जिस मृत्यु के माध्यम से पण्डितजी ने दूसरे लोक की यात्रा आरम्भ की है जिस यात्रा का यात्री हमको आपको सबको होना है उस मृत्यु को अथर्व वेद के सनातन पद के साथ शिरसा नमामि करता हूँ

कां० ६ सू० १३

(ऋषि—अथर्वा (स्वस्त्ययन काम)। देवता—मृत्यु।
नमो देववधेभ्यो नमो राजवधेभ्य।
अथो य विश्यानां वधास्तेभ्यो मृत्यो नमोऽस्तु ते ॥१॥
नमस्ते अधिवाकाय परावाकाय ते नम।
सुमत्यै मृत्यो ते नमो दुर्मत्य त इदं नम ॥२॥
नमस्ते यातुधानेभ्यो नमस्ते भेषजेभ्य।
नमस्ते मृत्यो मूलेभ्यो ब्राह्मणेभ्य इदं नम ॥३॥

देवों के कारण होने वाले वध राजा (राज्य) द्वारा होने वाले वध वश्यों (धनिकों) द्वारा होने वाले वध का नमस्कार करता हूँ। हे मृत्यु! मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ।

तेरी अनुकूलता को नमस्ते, तेरी प्रतिकूलता को नमस्ते तेरी सुमति को नमस्कार, और तेरी दुर्मति को भी मेरा यह नमस्कार है।

तेरी यातनादायक व्याधियों को नमस्ते तेरे भेषजों को नमस्ते, हे मृत्यु! तेरे मूल कारण और ज्ञानियों को भी मैं नमस्ते करता हूँ।

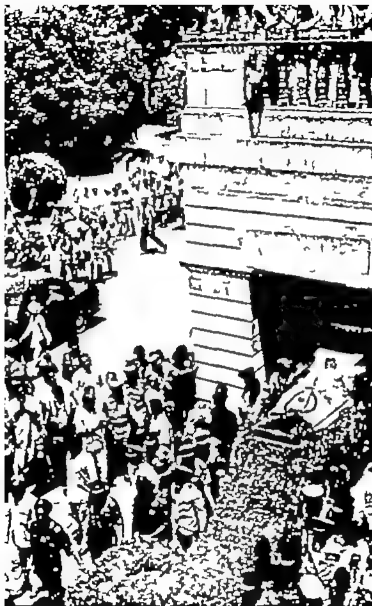




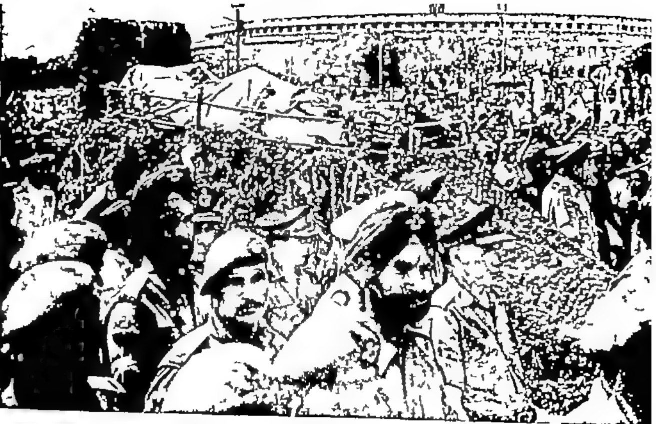




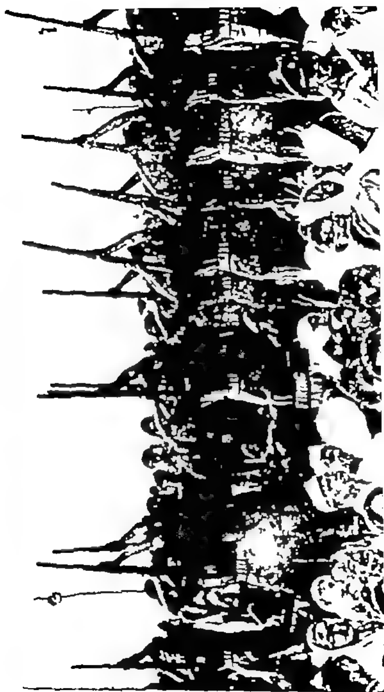
टन और
मी पत्नि



ाम में प्रस्थान



समर के लिए









रक्षामंत्री श्री चव्हाण [illegible] भस्म ग्रहण कर रहे हैं जो भारत के प्रत्येक कण को पुण्य बना देगी





ग्यायमर्षी पालिकम मे

परिशिष्ट—१

भस्म-विसर्जन

क्र० संख्या	राज्य	क्षेत्र	विसर्जन स्थान	समय	जहाज	प्रवाहक
१—(क)	जम्मू-कश्मीर	लेह	नया गाम	८ बजे प्रातः	एलोओर	
(ख)	,,	पहलगाँव	सिन्दर संगम	१० बजे प्रातः	बी०आई०पी० डकोटा	श्रीमती इन्दिरा गांधी
(ग)	,,	जम्मू	समीपवर्ती खेत	८ बजे प्रातः	डकोटा	
२—	पंजाब	मनाली		१०.३० बजे प्रातः	इल्यूशियन	
३—	हिमाचल	भिन्नी	समीपवर्ती क्षेत्र	८ बजे प्रातः		
४—	दिल्ली	नजफगढ़		८ बजे प्रातः	हेलीकाप्टर	श्रीमती हर्षीसिंह, श्री राजीव तथा श्री संजय
५—	राजस्थान	सूरतगढ़	फार्म	८ बजे प्रातः	डकोटा	
६—	उत्तरप्रदेश	इलाहाबाद	फूलपुर खेत	८ बजे प्रातः	बेल-हेलीकाप्टर	
७—	गुजरात	राजकोट	समीपवर्ती खेत	८	डकोटा	
८—	मध्यप्रदेश	भोपाल		८	डकोटा	
९—	महाराष्ट्र	अहमदनगर (अस के)		१०.३० ,,	बी०आई०पी० डकोटा	श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित
१०—	बिहार	मोतीहारी	समीपवर्ती खेत	९	डकोटा	
११—	उड़ीसा	भुवनेश्वर	,,	९ ,,	डकोटा	

१२—	पश्चिम बंगाल	बर्द हिल	बोटानिकल उद्यान—		एलोएट
१३—	आसाम	तेजपुर	समीपवर्ती क्षेत्र	८	हेलीकाप्टर
१४—	मणीपुर	इम्फाल	—	८	डकोटा
१५—	नागालैंड	कोहिमा	—	८	डकोटा
१६—	त्रिपुरा	अगरतल्ला	—	९	डकोटा
१७—	एन०एफ०ई०ए०	बामडीला	—	९	हेलीकाप्टर
१८—	अण्डमान	पोर्ट ब्लेयर	—	११	डकोटा
१९—	आन्ध्रप्रदेश	नागार्जुन सागर	समीपवर्ती क्षेत्र	९	डकोटा
२०—	गोआ	पंजिम		९	डकोटा
२१—	मसूर	बंगलोर		८ ३०	डकोटा
२२—	मद्रास	कन्याकुमारी		१० ३०	डकोटा
२३—	केरल	त्रिवेन्द्रम		१० ३०	डकोटा
२४—	लकद्वीप	मिनको और कलपेनी			डकोटा

परिशिष्ट—२

मृत्यु-सूचना सम्बन्धी प्रथम तार

Telegram/Most Immediate State Dated 27 5-64
Chief Justice of India Eversley House, Nainital
All State Governments/Union Territory
Administrations Secretaries To All
Governors, Sadar I Riyasat & Lt
Governors, Chief Commissioners

Number 3/7/64/Pub. II MOST PROFOUNDLY REGRET TO STATE THAT SHRI JAWAHARLAL NEHRU PRIME MINISTER OF INDIA PASSED AWAY AT 1400 HRS OF 27th MAY 1964 GOVERNMENT OFFICES ALL OVER INDIA WILL AS A MARK OF RESPECT REMAIN CLOSED TODAY THE 27th MAY AND TOMORROW 28th MAY THESE DAYS WILL BE PAID HOLIDAYS UNDER THE NEGOTIABLE INSTRUMENTS ACT STATE MOURNING WILL BE OBSERVED FOR TWELVE DAYS UPTO AND INCLUDING 8th JUNE, 1964 FLAGS WILL BE FLOWN HALF MAST ON ALL GOVERNMENT BUILDINGS AND THERE WILL BE NO PUBLIC ENTERTAINMENT DURING THIS PERIOD REQUEST STATE GOVERNMENTS ETC. TO TAKE SIMILAR ACTION

HOME

परिशिष्ट—३

शवयात्रा सम्बन्धी प्रथम तार

MOST IMMEDIATE

Telegram State Dated 27 5-1964.

All State Governments/Union Territory Administrations
Secretaries To All Governors Sadar I Riyasat And
Lt. Governors, All Chief Commissioners Chief
Justice Of India, Eversley House, Nainital.

No. 3/7/64/Pub. II CONTINUATION THIS MINISTRY TELEGRAM EVEN NUMBER DATED 27th STOP FUNERAL OF LATE SHRI JAWAHARLAL NEHRU PRIME MINISTER OF INDIA WILL TAKE PLACE AT NEW DELHI ON 28th MAY WHICH IS BEING DECLARED PUBLIC HOLIDAY UNDER NEGOTIABLE INSTRUMENTS ACT STOP NOTIFICATION FOLLOWS

HOME

परिशिष्ट—४

प्रशासकीय घोषणा

PRESS INFORMATION BUREAU

(Government of India)

6.14

Prime Minister Nehru Passes Away
State Mourning For 12 Days

New Delhi, Jyaistha [illegible] 1886
May 27 1964

The Government of India have announced with the most profound regret the death of Shri Jawaharlal Nehru Prime Minister of India, in New Delhi, today

As a mark of respect to the memory of the departed Prime Minister all offices under the control of the Government of India throughout the country would remain closed on May 27 and 28 1964 This period will be treated as paid holiday for all employees of the Central Government, including industrial employees on regular work/charged and industrial establishments paid on monthly basis and the labour hired on daily wages for the entire month These days have also been declared as holidays under the Negotiable Instruments Act 1881

State mourning will be observed for 12 days, upto and including June 8 1964 Flags will be flown at half mast on all Government buildings throughout India and there will be no public entertainment during this period.

UCT KBS. VOHRA
PRM

641/1

परिशिष्ट—५

भारत सरकार की पण्डित जी के निधन सम्बन्धी विज्ञप्ति

PRESS INFORMATION BUREAU

(Government of India)

He Never Fought Shy Of Truth Nor Made Alliance With Falsehood

Government Of India's Tributes To Shri Nehru

Obituary Notification Issued

The Government of India have issued an obituary notification in a black-bordered special issue of the Gazette. It says

"The passing of India's beloved leader and Prime Minister Jawaharlal Nehru on May 27 1964, has plunged the whole nation into the profoundest grief. The country has suffered its greatest loss since the death of the Father of the Nation Jawaharlal Nehru belonged to the whole world today mourns the departure of this great figure. A valiant fighter for the people of India all his life, Jawaharlal Nehru was the chief architect of modern India. His entire life was dedicated not only to the ideals of national freedom unity and solidarity but equally to those of world peace and progress

Born at Allahabad on November 14 1889 Jawaharlal Nehru was the son of Pandit Motilal Nehru an eminent lawyer and one of India's greatest patriots. At the age of 15 he went to England and after two years at Harrow studied at Trinity College Cambridge. He was later called to the Bar from the Inner Temple and returned to India in 1912.

Destiny had not intended him to confine himself to the legal profession and he was drawn irresistibly towards the movement

for India's freedom. His meeting with Mahatma Gandhi in 1916 was the coming together of two great souls and was to prove to be a Landmark in Jawaharlal Nehru's life. In the same year he was married to Kamala Kaul who stood by him throughout all the joys and tribulations of his life until her early death in 1936 leaving behind her only child and daughter Indira.

After the epochal meeting with Mahatma Gandhi Jawahar lal Nehru and his whole family was plunged in the main stream of the freedom struggle. In 1918 he was elected Secretary of the Home Rule League, Allahabad and became a member of the All India Congress Committee of which he remained a member for the rest of his life. He was soon assisting Deshbandhu Chittaranjan Das in the enquiries into the repression that followed the Jallianwala Bagh tragedy in Punjab and by 1920 he was in close contact with the problems and aspirations of the Indian peasantry beginning with the Kisan Agitation in Eastern U P In 1921 came the first of many occasions on which he courted arrest by refusing to obey orders he considered unjust.

In 1923 he was arrested for disobeying orders to leave the then State of Nabha. Thus began his special association with the freedom struggle in the Indian States. In 1927 began his long association with international democratic movements with his participation in the Congress of Oppressed Nationalities in Brussels as an official delegate of the Indian National Congress, which he followed up with an extensive tour of Europe and his first visit to the U S.S.R.

In 1929 he was elected President of the Lahore Session of the Indian National Congress. The national struggle entered a new and significant phase when on the sacred banks of the Ravi the Congress took the pledge on the historic day of *December 31 1929* of complete independence as its goal.

The thirties saw Jawaharlal Nehru became the acknowledged heir to Mahatma Gandhi. In between recurrent spells of incarceration and despite his pre-occupation with national

problems he found time also to participate in the struggle against the onslaughts of fascism in different parts of the world He lent courageous support to the Republican force in Spain and visited that country during trubulent days. His was one of the resounding voices in the years preceding the holocaust of the Second World War warning the democratic forces all over the world against its coming menance.

The failure of the then Government of India to give the Indian people a meaningful opportunity to participate in the world struggle against fascism inexorably led to a conflict The historic "Quit India" Resolution was passed by the All India Congress Committee at Bombay on August 9 1942 and immediately thereafter Mahatma Gandhi Jawaharlal Nehru and other leaders were imprisoned

On their release three years later negotiations with the British Government began and Jawaharlal Nehru took office as Vice President of the Executive Council when the Interim Government of India was formed on September 2 1946. The Constituent Assembly met on December 9 of the same year Events followed in rapid succession leading to the partition of India. On August 15 1947 India and Pakistan came into being as two separate countries.

On that solemn midnight when India became free Jawahar lal Nehru declared Long years ago we made tryst, and now the time comes when we shall redeem our pledge not wholly or in full measure but very substantially" "To the people of India, whose representatives we are we make an appeal to join us with faith and confidence in this great adventure. We have to build the noble mansion of a free India where all her children may dwell." In these seventeen years he had to bear many a grievous shock and non greater than the assasination of the Father of the Nation on January 30 1948 Jawaharlal Nehru rellied the nation. A great disaster is a symbol to us to remember all the big things of life and forget the small things of which we have thought too much. As the years passed Jawaharlal Nehru lost many a trusted lieutenant and comrade in arms;

undeterred he strove to build the India of his dreams.

His world vision remained undimmed. He convened the Asian Relations Conference in March 1947 and was its moving spirit. In 1954 he enunciated the Panch Shila the five principles of peaceful co-existence. There were other international conferences leading to the Bandung Conference in 1955. He gave the world the doctrine of non-alignment which was affirmed at the summit meeting of the non-aligned nations in Belgrade in 1961.

Jawaharlal Nehru was dedicated to the ideals of the United Nations and the principles of the Charter. He addressed the Third General Assembly Session in Paris in 1948. His last appearance at the United Nations was in 1960. There he moved a significant resolution stressing the note for world peace and urging the leaders of the great powers to renew their contacts. He was the first Head of Government to support the partial test-ban pact signed by the three Nuclear Powers in August, 1963.

He strove tirelessly against war and for total disarmament. He initiated and supported action for the liberation of dependent countries. He fought against the exploitation of man by man and ceaselessly to bring freedom from fear and hunger not only to his own people but to the world at large. He set his face against all political and military blocs as the greatest impediments to world peace.

Not the least abiding of Jawaharlal Nehru's contribution was his concept of a revolution in our national economy through planning within a democratic framework. Even before India had attained freedom, he foresaw the need for economic planning and was instrumental in setting up the National Planning Committee under the aegis of the Indian National Congress as early as in 1936. When freedom came, the earlier efforts bore fruit. The Planning Commission was set up and in 1951 India embarked upon her historic series of Five-Year Plans. The acceptance of economic planning as a way of life by many new free nations is

an eloquent tribute to his basic social and economic thinking

Jawaharlal Nehru was unremitting in his endeavour for the unity and solidarity of the Indian nation. He struggled ceaselessly to blend the different elements of our national life into an integrated social structure. He fought against all the barriers of caste, religion and language and for the uplift of the less privileged He constantly affirmed the secular concept of our State as necessary for all sections of the people to live together in peace and harmony Jawaharlal Nehru was a distinguished man of letters. He utilised his spells in prison to write "Autobiography Letters from a father to his daughter" Glimpses of World History' and "Discovery of India which have found permanent place in literature.

Such was the man who led his country for so many decades and administered it so wisely for eighteen years—an upholder of the noble values of human life and the dignity of men.

There could be no other epitaph for Jawaharlal Nehru than that which he himself suggested in a pensive mood with characteristic humility—"If any people choose to think of me then I should like them to say 'This was a man we with all his mind and heart were indulgent to him and gave all their love most abundantly and extravagantly

That loving memory of the Indian people, and indeed the people of the world will always cherish for Jawaharlal. For as Rabindranath Tagore said "he had never fought shy of truth when it was dangerous, nor made alliance with falsehood when it would be convenient.

परिशिष्ट—१

पण्डित जी का वसीयतनामा

TESTAMENT
OF
JAWAHARLAL NEHRU

I have received so much love and affection from the Indian people that nothing that I can do can repay even a small fraction of it, and indeed there can be no repayment of so precious a thing as affection. Many have been admired some have been revered, but the affection of all classes of the Indian people has come to me in such abundant measure that I have been over whelmed by it. I can only express the hope that in the remaining years I may live, I shall not be unworthy of my people and their affection.

To my innumerable comrades and colleagues I owe an even deeper debt of gratitude. We have been joint partners in great undertakings and have shared the triumphs and sorrows which inevitably accompany them.

* * *

I wish to declare with all earnestness that I do not want any religious ceremonies performed for me after my death. I do not believe in any such ceremonies and to submit to them even as a matter of form would be hypocrisy and an attempt to delude ourselves and others.

When I die, I should like my body to be cremated. If I die in a foreign country my body should be cremated there and my ashes sent to Allahabad. A small handful of these ashes should be thrown into the Ganga and the major portion of them disposed of in the manner indicated below No part of these ashes should be retained or preserved.

My desire to have a handful of my ashes thrown into the Ganga at Allahabad has no religious significance, so far as I am concerned. I have no religious sentiment in the matter. I have been attached to the Ganga and the Jumna rivers in Allahabad ever since my childhood and as I have grown older this attachment has also grown. I have watched their varying moods as the seasons changed, and have often thought of the history and myth and tradition and song and story that have become attached to them through the long ages and become part of their flowing waters.

The Ganga especially is the river of India, beloved of her people, round which are intertwined her racial memories, her hopes and fears, her songs of triumph, her victories and her defeats. She has been a symbol of India's age-long culture and civilisation, ever-changing, ever-flowing, and yet ever the same Ganga. She reminds me of the snow-covered peaks and the deep valleys of the Himalayas, which I have loved so much, and of the rich and vast plains below, where my life and work have been cast. Smiling and dancing in the morning sunlight, and dark and gloomy and full of mystery as the evening shadows fall, a narrow, slow and graceful stream in winter, and a vast roaring thing during the monsoon, broad-bosomed almost as the sea, and with something of the sea's power to destroy, the Ganga has been to me a symbol and a memory of the past of India, running into the present, and flowing on to the great ocean of the future. And though I have discarded much of past tradition and custom, and am anxious that India should rid herself of all shackles that bind and constrain her and divide her people, and suppress vast numbers of them, and prevent the free development of the body and the spirit; though I seek all this, yet I do not wish to cut myself off from the past completely. I am proud of that great inheritance that has been, and is, ours, and I am conscious that I too, like all of us, am a link in that unbroken chain which goes back to the dawn of history in the immemorial past of India. That chain I would not break, for I treasure it and seek inspiration from it. And as witness of this desire of mine and as my last homage to India's cultural inheritance, I

am making this request that a handful of my ashes be thrown into the Ganga at Allahabad to be carried to the great ocean that washes India's shore.

The major portion of my ashes should however be disposed of otherwise. I want these to be carried high up into the air in an aeroplane and scattered from that height over the fields where the peasants of India toil, so that they might mingle with the dust and soil of India and become an indistinguishable part of India.

Jawaharlal Nehru

21st June, 1954

परिशिष्ट—७

महात्मा गान्धी के अस्थि-स्पेशल का कार्य-क्रम

The *Chief Commissioner of Railways* explained that this meeting had been called for with a view to finalising the arrangements for the Mahatma Gandhi Asthi Special

1 The Mahatma Gandhi Asthi Special will be a third class special train in the following marshalling order —

Engine
Third Class bogie
Third Class bogie
Third Class bogie
Third Class bogie
Brakevan and third class.

2. The urn with the asthi will be carried in the central compartment of the central bogie. The special train will leave the Ceremonial platform New Delhi station, at 6-30 a.m. on 11.2 48 The urn will be installed in the compartment at 4.30 a.m. and the public will be permitted to have darshan and file past this compartment between 4.30 a.m. and 6 00 a.m

3. The special train will carry a *limited* number of passengers who will be provided with a special ticket to cover the journey The train will run according to the enclosed timings and will halt at the following stations.

Ghaziabad	15 Mts.
Khurja	10 ,,
Aligarh	15 ,,
Hathras	15 ,,
Tundla	15 ,,
Firozabad	10 ,,
Shikohabad	10 ,,
Etawah	15 ,,
Phaphund	10 ,,

Cawnpore Central	1 hour and 55 mts.	
Fatephur	10 ,,	
Rasulabad		

The train will halt at Rasulabad for the night of 11.2.48 where extra coaches will be kept ready to provide sleeping accommodation to passengers travelling by this train.

4 Arrangements for the Asthi compartment

In the compartment in which the urn is carried a few members of Mahatmaji's family will travel. The military authorities will arrange for four armed soldiers to be continuously on duty in this compartment. They will probably be selected to represent all the Forces viz. Army Navy and Air Force. The army authorities will be advised whether these military personnel would be permitted to wear shoes while on duty in this compartment.

5 Arrangements at New Delhi Station

(a) The train will be in position by mid-night of 10/11.2.48 The rake will be placed so that the door is opposite the entrance to the platform. After the urn has been placed in position the train will be pulled forward slightly so that the centre of the compartment will face the entrance. The Military and Police personnel who will travel by the train will join the special before 4.30 a.m.

(b) No barriers will be erected at New Delhi station and the regulation of the public at this station will be the responsibility of the local police authorities

(c) The special train will not halt at Delhi Main station, arrangements should be made to ensure that the passage of the train through Delhi area is not obstructed.

(d) The police authorities will contact Mr Devadas Gandhi direct to ascertain the route by which the urn will be brought from Birla House to New Delhi station The urn will be brought in a car which will be permitted to be taken to the platform in front of the compartment set apart for this purpose.

(c) The Divisional Supdt. E.P Railway, Delhi and DIG, Police, Delhi, will fix up details of the arrangements on the site.

6 Arrangements during the Journey

(a) *At stations where the special is scheduled to stop, the* stop where the central compartment will stand will be marked off and against this central coach a barrier will be erected about 12 ft. from the edge of the platform The public will be allowed to file past the Asthi Compartment

(b) The local police authorities will be responsible to regulate the crowds.

(c) About 40 to 60 military personnel and 1 Sub-Inspector and 12 constables will travel on the Asthi special. About 6 *military personnel will be accommodated in the compartments* adjoining the Asthi compartment the remaining military personnel and the *police officials will* be accommodated at both ends of the train.

(d) As soon as the train comes to a stop the military personnel accommodated next to the Asthi compartment will take up position opposite the barrier and help in regulating the crowds.

(e) As soon as the train stops at the station, military guards will take up position on the off-side.

7 Pressmen

Mr Devadas Gandhi is arranging to take a party of pressmen. No other pressmen will be allowed to travel by the special

8. Pilot engine

(a) A pilot engine with one bogie brake and third will run about *half-an-hour ahead of the special. A party of one Sub-*Inspector 1 Head Constable and 4 Constables will travel by this pilot engine

(b) The police party travelling by the pilot train and by the special will be changed at Etawah.

(c) The military and police personnel travelling by the special will be permitted to take their beddings.

9 Return Journey

(a) The return special will leave Allahabad in the evening on 12th February 1948.

(b) The police and military authorities will not be on duty on the return journey As far as possible lying down accommodation will be provided in the return special.

10 Smoking etc., on the train

No smoking chewing of pan bettle-nuts or drinking will be permitted on this special train.

11 Arrangements for food

(a) Mr Devadas Gandhi is arranging for the food of passengers who will travel by the special train, including the members of the military and Police parties The food will be distributed before the train leaves New Delhi station.

(b) The train will halt at Bhaupur between 15.45 and 15 55 hours where tea and milk will be served.

(c) When the train stops at Rasulabad at night, plain milk will be served.

12. Arrangements at Rasulabad

At Rasulabad where the special will stop for the night the train will be guarded by the military

13 Arrangements at Allahabad

At Allahabad the special will be taken on to a platform which has a direct access to the road from where the procession will start.

The train should be slowed down to pick up a Jamadar to pilot the train as the movement from down to up line is not signalled.

(a) A Divisional Superintendent will travel in charge of the train.

(b) The E.I Railway engine will work through from New Delhi to Cawnpore. The E.P Railway will provide pilot drivers who will detrain at Ghaziabad. The train will not stop at Delhi Main

(c) The engine will be provided with hand-picked coal.

(d) At stations where stalls or refreshment rooms have been provided, the vendors will not be permitted to exhibit wares when the special passes through. Watermen will be provided but they will not shout.

(e) The special will not be stopped out of course.

(f) No vendors will be permitted on to the platform.

(g) The train should run to time.

(h) No bells will be rung at any station announcing the arrival and departure of the special. Whistle of the train engine should be kept down to the minimum. Short blast only will be blown. Engines in yards will avoid whistling while the down special halts or passes.

(i) All platforms wand level crossings over which the special will pass will be watered to keep down the dust.

(j) All railway staff should be in uniform and will stand bare-headed if in the presence of the Asthi compartment.

(k) Sanitary train examining and electrical staff should accompany the special to attend to urgent calls.

(l) The line should be patrolled by gangmen in accordance with standing orders.

(m) Necessary sanitary staff will be provided at Rasulabad where the train will halt for the night.

(n) A Bogie charging van should be provided if available.

Sd :—

Secretary Railway Board.

Timings of the Mahatma Gandhi Asthi Special Delhi to Allahabad.

11.2.48	New Delhi	dep	0530	
	Ghaziabad	arr	0713	15 Mts. halt.
		dep.	0728	
	Khurja	arr	0928	16
		dep.	0838	
	Aligarh	arr	0918	15 ,,
		dep	0938	
	Hathras	arr	1003	15
		dep	1018	
	Tundla	arr	1112	10 ,,
		dep	1127	
	Ferozabad	arr	1145	10 ,, ,,
		dep.	1155	
	Shikohabad	arr	1216	10 ,,
		dep	1226	
	Etawah	arr	1216	15 ,, ,,
		dep	1332	
	Phaphund	arr	1433	10 ,, ,,
		dep	1443	
	Kanpur Central	arr	1630	1 hr 55 ms.
		dep.	1825	
	Fatehpur	arr	1934	10 mts. halt
		dep.	1944	
	Rasulabad	arr	2010	
12.2.1948	Rasulabad	dep.	0530	
	Allahabad	arr	0900	

14 Railway arrangements

(a) A Divisional Superintendent will travel in charge of the train

(b) The E.I Railway engine will work through from New Delhi to Cawnpore. The E.P Railway will provide pilot drivers who will detrain at Ghaziabad. The train will not stop at Delhi Main

(c) The engine will be provided with hand-picked coal

(d) At stations where stalls or refreshment rooms have been provided the vendors will not be permitted to exhibit wares when the special passes through. Watermen will be provided but they will not shout.

(e) The special will not be stopped out of course.

(f) No vendors will be permitted on to the platform.

(g) The train should run to time.

(h) No bells will be rung at any station announcing the arrival and departure of the special Whistle of the train engine should be kept down to the minimum. Short blast only will be blown. Engines in yards will avoid whistling while the down special halts or passes.

(i) All platforms wand level crossings over which the special will pass will be watered to keep down the dust.

(j) All railway staff should be in uniform and will stand bare-headed if in the presence of the Asthi compartment.

(k) Sanitary train examining and electrical staff should accompany the special to attend to urgent calls.

(l) The line should be patrolled by gangmen in accordance with standing orders.

(m) Necessary sanitary staff will be provided at Rasulabad where the train will halt for the night.

(n) A Bogie charging van should be provided if available.

Sd —

Secretary Railway Board.

Timings of the Mahatma Gandhi Asthi Special Delhi to Allahabad.

11.2.48	New Delhi	dep	0530	
	Ghaziabad	arr	0713	15 Mts halt.
		dep.	0728	
	Khurja	arr	0828	16 " "
		dep.	0838	
	Aligarh	arr	0918	15 "
		dep.	0938	
	Hathras	arr	1003	15 "
		dep	1018	
	Tundla	arr	1112	10 " "
		dep	1127	
	Ferozabad	arr	1145	10 " "
		dep.	1155	
	Shikohabad	arr	1216	10 " "
		dep	1226	
	Etawah	arr	1216	15 " "
		dep.	1332	
	Phaphund	arr	1433	10 "
		dep	1443	
	Kanpur Central	arr	1630	1 hr 55 ms.
		dep.	1825	
	Fatehpur	arr	1934	10 mts. halt.
		dep.	1944	
	Rasulabad	arr	2010	
12.2.1948	Rasulabad	dep.	0530	
	Allahabad	arr	0900	

परिशिष्ट—८

शव-सुरक्षा

LADY HARDINGE MEDICAL COLLEGE & HOSPITAL
New Delhi

23rd March 1965

Embalming of the body of Shri Jawaharal Nehru on the 27th May 1964

I was informed by Col. R.D Iyer at 4 p.m on 27.5 64 that a decision had been taken that the body of Shri Jawaharlal Nehru should be embalmed and I was requested to make arrangements for the embalming

I went to Teen Murti House at about 5 15 p.m. and discussed the matter with Mrs. I. Gandhi. Col. R.D. Iyer and Dr P K. Duraiswami were also present. It was decided that the embalming should be done as soon as possible.

At about 6.15 P M I was able to get the necessary equipment and chemicals across to Teen Murti House and proceed with the embalming

The left femoral artery was exposed through a 7 cm. incision in the thigh and a solution of 1.5 kgs of 40% formaline in 6 litres of water was run in through the artery under 2.5 metres of hydrostetic pressure. Meanwhile the right femoral artery was exposed *After about 2 litres of solution had run in on the left* side the remaining 4 litres was run in through the right femoral artery

The Incisions were Sutured

The embalming was completed *at 7 40 p.m*

Sd. S. Acharya
M.S. D G O F R.C.S.
Professor of Anatomy